रीटा फरेरा थ्रिलर

विष धमीजा

भेंडी बाज़ार के नंबर 1 बेस्टसेलिंग लेखक

"भारत के जॉन ग्रिशम"

- झलक

दूसरा

दूसरा

आर

धमीजा की पिछली बेस्टसेलर किताबों की प्रशंसा

“एक मनोवैज्ञानिक थ्रिलर।”

- द हिंदू

“रोमांच और डर।”
- डेक्कन क्रॉनिकल

"एक क्राइम थ्रिलर जिसने खूब कमाई की।"
- द ट्रिब्यून

“...यह पाठक को अंत तक बांधे रखता है।”
- द न्यू इंडियन एक्सप्रेस

“तनावपूर्ण... पेचीदा... एक बेहद दिलचस्प किताब!”
- मुकुल देवा, लक्षकार के बेस्टसेलिंग लेखक
“बेहद चतुराई से बुनी गई कहानी और समृद्ध चरित्र चित्रण से भरपूर, भेन्डी बाज़ार एक बेहद पठनीय क्राइम थ्रिलर है जो मनोवैज्ञानिक और जासूसी दोनों पहलुओं को समेटे हुए है। कहानी में आने वाले उतार-चढ़ाव, जिन्हें कुशलता से पिरोया गया है, सस्पेंस को और भी गहरा बनाते हैं, और अंत में एक ऐसा रोमांच पैदा करते हैं जो चौंका देने वाला और संतोषजनक दोनों है। अत्यधिक अनुशंसित।” - कुलप्रीत यादव, बेस्टसेलिंग लेखक, द गर्ल हू लव्ड अ पाइरेट।
“इस मामले की प्रभारी जासूस (रीटा फेरेरा) कोई आम नायिका नहीं है। वह शराब पीती है, चापलूसी करती है और निराश भी होती है, लेकिन हर सुराग का पीछा करती है।” - द हिंदू

“धामिजा निस्संदेह एक अच्छी कहानी सुनाते हैं।” - द टेल्स पेंसिव।

विश धामिजा एक क्राइम फिक्शन लेखक हैं, जिन्होंने तीन बेस्टसेलर उपन्यास लिखे हैं: डेजा कर्मा, भेन्डी बाजार और नथिंग लास्ट्स फॉरएवर। वे अपने बहुआयामी कथानकों, विश्वसनीय चरित्र चित्रण और आकर्षक कहानियों के लिए जाने जाते हैं। ईबुक्स इंडिया वेबसाइट द्वारा हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण में, विश को उन 51 शीर्ष भारतीय लेखकों में शामिल किया गया है जिन्हें आपको अवश्य पढ़ना चाहिए।

ग्लिम्प्स मैगज़ीन ने उन्हें भारत का जॉन ग्रिशम कहा, क्योंकि उन्होंने भारत में कानूनी कथा साहित्य की शैली को बढ़ावा दिया, जो उनके आने से पहले लगभग अस्तित्वहीन थी।

विश का जन्म और पालन-पोषण अजमेर, भारत में हुआ। विदेश जाने से पहले उन्होंने जोधपुर, जयपुर, नई दिल्ली, चेन्नई, जामनगर और मुंबई में रहकर काम किया। उन्होंने ब्रिटेन के मैनचेस्टर बिजनेस स्कूल से मार्केटिंग और रणनीति में विशेषज्ञता हासिल की है।

दूसरा उनका चौथा उपन्यास है।

वह फिलहाल अपनी पत्नी निधि के साथ लंदन में रहते हैं।

अफवाह पुस्तकें भारत

प्लॉट नंबर 40, सेक्टर 4, पंचकुला, हरियाणा।

भारत - 134112

www.rumourbooks.com

यह संस्करण 2016

1

सर्वप्रथम भारतीय उपमहाद्वीप में प्रकाशित।

रमोर बुक्स इंडिया द्वारा 2016 में प्रकाशित

Copyright © Vish Dhamija 2016

विश्व धामिजा को लेखक के रूप में पहचाने जाने का नैतिक अधिकार है।

यह काम।

ISBN

978-1-943730-71-1

यह उपन्यास पूरी तरह से काल्पनिक है। नाम, पात्र और

घटनाएं

इसमें चित्रित सभी चीजें लेखक की कल्पना की उपज हैं।

समानता

वास्तविक व्यक्ति, जीवित या मृत, घटनाएँ या स्थान पूरी तरह से

संयोगवश,

जब तक अन्यथा कहा न जाए।
भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।
लक्ष्मी प्रिंटोग्राफिक्स, सोनीपत
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।
एक में संग्रहीत
पुनर्प्राप्ति प्रणाली, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से प्रेषित,
इलेक्ट्रॉनिक,
बिना पूर्व अनुमति के यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार की गतिविधि करना संभव नहीं है।
प्रकाशक की अनुमति से।
रूमर बुक्स इंडिया के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें
www.rumourbooks.com

Vish Dhamija

DOOSRA

दूसरा

www.rumourbooks.com

मेरे अभिभावकों के लिए।

“देखते हुए भी वे नहीं देखते...”

— मत्ती 13:13

दूसरा - गूगली की तरह ही क्रिकेट में इस्तेमाल होने वाला एक शब्द है। यह एक ऐसी गेंद है जो उछाल के बाद एक दिशा में जाने का वादा करती है, लेकिन असल में दूसरी दिशा में जाती है। ज्यादातर बल्लेबाज इसके जाल में इसलिए फंस जाते हैं क्योंकि वे गेंदबाज के हाथ से पैदा होने वाले भ्रम में आ जाते हैं। हालांकि, इतिहास ऐसे बल्लेबाजों से भरा पड़ा है जिन्होंने गेंद की सीम को पढ़कर इस भ्रम को भेद दिया। अगर कोई विशेषज्ञ आपको इससे अलग राय देता है, तो वह उतना कुशल नहीं है।
याद रखें - भ्रम केवल कुछ समय तक ही काम करता है, जब तक कि आप उसे समझ न लें।
जो आप देख सकते हैं, उसे आप जान सकते हैं।

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना
एक
दो
तीन
चार
पाँच
छह
सात
आठ
नौ
दस
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह

सत्रह
अठारह
उन्नीस
बीस
इक्कीस
बाईस
तेईस
चौबीस
पच्चीस
छब्बीस
सत्ताईस
अट्ठाईस
उनतीस

प्रस्तावना

आर एंटवर्प, 2 अप्रैल
जोगानी को पूरे सम्मान के साथ एरॉन डायमंड्स में प्रवेश कराया गया। ज्वैलर के सुरक्षाकर्मियों द्वारा की गई हल्की तलाशी से पता चला कि...
यह महज़ औपचारिकता थी। आख़िरकार, उन्हें उसी सुबह ब्रसेल्स हवाई अड्डे के आगमन लाउंज से एरॉन के निजी ड्राइवर ने लिया था और सीधे एंटवर्प ले गए थे। वे जेट एयरवेज की फ़्लाइट 9W228 से मुंबई से सुबह 7:50 बजे बेल्जियम पहुँचे थे और अगर उन्होंने चुपके से आव्रजन अधिकारियों से कोई गोला-बारूद या हथियार न लिया हो, तो ऐसा कोई मौका नहीं था, क्योंकि वे रास्ते में कहीं नहीं रुके थे और न ही किसी से मिले थे। और, भारतीय हवाई अड्डा अधिकारी उन्हें किसी भी हथियार के साथ विमान में चढ़ने नहीं देते, है ना? वे इसे नज़रअंदाज़ भी नहीं करते, क्योंकि पिछले पचास वर्षों में भारत से उड़ान भरने वाली किसी भी उड़ान में सुरक्षा में कोई चूक नहीं हुई थी।

जोगानी यहाँ पहली या आखिरी बार नहीं आया था, और वह इतना मूर्ख भी नहीं था कि चोरी करने की कोशिश करे। दरअसल, जोगानी एंटवर्प के डायमंड क्वार्टर में दशकों से यहूदी और भारतीयों - मुख्य रूप से गुजराती मूल के लोगों - के प्रभुत्व वाले हीरे के व्यापार के बड़े खिलाड़ियों में से एक था। भारत में हीरे के व्यापार से जुड़े किसी व्यक्ति के लिए एंटवर्प की नियमित यात्रा एक पवित्र अनुष्ठान के समान थी; इसलिए जोगानी यहाँ कई बार आ चुका था, लेकिन इस यात्रा में की गई खरीदारी उसकी अब तक की सबसे बड़ी खरीदारी थी। हीरे भारत में स्थित एक सिंडिकेट के लिए थे। पॉलिश किए हुए पत्थरों को व्यक्तिगत रूप से खरीदने के बजाय, उन्होंने जोगानी को कुछ हीरे खरीदने और कूरियर से भेजने का काम सौंपा था। यह सौदा 10 मिलियन यूरो से अधिक का हो सकता था, लेकिन यह दो बातों पर निर्भर था: पहली, एरॉन को आवश्यक स्टॉक की इन्वेंट्री अपने पास रखनी थी (विनिर्देश एक महीने पहले ही भेज दिए गए थे) ताकि जोगानी उसका मूल्यांकन कर सके, और दूसरी, और अधिक महत्वपूर्ण बात, एरॉन को आयात शुल्क बचाने और अज्ञात धन के लेन-देन को रोकने के लिए पत्थरों का कम मूल्य लगाने के लिए तैयार रहना था। एरॉन ने अस्थायी रूप से इस शर्त पर सहमति दे दी थी, लेकिन वह फोन या ऑनलाइन पर इस बारे में और चर्चा नहीं करना चाहता था: सौदा क्या होगा और कितना होगा, इस पर बातचीत के लिए गुंजाइश छोड़ दी गई थी।

जोगानी गुजराती मूल के थे, लेकिन उनका परिवार पीढ़ियों से मुंबई में रहता था। वे कद-काठी के थे, छह फुट एक इंच लंबे; उन्होंने हाल ही में अपना पचासवां जन्मदिन मनाया था और अब जाकर उनके पेट पर थोड़ी चर्बी दिखनी शुरू हुई थी। वे दिखने में सुंदर नहीं थे, लेकिन धनवान थे। अविवाहित—उनका कम उम्र में ही तलाक हो गया था और अपनी पसंद-नापसंद को देखते हुए उन्होंने अविवाहित रहना ही बेहतर समझा —और खुलेआम अय्याशी करते थे; हीरे और औरतें ही उनकी दो कमजोरियां थीं। उनकी सबसे बड़ी खूबी कीमती पत्थरों, खासकर हीरों का ज्ञान था। वे नंगी आंखों से भी हीरे की कीमत बता सकते थे और उनका अनुमान असली कीमत से पांच प्रतिशत से ज्यादा गलत नहीं होता था। हीरों के बारे में उन्हें गहरी समझ थी। इसी दक्षता के कारण ही उन्हें अपने देश के हीरा व्यापारियों ने एंटवर्प में उनके लिए सौदा करने के लिए चुना था।

जोगानी पिछले दिन आधी रात को मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपने ड्राइवर द्वारा

छोड़े जाने पर काफी सहज महसूस कर रहे थे। उन्होंने कुछ ड्रिंक्स ले रखी थीं और प्रीमियर केबिन में एयर होस्टेस द्वारा उनका छोटा सा बिस्तर लगाने से पहले उन्हें मुफ्त में स्कॉच मिलने की उम्मीद थी।

***

वह इतना सहज था कि उसे उन शिकारी निगाहों का पता ही नहीं चला जो हवाई अड्डे से, पूरी उड़ान के दौरान और ब्रसेल्स हवाई अड्डे से एंटवर्प ले जाते समय उस पर मंडरा रही थीं। उसकी चेतना निस्संदेह लापरवाह लग रही थी; बार-बार एक ही काम करने के कारण उसमें अजेयता और अति आत्मविश्वास का झूठा एहसास पैदा हो गया था। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह लगभग स्पष्ट रूप से उन लोगों के प्रति उसकी लापरवाही का संकेत था जो उस पर नजर रख रहे थे और घात लगाकर बैठे थे। उसकी यात्रा योजनाओं, उसकी गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जा रही थी।

***

लेकिन अब, राल्फ जींस और सफेद पोलो शर्ट पहने जोगानी को एरॉन डायमंड्स के गुंबददार कार्यालय में ले जाया गया और एक बड़ी महोगनी की मेज के सामने क्रीम रंग की चमड़े की कुर्सी पर आराम से बैठाया गया। यह मेज लगभग एक अमेरिकी पूल टेबल के आकार की थी और इस पर हाथी दांत और कछुए की खोल की नक्काशी थी, जो वास्तव में स्वतंत्रता से पहले भारत से आयात की गई एक प्राचीन वस्तु थी। यह स्पष्ट था कि श्री एरॉन अपने धनी ग्राहक को अधिक देर तक इंतजार नहीं कराना चाहते थे। कॉफी परोसे जाने के ठीक समय पर वे आ गए थे। लियोनार्ड एरॉन, लंबे, पतले, नुकीली नाक वाले, चांदी जैसे बालों वाले, उम्रदराज हीरा व्यापारी, जो युद्ध के बाद से इस व्यवसाय में थे, एरॉन डायमंड्स के एकमात्र मालिक थे।
'एंटवर्प में आपका स्वागत है, रॉन।' आरोन ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।
'धन्यवाद, लियोनार्ड। और एयरपोर्ट से मुझे लेने के लिए भी धन्यवाद।' जोगानी ने डीलर से हाथ मिलाते हुए मुस्कुराते हुए कहा।
आपका स्वागत है। यात्रा कैसी रही?
'हमेशा की तरह। यह एक सुविधाजनक उड़ान थी, मुझे छह-सात घंटे की अच्छी नींद मिली और फिर ब्रुसेल्स से यह ड्राइव हमेशा की तरह सुखद रही।'
'क्या आप चाहेंगे कि मैं आपके लिए एंटवर्प या ब्रुसेल्स में होटल बुक करा दूं?'
'इसका पहले ही इंतजाम हो चुका है, धन्यवाद।'

लियोनार्ड आरोन एक सम्मानित और ईमानदार व्यक्ति थे; जोगानी उन पर भरोसा करते थे, लेकिन फिर भी वह ऊंटों को बांधे रखना चाहते थे। आज वह जिस कीमत के हीरे खरीदने आए थे, उसके लिए यही बेहतर था। जितने कम लोगों को उनके ठिकाने का पता होता, उतना ही सुरक्षित था। वह अपने मेज़बान से उन्हें ब्रसेल्स के केंद्र में छोड़ने के लिए कहेंगे और फिर रात के लिए बुक किए गए होटल में चले जाएंगे। वह किसी भी कीमत पर होटल का नाम या पता किसी को नहीं बताएंगे, यहां तक कि आरोन को भी नहीं।

***

हालांकि, जोगानी को यह नहीं पता था कि कुछ लोगों ने पहले ही उस होटल की पहचान कर ली थी जिसमें उसका कमरा बुक था। उनके पास उसकी इलेक्ट्रॉनिक बुकिंग की एक कॉपी भी थी। उन्होंने होटल के रजिस्टर में उसके लिए कमरा आवंटित होने का इंतज़ार किया, ठीक उसी दिन दोपहर को, और फिर उसके कमरे के ठीक सामने वाला कमरा (गलियारे के पार) और उसके दोनों ओर के कमरे बुक कर लिए गए। ज़ाहिर है, तीन कमरों की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन बेहतर यही था कि उनमें कोई और न ठहरे।

इन तीनों कमरों की बुकिंग करने वालों को पता था कि आज सुबह रॉन जोगानी को ब्रुसेल्स लाने वाली उड़ान एक शटल उड़ान थी - कर्मचारियों के सामान्य बदलाव, नियमित इंजीनियरिंग जांच और ईंधन भरने के बाद यह कुछ घंटों में मुंबई लौट गई - और जोगानी ने बेल्जियम पहुंचने के चौबीस घंटे से कुछ अधिक समय बाद ब्रुसेल्स से उसी उड़ान में जाने के लिए बुकिंग कराई थी। इस प्रकार, उनके पास अपनी योजना को अमल में लाने और वहां से निकलने के लिए चौबीस घंटे से भी कम समय था।

***

'एक योजना वाला आदमी। मैं आपको यह नहीं बताऊंगा कि मैं दस मिलियन यूरो के पत्थरों के साथ कहां रह रहा हूं। चिंता मत करो, मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि मेरा ड्राइवर आपको ब्रुसेल्स तक सुरक्षित वापस पहुंचा दे।' आरोन हँस पड़ा।

'इसके लिए धन्यवाद, लियोनार्ड।'

अब चलिए काम की बात करते हैं, मेरे दोस्त।

'यह अच्छा विचार लगता है। क्या आप आवश्यकतानुसार हीरे प्राप्त करने में सक्षम रहे हैं?'

'रॉन, तुम मुझसे यह सवाल पूछने की हिम्मत नहीं करोगे। सारा सामान यहीं मौजूद है।'
तो फिर हम किस बात का इंतजार कर रहे हैं?
'प्रारंभिक प्रक्रिया... मुझे लगता है कि माल भेजने से पहले यह स्पष्ट कर लेना बेहतर होगा कि आपको किस प्रकार का रियायती बिल चाहिए।'
'अच्छा ठीक है। हम चाहते हैं कि आप पत्थरों का मूल्य कम आंकें ताकि हमें आयात शुल्क में बचत हो सके—'
'जो कि तराशे और पॉलिश किए गए हीरों पर अब महज पांच प्रतिशत है...' जाहिर तौर पर आरोन ने भारतीय आयात शुल्क में हाल ही में हुई बढ़ोतरी के बारे में पढ़ा था।
'लेकिन दस मिलियन की खरीदारी पर यह काफी बड़ी रकम बन जाती है।'
'रॉन, तुम मुझसे क्या छिपा रहे हो?'
'अच्छा, ठीक है। सीमा शुल्क एक अलग बात है। भारत में बहुत से व्यापारी—मेरे ग्राहक—खरीदारी की कुल राशि घोषित नहीं करना चाहते, क्योंकि बहुत से खुदरा सौदे बिना बिल के ही हो जाते हैं। इसलिए, इस लेन-देन के लिए जो पैसा मैं आपको आज दे रहा हूँ, उसका भी कुछ हिस्सा हिसाब में नहीं है। आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब?'
'तो आप क्या सुझाव दे रहे हैं?'
'मैं दस मिलियन मूल्य की चीजें खरीदता हूं - बशर्ते वे वही हों जो हम चाहते हैं - और मुझे लगभग पांच मिलियन का बिल मिलता है।'
'यह तो पूरे पचास प्रतिशत की छूट है।'
'यह कोई छूट नहीं है, लियोनार्ड, यह घोषित मूल्य है। इससे आपको अपने पास मौजूद बिना हिसाब वाले सामान से छुटकारा पाने में भी मदद मिलेगी, तो यह दोनों तरफ से फायदेमंद है, है ना?'
आरोन मुस्कुराया। अगर उसने सोचा था कि वह कम बिल बनाकर इस भारतीय से अतिरिक्त पैसे ठग सकता है, तो वह बहुत बड़ी गलती कर बैठा था।
जोगानी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'क्या अब मुझे हीरे दिख सकते हैं?'
'जी हां, बिल्कुल।' आरोन ने सिर हिलाया और दोनों आदमियों के कॉफी खत्म करने के बाद उसने मेज के नीचे लगा बजर दबा दिया। गहरे रंग के लकड़ी के पैनल वाले कमरे का दरवाजा खुला और एक सुनहरे बालों वाली लड़की अंदर आई। उसने

जोगानी को मुस्कुराकर अभिवादन किया, इससे पहले कि आरोन उससे फ्रेंच या फ्लेमिश में कुछ कहता, जोगानी को कोई फर्क नहीं पड़ा; वह लड़की के आकर्षक नितंबों की जमकर तारीफ कर रहा था। वह जल्दी से बाहर निकली और लगभग तुरंत ही एक हल्के भूरे रंग की मखमली चादर लेकर लौटी, जिसे उसने मेज पर फैलाया और फिर कमरे से बाहर चली गई।

आरोन ने उसके जाने का इंतज़ार किया और फिर उठ खड़ा हुआ। वह दरवाज़े तक गया और उसे बंद कर दिया। एक पैनल को खोलने वाला स्विच तभी सक्रिय होता था जब कमरा अंदर से बंद हो जाता था। कमरे में सरसरी नज़र डालने पर भी किसी को यह पता नहीं चलता कि एक दीवार के पीछे एक तिजोरी छिपी हुई है। आरोन ने अपने सारे सामान भी बांध रखे थे। पैनल के पीछे एक बड़ी तिजोरी थी जिसे खोलने के लिए चाबी, एक संख्यात्मक संयोजन और आरोन के उंगलियों के निशान की ज़रूरत थी। उसने बड़ी कुशलता से तिजोरी खोली, अपने ग्राहक को यह देखने का मौका दिए बिना कि तिजोरी में और क्या है, उसमें से एक छोटी थैली निकाली और उसे वापस बंद कर दिया। ताला लगा दिया।

जैसे ही आरोन दोबारा बैठा, जोगानी ने अपना आवर्धक लेंस निकाला, मखमली थैली खोली और चमचमाते हीरे साबर के कपड़े पर बिखेर दिए। कुल मिलाकर बीस हीरे थे। अगर कोई पैसे कम करने का तरीका सीखना चाहता था, तो यह एक आसान तरीका था। जोगानी हीरों के बारे में अच्छी तरह जानता था। हीरों का मूल्य उनकी कटाई, स्पष्टता, रंग और कैरेट के आधार पर तय होता है। और उनकी खामियों के आधार पर भी। उसने सबसे पहले खामियों की तलाश की। उसने अगले दो घंटे चुपचाप बीस हीरों का अध्ययन करते हुए बिताए - जिनका वजन एक कैरेट से लेकर छह कैरेट से थोड़ा अधिक था - और आरोन चुपचाप उसे देखता रहा।

'शानदार, लियोनार्ड।' आखिरकार उसने आवर्धक लेंस को अपनी जेब में रख लिया क्योंकि उसे पेश किए गए किसी भी पत्थर को अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं मिला। आरोन यहाँ खेल खेलने नहीं आया था।

'अपने ग्राहकों की सेवा करना हमेशा मेरे लिए खुशी की बात है।' आरोन ने सबसे बड़ा हीरा उठाया - लगभग छह कैरेट का - और प्रकाश में उसे बड़े गर्व से देखा। उसकी चमक इतनी मनमोहक थी कि मानो कोई जान भी ले ले।

'कुल कीमत कितनी है?'

आरोन ने अपने द्वारा उठाए गए पत्थर को ध्यान से देखा। 'मुझे आपके ऑर्डर के हिसाब से बिल्कुल सही टुकड़े नहीं मिल पाए। इनकी कीमत एक लाख से दस मिलियन अधिक है।'
मैं तुम्हें पचास रुपये दूंगा।
'हो गया। सिर्फ इसलिए क्योंकि आप एक पुराने ग्राहक हैं, रॉन।'
'और वो भी एक वफादार ग्राहक। आपका खाता नंबर क्या है?' जोगानी ने अपना बटुआ निकाला और उसमें से एक कार्ड निकाला जिस पर सिर्फ एक नंबर छपा हुआ था; स्विट्जरलैंड में उनके निजी बैंक में उनके रिलेशनशिप मैनेजर का नंबर।
एरोन ने सामने रखे पैड पर एक नंबर लिखा और उसे अपने ग्राहक की ओर बढ़ा दिया: यह उनके खाते का विवरण था जिसमें धनराशि स्थानांतरित करनी थी।

***

जोगानी शाम 5 बजे के कुछ देर बाद कार में वापस आ गया था।
हीरे काले मगरमच्छ के चमड़े के ब्रीफकेस में रखे थे—जो आरोन ने उन्हें उपहार में दिया था—बायोमेट्रिक लॉक से लॉक किया हुआ और आगे की सीट के नीचे रखा हुआ था, जिसे केवल वही पीछे की सीट से खोल सकते थे। ब्रीफकेस कोई साधारण ब्रीफकेस नहीं था, चमड़ा सिर्फ ऊपरी परत नहीं थी; यह मजबूत स्टील के एक ही टुकड़े से बना था और हैंडल संरचना का अभिन्न अंग था, कोई अलग से लगाया हुआ नहीं। उनका छोटा सा स्ट्रोलर बैग कार की डिक्की में था। जोगानी ने आरोन के ड्राइवर से उन्हें प्लेस चार्ल्स रोगियर स्थित हिल्टन होटल में छोड़ने को कहा। उन्होंने ड्राइवर को टिप दी, अपना ब्रीफकेस उठाया और उसे अपने सामान के ऊपर रखकर पहियों पर घसीटते हुए ले गए, जैसे कोई राहगीर। वर्दी पहने लापरवाह ड्राइवर ने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं, लेकिन जोगानी जोखिम नहीं लेना चाहते थे। अगर वह देख भी लेता तो क्या होता? वह अंदर गए और रिसेप्शन पर कतार में खड़े हो गए, कुछ मिनट इंतजार किया जब तक कि उन्होंने आरोन की कार को जाते हुए नहीं देखा, फिर बिना ऊपर देखे या किसी को शक पैदा किए तेज़ी से होटल से बाहर निकल गए। वह लगभग पचास मीटर चला और बोलवर्कलान पर बाईं ओर मुड़ गया। सौ मीटर और चलने के बाद वह अपनी मंज़िल पर पहुँच गया: क्राउन प्लाज़ा। उसने रिसेप्शन पर चेक-इन किया, अपनी चाबी ली, बेफिक्र होकर सीटी बजाई और लिफ्ट से ऊपर चला गया।

जोगानी ने कमरा नंबर 513 में चाबी का कार्ड डालने से पहले चारों ओर देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है, हालांकि उसे शक करने का कोई कारण नहीं था। किसी को नहीं पता था कि वह यहाँ है। किसी को हीरों के बारे में भी नहीं पता था। कुछ भी अजीब नहीं लग रहा था, गलियारे में उसके अलावा कोई और नहीं था।

***

जिस बात पर उसकी नज़र नहीं पड़ी, वह थी ठीक उसके सामने वाले दरवाज़े के छेद पर टकटकी लगाए एक आँख। कमरा नंबर 514 में रहने वालों को सूचना मिल चुकी थी कि निशाना आ रहा है। कमरा नंबर 514 में रहने वाले दोपहर से ही होटल में चेक-इन करने के बाद से ही व्यस्त थे। उन्होंने हाउसकीपिंग सर्विस की नौकरानी को ढूंढ निकाला और उसे इतनी देर तक बातों में उलझाए रखा कि वे अपने कमरे की चाबी को मास्टर चाबी से बदल सकें। वे कमरा नंबर 513 में घुस गए, कम रोशनी में तस्वीरें खींचने के लिए मौजूदा बिजली के फिटिंग में चार हाई सेंसिटिविटी कैमरे लगा दिए, होटल के स्टैंडर्ड रूम सेफ को खोलकर उसकी जगह अपना सेफ लगा दिया। अगर जोगानी ने हीरे होटल के सेफ में रख दिए थे, तो कोड चाहे जो भी हो, चाबी उनके पास थी। उन्होंने होटल के सुरक्षा कैमरों को भी चकमा दे दिया था। डिजिटल सुरक्षा कैमरे फ्रीज़ हो गए थे और अब ठीक चौबीस घंटे पहले का लाइव फीड दिखा रहे थे। लेकिन जब तक कोई उनकी तुलना बाहर के असली दृश्य से नहीं करता, तब तक कौन जान सकता था? टाइम स्टैम्प में सिर्फ घंटे और मिनट दिखाए गए थे, तारीख नहीं। जब सारा काम पूरा हो गया और लगभग पाँच मिलियन मूल्य के हीरे की चोरी की सूचना मिल गई, तो उनके पास कैमरे में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसका वे पीछा कर सकें। अब बस इतना ही बचा था कि वे उस व्यक्ति के कमरे से खुद ही ड्रिंक या डिनर के लिए बाहर जाने का इंतज़ार करें या यह सुनिश्चित करें कि उसे किसी तरह कमरे से बाहर निकाला जाए ताकि उन्हें हीरे इकट्ठा करने, उसके कमरे का फोन डिस्कनेक्ट करने (वे यह भी सुनिश्चित करेंगे कि लिफ्ट तुरंत काम न करें) और होटल से बाहर निकलने का समय मिल जाए, इससे पहले कि वह रिसेप्शन पर जाकर अलार्म बजा सके। हालांकि, भागने की योजना को सफल बनाने के लिए उन्हें अंधेरा होने और यातायात कम होने का इंतजार करना पड़ा।

कमरा नंबर 513 में लगे कैमरों ने कमरा नंबर 513 की गतिविधियों को कमरा नंबर

514 तक पहुंचाना शुरू कर दिया था।
जोगानी कमरे में दाखिल हुआ, दरवाजा बंद किया, डबल लॉक लगाया और दरवाज़े की चेन कस दी, फिर चारों ओर देखा। उसे कुछ भी गड़बड़ नहीं दिखी। यह उम्मीद करना स्वाभाविक था कि वह सीधे उस तिजोरी के पास जाएगा - जिसके बारे में उसे पता नहीं था कि वह नई है - जहाँ भी उसने हीरे रखे थे, उन्हें निकाल कर उसमें बंद कर देगा। अब तक तो सब ठीक था, लेकिन ब्रीफकेस उसकी योजना में शामिल नहीं था क्योंकि जोगानी मुंबई से ब्रीफकेस नहीं लाया था। आखिर उसे यह कहाँ से मिला? तिजोरी की ओर जाने के बजाय, जोगानी सीधे बिस्तर पर गया, अपनी तर्जनी उंगली से ब्रीफकेस का बायोमेट्रिक लॉक खोला और उसमें से एक चमकदार हथकड़ी निकाली। उसने एक हथकड़ी ब्रीफकेस के हैंडल से लगाई और उसे बंद कर दिया, फिर उसे एक संयोजन लॉक से बंद कर दिया - यानी यह भी कोई साधारण हथकड़ी नहीं थी जिसमें आमतौर पर एक ही चाबी होती है। उसने कमरे में चारों ओर देखा, उसे कुछ भी ऐसा नहीं मिला जिससे वह हथकड़ी का दूसरा सिरा जोड़ सके। वह बाथरूम में गया—वहाँ भी एक कैमरा लगा हुआ था—और कमोड के पीछे उसे वह चीज़ मिल गई जिसकी उसे तलाश थी। उसने ब्रीफकेस को ज़मीन पर रखा और दूसरे कफ को क्रोम के पानी के नल से बांध दिया और उसे भी सावधानीपूर्वक संयोजन लॉक से बंद कर दिया। उसने ब्रीफकेस को ज़ोर से खींचकर देखा कि वह सुरक्षित है या नहीं। हे भगवान!

***

शाम 6:30 बजे: जोगानी अपने बिस्तर पर लेटा था और टीवी चल रहा था। थकान हावी होने लगी थी; वह पिछली रात से जागा हुआ था, बस उड़ान में थोड़ी देर सोया था। उसने ड्रिंक कैबिनेट में देखा और सोचा कि उसे आराम से पीना चाहिए। उसे कल सुबह जल्दी उठना था ताकि एयरपोर्ट पहुँचने के लिए उसके पास पर्याप्त समय हो। और हालाँकि उसे शक करने का कोई कारण नहीं था कि कोई उस पर या उसके सामान पर नज़र रख रहा है, फिर भी इतनी कीमती चीज़ की ज़िम्मेदारी होने पर ज़्यादा शराब न पीना ही समझदारी थी। चैनल बदलते-बदलते उसने पाया कि कुछ भी देखने लायक दिलचस्प नहीं था। उसने मेन्यू उठाया। नीचे के रेस्टोरेंट में कुछ स्वादिष्ट फ्रेंच व्यंजन थे, लेकिन वह हीरे कमरे में छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता था, भले ही वे बंधे हुए थे। उन्हें इधर-उधर ले जाना भी ठीक नहीं लग रहा था। दुनिया के बाकी

हिस्सों की तरह, रूम सर्विस में भूख मिटाने वाले सैंडविच भी थे।
उसने एक बार फिर अपनी रोलेक्स घड़ी पर नज़र डाली। हीरे ढूंढने, चैनल बदलने और मेनू खंगालने की पूरी प्रक्रिया में उसे सिर्फ पंद्रह मिनट लगे थे, और नींद आने तक उसके पास कुछ घंटे और थे।
पेय पदार्थों की अलमारी अचानक आकर्षक लगने लगी। वह जानता था कि बेल्जियम अपनी बियर के लिए प्रसिद्ध है: होएगार्डन, लेफे ब्रून, लेफे ब्लॉन्ड, रोशेफोर्ट - ये सभी छोटी सी फ्रिज में सजी हुई थीं। यह जानते हुए कि उसने पहले कभी रोशेफोर्ट नहीं चखी थी, उसने बोतल निकाली और वापस बिस्तर पर आ गया।
साढ़े नौ बज रहे थे और वह अपने बिस्तर पर अंडरवियर पहने लेटा हुआ था, देर रात की उस फिल्म का आनंद ले रहा था जिसके लिए उसने पैसे दिए थे। वह फिल्म इतनी कामुक थी कि उसे उत्तेजित कर रही थी। उसने रूम सर्विस से मंगवाए सैंडविच और फ्राइज़ खा लिए थे, छह बियर पी ली थीं और सोने के लिए तैयार था। उसने रिसेप्शन पर फोन करके सुबह छह बजे जगाने का अनुरोध किया, फिर अपने बिस्तर के पास रखी घड़ी में सुबह 6:15 बजे का अलार्म लगाया और टीवी चालू करके सो गया।

***

जोगानी को शायद ही इस बात का अंदाजा था कि स्क्रीन से निकलने वाली तेज रोशनी की टिमटिमाहट से देखने वालों को यह पता चल जाएगा कि कमरे की बत्तियाँ बंद कर दी गई हैं और लक्ष्य ने आत्मसमर्पण कर दिया है। बहुत-बहुत धन्यवाद!

***

जोगानी की नींद बिस्तर के पास रखे फोन की तेज आवाज से खुली। नींद से जागते हुए उसने स्क्रीन पर देखा: रिसेप्शन। उसे लगा कि सुबह हो चुकी है और यही उसकी नींद तोड़ने वाली घंटी है, लेकिन तभी उसकी नजर समय पर पड़ी: 00:03। उसने सोचा, "इसके पीछे कोई अच्छा कारण होना चाहिए," और उसने रिसीवर उठा लिया।
'श्री जोगानी, इस समय आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या आप कृपया रिसेप्शन पर आ सकते हैं?'
'तुम मजाक कर रहे हो क्या, भगवान के लिए आधी रात हो चुकी है।'
'जी सर, मुझे पता है, और अगर यह अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण न होता तो मैं आपको इस समय फोन नहीं करती,' रिसेप्शनिस्ट ने विनम्रतापूर्वक जवाब दिया।
'इतनी जल्दी क्या है? क्या इमारत में आग लगी है?'

'ऐसा कुछ नहीं है महोदय।'
'तो फिर समस्या क्या है?'
'यह एक प्रतिष्ठित होटल है महोदय, और आपके कमरे में एस्कॉर्ट को आमंत्रित करना हमारी नीति के विरुद्ध है—'
'माफ़ कीजिए? किसने एस्कॉर्ट को बुलाया है?'
'ऐसा लगता है कि आपने ही उन्हें बुलाया था, महोदय। हमारे पास यहाँ... एक संदिग्ध चरित्र वाली महिला हैं...' रिसेप्शनिस्ट ने कुछ देर रुककर उस महिला की ओर देखा, '...कुछ अनुचित कपड़े पहने हुए हैं, और वह आपको ढूंढ रही हैं।'
'मेरे लिए?'
'जी सर, उन्होंने आपका नाम लेकर ही आपको बुलाया था।'
'ज़रूर कोई गलती हुई होगी। मैंने किसी एस्कॉर्ट को नहीं बुलाया था, आप उसे वापस भेज सकते हैं।'
'श्री जोगानी, उन्हें आपके कमरे का नंबर भी पता था, और हमारे रिकॉर्ड बताते हैं कि आपने ग्यारह बजकर सात मिनट पर कॉल किया था...'
'मैंने ऐसी कोई कॉल नहीं की, असल में मैंने कोई कॉल ही नहीं की।' जोगानी को महसूस हुआ कि उसका गुस्सा और आवाज़ बढ़ रही है। आस-पास के कमरों में लोगों को परेशान करने के डर से उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली। 'ज़रूर कोई गलती हुई होगी। सुनो—'
'मुझे खेद है श्रीमान जोगानी, यदि आप तुरंत रिसेप्शन पर नहीं आते हैं तो मेरे पास पुलिस को बुलाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।' रिसेप्शनिस्ट ने अपनी आवाज ऊंची नहीं की, लेकिन उसमें धमकी का भाव अवश्य था।
'ठीक है, मैं नीचे आ रहा हूँ। उसे वहीं रोक कर रखो, मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि उसे किसने फोन किया था।'
'जी हां, वह कहीं नहीं जा रही हैं।'
जोगानी ने अपनी आँखें मलीं। क्या पिछली बार की यात्रा में मिली कोई वेश्या आज ब्रुसेल्स में उससे मिली थी? जींस और टी-शर्ट पहनते हुए उसने दूसरे विकल्पों के बारे में सोचा और बाथरूम की ओर देखा। ब्रीफकेस सुरक्षित रूप से रखा हुआ था। यह बातचीत जल्दी खत्म हो जानी चाहिए, इस समय ब्रीफकेस को खोलकर रिसेप्शन तक ले जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

***

कमरा नंबर 514 में वे लिफ्ट का दरवाजा बंद होने का इंतजार कर रहे थे, और जैसे ही उसमें घंटी बजी, वे समझ गए कि लक्ष्य अब दूर जा चुका है। वे तुरंत हरकत में आ गए।

समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है।

***

ग्राउंड फ्लोर पर लिफ्ट से बाहर निकलते ही जोगानी गुस्से से उबल पड़ा और रिसेप्शन की ओर भागा, लेकिन वहाँ कोई मौजूद नहीं था। डेस्क पर एक घंटी रखी थी जिसे उसने बार-बार मुट्ठी में तब तक पटका जब तक कि वह लगातार बजने लगी, न कि रुक-रुक कर बजने वाली आवाज़ की तरह। वह रिसेप्शनिस्ट को बुलाना चाहता था जिसने कुछ मिनट पहले ही उसे जगाया था और बिस्तर से उठाया था, और अब मानो गायब हो गया था।

'मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकती हूँ महोदय?' रिसेप्शनिस्ट ने जम्हाई ली और उसकी आवाज़ में नींद झलक रही थी।

'मैं रॉन जोगानी हूं - आपने अभी मुझे कमरा नंबर 513 में फोन किया था और बताया था कि मुझसे मिलने के लिए कोई यहां आया है।'

रिसेप्शनिस्ट हैरान दिख रहा था। 'माफ़ कीजिए महोदय... क्या मैंने आपको फ़ोन किया था? मैंने किसी को फ़ोन नहीं किया।' उसने इधर-उधर देखा कि कहीं कोई आस-पास तो नहीं है जिसने डेस्क पर रखे लावारिस फ़ोन का इस्तेमाल किया हो। कोई नहीं था। होटल का मुख्य द्वार बंद था। इतनी देर से आने वाले किसी भी व्यक्ति को अंदर जाने के लिए घंटी बजानी पड़ती थी।

'तो फिर मुझे किसने बुलाया?' जोगानी ने चारों ओर नज़र घुमाई। 'इस डेस्क पर और कौन बैठा है?'

'मुझे नहीं पता सर। ड्यूटी पर सिर्फ मैं ही हूं और मैंने कोई कॉल नहीं की।'

'फोन रिसेप्शन से आया था, मैंने डिस्प्ले देखा...' जोगानी को बोलते-बोलते अचानक एहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है। उसने एक बड़ी गलती कर दी थी, जो अब किसी जाल की तरह लग रही थी। गुस्सा घबराहट में बदल गया और वह मुड़कर लिफ्ट की ओर भागा। इस तरह उसने दिन की अपनी दूसरी गलती कर दी, जिसका उसे एहसास नहीं था, और यह एक ऐसी गलती थी जिस पर उसे कभी पछतावा नहीं

होगा।
क्या उसने इस बात पर ध्यान दिया कि आधी रात को उसके कमरे से बाहर निकालकर हीरे चुराने वाला व्यक्ति निहत्था हो सकता है? बिलकुल नहीं। लेकिन उसका दिमाग इस बात पर ध्यान नहीं दे रहा था कि उसका अगला कदम कितना खतरनाक हो सकता है। उसे बस अपनी पीठ पर ठंडी-ठंडी धारियाँ बहती महसूस हो रही थीं। ठंडा पसीना।
वह जल्दी से लिफ्ट से बाहर निकला और अपने कमरे की ओर भागा, चाबी घुमाई, दरवाजा खोला और तुरंत उसे अपने पीछे बंद कर लिया।

***

लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। कमरा नंबर 514 में मौजूद घुसपैठिए को पहले ही जोगानी के स्वागत समारोह में संक्षिप्त दौरे के बारे में सूचित कर दिया गया था। चाहे कितनी भी सावधानीपूर्वक योजना बनाई जाए, चोरी में कई गलतियाँ हो सकती हैं। जैसे इस मामले में, उन्होंने हत्या करने की योजना नहीं बनाई थी, लेकिन अब जोगानी को ठिकाने लगाने का कोई और रास्ता नहीं था। अगर उन्हें अपना काम पूरा करना था, तो उनके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था। कोई प्लान बी नहीं था। जोगानी को खत्म करने की कोई योजना नहीं थी, लेकिन कड़वी सच्चाई यह थी कि रॉन जोगानी गलत समय पर गलत जगह पर था। बस इस बार यह घातक साबित हुआ। अंत उतना ही नाटकीय था जितना होना चाहिए था - साइलेंसर से दबी हुई दो गोलियों की भयानक आवाज।
क्या डॉन मैकलीन ने यह चेतावनी नहीं दी थी कि आग शैतान की इकलौती दोस्त है?

***

पुलिस को बाद में पता चला कि दो गोलियां चलाई गई थीं। एक गोली रॉन जोगानी की छाती में बहुत करीब से मारी गई थी - इतनी करीब से कि उसकी टी-शर्ट और त्वचा झुलस गई थी, और दूसरी गोली कमोड के पीछे हथकड़ी पर लगी थी।

तीन महीने बाद

One

गोवा, भारत।

हाल के समय में, इतिहास में दो अलग-अलग कालखंड हैं: 9/11 से पहले और 9/11 के बाद। किसी भी देश में व्यक्तियों द्वारा प्राप्त अधिकार

डार्विन के शब्दों में, यदि दुनिया नई विश्व व्यवस्था के अनुकूल नहीं ढलती, तो जीवन का आनंद लेना असंभव हो जाता। 9/11 ने दुनिया को बदल दिया। हालांकि, इससे हुए सभी बदलाव बुरे नहीं थे - कोई भी समझदार व्यक्ति यह तर्क नहीं देगा कि उस दिन जो हुआ वह बुरा या भयावह था - कुछ बदलाव आवश्यक थे, और यदि ये बदलाव मानव इतिहास के उस काले दिन से पहले ही हो गए होते, तो शायद इस आपदा को पूरी तरह से टाला न जा सकता था, लेकिन नियंत्रित किया जा सकता था। फिर 2008 में मुंबई में हुए नवंबर बम धमाकों ने सबसे सुस्त सरकारों को भी जगा दिया। और अब, डीसीपी रीता फरेरा सोच रही थीं, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी होने के बावजूद उन्हें वाणिज्यिक विमान में अपनी सर्विस रिवॉल्वर ले जाने की अनुमति नहीं थी। ठीक है, हवाई अड्डे के अधिकारियों ने उनकी तलाशी नहीं ली, क्योंकि कुछ ही महीने पहले एक सीरियल किलर का पीछा करने के बाद वे पूरे देश में सुर्खियों में थीं। इसके अलावा, सुरक्षा द्वार तक उन्हें लाने वाले दो वर्दीधारी पुलिसकर्मियों ने उन्हें तुरंत पहचान लिया। उन्हें सम्मानपूर्वक अंदर जाने दिया गया।

विमान समय पर रवाना हुआ। रीता अपनी सीट पर आराम से बैठ गई। सौभाग्य से, उसकी पंक्ति में कोई और नहीं था, इसलिए उसने अपना हैंडबैग बीच वाली सीट पर रख दिया और गोवा में बीते तीन महीनों की परिस्थितियों के बारे में सोचने लगी। सीरियल किलर को पकड़ने के दौरान उन पर गोली चलाई गई थी, और गोली उनके कंधे को छूकर निकल गई थी। शारीरिक रूप से तो वे जल्दी ठीक हो गईं, लेकिन मनोवैज्ञानिक आघात—हालांकि रीता को इसका पता नहीं था—से निपटना ज़रूरी था। डीसीपी रीता फरेरा को उनके आखिरी मामले में हुई गोलीबारी के बाद ड्यूटी से छुट्टी दे दी गई थी। हालांकि वे ड्यूटी पर बने रहना चाहती थीं—जब उन्हें छुट्टी दी गई

तो उन्हें बहुत बुरा लगा: उन्होंने कहा था, "आधिकारिक प्रक्रिया"—लेकिन उन्हें छुट्टी लेने का आदेश दिया गया था। किसी अपराधी द्वारा बंदी बनाए जाने या काबू में किए जाने—भले ही कुछ मिनटों के लिए—और आग्नेयास्त्रों के इस्तेमाल के मामलों में आमतौर पर शामिल पुलिस अधिकारी को वैधानिक अवकाश और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए भेजा जाता है। इसे चुनौती देने का कोई फायदा नहीं था। हालांकि, जो छुट्टी दो सप्ताह की लग रही थी, वह तीन महीने की हो गई क्योंकि रीता के थेरेपिस्ट ने उन्हें शुरुआती समय में पुलिस बल में फिर से काम शुरू करने के लिए क्लीन चिट देने से इनकार कर दिया। सौभाग्य से, रीता को अपने मुंबई वाले फ्लैट में नहीं रहना पड़ा। वह गोवा के दक्षिणी तट पर स्थित छोटे से गाँव बेनौलिम में अपनी पुश्तैनी संपत्ति में कुछ समय के लिए रुकी थीं। बेनौलिम पीढ़ियों से गोवा की लोककथाओं का हिस्सा रहा है: विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने पश्चिमी घाट से कहीं ऊपर से एक बाण चलाया था, और वह बाण उस स्थान पर गिरा जिसे बाद में बनावली के नाम से जाना गया: बाण का गाँव। पुर्तगालियों ने इसका नाम बदलकर बेनौलिम रख दिया। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर था: अथाह समुद्र की ध्वनि और स्थानीय वनस्पतियों की सुगंध, जिसे रीता ने बचपन से ही सराहा था। इससे उन्हें मुंबई में रहने की तुलना में कहीं अधिक तेजी से स्वस्थ होने में मदद मिली। मन ही मन वह अपने कर्तव्य पर लौटने के लिए तैयार थीं, लेकिन उन्होंने इंतजार किया। वह जानती थीं कि नौकरशाही में कोई भी मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन को नकार नहीं सकता। चिकित्सक की मनोवैज्ञानिक सलाह को कभी भी नकारा नहीं जा सकता। इसलिए उन्होंने उन तीन महीनों में से अधिकांश समय उसी समुद्र किनारे वाले विला में बिताया जहाँ उन्होंने अपने बचपन के वर्ष बिताए थे। यह एक सफेद, औपनिवेशिक शैली का मकान था जिसके सामने एक विशाल बगीचा था और पीछे का दरवाजा निवासियों के लिए बने निजी समुद्र तट पर खुलता था। सौभाग्य से, पड़ोसी भी अपनी संपत्तियों का इस्तेमाल छुट्टियों के लिए करते थे, इसलिए रीता को पूरा समुद्र तट अपने लिए मिल जाता था। वह दिन में धूप सेंकती, सूर्यास्त के समय पेय का आनंद लेती और शाम को तैरती। उसने अपने पिता के साथ इस समुद्र तट पर कई दिन, कई सप्ताह बिताए थे। वे देर रात तक घंटों बातें करते थे, उनके पिता उसे अपने बड़े होने और गोवा से परे भविष्य की तलाश के बारे में बताते थे: एक साथी, एक परिवार, शायद एक करियर। उन्होंने भविष्यवाणी की थी, "कोई न कोई तुम्हें यहाँ से ले जाएगा।" रॉबर्ट फेरेरा की

लाडली आखिरकार बड़ी हो गई थी। उन दिनों को याद करते हुए उसके होठों पर अनजाने में एक मुस्कान आ गई।

कुछ दिन ऐसे भी थे जब उसे लगता था कि वह इस जीवन की आदी हो सकती है। उसे न तो पैसों की ज़रूरत थी और न ही तनाव की। उसके माता-पिता ने अपनी इकलौती संतान को इतनी संपत्ति विरासत में दी थी कि वह उसे जीवन भर में खर्च नहीं कर सकती थी। और उसके टूटे रिश्तों के इतिहास को देखते हुए, अब भी यह असंभव लग रहा था कि उसके बाद इसे विरासत में पाने वाला कोई होगा। लेकिन उसने पुलिस बल में पैसे के लिए भर्ती नहीं हुई थी; अगर पैसा कमाना ही हो तो इससे कहीं बेहतर पेशे मौजूद थे। पुलिस ही उसका पेशा था, वह हमेशा खुद को याद दिलाती रहती थी।

हालांकि, तीन महीने और कई सत्रों के बाद, थेरेपिस्ट का मूल्यांकन निर्णायक रूप से पूरा हो गया और रीता आखिरकार काम पर लौटने के लिए फ्लाइट में सवार हो गईं। उनके तत्काल सुपरवाइजर और मुंबई पुलिस के संयुक्त आयुक्त विनय जोशी ने उनसे एक ऐसे मामले के बारे में बात की थी जिसकी जांच इंटरपोल ने मुंबई क्राइम स्क्वाड को करने के लिए कहा था।

इस प्रकार रीटा की एक और अनिश्चित यात्रा का आरंभ हुआ।

बेल्जियम पुलिस के लिए यह मामला लगभग ठंडा पड़ चुका था, लेकिन उन्हें कुछ नए सुराग मिले थे जिनसे उनका ध्यान मुंबई की ओर गया था। जोशी ने कोई और जानकारी नहीं दी थी, और रीता ने भी इस बारे में इंटरनेट पर कोई खबर नहीं खोजी थी। इतनी कम जानकारी के साथ यह सब समय की बर्बादी होती: बेल्जियम में हुए सभी अपराधों की जाँच कैसे की जा सकती है, और एक ठंडे पड़े मामले की छानबीन में कोई कितनी गहराई तक जा सकता है?

इन दोनों घटनाओं का संयोग—उनका सफल मूल्यांकन और अंतरराष्ट्रीय मामले की तात्कालिकता—थोड़ा हैरान करने वाला था। लेकिन वह जानती थीं कि जब प्रशासनिक तंत्र वास्तव में कुछ करने का फैसला करता है, तो वह काम तेंदुलकर के शतक बनाने से भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से हो जाता है। मुंबई में विमान के उतरते ही रीता के चेहरे पर अनायास ही मुस्कान आ गई। विमान ठीक समय पर उतरा, जैसे उड़ान भरी थी। विमान सामान्य से थोड़ा ज़्यादा समय तक टैक्सी करता रहा, पिछली उड़ानों के यात्रियों के उतरने का इंतज़ार करता रहा, फिर अगले उपलब्ध एयरब्रिज पर

उतर गया।
जैसे ही उसने कन्वेयर बेल्ट से अपना सामान उठाया, उसका ध्यान उस मामले पर चला गया। एक पुराना मामला जो "मुंबई की ओर कुछ सुराग" दे रहा था, इसका मतलब यह हो सकता था कि अपराधियों को अब तक भाग निकलने और ऑस्ट्रेलिया चले जाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया होगा।
यह निराशाजनक होगा।
यह चुनौतीपूर्ण होगा।
लेकिन वह इसके लिए तैयार थी। उसे काम से छुट्टी काफी मिल चुकी थी, और कुछ समय बाद तो यह ऊब में तब्दील हो गई थी। शराब का सेवन भी बढ़ गया था, जिस पर उसे जानबूझकर निर्भरता तोड़नी पड़ी। हाँ, वह तैयार थी, उसने मन ही मन बुदबुदाया और अपने ड्राइवर की ओर चल पड़ी जो उसका इंतज़ार कर रहा था। जैसे ही उसने उसे निकलते देखा, ड्राइवर दौड़ता हुआ आया और एक तरह से सलाम करते हुए उसका सामान उठाया और उसे उसकी नई आधिकारिक सफेद फॉक्सवैगन जेटा तक ले गया।
'कुलदीप, तुम कैसे हो?' रीता ने कार में बैठते हुए पूछा।
'बहुत-बहुत धन्यवाद, महोदया।' कुलदीप एक शांत स्वभाव का व्यक्ति था। वह बहुत कम बोलता था और जब भी रीता बोलने की कोशिश करती, वह असहज हो जाता था, लेकिन फिर भी वह अपनी स्थानीय बोली वाली अंग्रेज़ी में जवाब देता था। संवाद को और आगे बढ़ाने का कोई खास मतलब नहीं दिख रहा था।
'घर।' काफी रात हो चुकी थी और रीटा थकी हुई थी। उसने सोचा कि अगले दिन काम शुरू करना बेहतर होगा।
कुलदीप ने बस सिर हिलाया और गाड़ी को गियर में डालकर बांद्रा की ओर चला दिया।

***

भारत में आपने चाहे जिस भी श्रेणी में यात्रा की हो, हवाई अड्डे से अपने अंतिम गंतव्य तक की कार यात्रा के दौरान, चाहे आप वातानुकूलित कार में हों और खिड़कियां बंद हों, आपके शरीर पर धूल की एक पतली परत जम ही जाती है। रीता ने अपना सामान खोला, कपड़े उतारे और सीधे नहाने चली गई। मोज़े पहने या बिना मोज़े के भी उसकी लंबाई पाँच फुट छह इंच थी, क्योंकि इस समय वह ठंडे पानी की तेज़ धार के नीचे

आराम कर रही थी। उसने कभी खुद को सुंदर नहीं समझा था - और पारंपरिक रूप से वह सुंदर थी भी नहीं - लेकिन वह अच्छी तरह जानती थी कि हर उम्र के पुरुष उसे देखते रह जाते थे। तेज़ चयापचय के कारण, वह अपने खान-पान पर कभी कोई पाबंदी नहीं लगाती थी। तीस साल की उम्र के हिसाब से वह शानदार शारीरिक बनावट में थी; अन्य महिलाओं की तरह, वह भी अपनी सटीक उम्र को लेकर अस्पष्ट थी। जब भी वह एक सप्ताह से अधिक समय तक जिम नहीं जा पाती थी - आमतौर पर किसी बड़े प्रोजेक्ट के बीच में - तो वह घर पर ही कसरत करती रहती थी: शरीर को सुडौल बनाने के लिए हल्का योग सबसे अच्छा था। सांवले रंग का शरीर, जिस पर जरा भी अनावश्यक चर्बी नहीं थी। सपाट पेट, बहुत सुडौल नहीं—बिल्कुल भी ऐसी नहीं कि सामने से दिखाई दे—फिर भी सुडौल शरीर। 56 किलो। और ऊपर से कुदरती देन, एक बेमिसाल कूल्हे। सुंदरता एक राय हो सकती है जो पहले से बनी धारणाओं या परवरिश से प्रभावित हो; कामुकता लगभग पूर्ण थी। कामुक: अगर उसे एक शब्द में परिभाषित करना हो तो यही था।

कहते हैं कि एक महिला की अंतर्ज्ञान शक्ति एक पुरुष से कहीं अधिक होती है। पुलिस प्रशिक्षण और वर्षों के अनुभव को इसमें जोड़ दें तो, यह प्रकृति और परवरिश का एक आदर्श मेल है। और इन सबसे बढ़कर, डीसीपी रीटा फेरेरा एक उच्च कोटि की कर्मठ महिला थीं।

कुलदीप के पास चाबियों का एक गुच्छा था और उसने घर की सफाई करवाकर फ्रिज को ताज़ी ब्रेड, दूध और अंडों से भर दिया था। और बर्फ भी। रीता ने अपना सामान खोला और अपने अपार्टमेंट में घूम-घूम कर उन सभी चीजों को देखने लगी जिन्हें वह बहुत याद कर रही थी। उसका अपार्टमेंट ज्यादातर किताबों और संगीत से भरा हुआ था। और वहीं उसे एक आधी खाली जिम बीम की बोतल मिली।

क्या उसे ऐसा करना चाहिए? क्या उसे ऐसा नहीं करना चाहिए?

उसने कई बार अपने पिता को थप्पड़ खाते, ज़ोर-ज़ोर से हंसते, गुस्सा करते, अतिउत्तेजित और ज़ोर-ज़ोर से बोलते, फिर भावुक होकर माफ़ी मांगते देखा था; सब कुछ एक ही शाम में। वह कभी असभ्य या हिंसक नहीं थे, बस शोर मचाते थे। ये सब स्कॉच के दुष्प्रभाव थे। इसलिए उसने कभी स्कॉच नहीं पी। यह एक महत्वपूर्ण एहतियाती कदम था। उसे बॉर्बन से प्यार था: जिम। सेक्स, झूठ और बॉर्बन।

क्या उसे ऐसा करना चाहिए? क्या उसे ऐसा नहीं करना चाहिए?

अरे यार! यह तो उस तीन महीने की छुट्टी का आखिरी दिन था जो उस पर जबरदस्ती थोपी गई थी।

दो बड़े ड्रिंक्स पीने के बाद वह अपनी नाकाम प्रेम कहानियों में खो गई। आखिर उससे क्या गलती हुई थी? हाँ, उसके कुछ रिश्ते तो चले थे जो कामयाब नहीं हुए थे—किसके नहीं होते?—लेकिन वो इतनी चंचल भी नहीं थी। अभी भी अकेली। ज़िंदगी और प्यार दोनों में एक ही बात लागू होती है: नाकामियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। हार या नुकसान को स्वीकार करो और फिर पुराने और बेकार रिश्तों को तोड़कर अतीत के दरवाज़े को पूरी तरह बंद कर दो।

अब उसे पता चल गया था कि सभी रिश्ते स्वभाव से परिवर्तनशील होते हैं। इसके विपरीत सोचना आपके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। यादें कभी-कभार उमड़ती रहेंगी, लेकिन उन्हें अपने फैसलों या भविष्य को तय करने न दें। आगे बढ़ो रीटा। तुम कोई त्याग नहीं कर रही हो; तुम खुद को आज़ाद कर रही हो। और फिर, उसका दोस्त ऐश मैटल, वही आपराधिक मनोवैज्ञानिक जिसने सीरियल किलर का मामला सुलझाने में उसकी मदद की थी, अगले महीने भारत जा रहा था। वाह! इस सुखद विचार के साथ वह रसोई में गई, दो अंडे तोड़े, उन्हें फेंटा, टोस्ट पर रखा और सो गई।

***

भोर हो रही थी, लेकिन सूरज अभी देर से निकला हुआ लग रहा था; रीता जब जॉगिंग के लिए निकली तब तक सूरज के कोई संकेत नहीं थे। तीन महीने के अवकाश के बाद मुंबई को पहली नज़र में नापसंद करना आसान है - घुटन भरा ट्रैफिक, अनियंत्रित भीड़, दम घोंटने वाली उमस और गर्मी, लेकिन शहर में पहले भी रह चुकी रीता ने महसूस किया कि मुंबई और यहाँ के लोगों से दोबारा कुछ दिन बिताने पर प्यार हो जाना और भी आसान हो जाता है।

कुछ सालों से रीटा ऑफिस में फिटेड शर्ट और जींस ही पहनती थी। और इसका एक कारण था: उसे यूनिफॉर्म पहनने की ज़रूरत नहीं थी और उसे अपने काम के लिए बाकी कपड़े थोड़े असहज लगते थे। उसने अपने बाल छोटे करवा लिए थे - पहले की तरह पोनीटेल बनाने पर कंधे तक लटकते नहीं थे, बल्कि कंधों पर टिके रहते थे। यह सब उस घटना के बाद हुआ जब एक अपराधी का पीछा करते हुए उसने उसके मुलायम, सीधे, भूरे बालों को पकड़ लिया था। ऑफिस से निकलते समय उसने

अपनी हल्के नीले रंग की सूती जैकेट अपने साथ रखी ताकि वह अपनी स्मिथ एंड वेसन पिस्टल को ढक सके, जिसे वह जानती थी कि ऑफिस लौटने पर उसे वापस मिल जाएगी। उसने अपने बालों में उंगलियां फिराईं। छोटे बाल। इतने लंबे तो थे कि उन्हें पकड़ा जा सके, लेकिन हाथ की पहुंच से तो बिल्कुल नहीं।

जब वह अपने अपार्टमेंट से नीचे आई तो कुलदीप पहले से ही उसका इंतजार कर रहा था।

मुंबई पुलिस मुख्यालय क्रॉफर्ड मार्केट नामक एक ऐतिहासिक स्थल के पास स्थित है, जहाँ पुलिस और अपराध शाखा के शीर्ष अधिकारी तैनात हैं। बांद्रा से यह दूरी लगभग तेरह किलोमीटर थी, लेकिन उन्हें वहाँ पहुँचने में पैंतालीस मिनट लग गए। सुबह तड़के शुरू हुई मूसलाधार बारिश के कारण मुंबई का यातायात बुरी तरह जाम हो गया था। जुलाई की बारिश के पानी से सड़कें पूरी तरह भर गई थीं। बारिश अर्जुन के बाणों की तरह बरस रही थी और रुकने का नाम नहीं ले रही थी। विंडशील्ड पर लगातार गिरती बूंदों की गड़गड़ाहट किसी रैप गायक की तरह लग रही थी; वाइपर मुश्किल से ही रास्ता साफ कर पा रहे थे, लेकिन कुलदीप गाड़ी चलाता रहा। रीता सोच रही थी कि कार धीरे-धीरे ट्रैफिक में आगे बढ़ रही है। उसने महसूस किया कि मुंबई, दिल्ली से उतना अलग नहीं है जितना मीडिया हर मौके पर चिल्लाता है। वास्तव में, कोई भी शहर दूसरे से अलग नहीं है: अमीर लोग अपने ड्राइवर वाली कारों में, और आम लोग खराब मौसम में साइकिल, स्कूटर या पैदल ही संघर्ष करते हुए। अमीर और अमीर बनने की चाह रखने वालों के बीच हमेशा से एक अदृश्य रेखा रही है, और हमेशा रहेगी। बेशक, लॉटरी जीतकर आप दूसरी तरफ जा सकते हैं, लेकिन कम भाग्यशाली लोग मजबूरी में किनारे पर ही रहते हैं, क्योंकि अमीरों को उनकी ज़रूरत होती है। आख़िर कौन उनके घर साफ़ करेगा, कपड़े धोएगा, गाड़ियाँ ठीक करेगा, अख़बार या दूध लाएगा या बच्चों को स्कूल ले जाएगा?

अपने विचारों में खोई हुई वह इस बात को जान ही नहीं पाई कि कब वे अपने गंतव्य पर पहुँच गए। उसकी तंद्रा तब टूटी जब कुलदीप ने उसके लिए पीछे का दरवाजा खोला और वह बाहर निकल गई।

'धन्यवाद,' उसने इमारत में प्रवेश करने से पहले कहा। कार्यालय के सामान्य शोरगुल के एक परिचित संगम ने उसका स्वागत किया: फोटोकॉपी मशीनें, टेलीफोन, मोबाइल, कीबोर्ड की खटखटाहट और लोगों की बातचीत। कई लोग चुप हो गए।

इमारत में काम करने वाले अधिकांश लोग उसे जानते थे। आस-पास के लोगों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया और शिष्टाचार का परिचय दिया। इमारत में प्रवेश करने के पंद्रह मिनट बाद वह अंततः लिफ्ट से अपने कार्यालय पहुंची।
चूंकि वह जल्दी आ गई थी, इसलिए उसकी टीम का कोई भी सदस्य - उसकी पुरानी टीम, जिसकी वह कमान संभालती थी - अभी तक नहीं आया था। उसकी कॉफी मशीन महीनों से चालू नहीं थी, इसलिए उसने पास की वेंडिंग मशीन से एक कॉफी ली और ऊपर की मंजिल पर स्थित विनय जोशी के कार्यालय की ओर तेज़ी से चल पड़ी।

2
Two

मुंबई पुलिस के संयुक्त आयुक्त और अपराध शाखा के प्रमुख विनय जोशी उतने विनम्र नहीं थे जितना वे दिखते थे या लोगों का नेतृत्व करते थे।
विश्वास करना मुश्किल था, जिसका पता रीता को पिछले मामले में उससे निपटने के बाद ही चला था। वह अपने आस-पास के लोगों को यह विश्वास दिलाता था कि वे प्रभारी हैं, लेकिन उसे नरम दिल समझना नामुमकिन नहीं था। वह अपने अधीनस्थों को अधिकार सौंप देता था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेता था। सौम्य और गंजेपन से ग्रस्त, वह अगली टिनटिन फिल्म में हर्गे के प्रोफेसर कैलकुलस की भूमिका आसानी से निभा सकता था। एकमात्र स्पष्ट अंतर यह था कि जोशी अपने व्यंग्यचित्रित जुड़वां से काफी लंबा था।
'तो, डीसीपी फरेरा कैसे हैं?' उन्होंने बेपरवाही से पूछा, अपनी डेस्क के पीछे से उठकर रीता के पास गए और अभिवादन समाप्त होने के बाद उनसे हाथ मिलाया। 'आराम से, रीता।' वह हमेशा अपनी सुविधा के अनुसार उन्हें कभी रीता तो कभी डीसीपी फरेरा कहकर पुकारते थे।
मैं ठीक हूँ, धन्यवाद। आप कैसे हैं?
'हम सब ठीक हैं। हालांकि हमें आपकी बहुत याद आई। सच में।'

क्या तुम्हें मेरी याद आई? सच में? या फिर उस अनसुलझे मामले की वजह से तुम्हें मेरी याद आई?
'अच्छा हुआ कि आप वापस आ गए हैं और किसी काम में व्यस्त नहीं हैं, वरना कमिश्नर सक्सेना मुझसे कोई एहसान मांग लेते और अगर आप इस समय किसी और काम में लगे होते तो आपके खिलाफ फरमान भी जारी कर देते।'
'यह कौन सा मामला है, महोदय?'
'हालांकि कमिश्नर सक्सेना आपको व्यक्तिगत रूप से जानकारी देना चाहते थे, लेकिन वे आज यहां नहीं हैं, इसलिए दुर्भाग्यवश आपको मेरी साधारण आवाज़ ही सुननी पड़ेगी।' जोशी ने बीच-बीच में हास्य का प्रयास किया। 'वे चाहते हैं कि आप एक अंतरराष्ट्रीय जांच में शामिल हों। कुछ महीने पहले ब्रुसेल्स में चोरी और हत्या का मामला हुआ था, और वहां के जांचकर्ताओं का मानना है कि अपराधी भारत में है। मुंबई में।'
'मैं क्यों?'
'आप हमारे सर्वश्रेष्ठ जासूस हैं, भारत के सर्वश्रेष्ठ जासूस हैं, और यह बिल्कुल उचित है कि इस विशेष चुनौती को आप ही स्वीकार करें।'
तो, अगर मैं असफल होता हूँ तो मेरी गलती होगी; अगर मैं सफल होता हूँ तो आप प्रायोजक होंगे? चालाक, आकर्षक। शानदार चाल।
'क्या आपको इस मामले में कोई समस्या या दिक्कत नजर आती है?'
'क्या मुझे कोई समस्या है? बिलकुल नहीं महोदय। यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि कमिश्नर सक्सेना और आपने मुझ पर भरोसा करके मुझे एक चुनौतीपूर्ण कार्यभार सौंपा है।'
'लेकिन...?'
'लेकिन क्या महोदय?'
'नहीं, आपकी आवाज़ के लहजे से मुझे हल्का सा 'लेकिन' का संकेत मिल गया, भले ही आपने मौखिक रूप से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया हो। तो बताइए, इस मामले में आपको क्या बात परेशान कर रही है?'
'हत्या की जांच - आप यह मुझसे ज्यादा जानते हैं, महोदय - समय की ढलान पर बर्फ की तरह होती है। भले ही आपने अड़तालीस घंटे खो दिए हों, आपको कुछ नहीं मिलता, और आपने अभी-अभी जिक्र किया कि हत्या कुछ महीने पहले हुई थी?'

'ठीक कहें तो, लगभग तीन महीने पहले की बात है, लेकिन ये सब बातें नौसिखियों के लिए हैं। देखो रीटा, मुझे तुम इसलिए पसंद हो क्योंकि तुम मुझे अपने बचपन की याद दिलाती हो, जब मैं नई-नई चुनौतियों का सामना करता था। मुझे लगता है कि हम दोनों एक ही जैसे हैं, जैसा कि कहते हैं।'

रीता ने गहरी सांस ली और सिर हिलाया। क्या उसे किसी मुसीबत में फंसाया जा रहा था? लेकिन, कमिश्नर संजय सक्सेना को गैरमौजूदगी में सेक्सी कहा जाता था, मज़ाक में नहीं, बल्कि व्यंग्य से: सेक्सी — या जोशी ऐसा क्यों करेंगे? ऐसा नहीं था कि वह उन्हें किसी भी तरह से धमका रही थी। इसके विपरीत, कुख्यात सीरियल किलर की गिरफ्तारी के बाद के महीनों में, सेक्सी ही उसका सबसे बड़ा सहारा था। उसने लगभग हर चीज़ में उसका साथ दिया था। तो फिर अब वह उसे असफलता की ओर क्यों धकेल रहा है? और जोशी भी इसमें उसका साथ क्यों दे रहा है?

'अगर आप मेरी सलाह लें तो यह एक महत्वपूर्ण मामला है। इससे आपको एक अंतरराष्ट्रीय मामले से जुड़ने का अवसर मिलेगा - हममें से कई लोगों को यह मौका कभी नहीं मिला - और हालांकि यह कोई लोकतंत्र नहीं है, जहां उम्मीदवारों को मामले स्वीकार करने या अस्वीकार करने की छूट होती है, लेकिन अगर आप अपनी हालिया रिकवरी के कारण इस मामले को छोड़ना चाहते हैं... तो यकीन मानिए इसे अवज्ञा नहीं माना जाएगा।' जोशी का लहजा किसी पर्यवेक्षक की तरह उपदेशात्मक नहीं था; यह चेतावनी भरा भी नहीं था, बल्कि सलाह देने वाला था।

'बस मुझे ब्रेक के तुरंत बाद इतने महत्वपूर्ण मामले की उम्मीद नहीं थी। बेशक, मैं इसे स्वीकार करता हूँ।'

'वो मेरी बो...गर्ल है।'

दुनिया भर में हमेशा से पुरुषों का काम माने जाने वाले इस पेशे में एक महिला होने के नाते, रीता को अक्सर लड़का/पुरुष कहकर पुकारा जाता था। कम से कम जोशी ने तो शालीनता से अपनी गलती सुधार ली थी।

'मैं कब शुरू करूँ?'

'सोमवार।'

रीटा को अपनी लंबी छुट्टी के दौरान दिनों की परवाह नहीं थी; उसे यह सोचने में थोड़ा समय लगा कि आज कौन सा दिन है। आज शुक्रवार था।

'तुम्हारा मतलब है...'

'जी हां, आने वाले सोमवार को। ब्रुसेल्स से एक जासूस हमें जानकारी देने आ रहा है, और मैं चाहता हूं कि आप शुरू से ही मौजूद रहें।'
'जी सर।' रीटा उठने के लिए झुकी।
क्या आपको जल्दी है?
'नहीं सर, मुझे लगा कि यही आखिरी है। मुझे माफ कीजिए।' उसने कुर्सी पर वापस बैठकर अपना पिछवाड़ा जमा लिया।
'आपकी नियमित टीम, विक्रम और जतिन, आपको रिपोर्ट करेंगे। इस समय हमें यह निश्चित नहीं है कि और किन लोगों की आवश्यकता होगी, लेकिन जरूरत पड़ने पर हम और टीम सदस्य शामिल कर लेंगे। आप सीधे श्री सक्सेना को रिपोर्ट करें। यदि आपको प्रशासनिक कार्यों में किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो मैं यहाँ उपस्थित रहूँगा, और मैं वर्दीधारी पुलिस को सभी प्रकार की सहायता और समर्थन प्रदान करने का निर्देश दूँगा। कमिश्नर सक्सेना और मुझे पूरा विश्वास है कि आप एक बार फिर सफल होंगे, डीसीपी फरेरा।'
'आपके भरोसे के लिए धन्यवाद महोदय। लेकिन, जैसा कि कहते हैं, परिणाम देखने के लिए पासा पलटना पड़ता है।'
'मुझे पता है कि तुम ज्यादातर लोगों से बेहतर पासा फेंक सकते हो। कोई सवाल?'
'बिल्कुल नहीं महोदय, धन्यवाद।'
'रीटा, आपको शुभकामनाएं। मैं कल ऑफिस में नहीं रहूंगा, लेकिन अगर आपके कोई सवाल हों तो आप बेझिझक मुझे मेरे मोबाइल पर कॉल कर सकती हैं। कमिश्नर सक्सेना को आज किसी जरूरी काम से छुट्टी लेनी पड़ी है, लेकिन वे अगले हफ्ते ऑफिस लौट आएंगे।'
सेक्सी का छुट्टी लेना मतलब गोल्फ कोर्स पर उसका व्यस्त होना तय था। गोल्फ कोर्स पर सेक्सी का होना मतलब किसी ऐसे व्यक्ति के साथ खेलना जो समाज के बड़े-बड़े लोगों में शुमार था। वह वर्दी में एक शालीन राजनेता था, एक कुशल गोल्फर। रीटा को पूरा यकीन था कि वह किसी अंतरराष्ट्रीय मामले में अपने किसी शिष्य को भेजने का दावा जरूर करेगा, क्योंकि किसी और में इतनी प्रतिभा नहीं थी। उसकी अपनी उन्नत शब्दावली के शब्दों में कहें तो, वह अपनी शान-शौकत के चरम पर होगा।

***

जब रीता अपने दफ्तर लौटीं तो उनके एक खास सहायक उनकी डेस्क के आगंतुकों

वाले हिस्से में बैठे थे। वरिष्ठ निरीक्षक विक्रम पाटिल, जिनकी उम्र लगभग पैंतीस वर्ष थी, रीता के बाद दूसरे नंबर पर थे। उन्हें पुलिस में अधिक अनुभव था, लेकिन राज्य पुलिस अधिकारी होने के कारण उनका पद छोटा था। रीता के तबादले या पदोन्नति होने पर उनकी जगह लेना उनकी ख्वाहिश थी, और पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने जो साहस दिखाया था, उसे देखते हुए यह पद उनके लिए कोई गलत या अनुचित विकल्प नहीं था। हालांकि वे रीता की तरह आकर्षक नहीं थे, लेकिन चुस्त-दुरुस्त, छह फुट एक इंच लंबे, मजबूत और फुर्तीले थे।

'आपका फिर से स्वागत है, महोदया।' विक्रम खड़ा हुआ। उसने अभिवादन किया।

'धन्यवाद विक्रम। आप कैसे हैं?'

'मैं ठीक हूँ, महोदया। आपको वापस देखकर अच्छा लगा।'

'तो आप फिलहाल किस प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं?'

'कुछ खास नहीं, बस मेरे पिछले मामले से संबंधित कागजी कार्रवाई और कुछ अदालती सुनवाई।'

'अच्छा। आपको जो भी काम पूरा करना है, कृपया उसे पूरा करें या किसी और को सौंप दें। हमारे पास एक महत्वपूर्ण मामला है। जतिन कहाँ है?'

जतिन उनका दूसरा सबसे भरोसेमंद अधीनस्थ था। परिस्थितियोंवश उनसे उनका अलगाव थोड़ा कठोर रहा, लेकिन बाद में, पीछे मुड़कर देखने पर, जतिन ने उन कारणों की सराहना की। उन्होंने गोवा में रीता को फोन किया और जोर देकर कहा कि वह अब भी उनके लिए काम करना चाहते हैं और उनकी टीम का हिस्सा बनना चाहते हैं।

'वह छुट्टी पर हैं, महोदया। वह सोमवार को वापस आएंगे। यह कौन सा मामला है जिसके बारे में आपको पहले से ही पता है, और मुझे अभी तक इसकी कोई जानकारी नहीं है?'

बेल्जियम में एक हत्या हुई है। यह हत्या कुछ महीने पहले हुई थी और बेल्जियम पुलिस को ऐसे सबूत मिले हैं जिनसे उन्हें लगता है कि अपराधी मुंबई में हैं, इसलिए वे सोमवार को ब्रीफिंग के लिए यहां आ रहे हैं। हम आगे की जानकारी वहीं से लेंगे।

'बस इतना ही?'

'दुर्भाग्यवश, फिलहाल मुझे बस इतना ही पता है।'

'ठीक है। तो मैं सोमवार से पहले सब कुछ ठीक करवा दूंगा, महोदया। और मैं किसी

को आपकी कॉफी मशीन साफ करने और उसमें कॉफी भरने के लिए भेज दूंगा।'
'क्या कैफीन की कमी के लक्षण इतने स्पष्ट हैं?' उसने पलटकर जवाब दिया। 'खैर, कृपया ऑपरेशन रूम तैयार कर दीजिए।'
ऑपरेशन रूम को अपराध दस्ते द्वारा निपटाए जाने वाले किसी भी मामले के लिए स्थापित किया गया था। समय के साथ-साथ जैसे-जैसे मामला आगे बढ़ता गया, यह सभी सबूतों, सूचनाओं का भंडार और टीम की बैठकों के लिए निर्धारित स्थान बन गया।

***

ऑफिस से निकलने से पहले, रीटा ने एक स्मिथ एंड वेसन पिस्टल पर हस्ताक्षर किए और उसकी जांच की। यह वह पिस्टल नहीं थी जिसे उसने छुट्टी पर जाने से पहले जमा कराया था। उसे एक 2213 कॉम्पैक्ट पिस्टल मिली। छोटी, जिसमें तेज़ झटका नहीं लगता था, लेकिन प्रभावी थी। बिल्कुल नई नहीं थी, न ही जंग लगी हुई थी। पिस्टल उठाना मुश्किल नहीं था, लेकिन वह जानती थी कि उसे फायरिंग रेंज जाकर नई पिस्टल को आज़माना होगा। वह कभी भी उस हथियार पर भरोसा नहीं कर सकती थी जिसे उसने चलाया न हो। पुलिस या सशस्त्र बलों में कोई भी ऐसा नहीं करता। आप नहीं चाहते कि आपको अचानक कोई अप्रत्याशित घटना का सामना करना पड़े। रीटा ने अभ्यास रेंज में बुकिंग कराने के लिए फोन करने और जितनी जल्दी हो सके, संभवतः सप्ताहांत में वहाँ जाने का मन बना लिया।

3
Three

सोमवार सुबह मुंबई पहुंचे बेल्जियम के जासूस विक्टर डी स्मेट, दिग्गज हरक्यूल पोइरोट से बिलकुल अलग थे।
हालांकि उनमें उस मशहूर किरदार की तरह गठीला शरीर और चलने का लहजा था। पोइरोट की मूंछें हटा दें और सिर पर सीधे सुनहरे बाल जोड़ दें, जो एक तरफ से मांग निकाले हुए हों, तो वही विक्टर थे। देखने में अच्छे लगते थे और अपनी लहजे वाली

अंग्रेज़ी में धीरे और सलीके से बोलते थे। वे नए बने ऑपरेशन रूम में रीता और विक्रम से मिले। जतिन अभी तक ऑफिस में नहीं आए थे; उन्होंने एक संदेश भेजकर माफी मांगी थी क्योंकि दुबई से उनकी फ्लाइट लेट हो गई थी, इसलिए वे लंच के बाद ही आ पाएंगे। हाथ मिलाए, परिचय हुआ, कुछ शिष्टाचार की बातें हुईं और तीनों काम पर लग गए।

विक्टर ने बताया कि रॉन जोगानी अज्ञात मूल्य के हीरे ले जा रहा था—निश्चित रूप से पुलिस को उसके होटल के कमरे में मिली रसीद से कहीं अधिक—और उसकी हत्या कर दी गई। उसका शव, ठंडा और अभी तक लावारिस, बेल्जियम के मुर्दाघर में पड़ा था। ब्रुसेल्स स्थित भारतीय दूतावास के माध्यम से कई प्रयास किए जाने के बावजूद, कोई भी उसे लेने के लिए आगे नहीं आया था। जाहिर तौर पर, रॉन जोगानी का कोई परिवार नहीं था: न माता-पिता, न भाई-बहन, न ही जीवनसाथी। उसकी पूर्व पत्नी ने सभी अनुरोधों को दृढ़ता से अस्वीकार कर दिया था; वह "रॉन" से—चाहे वह जीवित हो या मृत—कोई संबंध नहीं रखना चाहती थी। उसके शव की पहचान उसके परिजनों द्वारा नहीं की गई थी, जो कि दुनिया भर में कानूनी रूप से स्वीकृत मानक प्रक्रिया है; उसके होटल के कमरे में मिले दस्तावेजों से उसकी पहचान स्थापित हो गई थी।

बेल्जियम पुलिस ने लियोनार्ड आरोन—एंटवर्प के उस व्यापारी, जिसने जोगानी की जान लेने वाले हीरे बेचे थे, और उस ड्राइवर, जिसने जोगानी को होटल तक छोड़ा था —की गहन जांच की थी। दोनों निर्दोष पाए गए थे।

जोगानी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शायद ही कोई हैरानी की बात थी, सिवाय इसके कि किसी को यह जानने की जिज्ञासा हो कि मरने से पहले उन्होंने कौन-कौन सी बीयर और सैंडविच का आनंद लिया था। मौत नज़दीक से गोली लगने से हुई थी। बस इतना ही।

विक्टर ने भारतीय जासूसों को अपनी बताई हुई सारी बातें समझने के लिए कुछ देर के लिए विराम लिया।

'जांच के शुरुआती दौर में हमें पूरा यकीन था कि अंदर का कोई व्यक्ति—मेरा मतलब होटल स्टाफ से है—इसमें शामिल था, ऐसा होना ही था। इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं दिख रहा था। आखिर कोई सुरक्षा कैमरों को कैसे चकमा दे सकता है और जोगानी की होटल बुकिंग के बारे में कैसे जान सकता है? कमरे के नंबर आमतौर पर मेहमान के चेक-इन करने की सुबह ही आवंटित किए जाते हैं। और हत्यारे या हत्यारों

को जोगानी के होटल पहुंचने से पहले ही कमरे का नंबर पता था। उनके पास कमरे की चाबी थी। उन्होंने टेलीफोन लाइन को इंटरसेप्ट करके जोगानी को आधी रात को किया गया कॉल ऐसा दिखाया जैसे वह रिसेप्शन से आया हो। लेकिन हमें कुछ भी नहीं मिला, और हमने पूरे होटल स्टाफ की जांच की... उनमें से हर एक से पूछताछ की गई, पूछताछ की गई और सभी निर्दोष पाए गए। हमें समझ नहीं आ रहा कि यह सब कैसे हो सकता है।' विक्टर ने निराशा में अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिए।
रीटा तब तक रुकी रही जब तक वह चुप नहीं हो गया। 'किसी तरह अपराध स्थल के हालात देखकर ऐसा नहीं लगता कि यह सुनियोजित हत्या थी। बेशक, अपराधी या अपराधियों को हीरों के बारे में पता था - भला कोई होटल के कमरे में सेंध क्यों लगाएगा? - लेकिन निर्मम हत्या एक बिल्कुल अलग अपराध है। अधिकांश मनुष्य किसी दूसरे को मारने की योजना तब तक नहीं बनाते जब तक कि कोई विशेष मकसद न हो।'
'तो फिर जोगानी की हत्या क्यों की?'
रीटा को इस सवाल का पहले से ही अंदाजा था।
'रनवे के अंत में पायलट के पास केवल एक ही विकल्प होता है - जब तक कि वह आत्महत्या करके सभी यात्रियों को भी अपने साथ न ले जाना चाहे - और वह विकल्प है हवा में उड़ान भरना। अगर जोगानी ने हत्यारों को देख लिया होता या उन्हें रोक लिया होता, तो उनके पास जोगानी को मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता।'
'इसे कहने का यह एक दिलचस्प तरीका है,' विक्टर ने कहा।
'लेकिन यह अभी भी एक सिद्धांत है और इसमें अभी भी बहुत अनिश्चितता है...' रीटा ने अनुमान लगाया। 'लेकिन फिर भी, सभी जांच एक सिद्धांत से ही शुरू होती हैं। समय के साथ यह सिद्धांत सही साबित हो सकता है। फिर शायद सबूत यह भी बता दें कि दिशा पूरी तरह से गलत थी। लेकिन हमें कहीं न कहीं से तो शुरुआत करनी ही होगी।'
विक्टर ने तर्क पर सहमति जताते हुए सिर हिलाया।
'तो, श्री डी स्मेट...'
'मुझे लगता है कि हमें औपचारिकताएं छोड़ देनी चाहिए। मुझे विक्टर कहो।'
'इसी प्रकार विक्टर।'
'तो, तीन महीने से अधिक समय बीतने के बाद बेल्जियम पुलिस ने यह कैसे निर्धारित

किया कि जोगानी का हत्यारा भारत में हो सकता है?'
'बहुत अच्छा सवाल। दरअसल, मुझे इसकी उम्मीद पहले से ही थी। हमें होटल से वीडियो फुटेज मिल गया है। देखिए, जिसने भी यह सब रचा था, उसने हर चीज की योजना बना रखी थी। उन्होंने मुख्य कंट्रोल रूम से जुड़े लगभग सभी होटल कैमरों को फ्रीज कर दिया और एक ऐसी फिल्म चलाई जो मूल रूप से पिछली रात की थी। जब हमने दोनों फुटेज की तुलना की तो वे बिल्कुल एक जैसी थीं...'
'तो फिर आपको यह फुटेज कैसे मिली?' विक्रम ने उत्सुकता से पूछा।
'जैसा कि मैंने लगभग सभी को बताया, लिफ्ट में एक छिपा हुआ कैमरा था जो कंट्रोल रूम से जुड़ा नहीं था। दरअसल, होटल के कर्मचारियों को भी इसके बारे में पता नहीं था। लेकिन होटल चेन के केंद्रीय कार्यालय, जिसने इसे लगाया था, ने इसे हमें जारी किया। हम हफ्तों से इसका विश्लेषण कर रहे हैं। मेरे पास इसकी एक कॉपी है, क्या हम फुटेज चलाएँ?' विक्टर ने अपने बैग से एक सीडी निकाली और विक्रम को दे दी, जिसने उसे कंप्यूटर में डाला और स्क्रीन को थोड़ा झुकाया ताकि तीनों देख सकें।
जॉर्ज ईस्टमैन के आविष्कार की एक छिपी हुई झलक, भले ही चलती-फिरती तस्वीरों में, लिफ्ट में कारगर साबित हुई। निगरानी कैमरा स्पष्ट रूप से काफी ऊंचाई पर लगा था और अधिकांश तस्वीरें थोड़ी धुंधली थीं। कैमरे के टाइम काउंट से साबित हुआ कि तस्वीरें उसी समय सीमा में ली गई थीं जिसे बेल्जियम पुलिस ने हत्या का समय माना था। बेल्जियम पुलिस ने तस्वीरों को बड़ी कुशलता से एडिट किया था, ज़ूम और ज़ूम करके एक फ्रेम से एक परफेक्ट 6 x 8 कैंडिड शॉट तैयार किया था।
हालांकि, अगर आप यह तस्वीर सौ लोगों को दिखाते हैं, तो शायद केवल पचास लोग ही इस बात से सहमत होंगे कि वह व्यक्ति भारतीय था।
रीता और विक्रम ने तस्वीर देखी।
रीटा की नज़र में वह एक बेहद आकर्षक व्यक्ति था।
तस्वीर से पहचान में मदद मिलेगी। लेकिन पहचान करने के लिए पहले उस व्यक्ति को ढूंढना होगा। वह कौन था? रीटा के दिमाग में कई सवाल उठने लगे थे।
'हमारी खुफिया जानकारी और हमारी सरकार की ओर से इस बात के लिए हार्दिक माफी कि हमने प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया और शुरुआत में भारतीय सरकार से उचित अनुमति के बिना जांच की, उस व्यक्ति का पता लगाने में असमर्थ रही है,

इसलिए हमें आपकी मदद की आवश्यकता है। हमारे विशेषज्ञों का अनुमान है कि इन तस्वीरों में दिख रहा व्यक्ति पुरुष है, जिसकी लंबाई 6'2 या 6'3" है, वजन लगभग 100 किलोग्राम है और उसके सिर पर सीधे काले बाल हैं - तस्वीरें इतनी धुंधली हैं कि बालों का सटीक रंग पहचानना मुश्किल है, लेकिन कौन जानता है कि उसने विग तो नहीं पहनी थी?'

और उसके पास एक ब्लैकबेरी फोन था।

'रीटा, मैं आपकी पैनी नजर की तारीफ करना चाहूँगा। जी हाँ, उसके हाथ में एक ब्लैकबेरी ही है।'

'धन्यवाद विक्टर। हालांकि, केवल इस फुटेज को देखकर यह निश्चित नहीं कहा जा सकता कि यह व्यक्ति भारतीय है। मेरा मतलब है... वह दक्षिणी यूरोप, उत्तरी अफ्रीका या यहां तक कि मध्य पूर्व का कोई भी हो सकता है।'

विभिन्न नस्लों के बीच पहचान की स्थिति बेहद निराशाजनक होती है। किसी भारतीय गवाह से किसी गोरे, अफ्रीकी या दक्षिण-पूर्व एशियाई व्यक्ति के बारे में पूछिए, तो वे असमंजस में पड़ जाएंगे। क्या किसी गोरे व्यक्ति के लिए किसी भारतीय को पहचानना उतना ही मुश्किल नहीं होगा? क्या ऐश मैटल ने उन्हें यह नहीं बताया था कि ब्रिटेन में सेलिब्रिटी बिग ब्रदर जीतने के बाद हर भारतीय लड़की ब्रिटिश लोगों को शिल्पा शेट्टी जैसी लगने लगी थी?

'रीटा, तुम्हारी बात सही है, लेकिन ये फुटेज मिलने के बाद होटल के फ्रंट डेस्क कर्मचारियों ने पुष्टि की कि उन्होंने उस व्यक्ति को देखा था, उससे बात की थी और उसकी पहचान एक भारतीय के रूप में हुई थी। आखिर, उन्होंने ही तो उसका चेक-इन कराया था। वो इससे बच नहीं सकता था। उसने चेक-इन के लिए इस नाम का इस्तेमाल किया था...' विक्टर ने पन्ने पलटते हुए कहा... 'शिशिर सिंह।' उसने कागज़ात रीटा को दे दिए।

रीता ने कुछ मिनट तक उन्हें देखा और फिर विक्रम को सौंप दिया।

विक्रम ने कागजात देखे। 'अब मुझे समझ में आ रहा है कि आप यहां क्यों हैं।'

'मुझे खुशी है कि आप दोनों मुझसे सहमत हैं। अब, हम इस आदमी को कैसे ढूंढें?'

'एक मिनट रुकिए। अगर हम इस बात से सहमत भी हो जाएं कि वह भारतीय मूल का है, तो क्या इसका यह मतलब है कि वह व्यक्ति भारत में रहता है?'

'खैर, हवाई अड्डे के अधिकारियों ने हमें अपने निगरानी टेप भी दे दिए हैं। चलिए पहले

उन्हें देख लेते हैं।'
शिशिर सिंह जैसा दिखने वाला व्यक्ति कैमरे में एक पल के लिए ही दिखा और फिर अचानक गायब हो गया। हवाई अड्डे पर लगे किसी भी अन्य निगरानी कैमरे ने उसे दोबारा नहीं पकड़ा। एकमात्र बार कैमरे में जो दिखा, उसमें उस व्यक्ति की लंबाई और शारीरिक बनावट शिशिर सिंह जैसी ही थी, इसलिए यह संभावना बनी। उस व्यक्ति ने बेसबॉल कैप पहन रखी थी, जिसका पर्दा उसने सावधानी से नीचे खींच रखा था, लगभग उसकी नाक को ही ढक रहा था। हवाई अड्डे के कैमरे 360 डिग्री पर काम करते हैं। वे इस तरह घूमते हैं कि हर पंद्रह सेकंड में एक ही जगह को कवर करते हैं। केवल एक संक्षिप्त समय के लिए ही शिशिर सिंह को तब पकड़ा गया जब वह चेक-इन डेस्क पर गया था। यह स्पष्ट था कि उस व्यक्ति को हवाई अड्डे के कैमरों की स्थिति का भी पता था। किसी भी कैमरे को चकमा देने के लिए आपको कैमरों की स्थिति और उनकी गतिविधियों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। शिशिर सिंह को सीसीटीवी के ब्लाइंड स्पॉट की अच्छी जानकारी थी। इसके अलावा कोई और तरीका नहीं था। उसकी खोज के लिए उसे पूरे अंक दिए जाने चाहिए।
'जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, तस्वीर धुंधली और अस्पष्ट थी, लेकिन हमारे विशेषज्ञों ने इसे ज़ूम और ज़ूम करने के बाद तुलना की और सांख्यिकीय रूप से पुष्टि की कि तस्वीर उसी व्यक्ति की थी जो लिफ्ट में था,' विक्टर ने छोटा वीडियो समाप्त होने के बाद कहना शुरू किया। 'इसके अलावा, हमारे हवाई अड्डे के अधिकारियों ने पुष्टि की कि शिशिर सिंह नाम का एक व्यक्ति हत्या के अगले दिन सुबह ब्रुसेल्स से मुंबई के लिए उड़ान भरी थी। यह वही उड़ान थी जिसमें श्री जोगानी ने टिकट बुक किए थे। शायद, अगर वह होटल में हीरे प्राप्त करने में विफल रहा होता, तो उसने उन्हें कहीं और ले जाने की योजना बनाई होती। कौन जानता है?'
'ठीक है, यह संयोग कुछ ज़्यादा ही है, इसे स्वीकार करना मुश्किल है। अगर शिशिर सिंह मुंबई गए थे, तो बात यहीं खत्म होती है...'
'उन्होंने योजना पर ठीक से विचार नहीं किया था। व्यापारियों से हीरे चुराकर उन्हें भारत में वापस कैसे बेचा जा सकता है?' विक्रम ने सवाल किया।
रीटा इसे समझा सकती थी लेकिन उसने विक्टर को ही समझाने दिया।
'हमारे अनुभव के अनुसार, कलाकृतियाँ, प्राचीन वस्तुएँ, संग्रहणीय वस्तुएँ या कीमती पत्थरों जैसी वस्तुएँ, जिनकी कीमत एक निश्चित सीमा से अधिक होती है, बिकने के

बाद ही चोरी होती हैं। खरीदार पहले से ही वहाँ मौजूद होता है। श्री जोगानी के शव को हमारी पुलिस द्वारा बैग में पैक करके और उस पर टैग लगाकर होटल से बाहर निकालने से पहले ही हीरे बिक चुके होते। खरीदार ने बेशक खून से सने हीरे नहीं मंगवाए थे, लेकिन सौदा तय होने के समय हत्या के बारे में किसे पता होता?'
यह परिकल्पना तर्कसंगत थी।
'और वैसे भी, हीरे बेचने की चिंता इनाम के आगे फीकी पड़ जाएगी,' रीटा ने अधिक तर्कसंगत ढंग से समझाया। 'और मुझे पता है कि यह केवल एक अनुमान है, लेकिन मेरी राय में यह एक सोची-समझी परिकल्पना है।'
'दरअसल, यह महज एक परिकल्पना से कहीं अधिक है, क्योंकि उस चोरी में चुराए गए हीरों में से एक हीरा एंटवर्प में फिर से मिला, और उस हीरे का मूल स्थान मुंबई बताया गया। इसलिए, उनमें से कुछ हीरे कम से कम एक बार हाथ बदल चुके हैं।'
विक्रम ने पूछा, 'क्या आखिरी बिक्री का पता लगाने और फिर मुंबई में इसके मूल तक पहुंचने के लिए श्रृंखला में पीछे की ओर काम करने का कोई तरीका नहीं है?'
'नहीं।' विक्टर ने सिर हिलाते हुए कहा। 'हीरे का व्यापार आपकी कल्पना से कहीं अधिक गोपनीय है: पता नहीं क्यों, इसे लगभग उतनी ही गोपनीयता दी जाती है जितनी मादक पदार्थों के व्यापार को। खैर, इन सब बातों को छोड़ दें तो हमने कोशिश तो की, लेकिन कुछ हासिल नहीं हुआ। खोज व्यर्थ रही।'
'आप हमसे आगे कैसे बढ़ने की उम्मीद करते हैं?' रीटा ने पूछा।
'जैसा कि मैंने पहले बताया, सबसे पहले हमें श्री जोगानी के कार्यालय, घर, दोस्तों से संपर्क करना होगा और शिशिर सिंह का पता लगाना होगा, तभी हम आगे बढ़ सकते हैं। चूंकि हत्या एक होटल में हुई है, जो एक सार्वजनिक स्थान है, आप कल्पना कर सकते हैं कि हमने अन्य किसी भी मामले की तुलना में कहीं अधिक उंगलियों के निशान - गुप्त, मुद्रित और स्पष्ट - एकत्र किए हैं जिनमें मैं शामिल रहा हूं। हमने होटल के सभी कर्मचारियों और फाइल में मौजूद सभी लोगों को जांच से बाहर कर दिया है, लेकिन जब तक हमें कोई मिलान नहीं मिल जाता, तब तक शेष जानकारी अनुपयोगी है।'
विक्टर सही था। होटल के कमरे में उंगलियों के निशान ढूंढना हमेशा से ही मुश्किल काम रहा है, क्योंकि कमरे में पहले कई लोग रह चुके होते हैं और वहां की चीज़ों, उपकरणों, दीवारों, फिटिंग्स वगैरह को छू चुके होते हैं। और फिर, चाहे वो उंगलियों के

निशान हों, बाल हों, खून हो, त्वचा के अवशेष हों, सबूत अपने आप में बेअसर होता है। जब तक उसे ढूंढा न जाए, उसका कोई खास महत्व नहीं होता। एक बार मिल जाने पर—जैसा कि विक्टर की टीम ने किया था—उसे अपराध स्थल से बरामद करके उसकी प्रामाणिकता की जांच की जानी चाहिए थी, जो रीता को होटल के कमरे में संभव नहीं लग रहा था। फिर भी, अगर कुछ मिल भी जाता, तो कोई न कोई ऐसी चीज़ या व्यक्ति तो होना चाहिए जिससे उसकी तुलना की जा सके। तभी जांचकर्ताओं को कोई दिशा मिल सकती थी। वरना, खून की एक बूंद तो बस खून की एक बूंद ही होती है। फिर भी, रीता को पूरा यकीन था कि घुसपैठिया—शिशिर सिंह या जो भी हो—ऐसा कोई सबूत नहीं छोड़ेगा जिससे उसकी पहचान हो सके। पूरी घटना वाकई एक सुनियोजित ऑपरेशन थी। और जिसने भी इसकी योजना बनाई थी, उसमें इतनी बुद्धि तो थी ही कि वह समझ सके कि पुलिस सबसे पहले हत्या या चोरी जैसे अपराधों की ही तलाश करेगी।

'गवाह? एक भी नहीं,' विक्टर ने निष्कर्ष निकाला।

'अगर शिशिर सिंह मुंबई में है, तो हम उसे ढूंढ निकालेंगे - यह आसान नहीं होगा, लेकिन असंभव भी नहीं है।'

बिना किसी वादे के उचित आश्वासन तो मिल गया, लेकिन इस स्तर पर रीटा और क्या गारंटी दे सकती थी?

'आपके दिखाए गए भरोसे के लिए धन्यवाद। आपको हमसे क्या चाहिए?'

विक्रम ने पूछा, 'क्या हमें इस निगरानी कैमरे की फुटेज और तस्वीरों की एक प्रति मिल सकती है?'

रीता विक्रम को जब से जानती थी, तब से वह एक बेहद मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ और एकाग्र अधिकारी था। उसकी बातों से ऐसा लग रहा था मानो वह इस मामले में पूरी तरह से रम चुका हो।

'ज़रूर... हमने हर चीज़ की एक कॉपी बना ली है, आप उन्हें रख सकते हैं।' विक्टर ने अपना केस दोबारा खोला और एक लाल बॉक्स वाली फाइल निकाली - जिस तरह से उसने भारी फाइल उठाई, रीता समझ गई कि उसका वज़न बहुत ज़्यादा होगा - और उसे मेज़ पर रख दिया। न तो रीता और न ही विक्रम ने उसे लेने की जल्दी की। वह उनके बीच एक अनाथ की तरह पड़ी रही। इतनी जल्दी क्या थी? फाइल अब उनके पास थी और वे जब चाहें उसे पढ़ सकते थे। 'मुझे पता है कि फाइल पढ़ने पर आपके

मन में सवाल उठेंगे,' विक्टर ने आगे कहा, '...और फुटेज और तस्वीरें कुछ बार देखने पर भी, इसलिए अगर आप कुछ पूछना या चर्चा करना चाहें तो मैं गुरुवार तक मुंबई में हूँ, फिर मुझे वापस लौटना होगा। हालांकि, अगर आपको मेरी ज़रूरत हो तो मैं चौबीसों घंटे फोन और ईमेल पर उपलब्ध रहूँगा।'

कुछ अन्य विविध विवरणों और अगले दिन की बैठक की योजना के साथ, जिससे भारतीय दल को विवरणों को समझने और एक खाका तैयार करने का समय मिल सके, ब्रीफिंग दोपहर 2 बजे के आसपास समाप्त हुई। मुंबई में विक्टर के ठहरने के लिए पुलिस बल से एक ड्राइवर को उनके साथ तैनात किया गया था और वह होटल के लिए रवाना हो गए। वह पिछली रात ही हवाई जहाज से आए थे, इसलिए उनकी नींद का समय उनके शरीर की जैविक घड़ी के अनुसार काफी देर हो चुका था।

***

विक्रम रीता के दफ्तर में आगंतुक की सीट पर बैठा था, तभी जतिन अंदर आया। इंस्पेक्टर जतिन सिंह रीता की टीम में पिछले मामले के बाद ही शामिल हुए थे, जिस मामले ने उन तीनों को एक साथ लाया था। वह अभी-अभी एक बहुमूल्य सदस्य साबित हो ही रहे थे कि कुछ गलत लोगों के साथ उलझने की दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने लगभग उनका करियर बर्बाद कर दिया था। लेकिन वह वापस आ गए थे। रीता उनकी ऊर्जा और तेज बुद्धि की सराहना करती थी; हालांकि वह विक्रम और खुद से काफी छोटे थे। एक बार किसी मूर्खतापूर्ण काम में फंस जाने से रीता का उनके प्रति रवैया नहीं बदला था। क्या कुख्यात भिंडी बाजार मामले में उस शातिर हत्यारे ने उन सभी को धोखा नहीं दिया था? तो फिर बेचारे जतिन को उनकी लापरवाही के लिए अलग-थलग क्यों किया जाए? आखिरकार, वह तो उनके सहायक थे। रीता से लंबे, लेकिन विक्रम से छोटे, जतिन की लंबाई पांच फुट ग्यारह इंच थी और वह हमेशा अच्छे कपड़े पहनते थे। रीता उन्हें अपने मन में एक आकर्षक व्यक्ति मानती थी: जीवन का एक निर्दोष आनंद।

वह चिढ़ गया लग रहा था। 'मुझे बहुत खेद है महोदया। उड़ान में देरी हो गई।' उसने कहना शुरू किया।

'कोई बात नहीं, जतिन। हमेशा की तरह प्रोटोकॉल के अनुसार हमने अनुपस्थित सदस्य को सबसे कठिन कार्य सौंप दिए हैं।'

'आपका फिर से स्वागत है, महोदया।'

'धन्यवाद। आपको भी। छुट्टियां कैसी रहीं?'
'ज़बरदस्त।'
'विक्रम आपको मामले के बारे में संक्षिप्त जानकारी देगा। और फिर हमारे पास पढ़ने के लिए यह बहुत बड़ी फाइल है। मुझे लगता है कि हम सभी को इसकी प्रतियां बनवा लेनी चाहिए, क्योंकि हम इसे क्रम से पढ़ने में और समय बर्बाद नहीं कर सकते।'
विक्रम ने सिर हिलाया और हमेशा की तरह लिख लिया। रीता ने जो कुछ भी कहा, उसने सब लिख लिया। कभी-कभी रीता सोचती थी कि क्या विक्रम घर पर भी उतना ही व्यवस्थित रहता है जितना यहाँ? क्या वह अपनी पत्नी द्वारा दिए गए हर काम को भी लिखता है?
'क्या आप इस मामले के बारे में कुछ चर्चा करना चाहते हैं?' बैठक समाप्त होने का संकेत देते हुए वह उठ खड़ी हुईं। 'कृपया प्रतियां बनाने के बाद मूल फाइल मुझे वापस दे दें। मैं आज रात केस फाइल पढ़ने की कोशिश करूंगी। हमें कल दोपहर आकर अपने सारांश और रणनीति पर चर्चा करनी चाहिए। काम की स्थिति के आधार पर, मैं देखूंगी कि इस जांच को संभालने के लिए टीम में कितने लोगों की आवश्यकता है। आप दोनों को शुभ संध्या।'
बाहर निकलते और लिफ्ट का इंतज़ार करते हुए उसने गौर किया कि उसके मेडिकल लीव पर जाने से पहले की तुलना में फ़ोन ज़्यादा बज रहे थे, या कम से कम ऐसा लग रहा था। शायद यह गणित का खेल था: उसकी अनुपस्थिति में कुछ अतिरिक्त कर्मचारी रखे गए थे और शायद सभी कॉल अटेंड करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं थे। उसे इस विडंबना पर हल्की सी मुस्कान आई। पुलिस मुख्यालय में फ़ोन संभालने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं और यहाँ वे एक ऐसे मामले की जाँच कर रहे हैं जो उनके अधिकार क्षेत्र में हुआ ही नहीं। वाह, क्या मुसीबत है! उसने धीरे से कहा।
उसने ड्राइवर को बुलाया और वह गाड़ी लेकर आया। एक कांस्टेबल ने उसके लिए भारी फाइल उठाई और उसे गाड़ी की डिक्की में रख रहा था, जबकि वह वहीं खड़ी दिनभर की घटनाओं पर विचार कर रही थी।
शिशिर सिंह। यह कोई आम नाम नहीं है।

Four

यह एक लंबा दिन था। मामले से कहीं अधिक - हालांकि रीटा को पता था कि यह मामला बहुत जल्द एक असली पेचीदा साबित होने वाला है - दिनचर्या ही सबसे अधिक बोझिल थी।

ऑफिस में लंबे समय तक रहने से वह एक बार फिर थक चुकी थी। बोतल से जिम बीम का एक बड़ा घूंट पीकर वह नहाने चली गई।

नहाने के बाद कपड़े बदलते समय, विक्टर द्वारा दिखाई गई धुंधली फिल्म फुटेज की तस्वीरें उसके दिमाग में घूम रही थीं। उसकी याददाश्त बहुत तेज़ थी। कुछ भी उसकी नज़र से नहीं छूटता था। तस्वीर। आवाज़। नाम। गंध। वह जासूस बनने के लिए ही पैदा हुई थी। कुछ उसे परेशान कर रहा था। क्या उसने लिफ्ट में मौजूद व्यक्ति के बारे में कोई सुराग देने वाली बात नज़रअंदाज़ कर दी थी? शिशिर सिंह निश्चित रूप से एक नकली नाम था। यह बताने के लिए किसी को शर्लक होने की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन यह तर्क था, सबूत नहीं। कोई भी उस होटल में अपना असली नाम नहीं बताता जहाँ वह हीरे चुराने वाला था। इसका मतलब यह भी था कि अपराधी के पास जाली दस्तावेज़ थे। यह भी असंभव नहीं था।

किसी अपराधी को पकड़ना एक ऐसे खेल की तरह है जिसमें एक पक्ष लगातार बदलते नियमों का सामना कर रहा होता है। पुलिस को दिशानिर्देशों का पालन करना होता है, जबकि अपराधी कभी भी अपना रुख बदल सकता है: नाम, पहचान, कार्यशैली...

दिनभर की थकान धीरे-धीरे कम होने लगी थी। अभी सात ही बजे थे और दिन अभी भी उजाला था। उसने बाहर कुछ खाने जाने का सोचा, लेकिन फिर विचार छोड़ दिया। आस-पास कोई ऐसा नहीं था जिसके साथ वह रात के खाने पर जा सके, और अकेले रेस्तरां में बैठना उसे अच्छा नहीं लग रहा था।

वह जानती थी कि उसका सबसे अच्छा दोस्त जिम हमेशा उसके साथ खड़ा रहेगा, लेकिन वह यह भी समझती थी कि शराब के कुछ और घूंट उसे आसानी से उसका

सबसे बड़ा दुश्मन बना सकते हैं। उसने अपने पिता को देखा था - जो शराबी थे, हालांकि उन्होंने कभी यह बात मानी नहीं। भला कौन मानता है? - वे दुश्मन को घूंट-घूंट कर मार डालते थे। अक्सर कहा जाता है कि इतिहास खुद को आनुवंशिक बताकर दोहराता है और रीटा जानती थी कि कब रुकना है। शुभ रात्रि जिम। उसने तीन घूंट पिए और फ्रिज खाली करने के लिए रसोई में चली गई।

उसने विक्टर द्वारा दी गई कुछ सामग्री पढ़ने के बारे में सोचा, लेकिन वह थकी हुई थी और सप्ताहांत भी था।

उसने खुद से वादा किया, "कल," और लाइट बंद कर दी।

***

चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया। सूरज उग आया। पेड़-पौधे अभी भी हरे थे। रात भर हुई बारिश से ज़मीन गीली थी। रीता अंडे, टोस्ट और बेक्ड बीन्स का नाश्ता मज़े से खा रही थी कि तभी उसका मोबाइल बज उठा। कॉलर आईडी देखते ही उसने मुंह में मौजूद बड़ा निवाला खत्म किया: कमिश्नर सक्सेना। उसने घड़ी की तरफ देखा: 6:30 बज रहे थे। वाह, कमाल है!

'सुप्रभात सर।'

'आपको भी सुप्रभात, डीसीपी फेरेरा। मैं जानना चाहता था कि क्या आपके पास बेल्जियम मामले के बारे में मुझे कुछ जानकारी देने का समय है।'

कोई खास अपडेट नहीं मिली थी। उन्हें बस चौबीस घंटे से भी कम समय पहले विक्टर से मिली जानकारी ही मिली थी।

'हमें फाइलें अभी-अभी मिली हैं, महोदय। कृपया हमें एक-दो दिन का समय दीजिए।'

'कोई बात नहीं। जब आप ऑफिस में हों तो मुझसे मिलने जरूर आइएगा।'

रीटा के जवाब देने से पहले ही फोन कट गया।

***

जब वह काम पर पहुँची तो दफ्तर में कोई नहीं था; अभी केवल 7:30 बजे थे। हाथ में कॉफी लिए, वह अपने दफ्तर में बैठ गई और वीडियो फुटेज की डीवीडी निकालकर कंप्यूटर में डाल दी।

इतने अच्छे से ऑपरेशन की योजना बनाने के बावजूद हत्यारा लिफ्ट में लगे इस इकलौते कैमरे को कैसे नहीं देख पाया?

इसके बाद उसने लाल बॉक्स वाली फाइल अपनी ओर सरका ली। वह वाकई भारी

थी। लेकिन शरीर के वजन के विपरीत, हत्या की जांच में कम होने से ज्यादा होना बेहतर होता है। हमेशा की तरह, रीटा का अगला कदम यह तय करना था कि किस फालतू चीज़ को हटाना है, क्योंकि उसे नहीं पता था कि क्या फायदेमंद होगा और क्या बेकार। लेकिन चूंकि दिन में कभी भी पर्याप्त घंटे नहीं होते, इसलिए हर जासूस को सबूतों की प्रबलता या असंतुलन के आधार पर चुनाव करना पड़ता है। हाँ, बेशक, इस चुनाव में सब कुछ गलत हो सकता था। उसने एक घंटे से अधिक समय तक कागजों को खंगाला। रिपोर्टें। मेमो। सुराग। गवाहों से परामर्श और मिलान; दोस्तों, सहयोगियों और परिचितों द्वारा पुष्ट किए गए अलबी। अधिकांश दस्तावेज़ वही थे जो विक्टर ने बताए थे, दस्तावेज़ विस्तृत, विश्लेषित और मूल्यांकित थे। हर चीज़ से संकेत मिलता था कि यह बेल्जियम के लिए एक बड़ा मामला था, जहां हत्या की दर कम थी और वे उन्हें गंभीरता से लेते थे।

इसके बाद, उसने अपराध स्थल की तस्वीरों और नक्शों पर ध्यान केंद्रित किया। जोगानी जमे हुए खून के तालाब में पड़ा था। होटल कर्मचारियों को हत्या की जानकारी तब मिली जब जोगानी ने मुंबई जाने वाली अपनी फ्लाइट पकड़ने के लिए सुबह जल्दी बजने वाले अलार्म का जवाब नहीं दिया। जब टैक्सी ड्राइवर आया और जोगानी ने न तो अलार्म का जवाब दिया और न ही बिल चुकाने के लिए नीचे आया, तो होटल कर्मचारी स्वाभाविक रूप से चिंतित हो गए। उन्होंने पुलिस को बुलाया। रिसेप्शन से फर्जी कॉल आने पर जोगानी की देखभाल करने वाले रात्रि चौकीदार ने पुलिस को अपना बयान दिया। उसने पुलिस को बताया कि जोगानी तनाव में दिख रहा था और जब उसे पता चला कि रिसेप्शन से किसी ने उसे बुलाया ही नहीं था, तो वह तुरंत वापस भाग गया।

यह निस्संदेह शिकार को उसके कमरे से बाहर निकालने की एक चाल थी।

उसके साक्ष्यों और पोस्टमार्टम रिपोर्ट को मिलाकर, बेल्जियम पुलिस ने मृत्यु के समय का अनुमान लगा लिया था। फिर लिफ्ट में लगे गुप्त कैमरे के टाइम स्टैम्प ने अकेले हत्यारे के बाहर निकलने की पुष्टि कर दी।

इस प्रकार मृत्यु का समय पंद्रह से बीस मिनट के बीच एक सटीक अवधि तक सीमित कर दिया गया। घटनास्थल की तस्वीरों में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे कुछ पता चल सके। पुलिस ने निष्कर्ष निकाला था कि बैग गायब था। दस्तावेजों में दो बातें रीता को बेहद दिलचस्प लगीं। एक तो यह कि जोगानी के होटल के कमरे के प्रवेश द्वार के ताले

से छेड़छाड़ की गई थी, और दूसरी - जो और भी विचित्र थी - जोगानी के कमरे में तिजोरी को दूसरी तिजोरी से बदल दिया गया था। पुलिस को मूल तिजोरी बगल वाले कमरे में मिली, जो श्री शिशिर सिंह द्वारा बुक किए गए तीन कमरों में से एक था। विक्टर यह बताना भूल गया था कि शिशिर ने तीन कमरे बुक किए थे, लेकिन पूरे समय होटल में किसी ने भी उसके अलावा किसी अन्य मेहमान को नहीं देखा था। यह कैसे संभव हुआ? क्या वे रिसेप्शनिस्ट को चकमा देने में कामयाब रहे? निश्चित रूप से, लिफ्ट में लगे एकमात्र कैमरे में वे कहीं न कहीं कैद हो जाते, या क्या वे लिफ्ट का इस्तेमाल ही नहीं करते थे?

होटल के फ्लोर प्लान से यह स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि शिशिर सिंह के साथ इस अपराध को अंजाम देने वाले व्यक्ति ने आग से बचने के लिए बने एस्केप, लिफ्ट के विपरीत छोर पर स्थित सीढ़ियों का इस्तेमाल किया था और स्वास्थ्य और सुरक्षा कारणों से उनके पास सीधे सड़क की ओर जाने वाला एक खुला निकास द्वार था। बेल्जियम पुलिस द्वारा लिए गए साक्षात्कारों की प्रतिलिपियाँ भी उस बॉक्स फाइल में शामिल थीं, जिसे रीटा ने बाद में पढ़ने का फैसला किया। वह अब तक प्राप्त जानकारी पर गहराई से विचार करना चाहती थी। टुकड़ों में जानकारी को समझना। दुर्भाग्य से, वह जानती थी कि जांच में सवाल और जवाब एक क्रम में नहीं आते। कभी-कभी पहले कुछ ऐसे जवाब मिल जाते हैं जिनका कोई उपयोग नहीं होता। बाद में ऐसे सवाल आते हैं जो बीच की खाई को पाटते हैं। यह स्क्रैबल के टाइल्स को फिर से डिब्बे में डालकर उछालने जैसा था। आपको कभी पता नहीं चलता कि जीतने वाला शब्द कब निकल आएगा। जब भी कोई नई जानकारी मिलती, आपको पहले मिली सभी चीजों को देखना पड़ता था। शायद सब कुछ मिलाकर कुछ समझ में आ जाए। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, उसने फाइल से मिली जानकारी को खंगालते हुए मन में नोट्स बना लिए। जोगानी के मुंबई में ज़रूर दोस्त और कारोबारी सहयोगी होंगे। और उसके घर, उसकी कंपनी, उसके कर्मचारियों का क्या? क्या वह अकेले ही काम करता था? क्या मुंबई में किसी को पहला संपर्क बिंदु नहीं होना चाहिए था? शायद कोई शिशिर सिंह को जानता हो या किसी ऐसे व्यक्ति को जो उस नाम से खुद को बुलाने वाले व्यक्ति जैसा दिखता हो। यह एक सिद्धांत था - संभवतः सबसे ठोस भी - कि चोरी मुख्य योजना थी और दुर्भाग्य से हत्या में परिणत हुई, लेकिन हत्या के कई अन्य मकसद भी हो सकते थे। कमरे में हीरे मिलना लॉटरी का टिकट खरीदे बिना

जीतने जैसा था, भले ही ऐसा प्रतीत न हो रहा हो: हत्या एक तात्कालिक योजना हो सकती थी, लेकिन सेंधमारी वास्तव में सोची-समझी थी। बहुत ही सोची-समझी योजना। जोगानी को बंदूक से खत्म करने के लिए कमरे की तिजोरी बदलने या होटल के कमरे के ताले से छेड़छाड़ करने की आवश्यकता नहीं थी; यह काम सड़क पर ही जोगानी को मारकर किया जा सकता था।

लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह एक बड़ी मुश्किल में फंसी हुई है। ज्यादातर हत्याओं की जांच एक मृत शरीर से शुरू होती है। यहाँ उनके पास सिर्फ एक लाश की तस्वीर थी। उसने रॉन जोगानी के शव की तस्वीरों को फिर से देखा।

रीता ने यह निष्कर्ष निकाला कि कोई जोगानी का होटल तक पीछा कर रहा था। यह महज़ उसका अनुमान था: इसका कोई पुख्ता सबूत नहीं था, न ही इसे नकारने का कोई कारण। आख़िर किसी को हीरों के बारे में, होटल के कमरे के सटीक नंबर के बारे में और आधी रात को जोगानी को कमरे से बाहर निकालने के लिए किए गए फ़ोन के बारे में कैसे पता चला होगा? लेकिन कहाँ से—ब्रसेल्स में किसी स्थानीय जगह से, एंटवर्प से या क्या कोई भारत से उसका पीछा करते हुए आया था?

और लाखों के हीरे लेकर घूम रहे रॉन जोगानी को किसी ने कैसे नहीं पकड़ा? क्या उसने अपनी योजना का खुलासा न करने के लिए सावधानी नहीं बरती होगी? शायद किसी को उसके यात्रा कार्यक्रम की जानकारी हो। और किसी को यह कैसे पता चल सकता है? रीटा के अनुभव में, हर मामला अंतहीन पहेलियों का एक सिलसिला होता था। कभी-कभी, बस एक पहलू को सुलझाने की ज़रूरत होती थी और जैसे श्रृंखला की सबसे कमज़ोर कड़ी खुल जाती है, बाकी का रहस्य खुल जाता था। हमेशा नहीं, लेकिन इसकी अच्छी संभावना हमेशा रहती थी।

उसे पूरा यकीन था कि जोगानी के यात्रा कार्यक्रम के बारे में किसी को ज़रूर पता था। सवाल यह था: कौन? और कैसे?

यह जानते हुए भी कि शिशिर सिंह संभवतः उसका छद्म नाम था, रीता ने शिशिर सिंह को खोजने के लिए केंद्रीय सूचना डेटाबेस में लॉग इन किया। मुंबई में उसके दर्जनों लोग थे, लेकिन उनमें से किसी पर भी - एक भी नहीं - कोई दोष सिद्ध नहीं हुआ था या उसके खिलाफ कोई पुलिस मामला दर्ज नहीं था। उन्हें इस मामले की छानबीन के लिए मुखबिरों को ही काम सौंपना पड़ा। पुलिस और अपराधियों के बीच एक विडंबनापूर्ण सहजीवन था - और हमेशा रहेगा। अपराधियों के बिना पुलिस की कोई

आवश्यकता नहीं होगी और पुलिस के बिना अपराधियों पर किसी भी तरह का नियंत्रण नहीं होगा। यह आपसी संबंध यहीं खत्म नहीं हुआ। बल्कि इसके विपरीत, अक्सर मुखबिर कभी न कभी छोटे-मोटे अपराधी रहे होते थे, भले ही वर्तमान में न हों। पकड़े जाने या कुछ चेतावनियों के बाद पुलिस की नजर में आने पर, कुछ लोग एहसान के लिए मुखबिरी करते थे, कुछ अपनी जान बचाने के लिए, और कुछ बदले की भावना या ईर्ष्या के कारण: ताकि पुलिस उन लोगों को संभाले जिन्हें वे खुद पकड़ने में सक्षम नहीं थे। वह स्कैनर-कम-प्रिंटर के पास गई और कथित श्री शिशिर सिंह की उस आपत्तिजनक तस्वीर के कुछ प्रिंटआउट निकाले।

अपना ब्लैकबेरी फोन उठाते हुए, वह डेस्क के चारों ओर घूमकर ऑफिस का दरवाजा बंद करने गई और सीनियर इंस्पेक्टर राजेश नेने को फोन किया। वह जानती थी कि नेने को पूर्णकालिक रूप से नियुक्त करने के लिए उसे अपने वरिष्ठों से बात करनी होगी, लेकिन फिलहाल उसने मंजूरी का इंतजार करना उचित नहीं समझा।

राजेश नेने उसकी बात सुनकर खुश लग रहे थे।

यह एक संक्षिप्त बातचीत थी और नेने को बस कुछ घंटों का समय चाहिए था ताकि वह सौंपे गए कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ मुखबिरों की सूची लेकर आ सके।

जब रीटा ने फोन रखा तो उसे पूरा भरोसा था कि दो घंटे पूरे होने से पहले नेने उसके ऑफिस में आ जाएगी।

अब यह मामला उसके लिए बेहद डरावना और चिंताजनक हो गया था। टीम को ब्रीफिंग दिए जाने के चौबीस घंटे से भी कम समय में सेक्सी को अपडेट चाहिए था। लेकिन धमकी दो तरह से काम कर सकती है: या तो डर के मारे आप चुप हो जाएं या फिर आपका इरादा और भी पक्का हो जाए। कुछ ही दिन पहले जब उसे मुंबई बुलाया गया था, तब तक रीता को लगा था कि उसे कुछ पूछताछ करनी होगी - क्योंकि यह विदेश में हुई हत्या का एक पुराना मामला था - लेकिन जैसे-जैसे उसने फाइल पढ़ी और पूरी घटना को समझा, मामला उसके दिल में घर करने लगा। उसे एहसास हुआ कि उसे सिर्फ़ आराम करने और अंडे देने के लिए वापस नहीं बुलाया गया था; उसे एक ऐसा मामला सौंपा गया था जिसमें देश का गौरव जुड़ा था। आओ, सेक्सी! वह तैयार थी।

विक्रम, जतिन से पहले पहुँच गया। उसकी आँखें लाल थीं, जिससे रीता समझ गई कि वह रात भर जागकर विक्टर की विशाल फ़ाइल की हर एक प्रति पढ़ चुका है। रीता

उसे परीक्षा लिखने को भी कह सकती थी, वह पास हो जाता। रीता को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि उसकी सफलता का एक बड़ा हिस्सा उसकी समर्पित और वफादार टीम की वजह से था।

'मुझे पूरा भरोसा है कि आपने फाइल को शुरू से अंत तक पढ़ लिया है,' रीटा ने सोचा।

'आप सही कह रही हैं, महोदया।'

'आज सुबह सबसे पहले मेरी संजय सक्सेना से मुलाकात है। उन्हें अपडेट चाहिए।'

'अभी से?' विक्रम उतना ही हैरान लग रहा था जितना कि सेक्सी के पूछने पर वह खुद हुई थी।

उसने बस अपनी आँखें घुमाईं। 'वही बॉस है।'

'मीटिंग के लिए आपको मुझसे और क्या चाहिए?'

'नहीं, मुझे लगता है कि यह उनके साथ केवल एक प्रारंभिक मुलाकात होगी जिसमें हम अब तक जो जानते हैं और इस तरह के पुराने मामले को सुलझाने की हमारी क्या संभावनाएं हैं, इसकी रूपरेखा तैयार करेंगे, इससे पहले कि वह आगे बढ़कर संबंधित अधिकारियों से संवाद करें।'

'मीटिंग समय क्या है?'

जैसे ही वह अंदर आ जाएगा।

'वह अंदर है। जब मैं अंदर आया तो मैंने उसकी कार देखी।'

'ठीक है, मैं चलती हूँ।' वह उठी और अपनी डेस्क के पीछे से निकलकर अपने कार्यालय से बाहर लिफ्ट की ओर चल पड़ी।

रीता गोवा की रहने वाली थीं, पुर्तगाली मूल की थीं, जन्म से कैथोलिक थीं, लेकिन वे ईश्वरवादी थीं—उनका मानना था कि ईश्वर या कोई भी सर्वोच्च शक्ति प्रकृति के नियमों में हस्तक्षेप नहीं करती। उनका मानना था कि ईश्वर आपको अगली पदोन्नति दिलाने, बारिश करवाने, आग, दुर्घटना, हत्या या चोरी रोकने, अपराधी को पकड़ने में मदद करने, दफ्तर की राजनीति सुलझाने या आपको सेक्सी के क्रोध या सवालों से बचाने के लिए नहीं है। यह उनका काम नहीं था। उन्होंने अपनी घड़ी देखी। नौ बज रहे थे जब वे सेक्सी के आलीशान दफ्तर में दाखिल हुईं और विधिपूर्वक अभिवादन किया।

मुंबई पुलिस कमिश्नर संजय सक्सेना ने आज सुबह रीता को मिलने के लिए बुलाया

था। सेक्सी, अपनी आदत के अनुसार, लोगों से कुछ करने के लिए नहीं कहता था, क्योंकि उसे ज़रूरत नहीं होती थी; वह बस अपनी मनचाही चीज़ माँग लेता था। जब रीता ने मुंबई के पहले सीरियल किलर का केस अपने हाथ में लिया था, तब उसका रवैया बेहद खराब था, और जब तक रीता ने उस उलझे हुए केस को सुलझा नहीं लिया, तब तक उसने एक महिला आईपीएस अधिकारी के प्रति कोई नरमी नहीं दिखाई। तब से, रीता के अपने लाइन मैनेजर को शामिल करने के प्रयासों के बावजूद, सेक्सी ने बार-बार वरिष्ठ अधिकारियों की अनदेखी की और उसे सीधे उन मामलों में शामिल किया जिनका उससे दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था। और उसने एक बार फिर रीता को उसके तत्काल सुपरवाइजर जोशी के बिना मिलने के लिए बुलाया था। सेक्सी, अपने पूर्वजों की कई पीढ़ियों की तरह, बचपन से ही ज्ञान से भरपूर परिवार में पला-बढ़ा था। प्रतिष्ठित दून स्कूल में शिक्षित, उसके अंग्रेजी शिक्षक ने उसे पूरा शब्दकोश रटवा दिया था। परिणामस्वरूप, उसकी बातचीत में हमेशा अंग्रेजी भाषा के कुछ सबसे कठिन शब्द शामिल होते थे; विशेषण और क्रियाविशेषण जिनका प्रयोग वह अपने छात्रों की शब्दावली को निरंतर बढ़ाने के लिए करता था।

'हेलो डीसीपी फेरेरा, आपका फिर से स्वागत है।' सेक्सी ने खड़े होने की कोई कोशिश नहीं की; वह सादे कपड़ों में थे; नीले रंग की लिनेन जैकेट और नीली चिनो पैंट, जो जैकेट से कहीं ज़्यादा गहरे नीले रंग की थी। सफेद कमीज़। ज़ाहिर है, टाई नहीं पहनी थी। उनकी स्नूकर टेबल जितनी बड़ी डेस्क के नीचे से रीटा ने देखा कि उन्होंने टैन रंग के मोकासिन जूते पहने थे और मोज़े नहीं पहने थे। वह हमेशा हॉलीवुड के पुराने ब्लैक एंड व्हाइट दौर के किसी स्टाइलिश विलेन की तरह दिखते थे।

'सुप्रभात महोदय,' रीटा ने मुश्किल से कहा, क्योंकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे खुश होना चाहिए या नहीं, क्योंकि वह उन्हें मौजूदा मामले के बारे में कोई जानकारी देने के लिए तैयार नहीं थी।

'डीसीपी रीटा फेरेरा, आप आज देश की सबसे अग्रणी जासूस हैं।'

यह सब किस ओर जा रहा था?

'एक सीट ले कृपया।'

'धन्यवाद महोदय।'

'डीसीपी फेरेरा, मुझे यकीन है कि आप पहले से ही जानते हैं कि इस मामले से राष्ट्रीय गौरव जुड़ा हुआ है, और इसीलिए मैं विशेष रूप से चाहता था कि आप इसे अपने हाथ

में लें।'
जैसा कि रीटा ने अनुमान लगाया था, यह एक सामान्य प्रोत्साहन भाषण से ज्यादा कुछ नहीं था।
'मुझ पर भरोसा दिखाने के लिए धन्यवाद, महोदय।'
'क्या आपकी परामर्श प्रक्रिया समाप्त हो गई है?'
सेक्सी का इशारा स्पष्ट रूप से उस थेरेपी की ओर था जो रीटा को उस भयानक गोलीबारी के बाद हुए सदमे से उबरने के लिए करानी पड़ी थी। थेरेपिस्ट ने यह जांच की थी कि मस्तिष्क अभी भी अपनी सामान्य स्थिति में है या नहीं। हालांकि, उस सवाल और उसके परिणामस्वरूप घटना की याद ने रीटा को फिर से उस घटना की याद दिला दी।
'जी सर, मुझे हरी झंडी मिल गई है।'
'अच्छा हुआ, मैं आपको इस उच्च दबाव वाले मामले में नियुक्त करने से पहले यह पूछना भूल गया था।'
मुझे उम्मीद है कि मैं आपको निराश नहीं करूंगा।
'जीवन लाभ-हानि विवरण से अधिक कुछ नहीं है: और लाभ और हानि हमेशा एक निश्चित तिथि पर, एक निश्चित समय पर ही बताए जाते हैं; वास्तविक लाभ या हानि का निर्धारण तभी किया जा सकता है जब उद्यम बंद हो जाए। जीवन के साथ भी ऐसा ही है। इसलिए आप तब तक विजेता हैं जब तक आप वास्तव में हार नहीं जाते।'
'अगर आप हार गए तो क्या होगा...?'
'अंततः?'
'हाँ।'
'एक बार बत्ती बुझ जाने के बाद तुम्हें परवाह क्यों रहती है? तुम तो गए, खेल खत्म हो गया।'
दार्शनिक रूप से आकर्षक, बहुत ही दार्शनिक!
'जाने से पहले और कुछ?'
मैं समझता हूँ कि यह एक असंभव कार्य है, और जैसा कि मैंने विभाग में आपकी पुनः नियुक्ति से पहले श्री जोशी से कहा था, मुझे पूरा विश्वास है कि आप ही इस पेचीदा मामले को सुलझा सकते हैं और अपराधी को न्याय के कटघरे में ला सकते हैं। इस मामले में आप सीधे मुझे रिपोर्ट करते हैं, इसलिए आपको एसीपी जोशी से किसी भी

बात के लिए अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि आपको प्रशासनिक कार्यों में किसी भी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो मैं यहाँ उपलब्ध हूँ। यदि आपको देश भर में किसी भी वर्दीधारी बल से सहायता की आवश्यकता हो और वे सहयोग न करें, तो बस मुझे फोन करें और मैं उन मूर्खों को कुछ ही मिनटों में भगा दूँगा।

सेक्सी की मौजूदगी में क्षेत्रीय झड़पें मानो मुरझाकर खत्म हो जाती थीं। कोई भी तुच्छ दिखना नहीं चाहता था और न ही उसके खिलाफ जाने की हिम्मत करता था।

'धन्यवाद महोदय,' उसने कहा, और बातचीत में प्रयुक्त असामान्य शब्दों पर ध्यान दिया।

अपने दफ्तर जाते समय वह उस बैठक के बारे में सोच रही थी। सेक्सी ने साफ-साफ कह दिया था कि जोशी का इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है। उसने जोशी को यह बात बताने का मन बना लिया। हो सकता है उसे भविष्य में फिर से उनके साथ काम करना पड़े और वह पुलिस व्यवस्था की कार्यप्रणाली जानती थी। जोशी एक अच्छे और समझदार आदमी थे, उसे पूरा यकीन था कि वह उसकी बात समझेंगे और उसका साथ देंगे।

और तमाम दिखावे, मीठी-मीठी बातों और शुरुआत में उसके प्रति दिखाई गई नाराज़गी के बावजूद, सेक्सी कोई बुरा इंसान नहीं था, यह बात उसे समझ में आ गई। कम से कम इतना तो पता था कि सेक्सी अपने वफादार लोगों की हद से ज़्यादा रक्षा करता था। साथ ही, अब उसे यह भी पता चल गया था कि यह एक असंभव काम है और एक ऐसी उलझन भी होती है जिसे सुलझाना हर किसी के बस की बात नहीं होती।

***

पिछले चौबीस घंटों में इस मामले में कोई ठोस प्रगति न होने से अवगत रीता ने विक्टर का नंबर ढूंढा और उसे फोन किया। वह बेल्जियम दूतावास में चाय पर एक बैठक में थे। रीता ने देरी के लिए माफी मांगी, लेकिन वह नाराज नहीं हुए। अगर बेल्जियम पुलिस तीन महीने से अधिक समय में हत्यारे को नहीं पकड़ पाई थी, तो उन्हें रातोंरात गिरफ्तारी की उम्मीद भी नहीं थी। वह विनम्र थे। रीता ने उन्हें बताया कि एक टास्क फोर्स का गठन किया गया है और उनकी अगुवाई में भारतीय पुलिस इस मामले को गंभीरता से ले रही है।

विक्टर ने खेद भरे स्वर में रीटा को बताया कि किसी संकट के कारण उसे निर्धारित समय से पहले ब्रुसेल्स लौटना पड़ा, लेकिन जैसा कि उसने वादा किया था, वह चौबीसों घंटे उपलब्ध रहेगा।
'हम जल्द ही संपर्क में रहेंगे, विक्टर। आपकी यात्रा सुरक्षित हो।'

Five

हनी सिंह। जी हाँ, उनका नाम हनी था और वे छह फुट तीन इंच लंबे, आकर्षक पुरुष थे, बेहद खूबसूरत। लंबे सीधे बाल।
काले बाल—जिनमें समय से पहले ही थोड़े सफेद बाल दिखने लगे थे—पीछे की ओर कंघी किए हुए या छोटी पोनीटेल में बंधे हुए, कॉलेज के दिनों के एथलीट जैसा गठीला शरीर। एक कट्टर सिख, जिसके लिए उसकी माँ ने उसे कभी माफ़ नहीं किया; वह उसे धर्मत्यागी कहती थी—पगड़ी कटवाने के लिए धर्म का गद्दार। लेकिन वह उससे प्यार करती थी। जितना ज़्यादातर माताएँ अपने 31 वर्षीय बेटे से करती हैं, उससे कहीं ज़्यादा प्यार करती थी। एक ऐसा बेटा जो अपनी माँ का आदर करता था—माँ का लाडला—वह अपनी माँ के साथ रहता था। दिखने में अभी भी अविवाहित, वह एक उभरती हुई मॉडल के साथ डेटिंग कर रहा था, जिससे उसकी माँ परिचित नहीं थी, हालाँकि उसके दोस्त और सहकर्मी उसके गुप्त संबंध से अवगत थे और श्रीमती लकी सिंह से बात करते समय उन्हें गोपनीयता बनाए रखने की उम्मीद थी। कभी-कभी वह अपने दोस्तों के साथ चुपके से रात बिताने या सप्ताहांत की छुट्टियों का आयोजन करता था—कम से कम श्रीमती लकी सिंह को यही बताया गया था। वह एक स्नेही स्वभाव वाली, एक आदर्श पंजाबी माँ थी, जो अपने पिताविहीन इकलौते बच्चे की ममतामयी माँ थी। चिंता वास्तविक, अत्यधिक और कभी-कभी घुटन भरी भी थी। हनी के पिता एक उद्योगपति थे जिनका निधन तब हो गया था जब वह चार साल का था, और व्यापारिक साझेदारों - जिनमें ज्यादातर दूर के चचेरे भाई थे - ने चालाकी से श्रीमती लकी सिंह और उनके बेटे को व्यापार और धन से बेदखल कर

दिया था। लुधियाना के एक आलीशान बंगले से, दोनों ने हनी के पिता की जीवन बीमा राशि का लाभ उठाया और अंधेरी पूर्व में दो कमरों का एक अपार्टमेंट खरीदा, जिसमें वे वर्तमान में रहते हैं। अंदरूनी साज-सज्जा पुराने धन की बची-खुची निशानी थी, जो अब लगभग खत्म हो चुकी है। हनी ने कुछ साल पहले काम करना शुरू कर दिया था और धीरे-धीरे घर में थोड़ी समृद्धि लौटने लगी थी। उसकी माँ उसके कंप्यूटर मरम्मत की दुकान खोलने से खुश नहीं थी; उसने उससे इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में डिग्री लेने के बाद किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने की उम्मीद की थी, न कि कंप्यूटर मैकेनिक बनने की, जैसा कि वह सबको बताती थी।

'तुम एक कंप्यूटर इंजीनियर हो, हनी। फिर तुम इन टूटे-फूटे कंप्यूटरों की मरम्मत क्यों करना चाहती हो?'

'मैं अपना खुद का मालिक बनना चाहता हूं, और मुझे अपना खुद का मालिक बनना बहुत पसंद है, पापा की तरह एक उद्यमी बनना।'

'अब तुम बच्चे नहीं रहे...'

उनकी राय में, उनका कभी प्रतिभाशाली बेटा अब बिल्कुल भी वैसा नहीं निकला जैसा वह सोचता था।

लेकिन वह अब भी उससे प्यार करती थी।

***

जिस दिन हनी सिंह ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की, उसी दिन उन्होंने अपनी स्नेही मां की नाराजगी के बावजूद अपने बाल कटवा लिए थे।

हर मोहल्ले में एक ऐसी आंटी रहती थीं जिनसे बच्चे डरते भी थे और प्यार भी करते थे: डरते इसलिए थे क्योंकि उन्हें पता था कि उनसे पंगा लेने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए और प्यार इसलिए करते थे क्योंकि वही अकेली ऐसी शख्स थीं जो गलती करने पर उन्हें मां के गुस्से से बचा सकती थीं। मिसेज लकी सिंह वही आंटी थीं और टीटू—मोहल्ले का नाई जो हनी के बाल काटता था—ने अनजाने में ही उनके बेटे से पंगा ले लिया था। बेचारे की तक्षशिला के बाहर एक छोटी सी दुकान थी, जहां हनी सिंह रहता था, और उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसे मिसेज लकी सिंह से निपटना पड़ेगा। उनके भयंकर गुस्से का सामना करने के बाद—जी हां, उसे अपनी ही दुकान में, दूसरे ग्राहकों के सामने, थप्पड़ पड़ा—उसने नाई का काम छोड़ने का फैसला कर लिया। वह इतना शर्मिंदा और सदमे में था कि वह मोहल्ले से गायब हो

गया और कहीं और दुकान खोल ली।
हनी सिंह ने श्रीमती लकी सिंह को यह बात कभी नहीं बताई कि एक और नाई की दुकान खोलने के बजाय, टिटू उनके छोटे और बढ़ते हुए व्यवसाय में पूर्णकालिक कर्मचारी था।
हनी सिंह का कार्यालय बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में था, जिसके पीछे स्पष्ट कारण थे: पिछले दशक में तेजी से विस्तार के कारण, कॉर्पोरेट घरानों को अपने कंप्यूटर, मेनफ्रेम और नेटवर्क के दैनिक संचालन के लिए किसी की आवश्यकता थी, और अपने स्वयं के इंजीनियरों की फौज रखने की तुलना में रखरखाव का काम छोटी फर्मों को आउटसोर्स करना कहीं अधिक किफायती था। हनी सिंह इतने चतुर थे कि उन्होंने वार्षिक रखरखाव अनुबंध प्राप्त कर लिए और उन्होंने परिणाम भी दिए। एक बार जब उनका किसी कंपनी में दबदबा बन जाता था, तो अनुबंध के नवीनीकरण के समय प्रतिस्पर्धा के पास बहुत कम अवसर होते थे। उनके बैक ऑफिस में छह छोटे केबिन और तीन कमरे थे - सबसे बड़ा कमरा संलग्न बाथरूम और लिविंग रूम वाला था, जहाँ वे कभी-कभी सोते थे और कभी-कभी अपनी मॉडल प्रेमिका किट्टी वर्गीज के साथ समय बिताते थे। यह एक आम कांच की इमारत की ऊपरी मंजिलों में स्थित था, क्योंकि भूतल पर प्रीमियम कार्यालय स्थान पर पैसा खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं थी: यह कोई खुदरा व्यवसाय नहीं था और ग्राहक कभी उनसे मिलने नहीं आते थे। उनके पास बारह सदस्यों की एक टीम थी जो ग्राहकों के स्थानों पर समस्याओं को सुलझाने में लगी रहती थी। लगभग हर दिन किसी न किसी कार्यालय में कुछ न कुछ खराबी आ जाती थी। कर्मचारी तभी आते थे जब उन्हें महंगे पुर्जों, वेतन या किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत होती थी जिसके लिए उन्हें अपने गुरु से विशेषज्ञ सलाह, मदद या मार्गदर्शन चाहिए होता था। कार्यालय में रोज़ आने वाला एकमात्र दूसरा व्यक्ति - जो वास्तव में परिसर के तीसरे कमरे में रहता था - टीटू था, जो नाई से उनका विश्वासपात्र बन गया था। वह एक ही व्यक्ति में ऑफिस बॉय, डिलीवरीमैन, टेलीफोन ऑपरेटर, रिसेप्शनिस्ट, सब कुछ था। और वह हनी सिंह के प्रति एक खूंखार कुत्ते की तरह वफादार था।
कंप्यूटर प्रोग्रामिंग में असाधारण रूप से प्रतिभाशाली हनी दिन भर अपने दफ्तर में ही बंद रहता था। वह सबको बताता था कि वह फिलहाल एक अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर पैकेज पर काम कर रहा है और अगर वह प्रोग्रामिंग में सफल हो गया, तो वह उसका

पेटेंट करवाकर दुनिया भर में लाखों में बेचेगा। शुरू में तो सबने उसकी बात पर यकीन कर लिया, लेकिन जैसे-जैसे हफ्ते और फिर महीने बीतते गए, उसके ग्राहक और यहां तक कि कुछ कर्मचारी भी सोचने लगे कि वह सिर्फ वहम में जी रहा है। सिर्फ दो लोगों ने उस पर भरोसा किया: किटी और टिटू।

अच्छे संस्कार और रोज़ी-रोटी कमाने की अच्छी क्षमता के बल पर हनी सिंह का जीवन सुखमय, आनंदमय और उज्ज्वल दिख रहा था। जिस नए कार्यक्रम पर वह काम कर रहे थे, उसके बिना भी उनके मौजूदा कारोबार में संभावनाएं दिख रही थीं और उनकी उम्र अभी मात्र उनतीस वर्ष थी।

***

लेकिन एक तकनीकी खराबी आ गई।

ब्रुसेल्स के क्राउन प्लाजा होटल की लिफ्ट में कैमरे में कैद हुआ वह बेहद आकर्षक व्यक्ति, जिसकी शक्ल हनी सिंह से आश्चर्यजनक रूप से मिलती-जुलती थी, उस रात की घटना है जब रॉन जोगानी की हत्या हुई थी।

6
Six

दोपहर के भोजन के बाद टीम ऑपरेशन रूम में मेज के चारों ओर बैठ गई। जतिन को एक बार फिर कमरे का प्रभार दिया गया था, और उसने...

एक बार फिर, विक्टर की फाइल से हर छोटी से छोटी जानकारी निकालने में जतिन ने शानदार प्रदर्शन किया। रॉन जोगानी की हत्या की स्थानीय जांच फाइल भी अब दो इंच मोटी हो चुकी थी। दीवारों पर घटनास्थल की तस्वीरें, रॉन जोगानी की तस्वीरें, उनके करीबी सहयोगियों की सूची, उनकी पूर्व पत्नी का विवरण (वही पत्नी जिसने उनसे या उनके शव से कोई संबंध रखने से इनकार कर दिया था), जिस होटल में जोगानी की हत्या हुई थी उसका नक्शा और क्राउन प्लाजा होटल के आसपास की सड़कों के नक्शे लगे हुए थे। रीता ने माना कि जतिन ने सारी महत्वपूर्ण जानकारी जुटाने के लिए पूरे दिन मेहनत की होगी। यह देखकर अच्छा लगा कि एक मामूली घटना ने भी उनकी जांच की लगन को कम नहीं किया था।

रीता, विक्रम और जतिन कॉफी की चुस्कियां लेते हुए दोबारा रिपोर्ट पढ़ रहे थे, तभी नेने वहां पहुंचीं।

सीनियर इंस्पेक्टर राजेश नेने: मुंबई के रहने वाले नेने अपराध शाखा के सबसे अनुभवी इंस्पेक्टर थे। उनकी उम्र पचास के करीब थी, लेकिन उन्होंने अपनी जवानी और फुर्ती को खोने से इनकार कर दिया था। पारिवारिक दायित्वों के कारण उन्होंने सभी पदोन्नति ठुकरा दी और मुंबई में ही बस गए, इसलिए उन्हें अपराध और अपराधियों के सभी गुप्त ठिकानों की अच्छी जानकारी थी। उनके घने, घुंघराले, काले रंग के बाल थे, जिनमें एक भी सफेद बाल नहीं था, और उनका कद पांच फुट ग्यारह इंच था, जो कभी झुकता नहीं था। मुंबई पुलिस के कुछ अन्य संशयवादियों की तरह, जब डीसीपी रीता फरेरा ने अपराध दस्ते का कार्यभार संभाला था, तब वे भी खुश नहीं थे, लेकिन उन्होंने अपने अहंकार को एक तरफ रख दिया था, और अब उनके साथ काम करने के बाद वे भी उनके प्रति वफादार हो गए थे।

अब काम पर लगने का समय था।

रीटा ने सेक्सी के साथ अपनी मुलाकात का संक्षिप्त विवरण दिया, इस बात पर जोर देते हुए कि मामला कितना महत्वपूर्ण था और तीनों को संक्षिप्त जानकारी देने में लगभग एक घंटे का समय बिताया।

अपराधियों की बुद्धिमत्ता को कम आंकने का जोखिम न लें। वे चालाक हैं, होशियार हैं और हालात के हिसाब से तुरंत फैसला लेने में माहिर हैं। परिस्थितियों में बदलाव आने पर वे अपनी योजनाओं को तुरंत अनुकूलित करने की क्षमता रखते हैं। याद रखें, वे केवल हीरे चुराने आए थे, लेकिन हालात की मांग के चलते उन्होंने हत्या कर दी। यह हत्या की जांच है और जब तक अन्यथा साबित न हो जाए, हर बात महत्वपूर्ण है। हर छोटी से छोटी जानकारी दर्ज करें और उसे खारिज करने से पहले अपने सहयोगियों से परामर्श लें। यदि आपको किसी भी चीज की आवश्यकता हो - बैकअप, वाहन, तकनीकी सहायता, या अन्य विभागों के साथ सहयोग - तो आप मुझे चौबीसों घंटे, सातों दिन कभी भी कॉल कर सकते हैं।

सिर हिलाता है।

उत्साहवर्धक भाषण तो यहीं समाप्त हुआ, अब जिम्मेदारियां सौंपने का समय था।

'मेरी योजना यह है: हम जोगानी की जांच करेंगे। हम उसके घर और दफ्तर से शुरुआत करेंगे - जब वह वापस नहीं लौटा तो उसके घरेलू और व्यावसायिक सभी

सामानों का क्या हुआ? मैं रॉन जोगानी के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं: उम्र, जन्म स्थान, स्कूल, कॉलेज, दोस्त, स्वास्थ्य इतिहास, आर्थिक स्थिति, बैंक खाते, संपत्ति, सब कुछ। हमें हर चीज की छानबीन करनी होगी। इस समय, हमें यह नहीं पता कि क्या गड़बड़ है और हम तब तक छानबीन करते रहेंगे जब तक हमें कुछ मिल न जाए।'

'उनकी पूर्व पत्नी के बारे में क्या?'

'हमें उसकी पृष्ठभूमि की भी पूरी तरह से जाँच करनी होगी। हालाँकि सब कुछ यही इशारा करता है कि उसका जोगानी से कोई लेना-देना नहीं है, फिर भी हमें उसे बेगुनाह साबित करना होगा। उसका मोबाइल नंबर फाइल में है क्योंकि बेल्जियम पुलिस ने उससे संपर्क किया था, उसे ढूँढ़ना मुश्किल नहीं होना चाहिए।' रीता ने दीवार पर लगे कथित हत्यारे की तस्वीर की ओर इशारा किया। 'हमें इस आदमी को ढूँढ़ना होगा - शिशिर सिंह, ज़ाहिर है यह उसका असली नाम नहीं है, लेकिन हमें मुखबिरों के साथ काम करना होगा। कोई न कोई तो उसे जानता ही होगा।' वह नेने की ओर मुड़ी। 'मैं तुम्हें मुखबिरों से बात करने के लिए छोड़ सकती हूँ...'

'जी महोदया। इनकी कोई कमी नहीं है, ये काम मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं बहुतों को जानती हूँ, मैं पता कर लूँगी।' नेने कार्रवाई के लिए तैयार थी।

'अच्छा। तो चलिए काम बाँट लेते हैं। हमें दो टीमों में बँट जाना चाहिए। जतिन, तुम मेरे साथ आओ। विक्रम, तुम नेने के साथ साझेदारी करो, तुम दोनों मुखबिरों के नेटवर्क की ज़िम्मेदारी संभालो। हमें शिशिर सिंह को ढूँढना है।' रीता को अपने अनुभव से पता था कि दोनों वरिष्ठ निरीक्षकों को किसी तरह की निगरानी की ज़रूरत नहीं थी। यह जोड़ी सभी को स्वीकार्य प्रतीत हुई।

'अगर वह मुंबई में है, तो समझ लीजिए कि वह मिल गया है, महोदया।'

उसके पास एक वफादार टीम थी, यह सौभाग्य की बात थी, लेकिन उससे भी बड़ा सौभाग्य यह था कि उसके पास एक आत्मविश्वासी टीम थी। रीटा ने अपनी किस्मत को धन्यवाद दिया।

'हम जोगानी के घर चलते हैं, आप लोग आगे बढ़ें और शिशिर सिंह की पहचान करने में मदद कर सकने वाले सभी लोगों को जानकारी दें। हम संपर्क में रहेंगे, और अगर कोई आपात स्थिति नहीं हुई तो हम कल सुबह कार्यालय में मिलेंगे। कोई सवाल?'

कोई नहीं।

'अपनी पीठ का ध्यान रखना, दोस्तों।'

***

रीता और जतिन दफ्तर की इमारत से बाहर निकले। रीता ने अपने ड्राइवर को घर जाने को कहा। साथ ही उसने ड्राइवर से यह भी कहा कि वह अपना मोबाइल बंद न करे, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वह बाद में उससे संपर्क कर सके।

'मैडम, चाबी?' जतिन ने कार की चाबी लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए पूछा।

'मैं चलाऊंगा।'

रीता ने शांत भाव से गाड़ी चलाई। वे लोकमान्य तिलक मार्ग पर बाईं ओर मुड़े और रमाबाई अंबेडकर मार्ग पर दाईं ओर मुड़ने के लिए ट्रैफिक लाइट का इंतज़ार करने लगे। मुंबई में चौबीसों घंटे चलने वाले व्यस्त यातायात की विशेषता स्पष्ट थी। हर आकार, रंग और ब्रांड के दो, तीन और चार पहियों वाले वाहनों की एक नदी सी उमड़ रही थी, जो अलग-अलग गति से रुकती और चलती रहती थी। गाड़ी चलाना पूरी तरह से सहज ज्ञान पर निर्भर था। हर किसी को अपने अंतर्ज्ञान से पता चल जाता था कि किसे आगे जाने देना है और किसे पीछे छोड़ना है। हॉर्न बज रहे थे, खुली खिड़कियों से संगीत की आवाज़ आ रही थी, और धुआँ और प्रदूषण प्रकृति को और भी गंदा कर रहे थे। जब वे चौराहे पर रुके, तो उन्हें पीछे से एक मोटरसाइकिल की तेज़ गर्जना सुनाई दी। कोई पीछे से उनकी ओर आ रहा था। रीता ने साइड मिरर में देखा और चमड़े के कपड़े पहने एक व्यक्ति को देखा - जिसने शायद लाल ट्रैफिक लाइट नहीं देखी थी - जो चौराहे की ओर तेज़ी से आ रहा था। जैसे-जैसे गर्जना तेज़ होती गई और मोटरसाइकिल सवार साइड मिरर में बड़ा होता गया, रीता सोचने लगी कि वह बेवकूफ आखिरी समय में ब्रेक कैसे लगाएगा, जबकि सिग्नल में अभी भी हरी बत्ती होने में इकत्तीस सेकंड बाकी थे।

मोटरसाइकिल सवार ने गति धीमी नहीं की। सिर पर हेलमेट पहने, बेजान सिर के साथ सवार ने सिग्नल को इतनी तेज गति से पार किया कि - भगवान न करे - अगर वह किसी से टकरा जाता, तो सवार का डीएनए सड़क से खुरच कर निकालना पड़ता।

'बेवकूफ!' रीटा जोर से चिल्लाई, उसे इस बात का एहसास नहीं था कि कार की खिड़कियां बंद थीं। 'क्या तुमने वह देखा?'

'पागल आदमी। आजकल शहर में उसके जैसे बहुत से लोग हैं, महोदया। जब से ये आयातित बड़े इंजन वाली मोटरसाइकिलें भारत में आई हैं, और आप जानती हैं कि

हमारे देश में ड्राइविंग लाइसेंस कैसे दिए जाते हैं।'
सिग्नल हरा हो गया और वे दाईं ओर मुड़ गए।
'उसकी जान जा सकती थी...'
या किसी की हत्या कर दी।
'वो भी। क्या आपने रजिस्ट्रेशन प्लेट पढ़ी?'
'5-7-6-4. लेकिन मैं सीरीज नहीं देख पाया, पर मैं कोई न कोई तरीका निकाल लूंगा।'
'कृपया। मैं इस व्यक्ति से और उसके जैसे कुछ अन्य लोगों से मिलना चाहता हूँ। हमें स्थानीय पुलिस स्टेशनों को नोटिस भेजना चाहिए। इन लोगों पर सिर्फ जुर्माना नहीं लगाया जाना चाहिए, हमें उनके ड्राइविंग लाइसेंस भी जब्त कर लेने चाहिए।'

***

कफ परेड मुंबई के सबसे आलीशान इलाकों में से एक है: आलीशान, आलीशान और भव्य। उद्योगपति, व्यापारी, नौकरशाह, राजनेता और बड़े-बड़े कॉरपोरेट जगत के दिग्गज यहाँ रहते हैं; लेकिन बॉलीवुड हस्तियों के लिए यह कोई पसंदीदा रिहायशी इलाका नहीं है। श्री कफ के नाम पर बसा यह इलाका, प्रकृति के विनाश में मानव लालच का जीता-जागता उदाहरण है। साठ के दशक में समुद्र से 75,000 वर्ग मीटर ज़मीन हासिल कर उन लोगों के लिए समुद्र किनारे रिहायशी मकान और दफ्तर बनाए गए जो इसे वहन कर सकते थे। बताया जाता है कि रॉन जोगानी का अपार्टमेंट भारत की सबसे अमीर हाउसिंग सोसाइटियों में से एक, जॉली मेकर वन में 3700 वर्ग फुट से भी बड़ा था। इस सोसाइटी का आरक्षित कोष इतना बड़ा है कि निवासियों को रखरखाव शुल्क के बजाय ब्याज मिलता है। जोगानी का अपार्टमेंट पंद्रहवीं मंजिल पर था और वहाँ से समुद्र का नज़ारा दिखता था। यह न सिर्फ कफ परेड या मुंबई में, बल्कि पूरे देश में सबसे आलीशान रिहायशी इलाकों में से एक था।
पैसा, हीरे, आलीशान अपार्टमेंट, महंगी गाड़ियाँ और भी बहुत कुछ, और फिर एक गोली—महज़ दो सेंटीमीटर का धातु का खोल—सब कुछ छीन लेती है। क्षुद्र!
चूंकि कार में सवार दोनों में से कोई भी वर्दी में नहीं था और कार में लाल बत्ती भी नहीं जल रही थी, इसलिए जॉली मेकर वन के सुरक्षाकर्मियों ने रीटा की बिना नंबर प्लेट वाली कार को बैरियर पर रोक दिया। जैसे ही रीटा ने अपनी खिड़की नीचे की, दुबला-पतला वर्दीधारी गार्ड ड्राइवर की तरफ आया।

'जी मैडम?' गार्ड ने गुस्से से कहा। 'किसे बुलाना है?' उसने अपनी अंग्रेज़ी बोली में पूछा और कार में झाँक कर देखा कि क्या वहाँ दो लोगों के अलावा कोई और भी है। उसने अपार्टमेंट के निवासी को फोन करने और आगंतुकों को अंदर आने देने से पहले उचित अनुमति लेने के लिए अपना वॉकी-टॉकी तैयार रखा था।
'श्री रॉन जोगानी का अपार्टमेंट,' रीटा ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।
एक पल के लिए गार्ड के चेहरे पर संदेह का भाव दिखाई दिया।
'वह अब यहां नहीं रहता। वह चला गया है।'
'चले गए? कहाँ?' रीता जानना चाहती थी कि क्या इस आलीशान इमारत में रहने वाले लोगों को जोगानी की मृत्यु के बारे में पता था।
'वह स्वर्ग चला गया। तुम कौन हो?' गार्ड उदास लग रहा था लेकिन अपनी स्थानीय भाषा में बात जारी रखी।
'श्री जोगानी अब इस दुनिया में नहीं रहे?' रीता ने आश्चर्य जताते हुए पूछा।
'बस बहुत हो गया। तुम कौन हो?'
रीटा ने तीसरी बार भी उसकी बात अनसुनी कर दी। 'तो अब उसके अपार्टमेंट में कौन रहता है?'
'मैडम जीवित हैं। आप कौन हैं?'
'कौन सी मैडम?'
गार्ड को जब एहसास हुआ कि आगंतुकों से उसके सवालों का कोई जवाब नहीं मिल रहा है, तो उसने फैसला किया कि वह अब और जवाब नहीं देगा। 'पहले आप बताइए कि आप कौन हैं, फिर मैं बताऊंगा।'
'मैं डीसीपी रीता फरेरा हूं, और ये इंस्पेक्टर जतिन सिंह हैं। क्या इससे आपके सवाल का जवाब मिल गया?' रीता ने जैन की ओर देखा, जिन्होंने अपना पहचान पत्र दिखाया।
'जी महोदया...' गार्ड के चेहरे पर निराशा और प्रशंसा दोनों एक साथ झलक रही थी। उसने अभिवादन करने के लिए अपना हाथ माथे पर रख लिया। यह एक सहज प्रतिक्रिया थी।
'तो अब श्री जोगानी के अपार्टमेंट में कौन रहता है?'
'मैडम जीवित हैं।'
'कौन सी मैडम?'

'मैडम जोगानी।'
'मैडम जोगानी?' क्या विक्टर ने यह नहीं बताया था कि जोगानी तलाकशुदा और अविवाहित थे? 'लेकिन... श्री जोगानी विवाहित नहीं थे।'
'तलाक से पहले उनकी शादी हुई थी,' उन्होंने मासूमियत से स्पष्ट किया। 'श्रीमती जोगानी अपार्टमेंट में वापस आ जाइए।' व्याकरण संबंधी गलतियों के बावजूद, उन्होंने अंग्रेजी में बात की।
रीता ने मन ही मन सोचा, "खालीपन का डर! प्रकृति को खालीपन बिल्कुल पसंद नहीं होता, है ना? एक खाई खोदो तो नदी उसे भर देती है, एक झाड़ी को जड़ से उखाड़ दो तो कुछ ही दिनों में खरपतवार उग आते हैं। एक तानाशाह को हटा दो तो तख्तापलट करने वाला नेता अगला तानाशाह बन जाता है। कफ परेड में एक अपार्टमेंट खाली करा दो तो श्रीमती जोगानी - पूर्व श्रीमती जोगानी - रॉन जोगानी के शव के अकड़ने से पहले ही उसमें आ जाती हैं।" रीता और जतिन ने एक-दूसरे को देखा। यह दिलचस्प होता जा रहा था।
'ठीक है, हमें अंदर आने दीजिए, हमें श्रीमती जोगानी से मिलना है।'
गार्ड ज़रा भी नहीं हिचका; उसने गाड़ी के लिए बैरियर उठाया और अंदर जाने दिया। उसने विनम्रतापूर्वक आगंतुकों के लिए पार्किंग स्थल की ओर इशारा किया। इमारत, अपनी आर्थिक स्थिति के बावजूद, मुंबई के कठोर मौसम के कारण जर्जर लग रही थी। समुद्र के निकट होने के कारण - रीता के बांद्रा स्थित अपार्टमेंट की तरह - नमक और नमी ने भी अपना असर दिखाया था, भले ही इसके रखरखाव के लिए पर्याप्त धनराशि जमा थी। हालांकि, टावरों की विशालता को देखते हुए यह स्पष्ट था कि मुंबई के मानकों के अनुसार अपार्टमेंट बहुत बड़े थे, जहां बिल्डर 400 वर्ग फुट में एक बेडरूम का अपार्टमेंट बेच सकते थे और उसमें चार लोगों का परिवार रह सकता था। निश्चित रूप से आलीशान। यहां रहने वाले संभ्रांत लोगों को देखते हुए, इससे छोटा कोई भी अपार्टमेंट शर्मनाक ही होता।
रीता और जतिन चुप रहे। रीता सोच रही थी कि श्रीमती जोगानी की वापसी महज़ एक संयोग है या उनकी मृत्यु का परिणाम। उसका झुकाव संयोग की ओर था। वे चुपचाप लिफ्ट से पंद्रहवीं मंज़िल पर गए।
क्या जोगानी ने बेल्जियम जाने से पहले अपार्टमेंट में अलार्म नहीं लगाया होगा? अगर लगाया था, तो उनकी पूर्व पत्नी जोगानी उसमें कैसे घुस गईं?

जतिन सिंह ने घंटी बजाई और नौकरानी ने तुरंत दरवाजा खोल दिया, मानो वह उनका इंतज़ार कर रही हो। संभवतः छोटे कद के सुरक्षा गार्ड ने आगंतुकों के बारे में सूचना देने के लिए फोन किया होगा। जतिन ने उनका परिचय कराया और नौकरानी को अपना पहचान पत्र दिखाया। नौकरानी उन्हें घर के अंदर ले गई। वे नौकरानी के पीछे-पीछे एक चौड़े प्रवेश कक्ष से होते हुए बैठक कक्ष में पहुँचे। नौकरानी ने उन्हें बैठने के लिए कहा और बताया कि "मैडम" कुछ ही मिनटों में उनसे मिलने बाहर आ रही हैं। कमरे से निकलने से पहले उसने पूछा कि क्या उन्हें कुछ पीने के लिए चाहिए। दोनों ने ठंडा पानी मांगा।

लिविंग रूम का फर्नीचर बेज रंग, कच्चे रेशम और टैन लेदर से बना था। तरह-तरह की कलाकृतियों से कमरे की हर खाली जगह भरी हुई थी। लिविंग रूम की छत असामान्य रूप से ऊंची थी, जिससे क्रीम रंग की दीवारों पर उनकी सभी पेंटिंग्स प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त जगह मिल गई थी। सौंदर्य के मामले में पूरे अंक। लेकिन व्यक्तिगत स्पर्श लगभग न के बराबर। यह उस तरह का घर था जिसे देखकर लगता था कि इसे किसी इंटीरियर डिजाइनर ने सजाया है, ठीक वैसे ही जैसे पत्रिकाओं में दिखाए जाते हैं। शायद किसी डिजाइनर पत्रिका ने इसके बारे में पहले ही लिखा हो, लेकिन रीटा को पता नहीं था। उसने अपने अपार्टमेंट को खुद ही मिनिमलिस्ट डिजाइन में सजाया था। रीता को इसमें कोई संदेह नहीं था कि पूर्व श्रीमती जोगानी सच्चाई बताने से कतराएंगी, बल्कि पूरी तरह शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाएंगी। लेकिन वह इसके पीछे की वजह और तरीका जानने के लिए उत्सुक थी। एक वैकल्पिक सिद्धांत एक बार फिर उसके दिमाग में घूमने लगा था: क्या रॉन जोगानी की हत्या वास्तव में हीरों के लिए की गई थी?

'तुम्हें आने में काफी समय लग गया।' पूर्व श्रीमती जोगानी आ गईं। सीधी खड़ी, लंबी महिला - रीता से थोड़ी लंबी - लगभग चालीस वर्ष की आयु की, जिनका मेकअप शहनाज़ हुसैन की सलाह से कहीं अधिक था, लेकिन बहुत भद्दा नहीं था। अपनी जवानी में वह निश्चित रूप से बेहद खूबसूरत रही होंगी। उन्होंने सफेद रंग की गोल गले वाली टी-शर्ट पहनी हुई थी, जिसके सामने 'द बीटल्स' की तस्वीर छपी थी, जो घुटनों तक की डेनिम पैंट से झांक रही थी। वह शोक में डूबी हुई नहीं लग रही थीं। वह हारी हुई, हारी हुई या दुखी भी नहीं लग रही थीं।

'हैलो, मैं डीसीपी रीता फरेरा हूं, और ये इंस्पेक्टर जतिन सिंह हैं। और आप...?' रीता

उन्हें श्रीमती जोगानी कहकर पुकारने से बचना चाहती थीं।
'अनीता। मेरी शादी एक समय रोनी से हुई थी,' उसने उदास स्वर में कहा।
क्या तलाक के बाद आपके पति/पत्नी की मृत्यु हो जाने पर आप विधवा हो गईं?
'हैलो अनीता, माफ कीजिए मैं आपसे संपर्क नहीं कर पाई — आपने जब कहा कि हमें आने में थोड़ा समय लगा तो आपका क्या मतलब था...?'
'अरे, कुछ नहीं। रॉनी की मौत हो गई... मेरा मतलब है, उसकी हत्या कर दी गई थी,' अनीता ने खुद को सुधारते हुए कहा, '...कुछ महीने पहले। मुझे आश्चर्य है कि उस समय कोई भी मेरे पास नहीं आया।'
'क्या बेल्जियम स्थित भारतीय दूतावास ने आपसे संपर्क नहीं किया था?'
'वे थे, लेकिन कोई भी व्यक्तिगत रूप से यहां नहीं आया।'
'खैर, मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि हमें यह मामला तभी मिला जब इंटरपोल ने इसमें दखल दिया। लेकिन हमारे पास जो जानकारी है, उसके अनुसार आपने शव की पहचान करने या उसे अपने कब्जे में लेने से इनकार कर दिया, जो अभी भी लावारिस है और ब्रुसेल्स के एक मुर्दाघर के किसी दराज में ठंड से जम रहा है। क्या मैं सही हूँ?'
'तुम हो। रॉनी... मेरा मतलब है, रॉन और मैंने एक दशक से भी पहले तलाक ले लिया था, और इसकी वजह उसका मुझे धोखा देना था। मुझे उसके लिए कोई भावना नहीं है - चाहे वह जीवित हो या मृत - और मैं उससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहती। मरे हुए के बारे में बुरा नहीं बोलना चाहिए, लेकिन यह कितना अजीब है कि लोगों को उनके कर्मों का फल मिलता है और मेरी विनम्र राय में, कुछ लोग गोली के लायक होते हैं।'
'तो, अगर आपको बुरा न लगे तो मैं पूछना चाहूंगा कि आप इस अपार्टमेंट में कैसे रह रहे हैं?'
'खैर, मुझे पता है कि रॉन का कोई रिश्तेदार नहीं है, इसलिए जब मुझे रॉन के निधन की खबर मिली, तो मैंने सोचा कि मुझे आकर इस संपत्ति की देखभाल कर लेनी चाहिए, इससे पहले कि उसकी कोई धूर्त रखैल इस पर कब्जा कर ले। हम इस जगह पर रहते थे, इसलिए मैं यहीं रहने आ गया।'
'क्या तुमने ताले तोड़े?'
'मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं थी। मेरे पास अभी भी चाबियों का गुच्छा है।'
अलार्म का क्या हुआ? श्री जोगानी ने विदेश जाने से पहले घर में अलार्म जरूर लगवाए

होंगे...
'यही तो रॉन के साथ समस्या थी। वह बहुत ही अनुमान लगाने योग्य था। जब हम इस जगह पर साथ रहते थे, तो अलार्म का कोड हमारी शादी की तारीख थी। मुझे यकीन था कि तलाक के बाद और मेरे अलग रहने के बाद उसने इसे बदल दिया होगा, लेकिन मैं अंदाज़ा लगा सकती थी कि उसने इसे क्या बदला होगा। यह वही तारीख थी जिस दिन हमारा तलाक हुआ था। आसान।'
'क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने श्री जोगानी को नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखी हो या उन्हें धमकी दी हो?'
'मेरे अलावा मैं किसी और को नहीं जानता।' मुस्कुराते हुए। अकड़ू।
'तो मेरा मानना है कि श्री जोगानी के साथ आपका तलाक... कटुतापूर्ण था?' बेहतर यही होगा कि इसे रिकॉर्ड में दर्ज करा लिया जाए।
'उस आदमी की पैंट की ज़िप बंद नहीं रह सकी। मैंने उसे यहीं, हमारे घर में, एक जवान लड़की के साथ पकड़ा।'
'और तुमने तलाक के बाद उसे यह अपार्टमेंट दे दिया?' रीटा ने कीमती संपत्ति पर जोर देने के लिए अपनी आँखें घुमाईं।
'मैं यहां रहकर हर समय उसे किसी वेश्या के साथ देखने की कल्पना नहीं करना चाहती थी।'
'तो तुमने पैसे लिए और वहां से चले गए?'
'मुझे लगता है कि आप ऐसा कह सकते हैं।'
'और अब आप इसी घर में वापस आ गए हैं और इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ता?'
'एक तो वह मर चुका है, और इतने सालों बाद... मुझे लगता है कि अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'
'क्या आपको इस संपत्ति में रहने का कानूनी अधिकार है?'
'कब्जा ही कानून का नौ-दसवां हिस्सा है, है ना?'
लालची औरत। या तो अनीता बहुत चालाक थी या फिर कोई ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति था जो उसे इस तरह की जानकारी दे रहा था।
'क्या मैं संदिग्ध हूँ?'
'जब तक हत्यारा पकड़ा नहीं जाता, तब तक हर कोई संदिग्ध होता है, इसलिए आप

भी इस दायरे में आते हैं, लेकिन आपको दोषी नहीं ठहराया गया है। क्या आप आने वाले हफ्तों में देश छोड़ने की योजना बना रहे हैं?'
'नहीं, लेकिन क्या कोई प्रतिबंध हैं?'
'नहीं, लेकिन अगर आप हमें अपनी यात्रा योजनाओं के बारे में बता दें तो अच्छा होगा, ताकि अगर हमें श्री जोगानी के हत्यारे तक पहुंचने में मदद करने वाले किसी भी प्रश्न के लिए आपकी आवश्यकता हो तो हम आपसे संपर्क कर सकें।'
'लेकिन हत्या ब्रुसेल्स के किसी होटल में हुई थी, और मुझे बताया गया था कि यह एक असफल डकैती थी...'
'आप स्थान के बारे में सही कह रही हैं, लेकिन श्री जोगानी की हत्या चोरी की घटना का आकस्मिक परिणाम थी या नहीं, इस पर हम पुनर्विचार कर रहे हैं, अनीता।'
'नहीं, मैं शहर में ही हूँ, और हालाँकि मैंने कहा था कि रॉन के लिए मेरे मन में कोई भावना नहीं बची है, लेकिन अब मुझे लगता है कि मुझे कम से कम उसे सम्मानजनक विदाई तो देनी ही चाहिए। मैं उसके शव को वापस लाने का इंतज़ाम कैसे करूँ?'
रीटा ने दूसरी महिला की आँखों में थोड़ी नमी देखी। शायद सदियों पहले हुए धोखे का दर्द अब खत्म हो गया था, शायद वह रॉन को माफ़ करने की कोशिश कर रही थी। कौन जाने?
'यह सुनकर अच्छा लगा। मैं बेल्जियम के अधिकारियों को सूचित कर दूंगा, और वे मुझसे संपर्क करेंगे।'
'धन्यवाद।'
'श्री जोगानी का कार्यालय कहाँ है?'
'वह घर से काम करता था। उसका दफ्तर छोटे कमरों में से एक था।'
'हमें उस जगह की तलाशी लेनी होगी, खासकर उसके कंप्यूटर की, ताकि हमें कुछ भी ऐसा मिल सके जिससे हमें हत्यारे तक पहुंचने में मदद मिल सके।'
'बिल्कुल।'
'क्या आप अभी तक ऑफिस में हैं?'
'एक बार, हाँ, लेकिन मुझे कंप्यूटर या हीरे में कोई दिलचस्पी नहीं है, इसलिए मेरे पास छानबीन करने का कोई कारण नहीं था। जब भी आप लोग अंदर आकर तलाशी लेना चाहें, मुझे खुशी होगी।'
क्या अब टीम द्वारा पूरे इलाके की तलाशी लेने से पहले उस जगह को सील करने का

कोई मतलब था, यह देखते हुए कि सबूतों की कड़ी पहले ही टूट चुकी थी?
'गाड़ी में मेरा कुछ सामान है, जतिन।' रीता ने जतिन की ओर देखा, जो अब तक चुपचाप बैठकर अपने पैड पर नोट्स लिख रहा था। वह तुरंत उठ खड़ा हुआ।
'मुझे यह मिल जाएगा।'
'हम कम से कम दफ्तर को तो सील कर ही देंगे।' उसने अनीता की ओर मुड़कर कहा, 'हमारे जाने के बाद अगर तुम्हें कुछ भी याद आए तो तुरंत हमें फोन करना। दफ्तर की तलाशी के लिए आने वाली टीम पूरे घर की भी तलाशी लेगी, कहीं कुछ ऐसा मिल जाए जिससे हमें कोई सुराग मिल सके... उम्मीद है तुम्हें इससे कोई आपत्ति नहीं है?' सिर हिलाकर सहमति देना।
'और मैं उन सभी लोगों से बात करना चाहूंगा जो श्री जोगानी के ब्रुसेल्स जाने से पहले उनके साथ रह रहे थे, या जो भी यहां काम करते थे।'
'यहां मौजूद ज्यादातर लोग वे हैं जो मेरे रॉन को छोड़ने से पहले भी उसके लिए काम करते थे, वे कई सालों से उसके साथ हैं और अगर आप मुझसे पूछें तो उनमें से कोई भी इसमें शामिल नहीं हो सकता था।'
'मैं उस बारे में नहीं सोच रहा था, मैं उन लोगों के बारे में जानना चाहता था जिन्होंने यहां श्री जोगानी से मुलाकात की, उन लोगों के बारे में जिन्होंने पिछले छह महीनों में श्री जोगानी से मुलाकात की।'
'ओह, वो? बिल्कुल। आप ऐसा कब करना चाहेंगे?'
'मैं कल किसी से इसका इंतजाम करने को कहूंगा।'
मैं घर पर हूँ, इसलिए कोई समस्या नहीं है।
और कृपया आज हमने जिन विषयों पर बात की है, उनके बारे में उनसे कुछ भी न पूछें। मैं नहीं चाहता कि ये लोग पहले से तैयार हों।
'ज़रूर।'
इसी बीच जतिन पुलिस की टेप लेकर आया और उसने दफ्तर को सील कर दिया। जाने से पहले रीता ने जतिन से कहा कि वह एक कार्ड छोड़ दे ताकि अनीता उससे संपर्क कर सके। जोगानी के घर से निकलते हुए रीता सोच रही थी कि लालची पत्नी के साथ हुई उसकी मुलाकात का क्या नतीजा निकला: कुछ नहीं। ऐसा लग रहा था मानो उसने यूएफओ की खोज में समय बिताया हो। क्या जांच में इतनी देर हो जाने पर भी उन्हें जोगानी के दफ्तर में कुछ मिल सकता था? मुश्किल लग रहा था। लेकिन

कोशिश करने में क्या हर्ज था। और यही प्रक्रिया थी।
छह बज चुके थे। सूरज अभी पूरी तरह नहीं निकला था और आसमान अभी भी उजाला था। क्या अब वे कुछ कर सकते थे? उन्होंने दिन के लिए दो काम तय किए थे: जोगानी का घर और दफ्तर, और उनकी पूर्व पत्नी। और उन्होंने एक तीर से दो निशाने साध लिए थे।
'मैडम, मेरी एक गुजारिश है,' जतिन ने गाड़ी में बैठते हुए कहा। 'मैं इस खोज का नेतृत्व करना चाहता हूं और जोगानी के कंप्यूटर की जांच करना चाहता हूं।'
'तुम कब से कंप्यूटर के दीवाने बन गए?'
'हमेशा से ऐसा ही था, महोदया।'
'बहुत बढ़िया, चलिए देखते हैं हमें क्या मिलता है।'
जॉली मेकर बिल्डिंग कॉम्प्लेक्स से निकलते ही चूहे के आकार के गार्ड ने उन्हें सलाम किया। गाड़ी के दूर जाते ही रीता ने शहर को देखा। मुंबई भौगोलिक दृष्टि से इतना बड़ा नहीं था, लेकिन बेहद जटिल था। यह एक कॉर्पोरेट महानगर था। कॉर्पोरेट जगत ही भारत था और भारत कॉर्पोरेट की चुनौती - रीता ने इसकी तुलना अपने गोवा से की - यह थी कि हर कोई कोई न कोई था या कम से कम होने का दिखावा करता था। शायद गिनीज बुक को उस शहर को दर्ज करना चाहिए जहां वीआईपी और आम आदमी की आबादी का अनुपात सबसे अधिक हो। वह मुस्कुराई।

7
Seven

सत्रह। विक्रम और राजेश नेने को मिलकर कुल सत्रह मुखबिरों से संपर्क करने में लगभग पूरा दिन लग गया।
मुंबई के हर कोने को कवर करने के लिए सत्रह पुलिस मुखबिर काफी नहीं थे, लेकिन उनके अपने सूत्र थे। यह एक भूलभुलैया में आग को हवा देने जैसा था; लौ अपना रास्ता ज़रूर खोज लेगी। कोई न कोई, कहीं न कहीं, हमेशा कुछ न कुछ जानता ही था। यह कोई मज़ाक नहीं था कि कितने ही मामले इसलिए सुलझ गए क्योंकि किसी

ने भेद खोल दिया, या किसी ने जानकारी दे दी, या नशे में धुत होकर रात भर में कुछ भी बड़बड़ा दिया, या लूटे गए माल के बारे में शेखी बघारने के लिए जश्न मनाया, या जानकारी देने के इरादे से रिपोर्ट करने के लिए काफी चालाक बन गया। अनगिनत संभावनाएं। नतीजा एक जैसा। आखिरकार यह जानकारी किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुँच जाती थी जो इसे किसी एहसान के बदले या कर्ज चुकाने के लिए इस्तेमाल कर सकता था। शिशिर सिंह की धुंधली सी तस्वीर की सत्रह प्रतियां अनगिनत बार छापी जातीं और मुंबई के उन कोनों तक पहुँच जातीं जो गूगल मैप्स पर भी नहीं दिखते थे। ऐसी गलियां और धूल भरी उपगलियां जिन्हें मुंबई पुलिस भी नहीं ढूंढ पाती थी, तलाशी की तो बात ही छोड़िए। यह सब गुप्त रूप से किया जाता था, बेशक। जब - और अगर नहीं - उस आदमी को देखा जाता, तो आदेश स्पष्ट थे: बस उसके ठिकाने की सूचना दें, कोई संपर्क न करें। व्यक्तिगत रूप से उन फोन कॉलों को करने से थककर, दोनों वरिष्ठ निरीक्षक उस दिन के लिए अलग हो गए।

***

अगली सुबह रीता के दफ्तर पहुंचने से पहले ही टीमों को जानकारी देकर जोगानी किले की ओर रवाना कर दिया गया था। जतिन पहले से भी ज़्यादा कुशल साबित हुआ। असल में, उसकी टीम के तीनों अधीनस्थ (रीता ने राजेश नेने को इस मामले के लिए नियुक्त किया था) सक्षम थे। यह एक अच्छा संकेत था कि किसी ने भी जानबूझकर या अनजाने में प्रतिस्पर्धात्मक ईर्ष्या या मूर्खता के कारण प्रगति में बाधा नहीं डाली। रीता पिछली रात देर तक जागकर METROTIME.BE पोर्टल से पुरानी खबरें खोज रही थी: फ्लेमिश या फ्रेंच भाषा में उपलब्ध समाचार, जिन्हें गूगल क्रोम ने आसानी से अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया। उसे वेब पर ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली जो विक्टर की रिपोर्ट में न हो। शायद बेल्जियम के दैनिक समाचार पत्रों ने खुद ज्यादा छानबीन नहीं की और पुलिस द्वारा दी गई जानकारी पर ही रिपोर्टिंग की, या फिर मामला इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि शहर में हुई एक आकस्मिक हत्या पर अपने संसाधन लगाए जाएं - किसी डकैती के दौरान एक विदेशी की मौत कोई तीसरा विश्व युद्ध तो नहीं था।

रीता लड़कों के साथ फिर से मेलजोल बढ़ाना चाहती थी, थोड़े समय के अंतराल के बाद उनके साथ फिर से दोस्ती कायम करना चाहती थी। उसने आवाज़ लगाई और तीनों लड़के दोपहर के भोजन के लिए उसके साथ चलने को तैयार हो गए। चारों पास

ही के एक साधारण से पाव-भाजी रेस्टोरेंट में गए। दोपहर के भोजन के बाद जतिन जोगानी के आलीशान घर के लिए रवाना हो गया।

***

ऑपरेशन रूम में वापस आकर, रीता ने विक्रम और राजेश नेने को जतिन और अनीता के साथ हुई दिलचस्प मुलाकात के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया कि काफी समय बाद अब सैनिकों को भेजा गया है ताकि वे हर संभव चीज़ की छानबीन कर सकें, और उन कई लोगों से पूछताछ कर सकें जिन्होंने संभावित सबूतों को छुआ हो सकता है। किसी भी हालत में, सबूतों की कड़ी में कोई भी रुकावट अदालत में स्वीकार्य नहीं होगी। संक्षेप में, उस तलाशी से मिली किसी भी जानकारी पर भरोसा करना अनुभवहीनता होगी। उन्हें बस एक सुराग मिल जाए तो संतुष्ट रहना चाहिए। दोनों वरिष्ठ निरीक्षकों ने उन्हें बताया कि उन्होंने कई व्यक्तियों से संपर्क किया है। अगर शिशिर सिंह तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति जैसा दिखता है, तो उसकी पहचान जल्द ही हो जानी चाहिए।

जैसे कोई बच्चा सांता क्लॉज़ को देखकर खुश हो जाता है, जतिन उत्साह से भर उठा। उसकी खुशी इस बात से और बढ़ गई थी कि जोगानी के कंप्यूटर के डेटा से पता चल गया था कि भारत से जाने के बाद उस शाम को कंप्यूटर का इस्तेमाल नहीं हुआ था। इसलिए, उसे पूरा भरोसा था कि जोगानी ने जो कुछ भी किया था - ईमेल, खाते, बैंक विवरण, एयरलाइन और होटल बुकिंग - सब कुछ खोजा जा सकता है, भले ही जोगानी के कंप्यूटर की सेटिंग के अनुसार तीस दिनों के बाद कैश साफ़ हो गया हो। उसने रीता को बताया कि ज़्यादातर कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को यह पता नहीं होता कि हार्ड ड्राइव से डिलीट की गई हिस्ट्री को तीन चरणों में वापस पाया जा सकता है, यहाँ तक कि किसी संदिग्ध विशेषज्ञ द्वारा भी: उसे खोजें, .DAT फ़ाइल की कॉपी बनाएँ, और एक विशेष रीडर का उपयोग करके पूरी वेब हिस्ट्री का पता लगाया जा सकता है, बशर्ते कि डिलीट की गई फ़ाइलों को नष्ट करने के लिए कोई महंगा सॉफ़्टवेयर इंस्टॉल न किया गया हो।

लेकिन जोगानी ने ऐसी चीज क्यों खरीदी होगी?

जोगानी परिवार के नौकरों से अब तक लिए गए साक्षात्कारों में कुछ भी महत्वपूर्ण पता नहीं चला था। साक्षात्कार अभी जारी थे, लेकिन रीता को इस बात का बहुत भरोसा नहीं था कि मामले को सुलझाने लायक कुछ हासिल हो पाएगा। सामान्य

परिस्थितियों में भी, रीता जानती थी कि किसी गंभीर घटना के बाद बहुत कम गवाह ही कोई महत्वपूर्ण बात बता पाते हैं। ऐसा नहीं है कि लोग जानबूझकर झूठ बोलते हैं, बल्कि वे लड़खड़ा जाते हैं, और अपराध जितना गंभीर होता है, तनाव और चिंता उतनी ही बढ़ जाती है, और चिंता एक जानी-मानी समस्या थी। यह अक्सर याददाश्त को कमजोर कर देती थी। इतिहास ऐसे पीड़ितों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने हमलावरों को करीब से देखा था, लेकिन सदमे ने उनकी याददाश्त को धुंधला कर दिया था; जहां लोग अपराधी की सही पहचान करने में विफल रहे, वहां घटनाओं या उनके क्रम को याद रखना बहुत मुश्किल था। पुलिस ने गवाहों के बयानों में विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया; अगर उन्हें कोई छोटी सी भी कमी मिलती, तो वे उसमें कूद पड़ते और झूठे गवाहों को दफनाने के लिए बड़े-बड़े छेद खोद देते, लेकिन तीन महीने बाद जोगानी परिवार के किसी भी घरेलू नौकर को कुछ भी प्रामाणिक याद रहने की क्या संभावना थी? लेकिन यह प्रक्रिया थी और इसे करना ही था। किसी भी प्रक्रिया में हुई गड़बड़ी से नौकरशाही को सबसे ज्यादा परेशानी होती है। चाहे कुछ भी हो जाए, नियमों और प्रक्रियाओं का उल्लंघन न करें, चाहे वे कितने भी हास्यास्पद या अप्रचलित क्यों न हों।

'तो चलिए, अब तक जो पता चला है उस पर ध्यान देते हैं...' रीटा ने तब बोलना शुरू किया जब चारों ऑपरेशन रूम में बैठ गए थे। 'जोगानी की मौत उसी जगह हुई थी जहां पुलिस को उसका शव मिला था, इसमें कोई शक नहीं। बेल्जियम पुलिस ने इसकी जांच की और इसे दस्तावेज़ों में दर्ज किया।' उसने लाल बॉक्स वाली फाइल की ओर इशारा किया। 'हत्या का सबसे अहम सिद्धांत - परिवार के भीतर हत्यारे की तलाश करना - यहां लागू नहीं होता। पत्नी। भाई-बहन। बच्चे। जोगानी का कोई जीवित रिश्तेदार नहीं है। पूर्व पत्नी, हां, वह खुलेआम लालची है, लेकिन यह हत्या उसके द्वारा की गई नहीं लगती। और इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, मुझे कम से कम एक महीने तक उस पर नज़र रखनी होगी। वह किसे फोन करती है, कौन उसे फोन करता है, वह कहां जाती है, कौन उससे मिलने आता है, सब कुछ।'

'परिचितों के बारे में क्या?'

जांच में अधीरता एक गुण थी। इससे यह विश्वास पैदा होता था कि कोई और भी इस मामले के बारे में सोच रहा है। विक्रम पहले से ही जांच में शामिल होता दिख रहा था।

'आपकी बात बिल्कुल सही है। पहले व्यावसायिक सहयोगी। फिर दोस्त। और फिर वे

सभी परिचित जिनके पास उनकी यात्रा के बारे में जानकारी हो सकती थी। हम ऐसे लोगों को ढूंढेंगे जो नज़र रखें और हमें एक सूची प्रदान करें।'
विक्रम ने इसे अपने सामान्य तरीके से लिख लिया।
'हमें यह भी पता है कि एंटवर्प में हो रही बड़ी घटना और रॉन जोगानी के ठहरने के लिए बुक किए गए होटल के बारे में किसी को जानकारी थी। ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि कोई अचानक जोगानी के होटल के कमरे में घुस गया और हीरे बरामद कर लिए। सभी सबूत एक सुनियोजित चोरी की ओर इशारा करते हैं - बगल के कमरे बुक किए गए थे, ताले और तिजोरी से छेड़छाड़ की गई थी, आधी रात को फोन करके उन्हें कमरे से बाहर निकाला गया... हमें यह पता लगाना है कि हमारे पीड़ित के बारे में किसी को कैसे पता चला? मेरा अनुमान है कि अगर शिशिर सिंह ही वह व्यक्ति था जिसकी पहचान होटल में और फिर नई दिल्ली वापस आने वाली फ्लाइट में हवाई अड्डे पर हुई थी, तो किसी ने भारत से ही उस तक पहुंच बनाई होगी। क्या हम सब इस बात से सहमत हैं?'
सिर हिलाता है।
'तो जिस मुद्दे पर हम सभी सहमत हुए हैं, उस पर पहला सवाल यह है कि उस व्यक्ति को विस्तृत यात्रा कार्यक्रम की जानकारी कैसे हुई?'
'मैडम, हमें पता लगाना होगा कि यात्रा के बारे में किसे पता था।' नेने।
'कई लोग... यह देखते हुए कि जोगानी एक कार्टेल के लिए हीरे खरीदने गया था, उसके साथ सौदा करने वाले लोगों को छोड़कर बाकी सभी को उसकी यात्रा के बारे में पता था। और शायद उनके सहयोगियों को भी।' जतिन।
'लेकिन, उसने पूरी यात्रा योजना सबके साथ क्यों साझा की होगी?' विक्रम।
'हो सकता है उसने ऐसा किया हो या न किया हो, और हमारे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है जब तक कि वह इसे ईमेल के माध्यम से साझा न करे, और हम प्रयोगशाला द्वारा उसके कंप्यूटर में सेंध लगाने पर ही इसकी जांच करते हैं।' नेने।
'हालांकि, अगर उसने यात्रा योजना साझा भी की होती, तो भी उसे यह पता होने का कोई तरीका नहीं था कि ब्रुसेल्स के होटल में प्रवेश करते ही उसे कौन सा कमरा नंबर आवंटित किया जाएगा, है ना?' रीटा ने बताया।
'मुझे शक है कि होटल का कोई व्यक्ति इसमें शामिल था।' विक्रम।
'हाँ, यह एक संभावना है।' जतिन।

'दूसरी संभावना क्या है?' रीटा ने पूछा।
'क्या यह संभावना हमेशा बनी रहती है कि तस्वीर में हत्यारे के पास जो ब्लैकबेरी फोन देखा गया था, वह वास्तव में रॉन जोगानी का था और उसने अपनी मृत्यु से पहले किसी को फोन किया था जिससे हत्यारे को सुराग मिल गया हो?' जतिन।
'आपकी बात सही है... हालांकि उन्हें होटल में चेक-इन करने के बाद ही अपने कमरे का नंबर पता चला होगा, और तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उनके बगल और सामने वाले कमरे दोपहर तक पहले ही बुक हो चुके थे। बेल्जियम की रिपोर्ट में यही कहा गया है।' रीता ने जतिन की परिकल्पना को खारिज कर दिया।
'तो शायद उनके बीबी फोन को हैक कर लिया गया था?' जतिन ने जोर देकर पूछा।
'वही तर्क लागू होता है, जतिन। जोगानी के चेक-इन करने से पहले हत्यारे या हत्यारों को कमरे का नंबर कैसे पता चला, जबकि जोगानी को खुद इसकी जानकारी नहीं हो सकती थी?'
जतिन निराश दिख रहा था।
'क्या आप लोगों की टीमें तैयार हैं?' रीता ने वरिष्ठ निरीक्षकों के अधीन काम करने वाले सब-इंस्पेक्टरों का जिक्र किया। जमीनी स्तर के सिपाही। दुर्भाग्य से, जतिन के पास फिलहाल कोई टीम नहीं थी।
सिर हिलाता है।
'तो हम जांच को इस प्रकार विभाजित करते हैं: श्री नेने...'
'मैडम, कृपया मुझे मिस्टर नेने कहना बंद करें। आप विक्रम और जतिन को उनके नाम से बुलाती हैं, मैं अलग क्यों होऊं?'
'मुझे माफ करना, राजेश।'
'अगर आप मुझे नेने कहकर बुलाएँ तो मुझे ज़्यादा खुशी होगी। सब लोग मुझे इसी नाम से पुकारते हैं।'
ठीक है। तो नेने, जैसा कि तुम मुखबिरों को सबसे अच्छी तरह जानते हो, तुम शिशिर सिंह की तलाश का नेतृत्व करो। विक्रम, तुम जोगानी के सभी सहयोगियों, निजी और व्यावसायिक, का पता लगाने का जिम्मा लो और यह भी पता लगाओ कि हत्या के बाद आखिरकार हीरे किसने खरीदे। यह किसी बड़े व्यापारी का ही काम होगा, और मेरा अनुमान है कि यह शायद उस गिरोह का ही कोई सदस्य हो सकता है जिसने जोगानी को इस सौदे के लिए नियुक्त किया था। लेकिन हो सकता है मैं पूरी तरह

गलत हूँ। और मैं यह बिल्कुल नहीं कह रहा हूँ कि ये लोग हत्या में शामिल थे, लेकिन कौन जानता है?

'और मैं, महोदया?' जतिन ने पूछा।

'जोगानी के कंप्यूटर में सेंध लगाने की ज़िम्मेदारी तुम्हारी है। और पता लगाओ कि जोगानी का मोबाइल सेवा प्रदाता कौन था। उनसे जोगानी की सभी कॉल और पिछले छह महीनों का सारा डेटा मांगो। बल्कि एक साल का डेटा मांगो।'

जतिन को अच्छा लगा। रीता द्वारा उसे वह ज़िम्मेदारी सौंपे जाने से, जो उसने माँगी थी, उसे लगा कि उसके बॉस ने उसकी पिछली गलती को नज़रअंदाज़ कर दिया है। वह जानता था कि इस बार उसे ज़्यादा सावधान रहना होगा। एक बार गलती करना तो ठीक था, लेकिन दूसरी गलती उसके करियर के लिए विनाशकारी साबित होगी।

जब वे लोग चले गए, तो रीटा सोचने के लिए बैठ गई। अब भी कई अनुत्तरित प्रश्न थे, या यूँ कहें कि अनसुलझे प्रश्न थे। अधिकांश लोगों की धारणा के विपरीत, पुलिस केवल उत्तरों की खोज नहीं करती थी। उनकी पहली प्राथमिकता हमेशा सही प्रश्नों की खोज होती थी। सही प्रश्नों से ही सही उत्तर मिलते थे। जिन प्रश्नों का कोई उत्तर ही नहीं होता था, उनके उत्तर व्यर्थ थे।

शुक्रवार की दोपहर के चार बज रहे थे और अगर कुछ नहीं हुआ तो उसे पता था कि उसे पूरा वीकेंड अकेले ही बिताना पड़ेगा। ऊबते हुए। बेशक, उसके पास केस था, लेकिन अगर कोई मामूली सी भी सफलता नहीं मिली तो अगले अड़तालीस घंटे वह क्या करेगी? ऐश को अगले वीकेंड भारत में होना था। क्या मुंबई उसके यात्रा कार्यक्रम में था? वैसे तो वह अक्सर मुंबई ही जाता था।

ऐश मैटल—असल नाम अश्विन मित्तल था, लेकिन माइक्रोसॉफ्ट वर्ड ने वर्तनी सुधारने के बजाय उन्हें अपना नाम बदलने के लिए मजबूर कर दिया—रीता का कॉलेज का दोस्त था, जिससे उनकी मुलाकात हुई थी। वह उसका प्रेमी नहीं था, न ही उसका आशिक। सिर्फ दोस्त भी नहीं—सिर्फ दोस्त होने का मतलब एक-दूसरे के साथ शारीरिक संबंध बनाना नहीं होता। हालांकि, उनके रिश्ते का न तो कोई अतीत था और न ही कोई भविष्य। सच कहें तो, कोई रिश्ता था ही नहीं। वह तलाकशुदा था और ब्रिटेन में रहने वाला एक आपराधिक मनोवैज्ञानिक था। रीता और वह कॉलेज में मुश्किल से एक साल ही साथ रहे थे, उसके बाद ऐश मेडिकल की पढ़ाई के लिए ब्रिटेन चला गया। तब वे दोस्त नहीं थे। सालों बाद, संयोग से ऐश मुंबई में था और

उसके बॉस विनय जोशी ने उन दोनों को फिर से मिलवाया। रीता सीरियल किलर के पैटर्न को समझने के लिए एक विशेषज्ञ की तलाश में थी और ऐश अपने अनुभव के साथ उसके लिए किसी वरदान से कम नहीं था। बेशक, उन्होंने सिर्फ इस मामले पर अपनी राय ही साझा नहीं की। यह प्यार नहीं था, यह वासना नहीं थी। यह सिर्फ इतना था कि वे एक-दूसरे की संगति का आनंद लेते थे और इसके अलावा भी बहुत कुछ। ऐश लंबा था। वह हट्टा-कट्टा था। वह सांवला था। विरोधाभास यह था कि वह एक ही समय में बदसूरत और सुंदर दोनों था। देहाती... मर्दाना?

रीटा सोच रही थी कि क्या उसे फोन करके बताना चाहिए कि वह वास्तव में उसे और उसके मजाकिया चुटकुलों को याद कर रही है, तभी नेने अंदर आ गई।

'मैडम, शिशिर सिंह को देखा गया है।'

सूचना को मुखबिरों तक पहुंचाए हुए पूरे चौबीस घंटे भी नहीं बीते थे।

'वाह! यह तो बहुत जल्दी हो गया। मुझे उसके बारे में बताओ।'

'उसका नाम... हनी सिंह है।' राजेश नेने अपने हाथ में पकड़े कागज के टुकड़े को पढ़ते हुए मुस्कुराए। 'चेहरे और शारीरिक बनावट का विवरण - बेल्जियम की तस्वीरों से बिल्कुल मिलता-जुलता है, सिवाय इसके कि हनी सिंह के बाल लंबे हैं, लेकिन हो सकता है कि पिछले तीन महीनों में ये बढ़ गए हों। संदिग्ध अपनी मां के साथ अंधेरी पूर्व के तकशिला नामक अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स में रहता है। उसकी मां का नाम लकी सिंह है। हनी सिंह की एक प्रेमिका है, मिस किट्टी। मिस किट्टी वर्गीज पेशे से मॉडल हैं।' नेने एक स्कूली बच्चे की तरह खिलखिलाए, और रीता समझ गई कि क्यों। ज्यादातर तथाकथित मॉडल एस्कॉर्ट भी होती हैं, 'हालांकि अगर किट्टी का कोई गंभीर प्रेमी होता तो शायद ऐसा नहीं होता। 'हमें अभी तक यह नहीं पता कि वह कहां रहती है। हनी सिंह बांद्रा कुर्ला में कंप्यूटर रिपेयर का ठेका व्यवसाय चलाता है। अभी के लिए हमारे पास बस इतनी ही जानकारी है। क्या हमें उसे लाना चाहिए?'

'नहीं। थोड़ा सोचते हैं। बाकी लोग कहाँ हैं?'

'वे लोग अपने काम पर बाहर गए होंगे, महोदया। क्या मैं उन्हें फोन करूँ?'

'नहीं। बैठ जाइए।'

रीता समझ गई थी कि नेने निष्क्रियता के आदेश से खुश नहीं था, क्योंकि वह कार्रवाई करने के लिए बेताब दिख रहा था। अगर यह उसके हाथ में होता, तो वह तुरंत बाहर निकलकर हनी सिंह को पकड़ लेता और बाकी सब बातों के बारे में बाद में सोचता।

'क्या ऐसा कुछ है जिससे यह संकेत मिलता हो कि इस हनी सिंह ने हाल ही में संपत्ति अर्जित की है, जैसे कि उस चोरी के मामले में जिसकी हम जांच कर रहे हैं?'
'वह होंडा अकॉर्ड चलाता है...'
'और वो अपनी मां के साथ अंधेरी ईस्ट में रहता है। और वो अभी तक मुंबई से भागा नहीं है। हमें बस इतना पता है कि हनी सिंह नाम का एक लड़का शिशिर सिंह जैसा दिखता है। क्या आपने खुद हनी सिंह की तस्वीर देखी है?'
'मैं किसी से उसकी तस्वीर लेने और हमें भेजने के लिए कहूंगा।'
'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि इस व्यक्ति ने अपने उपनाम 'सिंह' में इस्तेमाल किए गए उपनाम से अलग कोई दूसरा पारिवारिक नाम इस्तेमाल करने की जहमत तक नहीं उठाई। अजीब है ना?'
'अब जब तुमने यह कहा है।' नेने थोड़ा शांत लग रहा था, लेकिन बस थोड़ा सा। रीटा समझ गई थी कि वह उसकी बात से पूरी तरह सहमत नहीं था।
'ठीक है। चलो ऐसा करते हैं: पूरे सप्ताहांत उसे निगरानी में रखते हैं। अपने लोगों से कहो कि वे तस्वीरें लें, उसकी यात्राओं का रिकॉर्ड रखें, वह किससे मिलता है, किसे फोन करता है, कहाँ खाना खाता है। सब कुछ।'
मैं इसका तुरंत इंतजाम कर दूंगा।
'कल से पहले हमारे पास अदालती आदेश लेने का समय नहीं है, इसलिए इसे गुप्त ही रहने दें।' यह उन कुछ मौकों में से एक था जब वह नियमों की सीमा पार कर रही थी। आखिर मकसद को पूरा करने के लिए कोई भी तरीका जायज होता है, है ना?
नेने मुस्कुराई। बात समझ में आ गई थी।
'उसे पीछा किए जाने का ज़रा भी शक नहीं होना चाहिए, लेकिन पीछा करने वाले उसे एक मिनट के लिए भी नहीं छोड़ पाएंगे। अगर हनी सिंह हमारा आदमी है, तो वह पूरी संभावना है कि हर समय सतर्क रहेगा। और जिस तरह से उसने सुनियोजित तरीके से डकैती की है, उसे पीछा किए जाने वाले को दूसरों की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से पहचान लेना चाहिए।'
'सही।'
सभी से अनुरोध है कि किसी भी परिस्थिति में हनी सिंह के पास न जाएं। कृपया अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करें। हालांकि, अगर हनी सिंह को हवाई अड्डे की ओर जाते हुए या शहर से बाहर गाड़ी चलाते हुए देखा जाए, तो उन्हें किसी मामूली कारण

से गिरफ्तार कर लें। उन्हें सप्ताहांत में शहर नहीं छोड़ना चाहिए। अभी नहीं, जब हम इतने करीब हैं।

अधिकांश देशों में गिरफ्तारी करना आसान था। पुलिस को इसके लिए सौ-एक कारण मिल जाते थे: कार पंजीकरण, बीमा या ड्राइविंग लाइसेंस में कोई गलती या दस्तावेज़ों का गायब होना। बस इतना ही।

'उसका पीछा शुरू करने से पहले हमें उसकी तस्वीर देखनी होगी। आप खुद देखकर पुष्टि कर लीजिए। मुझे भी एक प्रति भेज दीजिए। और किसी से कहिए कि वह उसके जन्म से लेकर अब तक का पूरा जीवन इतिहास खोज निकाले और मुझे ईमेल कर दे। कृपया उसे एन्क्रिप्ट कर दीजिए।'

'जैसे ही मुझे यह मिलेगा, हम इसे आपको भेज देंगे, महोदया।'

'और... धन्यवाद नेने। आपने इतनी जल्दी इस समस्या का समाधान कर दिया, इसके लिए मैं वास्तव में आपकी आभारी हूं।'

"मैं तो बस अपना काम कर रहा था, महोदया।" वह शर्मिंदा सा लग रहा था।

'धन्यवाद, आपका सप्ताहांत अच्छा बीते। संपर्क में रहना।'

'आप भी, महोदया, अगर आपको सप्ताहांत में किसी चीज की जरूरत हो तो मुझे फोन कर देना। मेरा मोबाइल हमेशा चालू रहता है।'

'मेरी भी यही राय है। धन्यवाद।'

नेने के जाने के बाद रीता कुछ देर दफ्तर में बैठी रही। क्या यह महज़ संयोग था या मुंबई के मुखबिर दोपहर में मोटरसाइकिल पर सवार उस व्यक्ति से भी तेज़ थे? इस बात ने उसे याद दिलाया कि उसे जतिन से उस लापरवाह सवार का पता लगाने के लिए कहना चाहिए।

***

बाद में उसी रात रीता ने जिम व्हिस्की का एक बड़ा घूंट पिया और उसकी खुशबू को अपनी नाक में भरने दिया। वह मामले के बारे में सोचती रही। पुलिस का काम काफी हद तक अनुमान लगाने पर आधारित होता है। असल में, यह गणित की तरह ही था। साधारण अंकगणित नहीं जिसे हर कोई जोड़ या घटा सकता है, लेकिन जटिल समीकरणों के समूह से मिलता-जुलता भी था। लेकिन यहाँ एक पेंच है: जटिल समीकरणों के समूह के विपरीत, वास्तविक जीवन के समीकरणों के एक से अधिक हल हो सकते हैं, और वे लगातार बदलते रहते हैं, इसलिए अज्ञात कारकों को भी

ध्यान में रखना पड़ता है। विक्टर की फाइल में एक चौंकाने वाली अनदेखी यह थी कि अगर बेल्जियम के अधिकारियों ने यह पता लगा लिया था कि शिशिर सिंह ब्रसेल्स से मुंबई कब रवाना हुआ था, तो उन्होंने यह पता क्यों नहीं लगाया और पुष्टि क्यों नहीं की कि वह ब्रसेल्स कब पहुँचा था? वह जोगानी के पीछे-पीछे तो नहीं आ सकता था। उसे यकीन था कि वह कुछ दिन पहले वहाँ पहुँच गया होगा या कम से कम उसके कुछ साथी तो पहुँच ही गए होंगे। वह भारत से बंदूक नहीं ला सकता था। उसे औजार, बंदूक और अन्य मदद की ज़रूरत थी; एक विदेशी देश में इन चीजों का इंतजाम करने में समय लगता। उसे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि इस कार्य को अंजाम देने के लिए एक से अधिक व्यक्ति मौजूद थे: यदि वे शारीरिक रूप से होटल में उपस्थित नहीं थे, तो कम से कम योजना बनाने और जोगानी पर नजर रखने में तो वे शामिल थे ही? अपना छोटा सा पेय खत्म करके रीटा ने बत्ती बंद कर दी। उसके बेडरूम की खिड़की खुली थी और उसे हवा में नमी महसूस हो रही थी। हल्की हवा बारिश की आहट लेकर आई थी। बारिश पहले से ही दूर कहीं दिखाई दे रही थी। ज़्यादा से ज़्यादा कुछ घंटों की दूरी पर।

लेकिन जब वह सुबह जल्दी उठकर दौड़ने के लिए निकली, तो उसने महसूस किया कि बादल बिना कुछ कहे उनके पास से गुजर गए थे। शायद गुजरात के कुछ कस्बों और गांवों में ऐसा हुआ हो।

जब वह वापस लौटी तो उसके ब्लैकबेरी फोन पर बीप बजी। नेने ने हनी सिंह की तस्वीर भेजी थी। तस्वीर इतनी स्पष्ट थी कि हनी सिंह शिशिर सिंह का हमशक्ल था। क्या वे जुड़वां भाई थे?

8
Eight

अपराधी सुबह नौ से शाम पांच बजे तक काम नहीं करते। वे सप्ताहांत में भी अनुपस्थित नहीं रहते। इसलिए, पुलिस बल के पास कभी भी पर्याप्त घंटे नहीं होते। एक दिन या हफ्ते में काफी दिन। वीकेंड? खैर, यह तो व्यस्त वीकेंड था, और

खासकर तब जब आपको आपके सुपरवाइजर द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति की गुप्त निगरानी के लिए चुना गया हो, जिसकी हत्या के मामले में जांच चल रही हो। और भी ज्यादा तब जब यह कोई अंतरराष्ट्रीय मामला हो और जाहिर तौर पर, देश का गौरव इससे जुड़ा हो, चाहे अप्रत्यक्ष रूप से ही सही। हनी सिंह का पीछा करने के लिए सादे कपड़ों में दो-दो सहायक सब-इंस्पेक्टरों की चार टीमें तैनात की गईं। चूंकि राजेश नेने को इस पूरे गुप्त अभियान की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, इसलिए वे इसका नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने जिन आठ सहायक सब-इंस्पेक्टरों को चुना था, वे वही लोग थे जिनके साथ उन्होंने पहले काम किया था। यह सब दक्षता और भरोसे पर आधारित था। उन्हें पता था कि वे इस काम को गुप्त रूप से अंजाम दे सकते हैं। एक टीम छत्रपति शिवाजी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर तैनात थी। अगर हनी की देश से बाहर जाने की कोई योजना होती, तो यह टीम ऑपरेशन में सर्वोपरि हो जाती - मुंबई के ट्रैफिक में किसी भी पीछा करने वाली टीम का पीछा कर पाना नासमझी होती। हमेशा यह संभावना रहती थी कि संदिग्ध का पीछा न कर पाना संभव हो। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे कोई नहीं लेना चाहता था। यह एक ऐसा जोखिम था जिसे नेने भी नहीं लेना चाहते थे। अगर हनी सिंह घरेलू हवाई अड्डे से उड़ान भर लेते, तो लैंडिंग शहर की स्थानीय पुलिस को एक साधारण फोन करके उन्हें रनवे पर ही पकड़ लिया जाता और वापसी की उड़ान में वापस भेज दिया जाता।

तकशिला मुंबई के कुछ अन्य बड़े आवासीय परिसरों की तरह विशाल नहीं था। कोई भी समझदार व्यक्ति इस परिसर से बाहर निकलने के लिए दो रास्ते अपना सकता था, और इस समय यह माना जा रहा था कि हनी सिंह अनुचित व्यवहार नहीं करेगा। ऐसा मानने का कोई कारण नहीं था, सिवाय इसके कि हनी सिंह को किसी के द्वारा पीछा किए जाने या उस पर नज़र रखने का संदेह हो। यह मानने का कोई कारण नहीं था कि हनी सिंह इमारत में अपने पहले माले के अपार्टमेंट की बालकनी से कूदकर पैदल भागेगा या भेष बदलकर भागेगा। मुखबिरों के साथ काम करते हुए, नेने को पता चला था कि हनी सिंह की मॉडल प्रेमिका किट्टी वर्गीस वर्सोवा के यारी रोड पर रहती है, जहाँ वह सप्ताहांत में गाड़ी चलाकर जा सकता था।

अगर हनी सिंह तकशिला से निकलते, तो वे महाकाली केव्स रोड पर दाहिने मुड़कर होली स्पिरिट हॉस्पिटल के पास से गुजरते हुए वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे पर जा सकते थे या उसे पार कर सकते थे, यह उनके गंतव्य पर निर्भर करता था: अगर उन्हें शनिवार

को अपने ऑफिस जाना होता, तो वे हाईवे पर चले जाते; अगर उन्हें किट्टी से मिलने जाना होता, तो वे उसे पार कर जाते। इसके विपरीत, अगर वे अपने अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स से बाहर निकलते ही बाएं मुड़ते, तो वे वल्लभभाई पटेल मार्ग होते हुए जेवीएलआर लेकर उसी वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे पर पहुँच जाते। जाहिर है, वे दस और जगहों पर जा सकते थे, लेकिन नेने के पास जो संसाधन थे, उन्हें देखते हुए हनी सिंह के मार्ग में बदलाव होने पर उन्हें तुरंत कोई और रास्ता निकालना पड़ता। किसी भी हालत में वे हाईवे तक उनका पीछा करते और फिर रेडियो पर एक-दूसरे से संपर्क करते।

हालांकि यह चलती-फिरती किसी भी चीज़ का पीछा कर सकती है, लेकिन निगरानी फरारी से नहीं की जा सकती: रेगिस्तान में चीते की नहीं, ऊंट की ज़रूरत होती है। आपको गुमनामी चाहिए, न कि कोई ऐसा चौंकाने वाला दृश्य जिसे देखकर लोग दोबारा देखने पर मजबूर हो जाएं। या इससे भी बुरा, कि लक्ष्य रुककर ड्राइवर से सिलेंडर, बीएचपी या ईंधन खपत के बारे में पूछताछ करने लगे। टीम वन की बिना निशान वाली कार - एक पुरानी सफेद रंग की, देखने में जर्जर सी मारुति ओमनी, जो आज भी भारतीय सड़कों पर सबसे कम ध्यान खींचने वाली गाड़ियों में से एक है - महाकाली केव्स रोड के दाहिने मोड़ पर खड़ी थी। टीम टू दूसरी तरफ खड़ी थी, जो देखने में उतनी ही खस्ताहाल टाटा इंडिका थी। हनी के निकलते ही ये दोनों गाड़ियां हरकत में आ जातीं। टीम थ्री, जो भाग्यशाली थी, उनके पास नब्बे के दशक की फोर्ड एस्कॉर्ट थी, और उनका काम था ईंधन जलाना, लक्ष्य के चारों ओर चक्कर लगाना और उसे घेरना।

बेशक, अंधेरी ईस्ट स्थित पुलिस स्टेशन पूरी तरह से अलर्ट पर था। जरूरत पड़ने पर वे कुछ ही मिनटों में वर्दीधारी गश्त दल भेज देते।

नेने ने शुक्रवार रात को हनी सिंह के दफ्तर की तलाशी लेने के बारे में सोचा था, लेकिन फिर यह विचार छोड़ दिया। किसी का छुपकर पीछा करना एक बात थी, लेकिन दफ्तर में सेंध लगाना बिलकुल अलग बात थी। अगर किसी का पीछा करते हुए पकड़े गए तो आप आसानी से स्थिति को अपने हिसाब से मोड़ सकते थे, पलटकर गायब हो सकते थे और इसे एक संयोग बता सकते थे। सेंधमारी को कैसे सही ठहराया जाता? और वैसे भी, उन्होंने इस बारे में शाम को रीता से बात करने का विचार नहीं किया था, और शुक्रवार की रात को इतनी देर से रीता को फोन करना?

उन्होंने यह विचार पूरी तरह से खारिज कर दिया।
चारों टीमें पूरे सप्ताहांत या अगले आदेश तक प्रक्रियात्मक और सामरिक सलाह के लिए एक-दूसरे और अपने नेता, एसआई नेने के साथ रेडियो संपर्क में रहेंगी। हनी सिंह को केवल "लक्ष्य" के रूप में संदर्भित किया जाएगा। पुलिसकर्मी और उनकी गाड़ियाँ सुबह छह बजे तक अपने-अपने स्थानों पर तैनात हो चुकी थीं। क्या होगा अगर हनी सिंह अपनी माँ के घर से जल्दी निकलकर मुंबई से बाहर किसी छोटी यात्रा पर जाने की योजना बनाए?
वे इंतज़ार करते रहे। वे देखते रहे। एक घंटा बीत गया। योजना के अनुसार, लक्ष्य निवास के नज़दीक खड़ी टीम एक और टीम दो की कारों ने अपने यात्रियों को उतारकर पैदल निगरानी करने का आदेश दिया और अपनी जगह बदल ली। कोई भी कार, चाहे कितनी भी गुप्त क्यों न हो, एक ही जगह पर लंबे समय तक खड़ी रहने से उसकी पहचान उजागर होने का खतरा हमेशा बना रहता था।
डेढ़ घंटा और बीत गया। श्री हनी सिंह का कोई अता-पता नहीं था, लेकिन सप्ताहांत के हिसाब से सुबह के 8:30 बजे का समय अभी भी थोड़ा जल्दी था। गाड़ियाँ फिर से अपनी जगह पर लौट आईं। निगरानी धैर्य का खेल है। पुलिस में हर कोई यह जानता था; चारों टीमें भी यह जानती थीं। चौथी टीम, जो हवाई अड्डे पर तैनात थी, को शायद पूरा सप्ताहांत बिना किसी खास गतिविधि के ही गुजारना पड़ेगा, लेकिन उन्हें निगरानी रखने, आगे के आदेशों का इंतजार करने और आरामदायक और असुविधाजनक दोनों जगहों पर इंतजार करने का प्रशिक्षण दिया गया था। हवाई अड्डे पर गाड़ी में चुपचाप बैठे रहना उन दूसरी स्थितियों की तुलना में कहीं ज्यादा आसान था जिनमें वे पहले रह चुके थे।
टीमों के बीच रात दस बजे हुई बातचीत में यह सवाल उठा: अगर निगरानी शुरू होने से एक रात पहले हनी सिंह घर नहीं आया होता तो क्या होता? सिर्फ इसलिए कि उसकी कार उसके अपार्टमेंट के नीचे खड़ी थी, इसका मतलब यह नहीं था कि वह किसी दोस्त या प्रेमिका के साथ लिफ्ट लेकर नहीं आया होगा। नेने ने टीम थ्री को कॉम्प्लेक्स में जाने और हनी सिंह के अपार्टमेंट ब्लॉक के चारों ओर चक्कर लगाने का आदेश दिया। जैसे ही उन्हें उसकी सफेद होंडा अकॉर्ड दोबारा दिखी, उन्हें यारी रोड भेज दिया गया।
सप्ताहांत में कम यातायात होने के बावजूद, टीम थ्री को किट्टी वर्गीस के यारी रोड

स्थित अपार्टमेंट तक पहुँचने और वापस बेस पर लौटने में लगभग एक घंटा लग गया। गाड़ी से उतरे एएसआई ने एक नौसिखिया वाली गलती कर दी। हालाँकि उन्होंने यह नहीं बताया कि वे किससे मिलने जा रहे हैं, लेकिन उन्होंने चौकीदार को इमारत का गेट खोलने के लिए अपना कार्ड दिखाया। अगर हनी सिंह वाकई शिशिर सिंह थे — और उस समय पुलिस के पास इस बात का अनुमान लगाने के लिए बहुत कम जानकारी थी, हालाँकि वे बिना किसी उचित अदालती आदेश के उनका पीछा कर रहे थे — तो उनकी प्रेमिका की इमारत में पुलिस की मौजूदगी से अगर उन्हें किसी तरह पता चल जाता तो वे सतर्क हो सकते थे। मुलाकात के बाद पुलिस की ओर से कोई और गतिविधि दर्ज नहीं की गई। एक एएसआई उनके तीसरे तल पर स्थित अपार्टमेंट में गए और दरवाज़े पर हल्की सी दस्तक दी। किट्टी ने सुरक्षा चेन लगी हुई दरवाज़ा खोला। उन्होंने पूछा कि क्या वह श्री हरि प्रसाद के अपार्टमेंट को जानती हैं — एक अनजान नाम, और उन्होंने मना कर दिया, जिसके लिए उन्होंने माफी मांगी। अपार्टमेंट में किसी और के होने का कोई संकेत नहीं था।

ग्यारह बजने से कुछ ही पहले टीम वन ने एक और निगरानी कार देखी। उसे पहचानना आसान था। एक खस्ताहाल मारुति ऑल्टो, सफेद रंग की, जिसमें इतने डेंट और जंग लगे थे कि वह पृष्ठभूमि में घुलमिल जाए और आसानी से नज़र न आए। लेकिन अनुभवी नज़रों के लिए, वह इतनी चालाकी से छिपी हुई थी कि उसका मकसद ज़ाहिर हो गया। ड्राइवर अकेला था, और वह रेगिस्तान में ध्रुवीय भालू की तरह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था: कोई छलावा नहीं। इतना विशालकाय आदमी कि ऐसा लग रहा था मानो उसे कार में ठूंसकर फुला दिया गया हो। मूंछें, हाथ में सिगरेट, जो मद्रास चेक की छोटी बाजू की कमीज़ पहने एक घनी, बालों वाली बांह से चिपकी हुई थी। आसपास और भी कारें खड़ी थीं, जिनमें लोग बैठे थे, लेकिन लगभग सभी में जोड़े बात कर रहे थे और उनमें से ज़्यादातर पंद्रह-बीस मिनट बाद चले गए। मूंछों वाला आदमी सुस्त लग रहा था, लेकिन उसके कद को देखते हुए, यह कल्पना करना मुश्किल था कि वह किसी और तरह से भी सुस्त हो सकता था। वह बहुत देर तक यूं ही इधर-उधर घूमता रहा, लेकिन जब उसने दूरबीन निकाली और तकशिला से आ रहे वाहनों पर ध्यान केंद्रित किया, तभी टीम वन के एक एएसआई ने उस पर नज़र रखनी शुरू कर दी। उसके पास जाकर पूछना आसान था, लेकिन उन्होंने नेने को बुलाया और कार का रजिस्ट्रेशन नंबर मांगा। टीम वन ने जांच की कि क्या उसके पास कोई

बैकअप है। कोई नहीं था। और उन्हें यह भी नहीं पता था कि वह किसका इंतजार कर रहा है। वे इस बात पर सहमत थे कि अकेले निगरानी करने वाले व्यक्ति के लिए यह पर्याप्त प्रयास नहीं था। शायद उसे पर्याप्त वेतन नहीं मिल रहा था। शायद क्लाइंट को सिर्फ सरसरी रिपोर्ट चाहिए थी। शायद वह अपने शिकार का पीछा करते-करते इतना कुछ जान चुका था कि उसे पहले से ही कुछ पता चल गया था और उसने पता लगा लिया था कि उसका लक्ष्य कहां से अंदर या बाहर जाएगा? या शायद वह खुद को भाग्यशाली समझ रहा था: अगर आप अकेले हैं तो आपको संभावनाओं पर ही काम करना पड़ता है। शायद उसे जल्दी नहीं थी; अगर आज चूक गया तो कल पकड़ लेगा? जैसे धीमी आंच पर खाना पकाना। लाखों संभावनाएं थीं।

नेने दस मिनट में वापस आ गया।

कार श्री जोगिंदर राजा के नाम पर पंजीकृत थी। हैंडलबार श्री राजा थे। उनके पास निजी जांच में पेशेवर विशेषज्ञता का प्रमाण पत्र था। एक जासूस की तरह, वे अंधेरी पश्चिम के लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में अपने आवासीय अपार्टमेंट में स्थित अपने कार्यालय से काम करते थे। पुलिस निगरानी दल को पता था कि भारत में जासूसों के सबसे आम ग्राहकों में से एक वे पत्नियां होती हैं जो अपने बेवफा जीवनसाथी पर नजर रखती हैं। प्रमाणित जासूस की रिपोर्ट और तस्वीरें तलाक की कार्यवाही में बहुत काम आती हैं। इसलिए, नेने ने संक्षेप में बताया कि हैंडलबार राजा संभवतः इलाके में रहने वाले किसी धनी अय्याश का पीछा कर रहे थे।

दोपहर हो चुकी थी। टीम वन ने सफेद होंडा अकॉर्ड देखी। आखिरकार, टारगेट हरकत में आ गया। उन्होंने इसकी सूचना बाकी लोगों को दी। हनी सिंह ब्लॉक से बाहर निकला और महाकाली केव रोड पर दाएँ मुड़ गया। किसी का पीछा करना आसान था। पकड़े बिना पीछा करने के लिए थोड़ी सावधानी ज़रूरी थी। अगर आप शक पैदा नहीं करना चाहते थे, तो आपको अपने और टारगेट के बीच कुछ गाड़ियों की दूरी रखनी पड़ती थी, और अगर आपको लगता था कि टारगेट ने आपको देख लिया है, तो तुरंत घात लगाना छोड़ देना चाहिए था। हालांकि, हैंडलबार राजा ने इस नियम का पालन नहीं किया। उसने हनी सिंह की अकॉर्ड को उसी समय देखा जब टीम वन ने देखा था, लेकिन तुरंत मुड़कर सड़क पर आ गया। एक कार बीच में आ गई थी, जिसे अगर उसके पास कोई विकल्प होता, तो वह कभी नहीं होने देता।

तो, निजी जासूस श्री हैंडलबार राजा भी हनी सिंह का पीछा कर रहे थे।

टीम वन और नेने के बीच रेडियो तरंग में कर्कश आवाज आ रही थी।
लेकिन क्यों?
नेने ने उनसे दोनों पर नज़र रखने को कहा। यह एक संयोग हो सकता था: श्री जोगिंदर राजा किसी और काम से जल्दी में निकल गए थे, जो शायद उनके लक्ष्य का पीछा करता हुआ प्रतीत हुआ हो।
बिलकुल संभव है।
लेकिन हैंडलबार हनी सिंह के ठीक पीछे चल रहा था। वह हनी की कार से सिर्फ एक गाड़ी पीछे और टीम वन से दो गाड़ी आगे था। हनी सिंह निस्संदेह किटी के अपार्टमेंट की ओर जा रहा था। काफिला एक स्थिर गति से चल रहा था। हनी सिंह को अपनी प्रेमिका के अपार्टमेंट पहुंचने की कोई जल्दी नहीं लग रही थी। उसने किसी को ओवरटेक करने के लिए लेन नहीं बदली। उसने अपने पीछे आ रही गाड़ी से पीछा छुड़ाने के लिए रफ्तार भी नहीं बढ़ाई। या तो उसे अपने पीछे आ रही दो गाड़ियों का पता नहीं चला या उसे परवाह ही नहीं थी।
यारी रोड पर मुड़ते हुए, हनी किट्टी के अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स के बाहर रुका। वह गाड़ी से उतरा और सीधे अंदर जाने के बजाय पैदल ही अंदर चला गया। शायद आगंतुकों के लिए पार्किंग की जगह नहीं थी। हैंडलबार बिना देखे ही आगे बढ़ता रहा और हनी सिंह को ओवरटेक करते हुए कुछ कारों के आगे एक खाली जगह पर रुक गया। वह गाड़ी से नहीं उतरा। टीम वन आगे बढ़ती रही और वहां से चली गई। टीम टू आई और हनी सिंह की कार से कुछ खाली जगह आगे वाली जगह पर मोर्चा संभाल लिया। हनी सिंह को देखकर चौकीदार मुस्कुराया। जाहिर है, दोनों एक-दूसरे को जानते थे, जो स्वाभाविक था अगर हनी नियमित आगंतुक होता।

***

नेने गुस्से से भड़क उठा। उसका पहला ख्याल था कि यारी रोड जाकर मिस्टर हैंडलबार को गाड़ी से बाहर निकाले और उनसे सवाल पूछे। हालांकि, हनी सिंह का पीछा करना अपने आप में कोई अपराध नहीं था। हैंडलबार कई वजहों से हनी सिंह का पीछा कर रहा हो सकता था। हो सकता है हनी की प्रेमिका ने ही उस पर नज़र रखने को कहा हो। लेकिन यह महज़ एक संयोग था और पुलिस का पहला नियम था कि किसी भी संयोग को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए। आखिर वो जासूस किसलिए था? उसने रीता को बताने के बारे में सोचा, लेकिन नहीं बताया। कम से कम चौबीस

घंटे तक हनी सिंह पर ही ध्यान केंद्रित रखना बेहतर था, और अगर वो जासूस निगरानी में नज़र आता भी है तो कोई बात नहीं। उसने फैसला किया कि रविवार सुबह तक इंतज़ार करेगा, जब तक उसके पास रीता को देने के लिए कुछ ज़रूरी जानकारी न हो।

***

रीता दस घंटे सोई थी, फिर सुबह अलार्म की तेज़ आवाज़ से जाग उठी। अगर उसका बस चलता तो वो घड़ी को उठाकर इतनी ज़ोर से फेंकती कि खिड़की का शीशा टूटकर नीचे ज़मीन पर गिर जाता। उसे एहसास हुआ कि वो मुंबई में कुछ ही दिन रही है। उसके मन का एक हिस्सा फुसफुसा रहा था कि उसे अपना सामान पैक करना चाहिए, एयरपोर्ट जाना चाहिए और गोवा के लिए अगली फ्लाइट पकड़ लेनी चाहिए। सेक्सी अपनी प्रेमिका के पीछे भाग सकता है। या जोशी को दोष दे सकता है। उन दोनों को ही इस तमाशे को संभालने दो। या जो भी हो। लेकिन वो ऐसा नहीं कर सकती थी। उसके समझदार दिमाग ने उसे याद दिलाया कि वो यहाँ खेल खेलने नहीं आई है। यही उसका मकसद है। यही उसकी पुकार है। एक हत्या हुई थी और अपराधी कानून की गिरफ्त से बच निकले थे। इस अन्याय को सुधारना ही था।

सुबह की धूप हल्की थी। अरब सागर की ठंडी हवा, जिसके बारे में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें की जाती थीं, मानो फिर से अपना असर नहीं दिखा रही थी। शिशिर सिंह—जो भी वह था—अभी भी लापता था। आप भाग सकते थे। आप छिप भी सकते थे। लेकिन कब तक? क्या कोई हमेशा के लिए बच सकता है? आंकड़े तो यही कहते हैं कि हाँ। लेकिन आंकड़ों की एक सीमा होती है; उनके पास संदर्भ के लिए केवल अतीत का डेटा होता है।

प्रकृति अड़ियल है; वह बदलाव बर्दाश्त नहीं करती। आप हवा को वश में नहीं कर सकते। आप नदी को किसी एक दिशा में बहने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। धारा ढलान, खांचों और ज्वार के अनुसार अपना रास्ता खुद चुनकर बहती है। अगर आप मुखबिरों से अपने लिए जानकारी जुटाने को कहते हैं, तो आपको बदले में कुछ देने के लिए तैयार रहना चाहिए। आपको यह नहीं पता कि उनके द्वारा जुटाई गई जानकारी कहाँ तक पहुँच सकती है। मुखबिर डर और सुरक्षा के कारण पुलिस के लिए काम करते थे। उन्हें अपना पेट भरना होता था। दूसरा समूह जो वास्तव में उन्हें जानकारी के लिए पैसे देता था, वह मीडिया था, इसलिए यह मानना स्वाभाविक था कि किसी ने

यह बात किसी उत्साही मीडिया संस्थान को बता दी होगी। सभी मुखबिर ऐसा नहीं करते, लेकिन इसके लिए बस एक जहरीली छुरी ही काफी होती है।
रीटा रविवार सुबह उठी तो उसने राष्ट्रीय समाचार पत्रों की सुर्खियाँ देखीं:
पुलिस हत्यारे की तलाश कर रही है।
मुंबई में हत्यारे की तलाश में इंटरपोल।
कहीं भी यह उल्लेख नहीं किया गया था कि यह उन अनेक संभावनाओं में से एक थी जिनकी वे पड़ताल कर रहे थे। हत्यारा अभी भी मुंबई या भारत में है, यह तथ्य अपने आप में अपुष्ट था। लेकिन पत्रकारों ने प्रेस रिपोर्टिंग को एक कला बना दिया है, और वे ऐसा क्यों न करें? उनका पूरा उद्देश्य अखबार बेचना, टीआरपी बढ़ाना या वेब पर विज्ञापन स्थान प्राप्त करना था। यदि शीर्षक के किसी महत्वपूर्ण हिस्से को हटाने से अधिक राजस्व प्राप्त होता है, तो ऐसा ही सही। जानकारी या ज्ञान की कमी से अटकलों या बिक्री पर कभी कोई असर नहीं पड़ा। रीता को अपने अनुभव से पता था कि प्रेस इस कहानी को खूब उछालेगी, और इसीलिए इसमें समय और मेहनत लगाई गई थी।
एक नजरिए से देखा जाए तो अब संदिग्ध का पीछा करना व्यर्थ लग रहा था। अगर संदिग्ध—हनी सिंह या कोई और—यह सोचकर बेखबर था कि वह सुरक्षित है, तो संभव था कि वह लापरवाह हो जाए और गलती कर बैठे। कई अपराधी तभी पकड़े जाते हैं जब वे बेफिक्र हो जाते हैं और अपनी सतर्कता कम कर देते हैं। वह मौका तो वाकई हाथ से निकल चुका था। हालांकि, हनी सिंह सिर्फ शिशिर सिंह जैसा दिखता था, और कुछ नहीं। उसने सात बजे नेने को फोन किया और उससे निगरानी जारी रखने को कहा। तभी नेने ने उसे राजा के बारे में जानकारी दी।
'वह अजीब है।'
'हां मैम।'
'हमें इस काम को जल्दी से जल्दी करना होगा... श्री राजा के बारे में सारी जानकारी जुटानी होगी। हमें उनसे मिलने जाना होगा। उन्हें आज बाहर निकलने से रोकने का कोई तरीका ढूंढना होगा, हमें उन्हें उनके कार्यालय में... लगभग ग्यारह बजे चाहिए?'
'मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वह आज अपने कार्यालय-सह-निवास पर मौजूद हो।'
'और मेरे लिए ऑफिस जाने का कोई मतलब नहीं है, क्या आप सभी लॉग का विश्लेषण करके विक्रम से मुझे 9:30 बजे तक मेरे घर से लेने के लिए कह सकते हैं?

मैं तैयार रहूंगी।'
'जी हां, महोदया।'

9 Nine

रीता बांद्रा में सेंट एंड्रयूज रोड पर स्थित शीश महल नामक एक अपार्टमेंट ब्लॉक में रहती थी, जो 1950 के दशक का था और पॉश पाली हिल के पास स्थित था।
इमारत
भूतल पर कार पार्किंग के लिए खंभों पर टिकी ये इमारतें पहली मंजिल से ऊपर की ओर थीं। ज़मीन की ढलान को संतुलित करने के लिए बनाए गए विशाल कंक्रीट के खंभे कंगारू के पैरों जैसे दिखते थे: आगे से छोटे और पीछे से लंबे। यह टेढ़ी-मेढ़ी इमारत मुंबई की अनूठी विशेषताओं को और भी उजागर करती थी। कुछ भी सीधा नहीं था। कुछ भी परिपूर्ण नहीं था। हर चीज़ अपने आप में अनूठी और आकर्षक थी। आधी सदी से भी ज़्यादा पुराने किसी भी अपार्टमेंट की तरह, इसका बाहरी हिस्सा भी जर्जर और खस्ताहाल था—मुंबई की मानसूनी बारिश, पास का समुद्र, हवा में नमी, सबने अपना असर दिखाया था, लेकिन ज़्यादातर अपार्टमेंट्स का अंदरूनी हिस्सा बाहरी रूप से बिल्कुल अलग था। यह कफ़ परेड तो नहीं था, लेकिन फिर भी मुंबई के सबसे पसंदीदा और समृद्ध उपनगरों में से एक था। रीता ने नए सहस्राब्दी की शुरुआत में चौथी मंज़िल पर एक 2BHK अपार्टमेंट खरीदा था—जिसमें दो बेडरूम, एक हॉल और एक किचन था; उसने खुशी-खुशी गोवा में अपनी दो पुश्तैनी संपत्तियां बेच दीं और उस पैसे को इसमें निवेश किया। उसने इमारत में रहने वाले कुछ अन्य लोगों की तरह अंदरूनी साज-सज्जा पर ज़्यादा खर्च नहीं किया था। इसमें कम फर्नीचर था, जिससे उसे काफी जगह मिली: वह इसे सादगीपूर्ण कहती थी। कोई फालतू सामान नहीं। हर चीज़ किसी न किसी काम के लिए थी। किताबें। टर्नटेबल। रिकॉर्ड्स। लैंप। जिम बीम। पूरे अपार्टमेंट में सिर्फ एक ही तस्वीर थी: बेनौलिम बीच के पास सेंट माइकल आर्कएंजल चर्च में उनके माता-पिता की शादी की तस्वीर।

एकमात्र ध्यान देने योग्य बात यह थी कि उसने आयताकार बैठक कक्ष, जिसे हॉल कहा जाता था, की एक लंबी दीवार को नीले रंग से रंगवा दिया था, जिससे वह क्रीम रंग की अन्य तीन दीवारों से अलग दिखती थी। यह एक आरामदायक जगह थी। उसने हॉल में ज्यादातर कुर्सियाँ ज़मीन पर रखी थीं और उन पर ढेर सारे कुशन रखे थे, जिससे इसे एक आरामदायक रूप मिला था।

निगरानी दल द्वारा हनी सिंह को तकशिला स्थित उनके आवास पर लौटते देखे जाने के दस घंटे और तैंतीस मिनट बाद, विक्रम रीता को लेने के लिए उसके अपार्टमेंट में था, क्योंकि नेने एक और दिन निगरानी करना चाहता था। उन्हें श्री हैंडलबार राजा से बात करने के लिए लोखंडवाला जाना था।

'गुड मॉर्निंग मैम।'

विक्रम की जिप्सी में बैठते हुए रीता ने कहा, 'सुप्रभात, विक्रम। क्या आपके पास अभी भी मारुति जिप्सी है?'

'मुझे यह गाड़ी बहुत पसंद है, महोदया। इसका अभी-अभी पूरी तरह से पुनर्निर्माण हुआ है, क्योंकि मुझे लगता है कि मारुति वाले नए ऑर्डर नहीं ले रहे हैं। इसे अपने पास रखने के लिए मुझे विशेष अनुमति लेनी पड़ी है।'

'अच्छा। अगर आप वाकई कुछ चाहते हैं तो उसे पाने के लिए आपको थोड़ी और मेहनत करनी चाहिए।'

'मैडम, हम सीधे जाकर हनी सिंह को गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?'

'हम उसे गिरफ्तार करते हैं। वह खुद को निर्दोष बताता है। उसके वकील उसे जमानत दिलवा देते हैं, क्योंकि हमारे पास कोई सबूत नहीं है। जब हम उसे अदालत ले जाते हैं तो उसका वकील और जज हम पर हंसते हैं। और अगर हमारी किस्मत अच्छी रही तो वह हम पर उत्पीड़न या मानहानि का मुकदमा नहीं करेगा। क्या आप इस बात पर बहस करने को तैयार हैं?'

'शायद।'

'शायद। जहाँ तक मुझे याद है, इस देश की किसी भी अदालत में इसे स्वीकार्य उत्तर नहीं माना जाता।' रीटा मुस्कुराई।

'नहीं।'

'तो फिर आपको आपका जवाब मिल गया। मकसद साबित होना चाहिए, साधन साबित होने चाहिए और अवसर साबित होना चाहिए। संक्षेप में कहें तो, जज के

सामने सबूत पेश करने के लिए आपको हत्यारे की रंगे हाथों तस्वीर चाहिए। वरना बचाव पक्ष हमें बुरी तरह हरा देगा।'
पुलिस का काम गणित जैसा था। आपको सवाल का जवाब पता हो सकता है, लेकिन आपको सवाल और जवाब के बीच की दूरी तय करने में सक्षम होना चाहिए।
'हां मैम।'
'साथ ही, जैसे ही उसे पता चलता है कि हमें उसकी गंध आ गई है, वह सतर्क हो जाता है - अगर वह कभी लापरवाह हो जाता है तो - इसलिए उसे अंदर लाने से पहले कुछ पूछताछ करना सबसे अच्छा है।'
सूरज की रोशनी अब इतनी तेज़ थी कि आँखें चौंधिया रही थीं। उससे बचने के लिए विंडस्क्रीन जितने बड़े सन वाइज़र की ज़रूरत थी। गाड़ी चलाते समय रीता ने विक्रम से शिशिर सिंह के ज़मीन पर मौजूद किसी साथी के बारे में अपनी आशंका पर चर्चा की।
'यह एक बहुत ही वाजिब बात है। शिशिर सिंह या हनी सिंह भारत से बंदूक नहीं ला सकते थे। और होटल के कमरे में उसने जिस भारी तिजोरी को बदला था, उसका क्या? वह उसे वहाँ खरीद सकता था, लेकिन एक ही दिन में ग्लॉक बंदूक खरीदना, सेंध लगाना और उसका इंतजाम करना असंभव होगा।'
'तो या तो बेल्जियम में उसका कोई साथी था या फिर सब कुछ पहले से ही त्रुटिहीन तरीके से योजनाबद्ध था और समय पर पूरा किया गया था।'
'आपका क्या अनुमान है, महोदया? क्या आपको लगता है कि वह या वे इस अपराध से बच निकलेंगे?'
विक्रम, शैतान तो बड़ा ही भाग्यशाली है। अगर तुम दुनिया भर के सभी गंभीर अपराधों के मामलों को ध्यान में रखो, तो मैं शर्त लगा सकता हूँ कि अपराधियों के भागने की संख्या पुलिस द्वारा पकड़े गए लोगों की संख्या से कहीं अधिक है। आंकड़े हमेशा शैतान के पक्ष में होते हैं। फिर भी, मुझे लगता है कि अब हमें कुछ सुराग मिल गए हैं अगर हमने शिशिर सिंह की पहचान कर ली है, और फिर एक जासूस उसका पीछा कर रहा है, जो शायद हमें कहीं ले जाए।
कार लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में बाईं ओर मुड़ी। रीता ने गौर किया कि इस जगह की अपनी एक अलग पहचान बन गई थी। अन्य उपनगरों से कुछ भी स्पष्ट या अलग नहीं था, लेकिन इमारतों और दुकानों में सूक्ष्म बदलाव साफ दिख रहे थे। अंधेरी पश्चिम में

स्थित लोखंडवाला, बांद्रा के गोद लिए हुए बच्चे जैसा लग रहा था - इसकी भव्यता स्पष्ट रूप से महसूस हो रही थी। कुछ दुकानें बंद थीं। रविवार था। शटर नीचे थे। दंत चिकित्सक। केमिस्ट। ड्राई क्लीनर। हेयरड्रेसर। भला हेयरड्रेसर रविवार को कब से बंद होने लगे? न्यूज़ एजेंट, बेकरी, किराना स्टोर और पानवाला खुले थे। धूसर रंग के शटरों की एक नीरस कतार, कुछ पर रंगीन भित्तिचित्र; ज्यादातर भद्दे थे, लेकिन फिर भी नीरसता को तोड़ रहे थे। अजीब बात है कि कभी-कभी बुरा भी अच्छा हो सकता है।

विक्रम ने रीता को समझाया कि नेने ने अंधेरी पुलिस में अपने एक दोस्त से मदद मांगी थी, जिसने श्री जोगिंदर राजा को सूचित किया था कि पुलिस में किसी उच्च अधिकारी का कोई निजी काम हो सकता है जिसे गुप्त रूप से पूरा करने की आवश्यकता है, और वे उनसे मिलने आएंगे। 'उन्हें घर पर हमारा इंतजार करने के लिए कहा गया है।'

***

नए काम की तलाश में हमेशा तत्पर रहने वाले और पुलिस की हर बात मानने को तैयार रहने वाले जोगिंदर राजा ने पुलिस के मुवक्किल के आने पर अपना दफ्तर खाली कर दिया था और अपनी पत्नी को कॉफी और समोसे तैयार रखने को कहा था। उन्होंने हमेशा की तरह अस्त-व्यस्त फील्ड वर्दी के बजाय इस्त्री की हुई कमीज और पतलून पहनने की अतिरिक्त कोशिश की। तो एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की पत्नी इतनी ईमानदार नहीं थी? वे खुश हुए।

***

जोगिंदर राजा त्रिशूल अपार्टमेंट्स में रहते थे—बॉलीवुड के कई सितारे लोखंडवाला में रहते थे—तो निजी जासूस के तौर पर उनकी कमाई बुरी नहीं थी, या फिर उनके पास अपनी जीवनशैली चलाने के लिए कोई और धंधा ज़रूर होगा। विक्रम ने चौकीदार को अपना बैज दिखाया, जिसने बिना कोई सवाल पूछे उन्हें अंदर जाने दिया। रीता ने आसपास का जायज़ा लिया। रविवार की सुबह: बाहर ज़्यादा लोग नहीं थे, लेकिन जिप्सी के इंजन की आवाज़ सुनकर कुछ लोग मुड़कर देखने लगे कि उसमें एक जोड़ा बैठा है। ऐसी कोई बात नहीं थी जिस पर ज़्यादा ध्यान दिया जाए।

गाड़ी से उतरते ही रीता के मन में एक ख्याल आया। हनी सिंह का पीछा कर रहे निजी जासूस जोगिंदर राजा का मतलब था कि कोई ऐसी बात जानता है जो उसे और

उसकी टीम को नहीं पता। कम से कम अभी तो नहीं। सबसे अहम सवाल था: वह कौन था और वह बात क्या थी?
रीता को उनकी खास मूंछों के बारे में पहले से ही पता था, लेकिन श्री जोगिंदर राजा के विशाल शरीर पर बनी वो मूंछें, जिन्हें उन्होंने चौथी मंजिल पर अपने अपार्टमेंट का दरवाजा खोलते ही देखा, किसी ने भी रीता को इतना हैरान नहीं किया था। ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने उस मूंछ पर बहुत समय और जेल लगाया हो। अगर निजी जासूस जोगिंदर राजा का वर्णन एक शब्द में करना हो, तो वो होगा 'हैंडलबार'। अजीब बात है, जब कोई एक चीज बाकी सब पर हावी हो जाती है। रीता ने सोचा, क्या उनके चेहरे की बाकी सारी विशेषताएं फीकी नहीं पड़ जाएंगी?
उस व्यक्ति ने खुलकर मुस्कुराया, लेकिन उसके होठों पर घने बालों के पर्दे के पीछे से वह मुस्कान मुश्किल से ही दिखाई दे रही थी।
पहली नज़र में: ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने पासा फेंका हो और पासा ही कहीं खो गया हो। और वह पासे के वापस आने का इंतज़ार कर रहा हो। सच में, कितना बेकार आदमी है! क्या उसे इस आदमी को अपनी पेशेवर योग्यताएँ देनी चाहिए या नहीं?
'मैं निजी जासूस जोगिंदर राजा हूं।' उसने अपना मोटा हाथ रीता की ओर बढ़ाया।
'डीसीपी रीटा फेरेरा।' इसे छिपाने का कोई फायदा नहीं।
'सीनियर इंस्पेक्टर विक्रम पाटिल।'
राजा ने गहरी साँस लेते हुए पदक्रम को स्वीकार किया। उसकी कंठस्थता ऊपर उठी और फिर नीचे सरक गई। रीता को उसकी मानसिक प्रक्रियाएँ चलती हुई दिखाई दे रही थीं।
'मैंने आपके बारे में सुना है, महोदया।' उनकी आवाज से उनके कद का अंदाजा लग रहा था।
छुपकर शराब पीने वाला। अभी भी अविवाहित। कई लोगों के साथ संबंध रखता है। उसने क्या सुना था?
'मैं किसी भी बात को स्वीकार नहीं करता।'
मुस्कान।
रीटा ने लोगों के उसके बारे में सोचने या कहने से परेशान होना छोड़ दिया था; आखिर उसे बिगड़े रिश्तों में मानद डिग्री तो मिल ही चुकी थी?
'मैंने मुंबई में हुए सिलसिलेवार हत्याकांड का पीछा किया था। मैंने कभी नहीं सोचा था

कि आपको मेरी जरूरत पड़ेगी।'
रीटा ने बस मुस्कुरा दिया।
'अरे, अंदर आ जाओ।' राजा को एहसास हुआ कि उसके ग्राहक अभी भी घर के बाहर हैं। 'मेरे पास कभी पुलिस में काम करने वाले ग्राहक नहीं रहे हैं, और सच कहूँ तो, मैं थोड़ा हैरान हूँ...' उसने बीच में ही रुककर उन्हें अंदर आने का इशारा किया।
रीता और विक्रम बैठक कक्ष में बैठे थे। कमरा बड़ा था, जिसमें एक टेलीविजन, स्टीरियो, चमड़े के सोफे और दीवारों पर कुछ धुंधली तस्वीरें थीं। कुछ खास नहीं था। पीछे की ओर रीता को एक हल्की रोशनी वाला गलियारा और दोनों तरफ दो-तीन दरवाजे दिखाई दे रहे थे, जो संभवतः रसोई और शयनकक्षों की ओर जाते थे। पीछे की ओर एक दरवाजा था जो एक छोटी बालकनी में खुलता था, जहाँ गमलों में तरह-तरह के पौधे रखे थे। एक पारिवारिक तस्वीर भी थी जिसमें युवा श्रीमती और श्री राजा और उनके दो बेटे दिखाई दे रहे थे। घर की खामोशी से शायद यही संकेत मिलता था कि बेटे घर छोड़कर चले गए थे।
अच्छा। दुनिया में कहीं और दो छोटे हैंडलबार सांस ले रहे थे और प्रजनन कर रहे थे।
'क्या आप ऑफिस आना चाहेंगे या यह जगह आपके लिए पर्याप्त आरामदायक है?'
तो गलियारे में मौजूद दरवाजों में से एक दरवाजा दफ्तर था।
'आपका घर, आपके नियम। श्री राजा, आपको जो ठीक लगे वही मानिए।'
'मुझे लगता है कि हमें यहीं बैठना चाहिए, यह अधिक विशाल है और जब मुझे आप में से किसी से अकेले में बात करने की आवश्यकता होगी तो मैं आपको एक-एक करके अपने कार्यालय में ले जाऊँगा।'
अरे नहीं, उसे लगता होगा कि हम अपने-अपने जीवनसाथियों को धोखा दे रहे हैं? या फिर हमारे जीवनसाथी हमें धोखा दे रहे हैं!
'इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, श्रीमान राजा। हम यहीं बैठ सकते हैं।' रीता यह नहीं पूछना चाहती थी कि उन्हें उनसे अकेले में बात करने की ज़रूरत क्यों होगी।
'चाय या कॉफी?'
'हमें कोई जल्दी नहीं है। कृपया बैठ जाइए, चलिए बात करते हैं और जब जरूरत होगी तो हम कॉफी मंगवा लेंगे।'
तीनों बैठ गए। राजा ने एक नोटपैड और कलम निकाली। बेचारे को अब भी लग रहा था कि उसे नया कारोबार मिलने वाला है।

'मैं आप दोनों की किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?'
'क्या आप एक निजी जासूस हैं, श्रीमान राजा?' रीता ने बातचीत शुरू की।
'हाँ।'
'आप इस समय किन मामलों पर काम कर रहे हैं?'
'क्या इसकी जरूरत है, डीसीपी साहिबा?'
'अगर ऐसा नहीं होता तो मैं पूछता ही नहीं।'
'कोई बड़ी बात नहीं, बस एक छोटी सी पूछताछ।'
इसलिए हैंडलबार आसानी से हार मानने वाला नहीं था।
'आपने आखिरी बार कौन सा बड़ा केस संभाला था?'
'श्री विधानी का।'
'क्या ये वही मिस्टर विधानी हैं जो विधानी इंडस्ट्रीज में काम करते हैं?'
विधानी इंडस्ट्रीज टायर उत्पादन और बिक्री करने वाले बड़े व्यापारिक घरानों में से एक थी। यह एक राष्ट्रीय ब्रांड था।
'जी हां, डीसीपी फेरेरा।'
और वह क्या करवाना चाहता था?
'उनकी बेटी का पति, जो अब पूर्व पति है... क्या यह प्रासंगिक है?'
'शायद। जब तक मुझे पता नहीं चलेगा कि क्या हुआ था, तब तक मैं हां या ना नहीं कह सकता, है ना?'
'यह पति था, मेरा मतलब है कि पूर्व पति ही था जो उसे धोखा दे रहा था और श्री विधानी के पैसे को बर्बाद कर रहा था।'
'और आपने आपत्तिजनक स्थितियों में उनकी तस्वीरें लेने में मदद की और तलाक की प्रक्रिया को आसान बनाया।'
'इतनी बात करने के लिए।'
मामले से ध्यान भटकाने के लिए हमेशा हजारों तरह की रुकावटें मौजूद रहती थीं। एक जासूस के लिए अनुशासन अनिवार्य था।
'क्या आपको यकीन है कि आप इस समय किसी बड़े मामले पर काम नहीं कर रहे हैं?'
'ये क्या है? आप चाहते हैं कि मैं आपके मामले पर काम करूं या नहीं?' राजा थोड़ा परेशान लग रहा था। 'मैं एक निजी जासूस हूं। लोग मुझ पर भरोसा करते हैं। मैं

आपको उन मामलों के बारे में नहीं बता सकता जिन पर मैं फिलहाल काम कर रहा हूं। ऐसा करना मेरे लिए गलत होगा।'
'श्री राजा, हमें ज्यादा उपदेशात्मक नहीं होना चाहिए।'
'अगर मैं आपसे पूछूं कि आप इस समय किन मामलों पर काम कर रहे हैं, तो आपको कैसा लगेगा?'
'हम फिलहाल एक हत्या की जांच कर रहे हैं। देखा, मैंने कहा था ना।'
'किसकी हत्या?'
'श्री राजा, मैं तो बस विनम्रता बरत रहा हूँ। मैं आपको अंधेरी पुलिस स्टेशन बुलाकर भी यही सवाल पूछ सकता था।'
वह आदमी औसत दर्जे का और मूर्ख के बीच का था।
'मैं यहाँ इतने लोगों को जानता हूँ कि मुझे पुलिस द्वारा पूछताछ किए जाने से डर लगता है। और, पुलिस कानून से ऊपर नहीं है। मैं पुलिस के बारे में सब कुछ जानता हूँ, उनकी कमियों के बारे में जानता हूँ और यहाँ तक कि आपके बारे में भी बहुत कुछ जानता हूँ। इससे आपको क्या पता चलता है?'
'पहला, आपके पास बहुत समय है, दूसरा, आपके पास इंटरनेट की सुविधा है और तीसरा, आप गूगल के बारे में जानते हैं। यह हत्या का मामला है, और पुलिस जांच में असहयोग करना अपराध है। श्री राजा, मुझे उम्मीद है कि आप समझते हैं कि मैं आपकी जिंदगी इतनी मुश्किल बना सकता हूँ कि आप अपने कारोबार को भूल जाएँगे, यह भूल जाएँगे कि आपको कभी किसी ग्राहक का फोन आएगा। मैं आपको और आपके कारोबार को शहर से, और आप जहाँ भी जाएँगे, मिटा दूँगा। अगर यह बात आपको समझ आ गई है, तो चलिए आगे बढ़ते हैं।'
'तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम बस धमकी दे रहे हो।'
'तुमने मुझे निराश किया। मुझे तुमसे उम्मीद थी कि तुमने मेरे बारे में पूरी जानकारी जुटाई होगी। मैं यह कर सकती हूँ। क्या गूगल सर्च से यह पता नहीं चला कि मैं कितनी पागल हूँ?'
उसका अहंकार चूर-चूर हो गया। हैंडलबार थोड़ा डरा हुआ लग रहा था, हालाँकि उसने इसे छिपाने की पूरी कोशिश की। थोड़ी सी शत्रुता उभरी, लेकिन तुरंत गायब हो गई। पर वह इतनी देर तक बनी रही कि महसूस की जा सके। मर्दानगी धराशायी हो गई। एक महिला द्वारा बलात्कार किया जाना? अपने आकार और व्यवहार के बावजूद, वह

पिट बुल के वेश में एक पूडल जैसा लग रहा था। उसकी आँखें आँसू से भर आने वाली थीं। शुद्ध भय। उसने अपनी आवाज़ से अपने डर को ज़ाहिर न होने देने के लिए चुप रहना ही बेहतर समझा।

'इसलिए, मैं आपसे शांत होने और आराम करने का अनुरोध करता हूं। चलिए एक कॉफी पीते हैं और फिर से शुरुआत करते हैं।'

राजा गलियारे में गए और अपनी पत्नी को आवाज़ दी, उनसे तीन कॉफ़ी लाने को कहा। उनकी आवाज़ थोड़ी लड़खड़ा गई; चिंता, डर या किसी अन्य अप्रिय भावना के कारण जब श्वास नली सूख जाती है तो ऐसा होना स्वाभाविक है। वे बैठक कक्ष में वापस आए और फिर से बैठ गए।

श्रीमती राजा बिल्कुल जोगिंदर की जुड़वां बहन जैसी थीं, बस मूंछें नहीं थीं। वो ट्रे लेकर आईं, नमस्ते कहा, कॉफी रखी और झट से वापस वहीं चली गईं जहां से आई थीं।

'यह किस बारे में है?'

'क्या आप शिशिर सिंह नाम के किसी व्यक्ति को जानते हैं?' रीता ने एक घूंट लिया और फिर से बोलना शुरू किया।

'नहीं। क्या मुझे करना चाहिए?'

रीता और विक्रम दोनों प्रशिक्षित जांचकर्ता थे। प्रशिक्षित जांचकर्ता तभी किसी बात पर विश्वास करते हैं जब शब्द बोलने वाले के हावभाव से मेल खाते हों। राजा इधर-उधर की बातें नहीं कर रहा था, वह सच बोल रहा था।

'क्या आपने यह नाम पहले कभी नहीं सुना?'

'नहीं। क्या मुझे ऐसा करना चाहिए था? मुझसे क्या छूट रहा है? आप मुझसे क्या छिपा रहे हैं?'

श्रीमान जोगिंदर राजा, यहाँ सवाल तो मैं पूछ रहा हूँ। बस हाँ या ना में जवाब देना ही काफी होगा। मैं वादा करता हूँ कि अगर आप मेरे सवालों का ईमानदारी से जवाब देंगे, तो मैं भी आपके सवालों का जवाब दूंगा। ईमानदारी ही यहाँ महत्वपूर्ण शब्द है, याद रखिए।

राजा ने सिर हिलाया और अपने कप से एक घूंट भर कर जोर से आवाज की।

'हनी सिंह कौन है?'

राजा निराश दिख रहा था।

'क्या मैं —'
'जी हां, श्रीमान राजा, आपको करना चाहिए...' इससे पहले कि वह कोई अप्रिय आपत्ति सोच पाते, रीता ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'हनी सिंह कौन है और आप उसका पीछा क्यों कर रहे हैं?'
'एक ग्राहक उसके बारे में कुछ बातें जानना चाहता है।'
'आप अपने ग्राहक को हनी सिंह के बारे में किस तरह की जानकारी दे रहे थे?'
'वह व्यक्ति क्या करता है, कहाँ जाता है, किससे मिलता है?'
'तुमने उसके दफ्तर में भी ताक-झांक की है?'
'मैं वहां जाकर खुद को उजागर नहीं कर सकता था।'
'रात के अंधेरे में भी नहीं?'
'क्या यह बंद नहीं होगा?'
'क्या आप कह रहे हैं कि आपने कभी ताला नहीं तोड़ा?' रीटा मुस्कुराई।
हैंडलबार ने नज़रें फेर लीं। वह जवाब नहीं देना चाहता था। झूठ नहीं बोलना चाहता था। और न ही सच को सबके सामने लाना चाहता था। रीटा उसकी दुविधा को समझ गई।
'नहीं, मैं कभी हनी सिंह के दफ्तर में नहीं गया।'
'क्यों नहीं?'
'यह ब्रीफ का हिस्सा नहीं था। मुझे नहीं लगता कि मेरा क्लाइंट चाहता है कि मैं इतना आगे जाऊं। वह हनी सिंह पर दैनिक लॉग से संतुष्ट प्रतीत होता है।'
'आपका ग्राहक कौन है?'
'मुझें नहीं पता।'
रीता और विक्रम ने एक-दूसरे की ओर देखा।
'क्या आपको नहीं पता कि आपका ग्राहक कौन है?' वह विक्रम था।
'मैंने भी यही कहा था। मुझे नहीं पता।'
'तो एक क्लाइंट है जिसने आपसे हनी सिंह का पीछा करने और उसके बारे में जानकारी देने के लिए कहा है, लेकिन आपको जरा भी अंदाजा नहीं है कि वह कौन है?'
'यह सही है।'
आपने अभी कहा, "वह दैनिक लॉग से खुश लग रहा था..." तो आप यह कैसे जान

सकते हैं कि ग्राहक पुरुष है या महिला, जबकि आप ग्राहक को जानते ही नहीं हैं?
'मुझे पहली कॉल एक पुरुष ने की थी। उसके बाद, सभी संचार किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किए जाते हैं जो अपने हस्ताक्षर के अंत में 'मिस्टर सिंह' का उपयोग करता है।'
कहानी में एक और मिस्टर सिंह हैं।
'लेकिन यह नकली हस्ताक्षर हो सकता है।'
'ऐसा हो सकता है, लेकिन मुझे इस पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।'
'वह कब था?'
'लगभग तीन महीने पहले।'
रीता ने मन ही मन हिसाब लगाया कि हनी सिंह की जासूसी लगभग उसी समय शुरू हुई थी जब जोगानी की हत्या हुई थी। तारीख से भी यही बात पुष्ट होनी चाहिए। क्या यह भी एक संयोग है?
'काफी हाल की बात है। क्या आपको तारीख याद है?'
'मुझे तुरंत तो याद नहीं है, लेकिन मैं अपने रिकॉर्ड से आपको तारीख बता सकता हूं।'
'क्या आप कृपया जाँच कर सकते हैं?'
राजा गलियारे में चला गया और गायब हो गया। रीता और विक्रम ने हैरानी से एक-दूसरे को देखा।
राजा तारीख लेकर लौटा। '4 अप्रैल।'
बेल्जियम में रॉन जोगानी की हत्या के दो दिन बाद, किसी ने हनी सिंह पर निगरानी रखना शुरू कर दिया था। एक पल बीता। एक पूरा पल उन्होंने मानसिक गणनाओं में बिताया, यह सोचते हुए कि उन्हें किस खतरे का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। ऐसा लग रहा था कि दोनों को पता ही नहीं था कि क्या कहना है। यह कितना अजीब था!
'तुम पिछले तीन महीनों से उस पर जासूसी कर रहे हो और हनी सिंह को इसके बारे में पता भी नहीं चला? उसने तुम्हें देखा तक नहीं?'
'मैं ठीक हूँ, मैं सबके साथ घुलमिल जाता हूँ।'
अपनी उस मूंछ के साथ घुलमिल जाना? वाह, क्या बात है! सेक्सी उसे कॉकलॉरम कहता: एक अहंकारी छोटा आदमी।
रीटा ने उसकी मिश्रण कौशल पर टिप्पणी करने से खुद को रोक लिया।
'ग्राहक आपसे कैसे संवाद करता है और आपको भुगतान कैसे मिलता है?'

राजा ने स्पष्ट किया कि उन्हें सभी निर्देश ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुए थे। अनुबंध पर भी डिजिटल हस्ताक्षर किए गए थे। राजा द्वारा एकत्रित सभी रिपोर्टें, जिनमें तस्वीरें भी शामिल थीं, ग्राहक श्री सिंह द्वारा बनाए गए ईमेल आईडी पर अपलोड की जानी थीं। राजा ने ईमेल लिखे, अपने पास मौजूद दस्तावेज़ संलग्न किए और उन्हें ड्राफ्ट फ़ोल्डर में सहेज लिया। श्री सिंह के पास पासवर्ड था, इसलिए वे ड्राफ्ट पढ़ते या सामग्री डाउनलोड करते और फिर उसे हटा देते ताकि राजा को पता चल जाए कि संदेश पढ़ लिया गया है। कोई भी ईमेल कभी भेजा नहीं गया। ग्राहक के निर्देश बहुत स्पष्ट थे - वे नहीं चाहते थे कि राजा किसी भी चीज़ की कोई प्रति अपने पास रखे। कोई रिकॉर्ड नहीं।

यह सब चुपके से किया गया ताकि कोई देख न सके।

शुरुआती एकमुश्त भुगतान नकद में किया गया था। नहीं, श्री सिंह इसे देने नहीं आए थे। एक रात राजा के ताले लगे लेटरबॉक्स में पैसे छोड़ दिए गए थे। नहीं, राजा को पहले से पता नहीं था कि किस रात उसे भुगतान मिलेगा। हाँ, उसने नज़र रखने की कोशिश की थी, लेकिन जो भी भुगतान देने आया था, उसे वह देख नहीं पाया था।

'क्या आपको पता है कि मिस्टर सिंह कब तक हनी सिंह का पीछा करवाना चाहते हैं?'

'शुरुआती अनुबंध छह महीने के लिए है, लेकिन अगर मुझे अधिक समय के लिए आवश्यकता होती है तो इसे बढ़ाया जा सकता है।'

'अजीब है ना?' रीता ने विक्रम की ओर ऐसे देखा जैसे वह बस यूं ही टिप्पणी कर रही हो।

लेकिन इसके लिए मुझे अच्छी तनख्वाह मिलती है।

'हां, मुझे वह बात समझ आ गई। लेकिन क्या आपको नहीं लगता कि यह थोड़ा अजीब है?'

'इसमें अजीब क्या है?'

'क्या यह समझना बहुत मुश्किल है कि आप नहीं जानते कि आपका ग्राहक कौन है और वह आपको भुगतान क्यों कर रहा है?'

'नहीं।'

'और क्या वो ग्राहक अपराधी हो सकता है और तुम्हें खून का पैसा दे रहा हो?' किसी अजीब, अज्ञात कारण से रीता को जोगिंदर राजा पर विश्वास हो गया। हैंडल बार ने ये बेतुकी कहानी गढ़ी ही नहीं हो सकती थी। ये किसी और का दिमाग था। उसने निराशा

में अपना सिर हिलाया। वे यहाँ सचमुच किसी चालाक आदमी से निपट रहे थे। 'क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है?'

'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं आप पर विश्वास करता हूं या नहीं, लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि कोई और नहीं करेगा। यह बहुत ही व्यवस्थित और सुविधाजनक है।'

मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।

'मैंने ठीक यही नहीं कहा, लेकिन सब कुछ थोड़ा संदिग्ध और संदेहास्पद लग रहा है, है ना?'

'क्या?'

'यह पूरी जांच एक रहस्यमय ग्राहक के लिए की जा रही है।'

'क्यों?'

हैंडलबार जानबूझकर मुश्किल पैदा नहीं कर रहा था। वह बस बेवकूफ था।

'भूमिकाएं उलट कर सोचो। क्या तुम्हें पता है कि यह सब कितना हास्यास्पद लगता है?'

'यह बात बिल्कुल हास्यास्पद लगती है, लेकिन—' राजा ने अचानक कहा।

'जैसा मैंने कहा।'

रीता ने विक्रम को इशारे किए और विक्रम ने बात आगे बढ़ा दी। उसने शिशिर सिंह के बारे में राजा से लगभग बीस मिनट तक पूछताछ की, हीरे और चोरी से जुड़े सवालों को चतुराई से घुमाते हुए, लेकिन हैंडलबार को कुछ भी समझ नहीं आया। जोगिंदर राजा बेवकूफ था। चालाक नहीं। उसमें कोई तरकीब नहीं थी।

रीता वहाँ बैठी रही, बातचीत से बेखबर—उसे पूरा भरोसा था कि विक्रम अकेले ही यह काम बखूबी कर लेगा—और इस मुद्दे पर विचार करने लगी। राजा जो कुछ भी कर रहा था, वह बस एक बाहरी जाँच थी। उसका मुवक्किल चाहे जो भी हो, वह ज़रूर किसी न किसी बात का पता लगा रहा था। कुछ तो गड़बड़ थी। लेकिन ज़रूरी नहीं कि हर बात सबको समझ आए और न ही हर बार। मुवक्किल नहीं चाहता था कि राजा को पता चले कि वह कौन है, और वह अपनी पहचान छिपाने के लिए हर संभव सावधानी बरत रहा था। भेजे और प्राप्त किए गए ईमेल को ट्रैक किया जा सकता था। ड्राफ़्ट फ़ोल्डर में छोड़े गए ईमेल भेजे ही नहीं जाते थे, इसलिए उन्हें ट्रैक नहीं किया जा सकता था।

'हम चाहते हैं कि आप हमेशा की तरह अपना काम जारी रखें, श्री राजा। बिल्कुल पहले की तरह। इस मुलाकात का जिक्र आपके ग्राहक या किसी और से कभी नहीं होना चाहिए। हालांकि, अब से आप अपने ग्राहक को जो भी जानकारी देंगे, उसे हमारी मंजूरी से ही प्राप्त करना होगा।'

'तुम ऐसा नहीं कर सकते।' राजा ने गिड़गिड़ाते हुए कहा। उसकी आवाज़ से ऐसा नहीं लग रहा था कि उसे खुद अपने इस कथन पर विश्वास है।

'हां, मैं कर सकती हूं—' रीटा ने उसे बीच में टोकने से रोकने के लिए अपना हाथ उठाया—'और मैं आपसे मदद मांग रही हूं, आपसे निवेदन कर रही हूं। हमें आपके मुवक्किल तक पहुंचना है। हमें लगता है कि वह हमारी हत्या की जांच में सर्वोपरि है।'

'लेकिन मैं एक बहुत अच्छा जांचकर्ता हूं। अगर आप चाहें तो मैं पता लगा सकता हूं कि ग्राहक कौन है। मैंने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि मैं इसमें समय और ऊर्जा बर्बाद नहीं करना चाहता था।'

क्या यह लड़का बचपन में किसी चोट के कारण गिर गया था? क्या वह इतना मूर्ख था कि उसे यह बात समझ नहीं आई कि इंटरपोल के मामले की तुलना में वह शार्क के दांत पर लगे इनेमल के बराबर भी नहीं था?

'श्री राजा, मैं एक बार फिर समझा दूं.. यह हत्या की जांच है। यह गोपनीय जानकारी होने के साथ-साथ आपके जीवन को भी खतरे में डाल सकती है। कृपया मेरी बात मानें।'

सिर हिलाकर सहमति देना।

'आप अपनी रिपोर्ट कितनी बार जमा करते हैं?'

'हर शनिवार।'

'तो आपने इसे कल रात जमा कर दिया?'

'हां, और उसने सुबह तक उसे पढ़ कर डिलीट कर दिया था।'

'क्या आपने कल हनी सिंह के दिन में कुछ असामान्य देखा?'

'पसंद करना?'

'क्या कोई और उसका पीछा कर रहा है?'

'नहीं। क्या कोई था...?' राजा का चेहरा उदास हो गया।

'नहीं। मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या आपके ग्राहक के पास अन्य स्रोत भी हो सकते हैं।'

'मुझे ऐसा नहीं लगता।'
'ठीक है। हम संपर्क में रहेंगे। इस बीच, जैसा कि हमने कहा, मान लीजिए कि यह बैठक कभी हुई ही नहीं।'
उन्होंने राजा को अपने फोन नंबर दिए और उनसे कहा कि अगर उन्हें हनी सिंह या उनके मुवक्किल श्री सिंह के बारे में कुछ भी ऐसा दिखे जो उन्हें रिपोर्ट करने लायक लगे, तो वे उनसे संपर्क करें।
जब वे इमारत से बाहर निकले तब तक 2:15 बज चुके थे।
'चलिए कुछ खा लेते हैं, विक्रम। मेरी तरफ से बिल।'
'मैडम, आप क्या खाना चाहेंगी?'
'ऐसी जगह जहां काम जल्दी हो जाए।'
'ठीक है। इस पूरे मामले के बारे में आपका क्या विचार है?'
'आप अपने आस-पास की हर चीज़ पर, हर सुनी, देखी या महसूस की गई हर चीज़ पर विश्वास नहीं कर सकते, लेकिन आप हर चीज़ को नज़रअंदाज़ भी नहीं कर सकते क्योंकि कहते हैं, हर चीज़ की उत्पत्ति किसी न किसी कारण से होती है। बिना आग के धुआँ नहीं होता, है ना? तो किसी को - और इस मामले में, रहस्यमय श्री सिंह को - किसी बात पर इतना यकीन ज़रूर होगा कि उन्होंने हनी सिंह की जाँच के लिए किसी तीसरे व्यक्ति को नियुक्त किया। सहमत हैं?'
और उसने जोगानी की हत्या के दो दिन बाद निगरानी शुरू कर दी थी।
'वाह! कोई न कोई तो कुछ जानता ही होगा।'
सिर हिलाकर सहमति देना।
'तो हनी सिंह के बारे में ऐसी क्या बात है जो एक रहस्यमयी आदमी जानना चाहता है?'
उन्होंने मैकडॉनल्ड्स में जल्दी से कुछ खाया और वापस चल दिए। बातचीत पूरी तरह से पेशेवर और मुद्दे की बात पर केंद्रित थी। दोनों का ध्यान पूरी तरह से उस मामले पर केंद्रित था।
'क्या आपको लगता है कि उस रहस्यमय ग्राहक को वह मिल गया है जिसकी उसे तलाश थी?' रीटा हैरान थी। उसने ये शब्द जानबूझकर नहीं कहे थे; वह मन ही मन हिसाब लगा रही थी।
'यह मान लेना सुरक्षित है कि उसने ऐसा नहीं किया है। अन्यथा वह हैंडलबार द्वारा दी

जा रही जानकारी को डाउनलोड करने में इतनी तत्परता क्यों दिखाता?'
'क्या पता यह किसी तरह का दिखावा हो?'
'किसके लिए?'
'पता नहीं।'
शाम के पांच बज चुके थे। जब वे रीटा के अपार्टमेंट पहुंचे तब तक रविवार लगभग खत्म हो चुका था।
विक्रम ने पूछा, 'क्या हमें कल हनी सिंह से मिलने जाना चाहिए?'
'देखते हैं कि सप्ताहांत में दूसरों के पास हमारे लिए क्या है, फिर फैसला लेंगे। कल मिलते हैं। और सवारी के लिए धन्यवाद।'
'आपका स्वागत है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि हनी सिंह ने महीनों से उसका पीछा कर रहे मिस्टर राजा को कैसे नहीं देखा। इसके दो ही कारण हो सकते हैं: या तो वह दृष्टिहीन है या फिर उसका दिमाग बिल्कुल खाली है?'
'विक्रम, एक तीसरा भी है।'
'वह क्या हो सकता है?'
'हैंडलबार तो यहाँ बिल्कुल घुलमिल गया है।' जिप्सी से उतरते हुए रीटा हँस पड़ी।

***

रीटा ने साढ़े सात बजे जल्दी खाना खा लिया।
तीन चौथाई चढ़ता हुआ चाँद एक सुखद चमक बिखेर रहा था, हवा थम सी गई थी, आसमान में एक भी बादल नहीं था। रात साफ, अंधेरी, गर्म और शांत थी - पिछली रात से बिलकुल उलट। रीता अपने शयनकक्ष में एक झूला कुर्सी पर पैर रखकर बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी। उसके बगल में मेज पर जिम बीम की बोतल और खाने के बाद का पनीर रखा था। टर्नटेबल पर 13th Floor Elevators का साइकेडेलिक रॉक मध्यम आवाज़ में बज रहा था, जिससे जिम बीम को एक गर्माहट भरी ताजगी मिल रही थी; रीता का दिमाग पूरी तरह से इस मामले में डूबा हुआ था। बाकी सभी विचार, यहाँ तक कि प्रेम संबंधी विचार भी, दूर हो गए थे। अब तक उनके बीच क्या हुआ था? शिशिर सिंह, हनी सिंह जैसा दिखता था। एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा नियुक्त एक जासूस, हनी सिंह के पीछे-पीछे चलता था। यह एक उलझी हुई कड़ी की तरह था, चाहे आप किसी भी कड़ी को पकड़ें, कोई फर्क नहीं पड़ता था। यह पता लगाना असंभव नहीं होना चाहिए कि अज्ञात ग्राहक ड्राफ्ट फ़ोल्डर तक कहाँ से पहुँच रहा था?

ज़ाहिर है, वे जोगिंदर राजा का कंप्यूटर ज़ब्त नहीं करेंगे; वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि राजा इस बैठक या पृष्ठभूमि में होने वाली किसी भी घटना की परवाह किए बिना अपना काम जारी रखें। ग्राहक—चाहे वह कोई भी हो—को शक नहीं होना चाहिए। शाम का अपना छोटा और एकमात्र पेय समाप्त करके, रीता दिन भर के लिए आराम करने चली गई।

10 Ten

शोध से यह सिद्ध हो चुका है कि सोमवार मानव मस्तिष्क के लिए सबसे नीरस दिन होता है। यह शारीरिक से अधिक मनोवैज्ञानिक कारण है। मस्तिष्क प्रक्रियाओं में व्यस्त रहता है।

अगले पांच-छह दिनों में जो कुछ भी होने वाला है, वह सब मन को शांत करने वाले संकेत भेजता है, जिससे उदासी और निराशा का माहौल बन जाता है। लेकिन छुट्टी न मिलने के कारण, भले ही वह ऑफिस में न हो, रीटा में एड्रेनालाईन का वह अतिरिक्त उछाल था जो आमतौर पर पुलिस अधिकारियों में तब हावी होता है जब वे किसी हत्या की सक्रिय जांच के बीच होते हैं।

रीटा कभी नाश्ता नहीं छोड़ती थी, इसके दो कारण थे: पहला, इससे उसका शानदार मेटाबॉलिज्म शुरू हो जाता था; और दूसरा, जब कोई जांच चल रही हो तो कौन जानता है कि अगला निवाला कब मिलेगा? रीटा ऑफिस में जल्दी पहुंच जाती थी ताकि बाकी टीम के आने और जांच में व्यस्त होने से पहले कागजी कार्रवाई पूरी कर ले।

एक नया सप्ताह। एक नया दृष्टिकोण।

कार्यालय छोटा था। उसमें दो अतिथि कुर्सियाँ थीं, और एक अतिरिक्त कुर्सी शुक्रवार को पहले ही बुला ली गई थी। विक्रम सबसे पहले पहुँचा।

'गुड मॉर्निंग मैम।'

नेने और जतिन उसके पीछे-पीछे गए। उन्होंने दरवाजा बंद किया, एक और कुर्सी

खींची और बैठ गए।
औपचारिक बातचीत और शिष्टाचार का आदान-प्रदान हो चुका था, अब नए सिरे से सोचने और योजना में सुधार करने का समय था। वह किसी भी कीमत पर एक निरर्थक जांच नहीं करना चाहती थी।
'शिशिर सिंह की तलाश में, क्या आपमें से किसी ने मुखबिरों को इंटरपोल या हत्या के बारे में बताया था?' रीता ने बात शुरू की। वह अब भी इस बात को लेकर चिंतित थी कि मीडिया को यह जानकारी कैसे मिली।
सबने एक दूसरे की तरफ देखा। नहीं।
'तो किसी ने जनरल मिलने के बाद छानबीन शुरू कर दी है। पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि अखबारों को जानकारी किसने लीक की।'
यह सर्वविदित तथ्य था कि मीडिया शवगृह में लाए गए शवों को देखकर ही सनसनीखेज खबरें उठाता था। पोस्टमार्टम का मतलब अप्राकृतिक मृत्यु होता था, जिसका अर्थ था पुलिस मामला, और अंत में एक खबर। इसलिए, हत्या के मामले का उनसे छिपा रहना मुश्किल था। बेशक, मृतक की स्थिति या संभावित संदिग्धों की सूची से यह तय होता था कि खबर कितनी महत्वपूर्ण होगी और कितनी बिकेगी। हालांकि, इस मामले में कोई शव नहीं था, इसलिए यह स्पष्ट था कि किसी ने खबर को प्रेस में लीक किया था।
'कोई भी ऐसा कर सकता था... यह एक व्यर्थ प्रयास होगा,' जतिन ने कहा। और वह गलत नहीं था। वे हर मुखबिर को पकड़ने और उससे पूछताछ करने में घंटों बर्बाद कर सकते थे। यह लगभग अपने आप में एक समानांतर जांच बन सकती थी। और भला कोई इतनी आसानी से अपनी गलती क्यों मानेगा?
'क्या हम यह पता लगाने की कोशिश कर सकते हैं कि किस पत्रकार को यह खबर सबसे पहले मिली और उसके संपर्क से लेकर किसी मुखबिर तक की जानकारी जुटा सकते हैं? हो सकता है यह एक लंबी कड़ी हो, लेकिन इससे मदद मिलेगी। मीडिया को शांत करने के लिए शायद हमें एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करनी पड़ेगी।'
सौभाग्यवश, खबर में ज़्यादा जानकारी नहीं थी, यह एक छोटा सा समाचार स्तंभ था, लेकिन जो भी इसे पढ़ना चाहेगा, उसका ध्यान ज़रूर खींचेगा। शिशिर सिंह, या उसका जो भी नाम हो, वह ज़रूर पढ़ रहा होगा। इसमें कोई शक नहीं।
'ठीक है। हमारे पास क्या है? नेने, तुम पहले जाओ।'

नेने ने समूह को शनिवार की घटनाओं का विस्तृत ब्योरा दिया। उन्होंने हनी सिंह का पीछा किया और पाया कि एक व्यक्ति पहले से ही उसका पीछा कर रहा था। वह एक निजी जासूस था, जिसका नाम जोगिंदर राजा था।

'मैं जोगिंदर राजा को जानता हूँ!' जतिन ने बीच में ही कहा।

'आप उन्हें जानते हैं?'

'उन्होंने वर्षों पहले एक पुराने मामले में हमारी मदद की थी। उन्हें जानकारी जरूर देनी चाहिए।'

'शुरू में तो वह तैयार नहीं था, लेकिन बाद में उसने बात मान ली।' रीटा ने आंखें घुमाईं; उसे याद आया कि उससे जानकारी निकलवाने के लिए उसे एक सख्त महिला की तरह व्यवहार करना पड़ा था।

विक्रम ने रीता की ओर सिर झुकाते हुए कहा, 'सावधान रहो दोस्तों, हमारा बॉस बहुत निर्दयी है।'

'वह देखने में ऐसी नहीं लगती।'

'जांच में छल एक अतिरिक्त लाभ है।'

'ये क्या हो रहा है दोस्तों? कॉलेज में रैगिंग का सेशन है क्या?'

कमरा एकदम शांत हो गया।

'हा हा। वह तो मेरी निर्ममता की महज़ एक दिखावटी झलक थी। मुझे बुरा नहीं लगा।'

चूंकि वे पहले ही जोगिंदर राजा के विषय पर चर्चा कर चुके थे, इसलिए उनके घर जाने की बात करना स्वाभाविक था, जिसके बारे में रीता ने टीम को जानकारी दी।

'हमें राजा का कंप्यूटर चाहिए। शायद हम पता लगा सकें कि दूसरा प्राप्तकर्ता ईमेल कहां से एक्सेस कर रहा है? आईपी एड्रेस से?'

'वह जाहिर तौर पर वीपीएन (वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क) का इस्तेमाल कर रहा होगा... जो आईपी एड्रेस को छुपाता है।'

फिर भी, इसकी जांच करना उचित रहेगा। जतिन, मैं यह काम तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ।

'जी हां, बिल्कुल, महोदया।'

नेने के पास कहने के लिए कुछ नहीं था। सच कहें तो, ज़्यादा उम्मीद भी नहीं थी। मुखबिर पुलिसवाले तो नहीं थे जो हनी सिंह के बारे में और जानकारी जुटा सकें। और इस बात की क्या संभावना थी कि वे शिशिर सिंह जैसे दिखने वाले किसी और व्यक्ति का पता लगा लेते?

'हम दोपहर के भोजन के बाद ऑपरेशन रूम में मिलेंगे।'

***

दोपहर के भोजन के बाद बुरी खबर आई।

जतिन सिंह ने जोगानी के कंप्यूटर पर घंटों बिताए थे। पासवर्ड क्रैक करना चुनौतीपूर्ण तो था, लेकिन यह कोई बड़ी बाधा नहीं थी।

'ऐसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था, सिर्फ कहानियों में ही पढ़ा था। जैसे ही मुझे उसके कंप्यूटर का एक्सेस मिला, मैंने देखा कि जोगानी की फाइलें, कैश, हिस्ट्री, सब कुछ अपने आप डिलीट होने लगा, मानो किसी अजीब वायरस ने तुरंत कब्जा कर लिया हो। तकनीकी विशेषज्ञों ने इसे रोकने की हर संभव कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे।'

रीता, विक्रम और नेने ने उसकी ओर देखा, फिर एक-दूसरे की ओर देखते हुए अपनी निगाहें घुमाईं, यह समझने की कोशिश करते हुए कि जतिन ने अभी-अभी क्या बताया था। वे कंप्यूटर समझते थे। वे वायरस समझते थे। लेकिन यह एक आम कंप्यूटर उपयोगकर्ता की समझ से परे था।

'फिर क्या हुआ?'

कुछ ही मिनटों में पूरा कंप्यूटर साफ हो गया, फैक्ट्री सेटिंग्स पर वापस आ गया।

'ज़रा रुकिए। पिछली बार आपने कहा था कि आपको पता चल गया है कि जोगानी के बेल्जियम जाने के बाद से उसके कंप्यूटर का इस्तेमाल नहीं हुआ है, सही कहा ना...?'

'हां मैम।'

'ऐसा तब क्यों नहीं हुआ?'

'आईटी टीम ने तब इसे इंटरनेट से कनेक्ट नहीं किया था। वे मशीन को ऑफलाइन ही इस्तेमाल कर रहे थे। लेकिन पासवर्ड क्रैक करने के लिए हमें हैकिंग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करने के लिए ऑनलाइन जाना पड़ा। सॉफ्टवेयर ने काम तो किया, लेकिन जैसे ही मशीन चालू हुई, वह बंद हो गई।'

'क्या आपने दोबारा कोशिश की?'

'हां। लेकिन इसकी शुरुआत ब्लैक और ग्रीन स्क्रीन से हुई, जिसमें मुझसे ऑपरेटिंग सिस्टम को फिर से लोड करने के लिए कहा गया था।'

'तो फिर, यह किसी प्रकार का मैलवेयर है?' विक्रम ने पूछा।

'क्या तुम उनके बारे में जानते हो?' रीता ने जतिन से पूछा।

'बेशक, कुछ अच्छे कंप्यूटर क्लीनिंग सॉफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश में आमतौर पर मैन्युअल हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।'
'क्या कोई इसे दूर से नहीं कर सकता?'
'बेशक, इसे दूरस्थ रूप से संचालित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, लेकिन इसे सबसे पहले वहां स्थापित करने वाले व्यक्ति को किसी न किसी समय जोगानी के कंप्यूटर तक पहुंच प्राप्त होनी चाहिए थी।'
'जो कि असंभव नहीं है। यह मानने के हर कारण हैं कि हत्यारे को जोगानी के यात्रा कार्यक्रम की जानकारी थी।'
'या फिर—' जतिन की आंखें ऊपर उठीं, ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी याददाश्त से सलाह ले रहा हो; कुछ ऐसा जो उसने कहीं सुना हो।
'या?'
'हो सकता है कि उस व्यक्ति की जोगानी के कंप्यूटर तक भौतिक रूप से पहुंच न हो। उस व्यक्ति को बस इतना करना था कि किसी तरह जोगानी को ईमेल के माध्यम से एक अटैचमेंट खोलने के लिए मजबूर कर दे, जिसे अगर जोगानी खोल देते, तो भेजे गए मैलवेयर उनके कंप्यूटर में इंस्टॉल हो सकते थे।'
'तो जैसे ही आपको इस तक पहुंच मिली, यह कैसे सक्रिय हो गया?'
'मैलवेयर पहले से ही कंप्यूटर पर मौजूद था, इसमें कोई शक नहीं। मैं यहाँ सिर्फ अनुमान लगा रहा हूँ, इसलिए कृपया धैर्य रखें, मेरी बातों को ऐसे समझें जैसे मैं सोच रहा हूँ, ठीक है?' जतिन रुक गया।
'ठीक है। आपके विचार से क्या हुआ होगा?'
'मुझे पूरा यकीन है कि जिस व्यक्ति ने दूर से जोगानी के कंप्यूटर में यह मैलवेयर इंस्टॉल किया, उसे किसी तरह यह पता था कि जोगानी अब अपने कंप्यूटर का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे, इसलिए उसे मैलवेयर को सक्रिय करने के लिए बस कुछ एक्टिवेट करना था। हालांकि, कंप्यूटर बंद होने और इंटरनेट से डिस्कनेक्ट होने के कारण ऐसा करना संभव नहीं था। लेकिन जैसे ही मैंने इसे इंटरनेट से कनेक्ट किया, वायरस तुरंत सक्रिय हो गया।'
'और क्या वह वायरस सब कुछ मिटा सकता है, कंप्यूटर को बेकार कर सकता है?'
'यह इस्तेमाल किए गए वायरस पर निर्भर करता है, जिसे, जैसा कि मैंने बताया, अब निर्धारित करना असंभव होगा क्योंकि मशीन को उसकी फ़ैक्टरी सेटिंग्स पर वापस

कर दिया गया है।'
'इसका मतलब यह भी है कि जोगानी की पूर्व पत्नी ने उसके घर में रहने के बाद कंप्यूटर चालू करने तक की जहमत नहीं उठाई, जिससे मुझे लगता है कि वह इस मामले में पूरी तरह से निर्दोष है। वह हत्या में शामिल नहीं है, अन्यथा मुझे पूरा यकीन है कि वह हीरे, बैंक खातों आदि के बारे में जानकारी जरूर खोजती। हमें उस पर नजर रखनी चाहिए, लेकिन इस पर ज्यादा संसाधन खर्च नहीं करने चाहिए।'
'कुछ बातें मेरी समझ से परे थीं। मैं सोचता रहा कि कहीं मैंने कोई ऐसी बेवकूफी तो नहीं कर दी जिसकी वजह से हम इस मुसीबत में फंस गए।' जतिन ने फिर से अपना मुंह खोला। जब उसने समूह को बताया कि आखिर हुआ क्या था, तो वह एकदम सहमा हुआ लग रहा था।
रीटा ने ताली बजाई। 'मुझे पता ही नहीं था कि आप कंप्यूटर में इतने माहिर हो सकते हैं। इस पूरे घिनौने मामले का खुलासा करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।' रीटा ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।
'धन्यवाद महोदया।' उनकी आवाज गर्व से भरी हुई थी।
संक्षिप्त सौहार्द और हाथ मिलाने के बाद जब वे वापस बैठ गए तो रीटा ने पूछा, 'इससे हमें क्या हासिल होगा?'
'यह एक गतिरोध है। हम ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे हैं जो लगभग किसी भी चीज़ को हैक कर सकता है, जो मिनटों में कंप्यूटर और नेटवर्क को बर्बाद कर सकता है।'
कुछ क्षणों के लिए रीटा सोचने लगी कि क्या असल दुनिया में भी ऐसे लोग होते हैं - सचमुच के कंप्यूटर के दीवाने, न कि टीवी पर दिखाए जाने वाले? और अगर होते भी हैं, तो क्या वे अलग दिखते हैं?
'तुम तो बहुत आशावादी हो, जतिन।' विक्रम के शब्दों ने रीता को बातचीत में वापस ला दिया।
'विक्रम, मैं यहाँ खुद को यथार्थवादी कहलाना पसंद करूँगा।'
'ठीक है, चलिए कुछ अधूरी जानकारियों पर एक नज़र डालते हैं।' रीटा ने बातचीत को फिर से जांच की ओर मोड़ दिया। समस्या को सुलझाने के लिए यथार्थवाद से ज़्यादा सकारात्मकता की ज़रूरत थी। 'हम जानते हैं कि इसमें एक बंदूक शामिल थी। एक ग्लॉक 19, यह एक छोटी बंदूक है। पुरुष इसे 'महिलाओं की बंदूक' कहते हैं। इतनी छोटी। यह काम कर सकती है। चलाने में आसान। छिपाने में आसान, और बेहद

कारगर।'
'बेल्जियम की पुलिस को यह क्यों नहीं मिला?'
'अच्छा सवाल है। रिपोर्ट पढ़ने के बाद से ही ये बात मुझे परेशान कर रही है। मेरा अनुमान है कि बंदूक घटनास्थल पर गोली चलाने के इरादे से नहीं लाई गई थी। इसका मकसद सिर्फ जोगानी को डराना था या किसी गंभीर परिस्थिति में इस्तेमाल करना था, जैसा कि आखिरकार हुआ। अगर चोर का इरादा हीरे लूटने के लिए हत्या करने का होता, तो जोगानी को गोली मारकर हीरे लेना आसान था। फिर होटल के कमरे में तिजोरी बदलने, दरवाजे का ताला बदलने, कमरे में उसकी हरकतों पर नजर रखने के लिए कैमरे लगाने का सारा नाटक क्यों रचा गया?' रीता ने चारों ओर देखा; सब लोग सहमत होते दिख रहे थे; या कम से कम असहमत तो नहीं थे।
'तो हत्या के बाद ग्लॉक पिस्टल का क्या हुआ? अपराधी उसे अपनी जेब में लेकर दिल्ली वापस तो नहीं जा सकता था। उसने या तो उसे ब्रसेल्स में किसी को लौटा दिया होगा या फिर कहीं गिरा दिया होगा। और जाहिर है उसने लापरवाही से तो नहीं गिराया होगा, वरना बेल्जियम पुलिस को मिल जाती। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह अब नदी के किनारे पड़ी हो और मछलियाँ उसे निहार रही हों?' विक्रम ने बीच में कहा।
'अगर उसके पास बंदूक थी, तो उसे पता था कि उसे उसे लौटाना ही होगा, चाहे उसने गोली चलाई हो या नहीं, है ना?' रीटा ने जवाब का इंतज़ार नहीं किया। 'तो बंदूक को जिसे भी लौटाना था, वह पहले से तय था। हो सकता है कि वह हवाई अड्डे पर किसी से मिला हो या बेल्जियम पुलिस द्वारा तलाशी शुरू करने से पहले ही उसने बंदूक कहीं छोड़ दी हो।'
'तो इसमें एक से अधिक व्यक्ति शामिल थे।'
'कम से कम दो लोग तो ज़रूर थे—घटनास्थल के आस-पास कहीं न कहीं मिलीभगत ज़रूर हुई होगी। हो सकता है ब्रसेल्स में हो। हो सकता है कहीं और हो। यह भी हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति पूरे समय होटल से बाहर रहा हो, लेकिन उसने बंदूक और अन्य सामान इकट्ठा करके लौटा दिया हो और फिर कुछ दिनों बाद किसी और उड़ान से वापस चला गया हो। या भारत लौटने से पहले कहीं और गया हो। कुछ भी संभव है।'
'बिना देखे या सुने कई बार होटल में आना-जाना असंभव नहीं होता? उसने अपने पीछे कुछ न कुछ निशान तो छोड़ा ही होगा?' नेने हैरान थी।

'वह सचमुच एक अदृश्य परछाई की तरह चल रहा था। दूसरे या तीसरे व्यक्ति को किसी ने न देखा और न सुना, किसी कैमरे ने उन्हें कहीं भी कैद नहीं किया।'
'या शायद दूसरा व्यक्ति कभी लौटा ही नहीं। शायद वह स्थानीय निवासी था, क्योंकि उसे अवैध सामान की स्थानीय जानकारी और स्रोत पता थे।'
'हाँ, इस स्तर पर इसे नकारा नहीं जा सकता।' रीटा ने अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे वह अपने मन में बन रहे किसी विचार को दूर कर रही हो। 'नहीं। मुझे नहीं लगता कि हत्यारे का इसमें किसी विदेशी व्यक्ति का हाथ था। बहुत जोखिम है, जब तक कि, ज़ाहिर है, आपूर्तिकर्ता पूरी योजना में शामिल न होकर केवल बंदूक की आपूर्ति या किराए पर देने का काम करता हो। और, हत्या के बाद, वह पुलिस स्टेशन में जाकर यह स्वीकार नहीं कर सकता कि उसने एक विदेशी को बिना लाइसेंस वाली, अवैध बंदूक की आपूर्ति की और उसका इस्तेमाल हत्या में हुआ। ज़ाहिर है, बंदूक पंजीकृत नहीं थी, वरना बेल्जियम पुलिस उसका पता लगाकर मालिक तक पहुँच जाती। हालाँकि, हम जानते हैं कि अपराधियों ने परिसर में बहुत काम किया था, इसलिए मुझे पूरा यकीन है कि दूसरा और/या तीसरा व्यक्ति सक्रिय रूप से इसमें शामिल था।'
तीनों व्यक्तियों ने फिर सिर हिलाया। काल्पनिक स्थिति गलत नहीं थी।
जांच एक बार फिर गतिरोध में फंस गई। कमरे में पूरे दो मिनट तक सन्नाटा छाया रहा। यह अच्छा संकेत नहीं था।
'इस पूरे ऑपरेशन में कोई न कोई तो वाकई कंप्यूटर का माहिर है,' रीटा ने बात शुरू की। 'होटल के कैमरा नेटवर्क को चलाने के लिए उन्हें ऐसा होना ही चाहिए।'
'और जहाँ तक मुझे कंप्यूटर की समझ है—और अगर मैं गलत हूँ तो मुझे सुधार दें—कंप्यूटर के जानकार को मदद करने के लिए ब्रुसेल्स में शारीरिक रूप से मौजूद रहने की भी ज़रूरत नहीं थी।' जतिन ने अपने अनुमान की पुष्टि के लिए रीता की ओर देखा।
'मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। जब तक उस व्यक्ति के पास विस्तृत योजना थी, वह घर बैठे होटल नेटवर्क से छेड़छाड़ कर सकता था, जो फिर से इस बात की पुष्टि करता है कि दो से अधिक लोग थे: दो लोग मौके पर मौजूद थे, और एक कंप्यूटर नेटवर्क से छेड़छाड़ कर रहा था।'
विक्रम ने पूछा, 'ब्रसेल्स में मौजूद हुए बिना होटल के लेआउट की विस्तृत योजना कैसे प्राप्त की जा सकती है?'

'इसके कई तरीके हो सकते हैं। हो सकता है होटल की योजनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हों। अधिक संभावना यह है कि किसी को कारण बताए बिना उस स्थान का सर्वेक्षण करने के लिए भुगतान किया गया हो।'
'हम्म...'
'हनी सिंह एक कंप्यूटर प्रोग्रामर हैं।' यह कहते हुए नेने मुस्कुराए। उनके चेहरे से पता चल रहा था कि बाकी सबने भी यह बात समझ ली है।
कुछ क्षणों तक सभी लोग चुपचाप इस पर विचार करते रहे।
'यह चिंताजनक है। ऐसा लगता है कि हमें ठीक वही मिल रहा है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं। हमें वह आदमी मिल गया है जो संदिग्ध से मिलता-जुलता है, जो एक पढ़ाकू भी है और जिसका उपनाम भी वही है। और कोई अज्ञात व्यक्ति उसका पीछा करवा रहा है।' फिर रीटा चुप हो गई।
'हो सकता है कोई हनी सिंह को फंसाने की साजिश रच रहा हो।'
'हो सकता है तुम सही कह रही हो, नेने। अगर हनी सिंह अपराधी नहीं है तो हमें उसे भी इस मामले से बरी करना पड़ सकता है।'

***

जतिन ने तुरंत श्री राजा को फोन किया। उन्हें अपना परिचय देने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि वे उन्हें पहले से जानते थे, और रीता और विक्रम उनसे एक दिन पहले ही मिले थे। उन्होंने सीधे मुद्दे पर बात शुरू की, जो जोगानी के कंप्यूटर में खराबी आने के बाद से उन्हें परेशान कर रहा था।
'श्री राजा, आपने कहा था कि आपके रहस्यमय ग्राहक ने शुरू में आपसे फोन पर संपर्क किया था।'
'हां ठीक।'
'और तब से आप बस एक ईमेल लिखते हैं, उसे ड्राफ्ट के रूप में सहेजते हैं और वह उसे पढ़ने के लिए लॉग इन करता है, और उसे डाउनलोड करता है और/या हटा देता है?'
'फिर से सही।'
'तो क्या आप दोनों के बीच कभी कोई वास्तविक ईमेल आदान-प्रदान नहीं हुआ?'
'कभी नहीं।'
'क्या आपने उसके द्वारा भेजी गई कोई भी चीज़ डाउनलोड नहीं की?'

'नहीं।' जतिन को मिस्टर हैंडलबार की कल्पना आ रही थी जो सिर हिलाकर 'ना' कह रहे थे।
'एक बार भी नहीं?'
'अभी तो मुझे ऐसा कुछ याद नहीं आ रहा, आप यह क्यों जानना चाहते हैं?'
'शुरुआती अनुबंध के बारे में क्या? उनका आदान-प्रदान कैसे हुआ?'
'अब मुझे याद आया, उसने इसे ईमेल के जरिए भेजा था जिसे मैंने डाउनलोड किया, साइन किया, स्कैन किया और ड्राफ्ट फोल्डर में रख दिया।'
संलग्न दस्तावेज़ डाउनलोड हो गया। काम पूरा हुआ।
जतिन के अनुसार, मैलवेयर पहले से ही श्री राजा के कंप्यूटर पर मौजूद था और जब भी उस रहस्यमय ग्राहक की इच्छा होती, वह उसे सक्रिय करके मशीन पर मौजूद सब कुछ नष्ट कर सकता था। श्री राजा के कंप्यूटर को डिस्कनेक्ट करना तभी कारगर हो सकता था जब पुलिस उस तकनीकी विशेषज्ञ (जो भी वह हो) को पुलिस की जांच के बारे में पता चलने से पहले ही उस तक पहुंच जाए। और चूंकि उन्हें राजा का पासवर्ड क्रैक करने की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए उन्हें उस तकनीकी विशेषज्ञ को नए आईपी पते के बारे में सूचित करने के लिए पासवर्ड को ऑनलाइन डायग्नोस्टिक्स में डालने की भी आवश्यकता नहीं थी।
'श्री राजा, क्या आपका कंप्यूटर अब चालू है?'
'नहीं।'
मैं अभी आ रहा हूँ। कृपया मेरे आने तक अपनी मशीन को किसी भी काम के लिए चालू न करें।
'क्यों? मुझे कुछ बताओ।'
'क्रॉफर्ड मार्केट से लोखंडवाला तक पहुंचने में जितना समय लगता है, उतने ही समय में मैं वहां पहुंच जाऊंगा। बस कंप्यूटर चालू मत करना, क्या यह बात स्पष्ट है?'
'ठीक है, श्री जतिन, मैं ऐसा नहीं करूँगा, सिर्फ इसलिए नहीं कि आप मेरे पुराने दोस्त हैं, इसलिए नहीं कि मुझे पुलिस या आपके डीसीपी से डर लगता है। मुझे अपने अधिकार पता हैं...'
'जो भी हो। जितनी जल्दी हो सके मिलते हैं।' जतिन ने हैंडलबार की उस अमानवीय यातना के बारे में सुनने के बजाय फोन काट दिया, जिसमें उसे अपना कंप्यूटर चालू करने की अनुमति नहीं दी जा रही थी।

***

जतिन ने रीता को बताया, जो अब अपने कार्यालय में बैठकर बेल्जियम की लाल रंग की जांच फाइल को फिर से देख रही थी, "मुझे पूरा यकीन है कि वही मैलवेयर श्री राजा के कंप्यूटर पर मौजूद है। मैंने उनसे बात की है और अब मैं अपने एक आईटी कर्मचारी के साथ उनके घर जा रहा हूँ ताकि पता लगा सकूँ कि हम क्या जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।" उन्होंने अपने पुराने दोस्त हैंडल बार के साथ हुई फोन पर बातचीत का संक्षिप्त विवरण दिया और बताया कि कैसे उन्हें यह अनुमान लगा कि मैलवेयर मशीन पर इंस्टॉल हो गया होगा।

'शाबाश, जतिन। अपने दोस्त को मेरा नमस्कार कहना, उसे बताना कि मुझे उसकी मूंछें बहुत पसंद हैं।' वह जानती थी कि जतिन, श्री राजा से दोस्ताना अंदाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी निकालने की कोशिश करेगा। शायद विक्रम और उसने अपनी मुलाक़ात में जितनी जानकारी निकाली, उससे भी ज़्यादा।

जतिन के जाने के बाद रीता सोच में डूबी बैठी रही।

क्या पता हत्यारे को उनके एक दिन पहले हैंडल बार जाने की जानकारी हो? क्या इतना शातिर आदमी यह बात पहले से ही नहीं जानता होगा? अब जब नुकसान हो ही चुका है तो परेशान होने का कोई फायदा नहीं था। इन अपराधियों तक पहुँचने के और भी तरीके ज़रूर होंगे। उसने फाइल बंद कर दी। शाम के छह बज रहे थे। सूरज डूब चुका था, शाम ढल रही थी जब ड्राइवर उसे लेने आया और घर ले गया।

11
Eleven

कई बार ऐसा होता है जब आपको किसी से बात करने, ज़ोर से बोलने और अपने शब्दों की आवाज़ से अपने विचारों को व्यक्त करने की ज़रूरत होती है। रीटा के साथ भी ऐसा ही हुआ था।

हमेशा से उसे लगता था कि अपने मन की बात ज़ोर से कहने से उसे इस बात का एहसास होता है कि उसने क्या खोया है। लेकिन उसका कोई साथी नहीं था, जिससे

उसे चिढ़ होती थी। वो दिन चले गए जब वो घर आकर अपने पूर्व प्रेमी करण से मामलों पर चर्चा कर सकती थी, जिसने अमेरिका में मिले एक अवसर के लिए उसे छोड़ दिया था। सच कहें तो, वो उसका पेशा था, जैसे ये उसका। उनकी आपस में कुछ हद तक ही समानता थी, लेकिन वो उसे बहुत याद करती थी। वो बहुत ध्यान से सुनता था - वो कभी उकसाता नहीं था, ज़्यादा जानकारी नहीं मांगता था, न ही सवाल करता था और न ही उसके खुद से पूछे गए सवालों के जवाब देता था।

अगस्त का महीना था, रात उमस भरी थी। रीटा ने खाना खा लिया था और अपनी छोटी सी नाइटशर्ट पहन ली थी। उसे कुछ और पहनने की ज़रूरत नहीं लगी। खिड़की से उसके बेडरूम में कोई नहीं देख सकता था, जहाँ वह पैर फैलाकर बैठी थी, सिवाय इसके कि कोई दूरबीन से उसे देख रहा हो, और फिर, वह मुस्कुराई, उस आदमी को उसके पैर देखने का हक था। वैसे भी उसे क्या छिपाना था - उसके पैर सुडौल और साफ़ थे।

जिम बीम ही उसका इकलौता दोस्त था। वह भी कभी जवाब नहीं देता था, कभी उसके विचारों में दखल नहीं देता था; बस उसकी कल्पना को हवा देता था और उसे जगाए रखता था, उसे तब तक सतर्क रखता था जब तक कि वह हद से ज़्यादा न पी लेती। लेकिन आज शाम उसने जिम से दूरी बनाए रखने का फैसला किया। सोचने का समय था। अब तक जो भी सोचा और अनुमान लगाया था, उसे पीछे छोड़ देना था। वह इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहती थी कि क्या हुआ होगा। जो कुछ भी वह जानती थी, जो कुछ उसने बेल्जियम के जासूस से सुना था, जो फाइल में पढ़ा था, और जो कुछ उसने और टीम ने अब तक देखा और इकट्ठा किया था, उन सबको मिलाकर फिर से जोड़ना था। चाल यह थी कि जब तक उसे पूरी तरह यकीन न हो जाए कि कोई बात झूठी या बेतुकी है, तब तक उसे कुछ भी खारिज नहीं करना था, लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रखना था कि जब तक उसे सारी जानकारी न मिल जाए, तब तक उसे पता न चले कि कोई बात बेतुकी है या नहीं। कोई जल्दी नहीं। जल्दबाजी में काम बिगड़ता है, यह एक घिसी-पिटी कहावत है, लेकिन सच है। कोई निष्कर्ष न निकालना गलत निष्कर्ष से बेहतर था। कोई निष्कर्ष न निकालना उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। गलत निष्कर्ष प्रगति को रोक देगा।

रीटा के बारे में सोचो।

हालांकि काल्पनिक रूप से, उसने उन घटनाओं के क्रम का संक्षिप्त विवरण दिया जो

हत्या का कारण बन सकती थीं...
उसके पास एक पेन और राइटिंग पैड था जिससे वह अपराधी के बारे में जो कुछ भी जानकारी जुटा सकती थी, उसे लिख रही थी:
1. कुशल योजनाकार
2. चलते-फिरते तात्कालिक रचना। तीक्ष्ण
3. सटीक, लगभग परिपूर्ण निष्पादन
4. सावधानीपूर्वक, सावधानीपूर्वक भाग निकलें।
5. उन्होंने कंप्यूटर का इस्तेमाल किया और कंप्यूटर और नेटवर्क को हराया।
रीटा के बारे में सोचो।
हर दृश्य में कई परतें थीं। कोई यूं ही सड़क से आकर, जोगानी को गोली मारकर हीरे लेकर भाग नहीं गया। हर योजना में कई परतें थीं; योजना, आकस्मिक योजना, अगर कुछ गलत हो जाए, जैसा कि हुआ, तो भागने का रास्ता, और बच निकलने की योजना।
वह शांत है, उसने धीरे से कहा। डकैती से पहले भी उसे पता था कि यह पूरी घटना सौ-सौ अज्ञात, अप्रत्याशित कारणों से सौ-सौ अलग-अलग तरीकों से बिगड़ सकती है। लेकिन उसे भरोसा था कि अगर कोई संकट आया तो वह उसे संभाल लेगा, वह मिशन को खतरे में नहीं पड़ने देगा। और उसने संभाला भी, है ना? जोगानी के नज़रिए से तो बिल्कुल नहीं— होटल के कमरे को हीरा व्यापारी की कब्र में बदलना— लेकिन वैसे भी संकट प्रबंधन कभी अच्छा नहीं दिखता।
उसने जोगानी के अपने कमरे से रिसेप्शन तक और वापस आने के समय का हिसाब लगा लिया था, जिसमें झूठे अलार्म को लेकर रिसेप्शनिस्ट के साथ होने वाली संभावित छोटी-मोटी कहा-सुनी भी शामिल थी।
उसे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि जोगानी हीरे कमरे में तिजोरी में नहीं रखेगा— आखिर नई तिजोरी क्यों खरीदी और लगाई जाती?—बल्कि उस स्टील से मजबूत किए गए ब्रीफकेस को पानी के पाइप से एक खास हथकड़ी से बांध देगा जिसे शायद गोली मारे बिना तोड़ा नहीं जा सकता।
महत्वपूर्ण बात यह है कि शिशिर सिंह को किसी तरह पहले से ही पता चल गया था कि रॉन जोगानी वापस आ रहा है, क्योंकि वह खुद अटैच्ड बाथरूम में अचानक पकड़े नहीं गए थे; बल्कि बदनसीब जोगानी को अचानक इस स्थिति का सामना करना पड़ा

था। इसलिए, निस्संदेह, वहाँ कोई दूसरा व्यक्ति भी मौजूद था, जो किसी न किसी तरह से निगरानी कर रहा था और संपर्क स्थापित कर रहा था। इससे यह भी संकेत मिलता है कि शिशिर सिंह के हीरे लेकर देश छोड़ने के बावजूद, बंदूक आसानी से इस दूसरे व्यक्ति के माध्यम से आपूर्तिकर्ता तक वापस पहुँचाई जा सकती थी।

अब उस सावधानीपूर्वक किए गए ऑपरेशन के बारे में जो उसने अनुमान लगाया था, उसे देखते हुए, उसे इस बात पर बहुत आश्चर्य नहीं हुआ कि टीम इतनी चतुर थी कि दूसरा और/या तीसरा व्यक्ति लिफ्ट के कैमरे में कभी नहीं आया; टीम की नजरों से केवल वही एक व्यक्ति छूटा जो लिफ्ट में चालू था।

और अगर समूह के बाकी सदस्य कैमरों से बच भी गए, तो यह कैसे संभव था कि होटल में किसी ने उन्हें देखा या पहचाना नहीं? क्या वे अदृश्य थे? हाँ, वे अदृश्य थे। और कोई अदृश्य कैसे हो सकता है जब तक कि वह आसपास के माहौल का हिस्सा न हो? जैसे पार्किंग में खड़ी कोई आम कार... उसे कौन देखेगा? ऐसा तभी हो सकता था जब वह व्यक्ति या वे लोग होटल के कर्मचारी हों, लेकिन बेल्जियम पुलिस की फाइल में लिखा था कि उन्होंने सभी कर्मचारियों की जांच और पूछताछ की थी और सभी को निर्दोष पाया था। घटना से तीन महीने पहले या बाद में किसी ने भी नौकरी नहीं छोड़ी थी। तो... तो केवल एक ही संभावित स्पष्टीकरण था। कोई नकली कर्मचारी था। कोई लॉन्ड्री वाला? हाउसकीपिंग कर्मचारी? बड़े प्रतिष्ठान गुमनामी का ऐसा सुरक्षित ठिकाना प्रदान करते हैं। सभी कर्मचारी एक-दूसरे को नहीं जानते, खासकर होटल जैसे तीन शिफ्ट वाले व्यवसाय में। रोटेटिंग शिफ्ट में काम करने वाले सभी कर्मचारियों को जानना लगभग असंभव होगा। फिर अस्थायी कर्मचारी भी हो सकते हैं, तो अगर कोई कर्मचारी गलियारों में किसी अनजान चेहरे को होटल की वर्दी में देखे तो उसे चिंता क्यों होगी? वे इसे कभी-कभार तो देखते ही होंगे। दृश्य का एक हिस्सा: अस्पष्ट, पहचानने योग्य नहीं। अगर उन्हें पहली बार में कुछ भी असामान्य नहीं लगा, तो घटना के बाद उन्हें यह याद कैसे रहेगा? और उन व्यक्तियों में से एक हत्या के बाद बंदूक लेकर बाहर गया था। बिलकुल संभव है।

रीटा के बारे में सोचो।

नहीं, होटल के सुरक्षा कैमरों से छेड़छाड़ करना, कमरे में तिजोरी खोलना, कमरे में कैमरे लगाना और दरवाज़े के ताले से छेड़छाड़ करना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था। इसके लिए मदद की ज़रूरत थी। भरोसेमंद हाथों और आँखों की एक और जोड़ी,

और भी बहुत कुछ। लेकिन कोई सबूत नहीं था। हर पक्की बात, चाहे आप उस पर कितना भी यकीन क्यों न करते हों, साबित नहीं की जा सकती थी। न गणितीय रूप से, और न ही कानूनी रूप से। आप सिर्फ़ यह कहकर अदालत नहीं जा सकते थे कि "मुझे लगता है ऐसा हुआ था..."

कुछ सुराग गायब थे, लेकिन पहेलियाँ तो हमेशा गायब सुरागों से ही बनती हैं, यह बात वह जानती थी। पुलिस के वर्षों के प्रशिक्षण और अनुभव ने उसे सिखाया था कि जवाब कभी आसानी से नहीं मिलते, खासकर हत्या की जांच में तो बिल्कुल नहीं। उसे और जानकारी चाहिए थी। अधिक जानकारी अच्छी बात थी, लेकिन मुश्किल यह तय करना था कि किस जानकारी को हटा दिया जाए, जब यह पता न हो कि क्या उपयोगी है और क्या बेकार। लेकिन दिन में समय की कमी के कारण जासूस को सबूतों की प्रबलता या असंतुलन के आधार पर निर्णय लेने पड़ते थे। हाँ, बिल्कुल, इसमें गलती भी हो सकती थी।

पुलिसवाले की इस निराशावादी दुनिया में आपका स्वागत है, उसने मुस्कुराते हुए कहा।

उसके दिमाग में यह विचार आया कि सभी जांच कैसे शुरू होती हैं। सभी अपराधों को तीन आयामों से सुलझाया जा सकता है: पहला आयाम होता है मकसद—कोई व्यक्ति इतना जघन्य अपराध क्यों करता है? दूसरा, साधन—क्या वह व्यक्ति ऐसा करने में सक्षम था? और तीसरा, क्या उस व्यक्ति को ऐसा करने का अवसर मिला? यदि हीरे मकसद थे, तो दुनिया की आधी से ज़्यादा आबादी के लिए यह मकसद बिल्कुल सही था: भला कौन उन्हें नहीं पाना चाहेगा? हालांकि, वह जानती थी कि धन और हत्या के बीच कारण-प्रभाव का संबंध दोनों तरफ से काम करता है। पैसा आपको मौत के मुंह में धकेल सकता है। हत्या आपको पैसा दिला सकती है।

मुंबई जोगानी के चोरी हुए हीरों का मुख्य केंद्र था और उनमें से एक हीरा बेल्जियम में फिर से मिल गया था, इसलिए यह मानना उचित था कि कम से कम कुछ हीरे बेचे गए होंगे और उन्हें नकदी में बदल दिया गया होगा। हीरों के मूल्य और हनी सिंह की जीवनशैली में विरोधाभास था - जो अब तक उनके एकमात्र संदिग्ध थे। बात समझ में नहीं आ रही थी। हालांकि, उन्होंने सोचा कि आज के समय में इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। अधिकांश लोगों के लिए पैसा महज़ एक संख्या है। कंप्यूटर या मोबाइल पर। आपको गद्दे के नीचे या अंदर नकदी के ढेर जमा करने की ज़रूरत नहीं है। इसे कहीं

किसी गुमनाम विदेशी खाते में छिपाया जा सकता है। स्विट्ज़रलैंड? उनके पास खातों तक पहुँच कैसे हो सकती है? स्विस लोग बिल्कुल अलग ही दुनिया के थे। वे इंटरपोल को भी जानकारी नहीं देते। हत्या के मामले में नहीं। आतंकवाद के कृत्यों के लिए शायद, लेकिन एक अकेले मृत भारतीय जौहरी के मामले में नहीं। इसलिए, हाल ही में विरासत में मिली संपत्ति वाले किसी व्यक्ति की तलाश करना समय की पूरी बर्बादी होगी। उसने एक पल के लिए इस पर विचार किया और फिर उसने यह फैसला लिया: जांच की वह दिशा उन खून से सने हाथों तक नहीं ले जा सकती थी।

नीचे सड़क पर कहीं एक कुत्ता भौंका। उसके बाद कई और कुत्ते भी भौंकने लगे। शायद वे कुछ कह रहे थे, या शायद एक-दूसरे को शुभ रात्रि कह रहे थे। लेकिन इससे रीटा का चिंतन भंग हो गया। वह तीन घंटे से अधिक समय से बैठकर इस मामले पर विचार कर रही थी, और उसने केवल घटनाओं के संभावित क्रम का अनुमान लगाया था; उसे कोई नया निष्कर्ष नहीं मिला था। उसे यह एहसास ही नहीं हुआ था कि जब वह अपने विचारों में डूबी हुई थी, तब रिकॉर्ड प्लेयर घंटों पहले बंद हो गया था।

जैसे ही उसने दिन भर का काम खत्म करके सोने का मन बनाया, उसका फोन बज उठा। कॉलर आईडी पर ऐश मैटल का नाम दिख रहा था। आजकल दिक्कत ये थी कि जब कॉलर आईडी स्क्रीन पर आती थी, तब यह पता लगाना नामुमकिन था कि कॉल करने वाला कहाँ है। रीता की आदत के चलते उसने घड़ी देखी और भारत और ब्रिटेन के बीच समय का अंतर देखा, क्योंकि ऐश वहीं रहता था। मुंबई में आधी रात को लंदन में पिछली शाम साढ़े सात बज रहे होते। भला वो आधी रात को उसे क्यों फोन करेगा, जब तक कि कोई बड़ी बात न हो?

'महान डॉ. मैटल को इस समय एक साधारण भारतीय पुलिस अधिकारी को फोन करने की क्या जरूरत है?'

'हा-हा। ये कोई डॉक्टर नहीं है जो पुलिस को बुला रहा है। ये तो एक मरीज है जो डॉक्टर को बुला रहा है। यहाँ दर्द तो मुझे हो रहा है, प्यारी।'

'वह किस प्रकार का दर्द हो सकता है?'

'लगभग दिल का दौरा पड़ गया था।'

बैकग्राउंड नॉइज़ को कम करने के लिए कंडेंसर माइक्रोफोन से लैस सभी नए मोबाइल फोनों के बावजूद, रीटा के प्रशिक्षित कान आसपास के माहौल में काफी आवाजें, टूटे-फूटे शब्द और फुसफुसाहटें, यहाँ तक कि लाउडस्पीकर पर कुछ घोषणाएँ भी सुन

सकते थे, जिनसे उसे पता चला कि ऐश एक सार्वजनिक स्थान पर है। आसपास का शोर इतना स्पष्ट नहीं था कि वह समझ सके कि यह क्या था: शायद कोई अस्पताल, शायद कोई रेलवे स्टेशन? या कोई हवाई अड्डा?
'आपका विमान कहाँ उतरा है?' उसने जोखिम उठाते हुए पूछा।
'रीटा, तुम सिर्फ खूबसूरत चेहरा ही नहीं हो। तुम बहुत होशियार भी हो। तुमने कैसे अंदाजा लगाया कि मैं एयरपोर्ट पर हूं?'
उसका दांव सफल रहा। तभी उसे आसपास की आवाज़ में कुछ हिंदी सुनाई दी और वह समझ गई कि वह भारत में कहीं है, संभवतः मुंबई में।
'ओह, मुझे तो यह भी पता है कि आप मुंबई में हैं। क्या आप चाहते हैं कि मैं अभी आपका फ्लाइट नंबर बता दूं?'
'अरे वाह, कोई तो शर्लक है!'
'और आप मुंबई क्यों आए हैं? मुझे लगा था कि आपका कार्यक्रम अगले महीने का है?'
'मैं तुमसे मिलने के लिए बेताब था। तुमने क्या पहना है? इसका जवाब न देना ठीक है, मैं बस कल्पना कर लूंगा।'
ये थे ऐश मैटल: पेशे से क्रिमिनल साइकोलॉजिस्ट, जो महिलाओं को लुभाने के लिए घटिया जुमलों के उस्ताद थे। उनके बीच कुछ बार शारीरिक संबंध बने थे, लेकिन कोई रोमांटिक रिश्ता नहीं था, बस दो वयस्क अपनी मर्ज़ी से संबंध बना रहे थे। हालाँकि रीटा को शुरू में उनके ये घटिया जुमले नापसंद थे, लेकिन बाद में उन्हें इनकी आदत हो गई जब उसे एहसास हुआ कि वो सिर्फ़ चिढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं, हालाँकि उनसे पैदा होने वाले कामुक विचार और आगे की बातचीत को भुलाया नहीं जा सकता था। ऐश काफी अनोखे थे। अगर आप क्रिमिनल साइकोलॉजिस्ट की तस्वीरें गूगल पर खोजें, तो आइंस्टीन जैसे दिखने वाले लोगों के बाद ऐश की तस्वीर सबसे आखिर में दिखेगी - अगर दिखे भी तो। ऐश लंबे थे, उनके बाल झड़ रहे थे, और उनका चेहरा गहरे टैन वाले बिल मरे जैसा था। दिखने में अच्छे नहीं थे, लेकिन फिर भी महिलाओं को आकर्षित करते थे। इसके अलावा, जब बात असरदार बातों की आती थी, तो वो व्यक्तिगत रूप से भी बहुत आकर्षक थे; वो प्रजनन के मौसम में मोर के पंख भी नोच सकते थे। रीटा से मिलने के समय उनका हाल ही में तलाक हुआ था; एक दशक बाद पहली बार, और रीटा अभी भी कुछ साल पहले अपने बॉयफ्रेंड से हुए ब्रेकअप के

घावों को सह रही थी। यह पहली नज़र का प्यार था।
'कृपया अपनी कल्पना पर थोड़ा नियंत्रण रखें। आपने खुद स्वीकार किया था कि आपको मैं सिर्फ इसलिए याद हूं क्योंकि आपने मुझे कॉलेज के दिनों में बिकिनी में देखा था।'
'जी हां जी! एक छोटी काली वाली, अगर मुझे सही याद है तो। क्या वह अभी भी आपके पास है?'
'क्या?'
'मज़ाक कर रहा था। खैर, आप सही कह रहे हैं। मुझे सितंबर में एक सम्मेलन में आना था, लेकिन वह रद्द हो गया और उन्होंने मुझे दूसरे प्रतिभागी की जगह इस सम्मेलन में शामिल होने के लिए कहा, इसलिए मैं यहाँ हूँ। मेरी फ्लाइट अभी मुंबई में उतरी है। आप कैसे हैं? उम्मीद है मैंने आपको इस अजीब समय पर नहीं जगाया होगा?'
'मैं केस फाइल पढ़ते-पढ़ते बस बंद करने ही वाला था।'
'क्या मैं किसी तरह से आपकी मदद कर सकता हूँ?'
'हो सकता है, हालांकि मुझे नाम गुप्त रखने पड़ सकते हैं, लेकिन दो दिमाग एक से बेहतर होते हैं।'
'तो दो शरीर भी तो ऐसे ही होते हैं—' ऐश ने सहजता से एक बार फिर अपने प्रेम भरे लहजे में बात शुरू कर दी।
'क्या तुम कभी भी बातचीत के दौरान पूरी तरह गंभीर नहीं रह सकते, ऐश?' रीटा कभी-कभी सोचती थी कि वह उससे क्यों उलझी रहती है। ऐसा तो नहीं था कि पुरुषों की कमी थी। लेकिन वह यह अच्छी तरह जानती थी कि दिलचस्प पुरुषों की कमी थी; ऐसे में पुरानी दोस्ती हमेशा काम आती थी।
'बिल्कुल। कल शाम को हमारा एक औपचारिक रात्रिभोज है, लेकिन उसके बाद मैं खाली रहूंगा, अगर आप देर रात तक काम करना चाहें तो।'
'ठीक है, मैं आज शाम का समय खाली रखूंगा। आप मुझे कल फोन कर दीजिएगा, फिर हम आगे बात करेंगे। आप कहाँ ठहर रहे हैं?'
'द ओबेरॉयज़ एट मरीन ड्राइव।'
'कोई बात नहीं। दोपहर के भोजन तक मुझे फोन कर देना। शुभ रात्रि।'
'तुम भी अच्छी नींद लो। हो सकता है कल मैं तुम्हें बिल्कुल भी सोने न दूं।'
जैसे ही रीटा ने लाइट बंद की, मामला भुला दिया गया और भावुक विचार अचानक

उसके मन में उमड़ आए। आँखें बंद करते ही उसे एक सुखद अनुभूति हुई और कुछ ही पलों में वह नींद की गहरी खाई में डूब गई।

Twelve

सुबह देर तक रीता की टीम ने विभिन्न स्थानों पर मुंबई पुलिस के वर्दीधारी कर्मियों के साथ मिलकर सारा प्रचार कार्य पूरा कर लिया था और नतीजे सामने आ गए थे। खाली। अनीता जोगानी और पिछले एक साल में उनके संपर्क में आए हर एक व्यक्ति की जांच-पड़ताल कर ली गई थी और उन्हें निर्दोष पाया गया था। जोगानी परिवार के सभी कर्मचारी—जो बारी-बारी से उनके कार्यालय के कर्मचारी भी थे—और उनके सभी संपर्कों की पूरी छानबीन कर ली गई थी और उन्हें दोषमुक्त कर दिया गया था। रॉन जोगानी के करीबी सामाजिक समूह की भी जांच की गई थी, उनके साक्ष्य की पुष्टि की गई थी और उनके नाम संदिग्धों की सूची से हटा दिए गए थे। रीता और उनकी टीम को इस बात में कोई संदेह नहीं था कि हत्यारा जोगानी को जानता था; सवाल यह था कि कैसे? जोगानी हत्यारे को कितनी अच्छी तरह से जानता था कि उसने अपनी योजना का खुलासा कर दिया?

'उसके ट्रैवल एजेंट को तो पूरी योजना की जानकारी जरूर रही होगी, शायद उसे यह भी पता होगा कि जोगानी किस होटल में ठहरा था?' रीता ने हाथ में कॉफी लिए ऑपरेशन रूम में एक बार फिर पहला नया सवाल उठाया।

विक्रम ने इसे लिख लिया।

'जोगिंदर राजा के कंप्यूटर से कुछ मिला क्या, जतिन?' रीता ने पूछा, हालांकि जतिन के चेहरे से ऐसा कोई भाव नहीं दिख रहा था कि कुछ भी महत्वपूर्ण जानकारी नहीं मिली हो।

'जाहिर है, हमने परीक्षण करने से पहले उनके पीसी को डिस्कनेक्ट करने में सावधानी बरती। जैसा कि उम्मीद थी, जोगिंदर राजा का रहस्यमय क्लाइंट वीपीएन का उपयोग करता है, और अनुमान लगाइए कि जब हमने जांच की तो किसका आईपी पता सामने आया?'

यह एक अलंकारिक प्रश्न था। रीता ने विक्रम की ओर देखा। विक्रम ने नेने की ओर देखा। किसी ने भी प्रश्न नहीं पूछा और न ही उत्तर देने का प्रयास किया। वे जतिन के जाने का इंतजार करते रहे।
'अपने ही।'
'संभव है कि?'
दरअसल, तथाकथित ग्राहक ने अपनी आईडी छुपा ली है और लॉग-इन को इस तरह मोड़ दिया है कि वह हांगकांग में कहीं से वापस आ जाता है और फिर इस तरह रीडायरेक्ट हो जाता है कि ऐसा लगता है कि हमारे श्री राजा ही उस ईमेल खाते का उपयोग कर रहे हैं। हमने यह भी पता लगाने की कोशिश की कि ईमेल खाता कहाँ बनाया गया था, लेकिन इस पूरे ऑपरेशन के मास्टरमाइंड ने शुरू से ही आईपी एड्रेस छुपाने में सावधानी बरती थी। एक तरह से यह मामला अटक गया।
'क्या ऐसा हो सकता है कि श्री राजा ने झूठ बोला हो कि उनका कोई ग्राहक है, जबकि असल में वही हनी सिंह का पीछा करते हैं, उसकी रिपोर्ट करते हैं और फिर उसे पढ़ते हैं?' नेने गंभीर नहीं थे, लेकिन कुछ भी असंभव नहीं था।
विक्रम ने समझाया, 'नेने, तुम उनसे मिले नहीं हो, वरना तुम उन्हें इतना श्रेय नहीं देते। ये वही राजा हैं जो इस शनिवार को हनी सिंह के पीछे-पीछे तुम्हारी टीम को देखने से चूक गए थे।'
'सच में? उसने तीनों कारों को मिस कर दिया?'
'विक्रम, मिस्टर राजा पर बहुत सख्ती बरत रहा है। मुझे लगता है कि आपने टास्क पर जिन लोगों को भेजा था, वे वाकई बहुत अच्छे थे।' रीता ने अंगूठा ऊपर करके इशारा किया।
'धन्यवाद मोहतरमा।'
'तो, असल में, श्री राजा के कंप्यूटर तक पहुंच होने से हम न तो बेहतर हैं और न ही बदतर?'
'नहीं महोदया।'
'क्या हमारे आईटी विशेषज्ञ यह जांच नहीं कर सकते कि यह जादूगर मैंड्रेक किस तरह का मैलवेयर इस्तेमाल करता है?'
'वे इस पर काम कर रहे हैं, लेकिन ऑनलाइन डायग्नोस्टिक्स से कनेक्ट किए बिना इसकी जांच करना मुश्किल होगा।'

'ठीक है। उनसे कहिए कि वे दोबारा ऐसी गलती न करें। मुझे पूरा यकीन है कि अगर हम किसी दूसरी जगह से लॉग इन करते हैं, तो श्री राजा के आईपी पते में बदलाव या किसी और वजह से उनके क्लाइंट को कुछ शुरुआती चेतावनी मिल सकती है। उन्हें बिना कनेक्ट किए जितना हो सके उतना काम करना चाहिए। फिर पीसी को ए-सैप को लौटा दें, बेहतर होगा कि आज ही लौटा दें। हम चाहते हैं कि श्री राजा अपने रहस्यमय क्लाइंट से पहले की तरह ही बातचीत करते रहें।'
'जी हां, महोदया।'
विक्रम ने जतिन का काम भी अपने पैड पर नोट कर लिया।
'कम से कम एक बात तो साफ़ है,' रीटा ने ज़ोर से साँस छोड़ते हुए कहा। 'जिस आदमी ने रॉन जोगानी का कंप्यूटर नष्ट किया और मिस्टर राजा का रहस्यमयी ग्राहक, दोनों ही कंप्यूटर के जानकार हैं। मैं शर्त लगा सकती हूँ कि ये एक ही गिरोह के लोग हैं। यह महज़ संयोग नहीं है कि दो अलग-अलग ऑपरेशन चला रहे दो कंप्यूटर के धुरंधरों का संयोगवश एक ही जगह पर होना, क्या आप सहमत नहीं हैं?'
बिल्कुल। इस बात से कोई असहमत नहीं हो सकता।
'और मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि कोई ऐसा क्यों करेगा, सिवाय इसके कि उसे हीरों का हिस्सा चाहिए हो? हो सकता है वे मिलीभगत कर रहे हों या हो सकता है वे एक ही समूह के लोग हों।'
'हम यह कैसे जान सकते हैं?'
'यही तो हम पता लगाएंगे।'
'क्या हमें हनी सिंह से मदद मांगनी चाहिए? अगर वह भरोसेमंद है तो वह हमें पता लगाने में मदद कर सकता है?' विक्रम ने एक नया विचार रखा।
रीता ने उस विचार को अधर में लटका दिया। यह एक तरह की दुविधा थी। अगर हनी सिंह को पता था—या जो कुछ उन्होंने उसे बताया उससे वह अनुमान लगा सकता था या निष्कर्ष निकाल सकता था—कि कोई उसका पीछा क्यों कर रहा है, तो इस बात की प्रबल संभावना थी कि वह यह भी जानता होगा कि वह व्यक्ति कौन है या कौन हो सकता है? और अगर हनी सिंह को जरा भी आभास नहीं था कि उसका पीछा किया जा रहा है, तो क्या वह पुलिस को यह पता लगाने में मदद नहीं करना चाहेगा कि वह कौन हो सकता है और क्यों? क्या उस स्थिति में कोई भी ऐसा नहीं चाहेगा? इसके विपरीत, अगर हनी सिंह इस पूरे जोगानी मामले में जरा भी शामिल था, तो

पुलिस उससे संपर्क करके अपनी सारी साज़िशें उजागर कर देगी।
नहीं, हनी सिंह से संपर्क करने से पहले हमें सभी अन्य संभावनाओं की जांच कर लेनी चाहिए। शिशिर सिंह और हनी सिंह के बीच अब तक हमारे पास केवल तीन अस्पष्ट कड़ियां हैं: दोनों मुंबई में रहते हैं, उनका पारिवारिक नाम एक ही है और दोनों कंप्यूटरों में अच्छी तरह से पारंगत हैं - ये इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं है कि वे एक ही व्यक्ति हैं। इस शहर में इन तीन समान विशेषताओं वाले पांच हजार और लोग हो सकते हैं।
'लेकिन वे एक-दूसरे की हूबहू नकल हैं। आपने दोनों तस्वीरें देखी हैं, मैडम,' नेने ने हैरानी से कहा।
'हां, मैंने किया है। आपने ही तो उसके परिवार की पूरी खोजबीन की है। क्या कुंभ मेले में बिछड़े जुड़वां भाइयों में से किसी एक के होने की कोई संभावना है?'
नेने मुस्कुराई। 'आपका मतलब किसी पुरानी बॉलीवुड फिल्म की तरह है?'
'जुड़वां बच्चों का एक जैसा होना एक जैविक घटना है, जिसे हम अनदेखा या नकार नहीं सकते, क्या हम कर सकते हैं?'
'हम उसकी मां से पूछ सकते हैं, उसे तो जरूर पता होगा।' नेने ने सहमति जताई।
लेकिन हो सकता है कि वह आपको सच न बताए। अगर इसके पीछे कोई दुखद कहानी है तो वह सच क्यों बताएगी? वैसे भी, जब तक हम उसे अदालत में पेश होने के लिए समन नहीं भेजते, तब तक वह हमें सच बताने के लिए बाध्य नहीं है, और हम ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक हमारे पास उसके या उसके बेटे के खिलाफ कोई मामला न हो। क्यों न हम परिवार को दरकिनार करके सीधे पता लगाएं कि हनी सिंह का जन्म कहाँ हुआ था? हम अस्पताल और नगर पालिका के रिकॉर्ड खंगालते हैं और खुद ही पता लगा लेते हैं।
विक्रम ने वह बात भी लिख ली। वह हर मामले को लेकर बेहद सतर्क रहता था।
अपना-अपना काम सौंपे जाने के बाद, नेने और जतिन कार्रवाई के लिए निकल पड़े।
विक्रम, मैं चाहता हूँ कि तुम पूरी तरह से हनी सिंह पर ध्यान केंद्रित करो। मुझे साल की शुरुआत से हनी सिंह की यात्राओं के सभी रिकॉर्ड चाहिए—चाहे वो व्यावसायिक हों या मनोरंजन के लिए। मुझे शक है कि वे हवाई अड्डों पर यात्रियों की तीन महीने की वीडियो रिकॉर्डिंग रखते होंगे, लेकिन उनके पास देश के अंदर और बाहर की यात्राओं के मुद्रित रिकॉर्ड तो होने ही चाहिए। उनसे कहो कि वे जाँच करें कि क्या हनी

सिंह विदेश गए थे, न केवल बेल्जियम या यूरोप बल्कि भारत के बाहर कहीं भी। उनके स्वामित्व वाले या उनकी कंपनी के नाम से सूचीबद्ध सभी फोन, उनके कॉल रिकॉर्ड—विशेष रूप से जोगानी की हत्या वाले सप्ताह के दौरान। और इन मोबाइलों के जीपीएस निर्देशांक, यदि कोई हों; यदि कोई फोन विदेश गया हो तो हमें पता होना चाहिए। वह एक वैध व्यवसाय चलाते हैं, इसलिए इस समय हमारे पास यह मानने का कोई कारण नहीं होना चाहिए कि उनके पास कोई गुप्त पे-एज़-यू-गो टेलीफोन कनेक्शन हैं। बेल्जियम में जोगानी की हत्या वाले सप्ताह के दौरान शहर में किसी भी पुलिस कैमरे में उनकी कार की कोई भी झलक। कुछ भी जो उन्हें निर्दोष साबित कर सके।

विक्रम ने उस पर कुछ लिखा।

'किटी के लिए भी यही बात लागू होती है।'

'कौन?' उसने ऊपर देखा।

'मिस किट्टी वर्गीज, जो उसकी प्रेमिका और मॉडल है—उसके फोन रिकॉर्ड और उस समय वह कहाँ थी, इसकी जानकारी भी प्राप्त करें।'

'हां मैम।'

'अगर हमें कोई ऐसी जानकारी मिलती है जिससे पता चलता है कि वह बेल्जियम के आसपास है, तो हमारे पास उसके खिलाफ मामला होगा। अगर कुछ नहीं मिलता, तो हम उससे मिलने जाएंगे। हमें क्या पता, वह शिशिर सिंह नाम के किसी व्यक्ति से या श्री राजा के अज्ञात ग्राहक से खतरे में हो सकता है, अगर वे दोनों एक ही व्यक्ति न हों... लेकिन इस बारे में बाद में बात करेंगे।'

विक्रम चला गया और रीता वापस आकर एक और कप गर्म कॉफी बनाने लगी—जिसे वह डेमिटास कहती थी। अब दोपहर के भोजन का समय हो रहा था और मिस्टर हॉटनेस ने अभी तक फोन नहीं किया था। उसने अपना मोबाइल चेक किया, लेकिन कोई मिस्ड कॉल या मैसेज नहीं था। वह अपनी कुर्सी पर बैठी, पीछे झुकी और अपने बालों में हाथ फेरा, तभी उसे फिर से एहसास हुआ कि उसके बाल एक साल पहले से छोटे हो गए हैं। वह मुस्कुराई। क्या गजब का मामला था, भिंडी बाजार में एक सीरियल किलर का पीछा करना और खुद बंदी बन जाना। फिर भी वह जीत गई। हालांकि, इस मामले में वह पुरानी जानकारी पर काम कर रही थी, जिससे उसे चिढ़ हो रही थी। लेकिन वह अच्छी तरह जानती थी कि जब सेक्सी और जोशी समेत पूरी

दुनिया आपको शिखर पर पहुंचा देती है, तो आपको किसी भी तरह का बहाना बनाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं होता। वह अब सेक्सी के पास जाकर यह नहीं कह सकती थी कि वह केस नहीं सुलझा पाई क्योंकि... यह बकवास होता।

कहते हैं कि अगर किसी की निजी जिंदगी के बारे में जानना हो तो उसके ड्राइवर से पूछो। ड्राइवर ही तो उन्हें कहीं ले जाता है और वापस लाता है। मोबाइल फोन के आविष्कार के बाद से ड्राइवर बहुत सी बातें सुन लेता है। कुछ मामलों में ड्राइवर मेहमानों को मुंबई के स्थानीय स्टेशनों या टैक्सी स्टैंड तक छोड़ने भी जाता है। कुछ अन्य मामलों में मुंबई के ड्राइवर उनकी तरफ से छोटी-मोटी खरीदारी भी कर देते हैं। संक्षेप में, ड्राइवर के पास ऐसी जानकारी होती है जिसके लिए कुछ रिटेल कंपनियों के CRM विभाग पैसे देने को भी तैयार रहते हैं ताकि वे मूल खरीदारी में जोड़े जा सकने वाले अतिरिक्त और पूरक उत्पाद देख सकें। ऐसा नहीं था कि रीता को कोई झिझक थी या कुछ छिपाना था, लेकिन अपने पुलिस ड्राइवर को यह बताकर उसकी जानकारी बढ़ाना व्यर्थ लग रहा था कि रीता को रात के खाने के बाद श्री ऐश मट्टल को लेने जाना है और उन्हें अपने घर ले जाना है। इससे भी बुरी बात यह थी कि डीसीपी फरेरा ओबेरॉय होटल में रात भर रुके थे।

रीता ने कुलदीप को फोन किया और उसे ऊपर आकर कार की चाबियां सौंपने के लिए कहा क्योंकि वह आज रात देर से लौट सकती है।

'कोई बात नहीं मैडम, मैं इंतजार करूंगा।'

'नहीं, मुझे लौटने में बहुत देर हो जाएगी और आपको रोकने का कोई मतलब नहीं है। आप अपना काम जारी रख सकते हैं, आज के लिए आपको राहत मिल गई होगी।'

'कोई बात नहीं, महोदया।'

हे वफादार सिपाही, तुम मेरी दुविधा क्यों नहीं समझते? वह हताशा में चिल्लाना चाहती थी। यह तुम्हारे बारे में नहीं है; यह मेरे बारे में है।

'कृपया चाबियां ऊपर भेज दीजिए। मैं आपको कल सुबह फोन करूंगी। अब और कोई बात नहीं।' उसने उससे कहा कि वह चाबियां नीचे किसी को सौंप दे, बजाय इसके कि वह उसके कार्यालय में आकर वही बात दोबारा शुरू करे।

'ठीक है,' कुलदीप ने अनिच्छा से सहमति जताई, मानो उसका सबसे प्यारा खिलौना उससे छीन लिया गया हो। रीता ने अभी अपनी बातचीत खत्म ही की थी कि उसका मोबाइल बज उठा: ऐश मैटल।

'माफी चाहता हूं, मैं एक विषय पर चल रही गरमागरम बहस में उलझ गया था।'
'कोई बात नहीं। और नमस्कार।'
'हेलो, आज दोपहर मैं काफी व्यस्त हूँ, लेकिन मैं सात बजे तक फ्री हो जाऊँगा क्योंकि आज जल्दी डिनर है।'
'खाना कहाँ है?'
'मैंने वास्तव में जांच नहीं की है, क्यों? क्या आप मेरे साथ जुड़ना चाहते हैं?'
'आपके रूप में...'
'मेरी कॉलेज की दोस्त, हुन-बन की तरह।'
'क्या दूसरे लोग भी अपने कॉलेज के दोस्तों को साथ लाएंगे?'
'तुम क्यों परवाह करते हो?'
'किसने कहा कि मैं शादी के लिए तैयार हूँ?' रीटा हंस पड़ी।
'क्या योजना है? आपने कहा था कि आप मुझसे किसी मामले पर चर्चा करना चाहते हैं?' ऐश अचानक औपचारिक लहजे में बोला। 'क्या अभी-अभी कोई आपके आस-पास से गुजरा है?'
'कुछ हद तक, हाँ।'
रीटा किसी भी कीमत पर इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देने वाली थी।
'क्या हम सेक्स की विभिन्न तकनीकों पर चर्चा कर सकते हैं?'
'हाँ, हम्म! हाँ, बिल्कुल, हम ऐसा कर सकते हैं।'
'हा! तुम्हें अचानक गले में खराश हो गई?'
ऐश ने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा लग रहा था कि वह अभी भी किसी की सुनने की सीमा के भीतर ही है।
'ठीक है, अब मैं आपको जाने देता हूँ। मैं अपने कार्यालय में रहूँगा। मुझे बता देना कि आप रात के खाने के लिए कब निकलें ताकि मैं समय का ध्यान रख सकूँ और उसके बाद आपको लेने आ सकूँ।'
'यह बहुत अच्छा होगा।' ऐश का लहजा अभी भी औपचारिक था।
कॉल काटने से पहले रीटा ने रॉबर्ट पामर की पंक्तियाँ दोहराईं, 'मुझे आपसे बहुत प्यार हो गया है, डॉक्टर, डॉक्टर।'

***

जतिन और आईटी टीम ने पूरा दिन हैंडलबार के पीसी पर बिताया, लेकिन कुछ भी

हाथ नहीं लगा। अगर वे वेब आधारित डायग्नोस्टिक्स से कनेक्ट नहीं कर पाए, तो मशीन पर छिपे किसी भी मैलवेयर का पता लगाने की कोई उम्मीद नहीं थी। शायद यह हार्ड डिस्क में मौजूद कुछ फाइलों के पीछे छिपा हो, या शायद राजा के कंप्यूटर पर पूरी तरह से मौजूद ही न हो। एक संभावना यह भी थी कि शायद इसका थोड़ा सा हिस्सा ही गिरा हो, जो सक्रिय होने पर पीसी का डेटा चुराने के लिए काफी हो। जो भी हो, इसका पता नहीं लगाया जा सकता था, इसलिए इसे हटाया भी नहीं जा सकता था। जो दिखता नहीं, उससे लड़ा भी नहीं जा सकता।

आईटी टीम की ओर से एक और सुझाव आया कि श्री राजा के कंप्यूटर को उसी तरह के दूसरे कंप्यूटर से बदल दिया जाए, लेकिन उन्हें प्रशासनिक अधिकार न दिए जाएं ताकि वे अपने रहस्यमय क्लाइंट से भेजे गए किसी भी नए संदेश को डाउनलोड न कर सकें। हालांकि, रीता से सलाह लेने के बाद जतिन ने इस सुझाव को अस्वीकार कर दिया। इस सुझाव पर विचार करने पर उसमें कई खामियां नज़र आईं। अगर वह गुप्त क्लाइंट इतना चालाक था कि उसने जोगानी के कंप्यूटर को दूर से ही मिटा दिया, तो क्या उसे किसी तरह यह पता नहीं चल जाता कि पिछले कुछ महीनों से उससे संपर्क कर रही मशीन बदल गई है? इसके अलावा, उन्हें ऐसा करने का कोई फायदा भी नज़र नहीं आया। उन्होंने क्लाइंट का आईपी एड्रेस पता लगाने की कोशिश की थी, लेकिन असफल रहे; उन्होंने श्री राजा के पीसी को स्कैन किया था और पुलिस के लिए महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं मिला था, तो पीसी बदलने से आखिर क्या फायदा था? और नुकसान यह था कि अगर क्लाइंट को पता चल गया कि कंप्यूटर बदल गया है, तो वह श्री राजा से सारा संपर्क तोड़ सकता था या इससे भी बुरा, हैंडल बार के पीछे पड़ सकता था।

***

समझौते के मुताबिक, ऐश मैटल के फोन आने पर रीता सुबह सात बजे तक ऑफिस में ही थीं। ऑफिस में कुछ गिने-चुने लोगों को छोड़कर बाकी सभी जा चुके थे, क्योंकि यह नब्बे से अधिक वर्दीधारी पुलिस थानों में से एक नहीं था; यह मुंबई पुलिस मुख्यालय था। सभी उच्च अधिकारी रॉयल अल्फ्रेड सेलर्स होम में ठहरे हुए थे, जिसका निर्माण 1876 में हुआ था। हालांकि, आसपास का सारा इलाका क्रॉफर्ड मार्केट नामक वास्तुकला के अद्भुत नमूने से प्रभावित था और आसपास के सभी क्षेत्रों को भी क्रॉफर्ड मार्केट के नाम से ही जाना जाता था। मुंबई पुलिस आयुक्त और

महाराष्ट्र राज्य के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, श्री संजय सक्सेना उर्फ सेक्सी, यहीं बैठते थे, साथ ही उनके अधीन काम करने वाले कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और क्राइम स्क्वाड भी, जिसमें डीसीपी रीता फरेरा भी शामिल थीं।
'हम अब रात के खाने के लिए जा रहे हैं, इसलिए मुझे लगता है कि मैं आठ या साढ़े आठ बजे तक चुपके से निकल पाऊंगा,' ऐश ने समझाया।
'मैं तुम्हें लेने आ सकता हूँ, यह कहाँ है?'
'इस होटल में हमारे लिए एक जापानी रेस्टोरेंट बुक किया गया है, इसलिए मुझे नहीं लगता कि आपको मुझे लेने आना और मुंबई के ट्रैफिक में मुझे बांद्रा तक वापस ले जाना समझदारी होगी। आपका क्या ख्याल है?'
'आप खाने के बाद हमेशा टैक्सी ले सकते हैं—'
'या फिर आप होटल में ही रुक सकते हैं। मेरे पास समुद्र के नज़ारे वाला कमरा है।'
'क्या यह अरब सागर के ऊपर स्थित समुद्र का दृश्य है?'
'ब्रोशर में तो इसे यही नाम दिया गया है।'
कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया, क्योंकि दोनों मन ही मन इस बात पर विचार कर रहे थे कि रीटा के ऐश के कमरे में होटल में रुकने के क्या परिणाम होंगे, यदि कोई हों तो।
'आप अभी भी तक वहाँ है?'
'हाँ।'
'रीटा, अगर तुम्हें असहज लग रहा है तो कोई बात नहीं, मैं समझती हूँ। मैं टैक्सी से तुम्हारे घर आ सकती हूँ।'
'क्या मैं ऐसा दिखता हूँ जिसे इस बात की परवाह हो कि दूसरे क्या सोचते हैं?'
आपको पता है विंस्टन चर्चिल ने क्या कहा था?'
'उन्होंने बहुत कुछ कहा। उन्होंने होटल में रात बिताने के बारे में क्या कहा?'
'मुझे ठीक-ठीक शब्द याद नहीं हैं, लेकिन कुछ ऐसा था कि "अगर तुम हर भौंकने वाले कुत्ते पर पत्थर फेंकते रहोगे तो तुम कभी कहीं नहीं पहुंच पाओगे", कुछ ऐसा ही।'
'मैंने ऐसा सिर्फ इसलिए कहा क्योंकि जब मैंने तुम्हारे यहां रुकने की बात कही तो तुमने मुझसे बात करना बंद कर दिया...'
'अरे वो? मैं तो बस यही सोच रही थी कि समुद्र के नज़ारे के साथ प्यार करने में कैसा

लगेगा।' क्या उसे लगा कि वो कोई भोली-भाली लड़की है जो उसकी तरह चुटीले जवाब नहीं दे सकती? उसे लगभग ऐसा लग रहा था जैसे ऐश उसकी बात सुनकर शरमा गया हो। 'ठीक है, तो फिर साढ़े आठ बजे मिलते हैं?'

'हाँ।'

रीटा के पास निकलने से पहले एक घंटा था। वह हमेशा अपने पास कपड़ों का एक अतिरिक्त सेट रखती थी। पुलिस बल में कोई नहीं जानता कि कब कौन सी आपात स्थिति आ जाए और घर जाकर कपड़े बदले बिना कितनी देर तक बाहर रहना पड़े। उसने अपने दफ्तर का दरवाजा बंद किया, पर्दे गिराए और जल्दी से साफ कमीज और अंडरवियर पहनकर वही जींस दोबारा पहन ली। ऊपर से उसने अपनी हल्की सूती जैकेट पहन ली ताकि स्मिथ एंड वेसन पिस्टल छुपा सके—उसने हथियार वहीं छोड़ने के बारे में सोचा, लेकिन फिर यह विचार छोड़ दिया। कौन जानता था कि अगर आधी रात को कोई नई आपात स्थिति आ जाए तो उसे कहाँ जाना होगा?—वह शाम के लिए तैयार थी। अभी साढ़े सात बजे थे और निकलने की कोई जल्दी नहीं थी, उसे सिर्फ तीन किलोमीटर से थोड़ा ज्यादा गाड़ी चलानी थी। शायद पंद्रह मिनट।

***

श्री हैंडलबार राजा बेहद क्रोधित थे; वे चिंतित थे और डरे हुए भी थे।

उसी शाम उसका पीसी उसे वापस मिल गया था, लेकिन वह अब भी गुस्से से भरा हुआ था। उसने अपनी डेस्क पर बिखरे सारे कागज़ इकट्ठा किए, उन्हें दबाकर नीचे वाले दराज में ठूंस दिया और उसे लात मारकर बंद कर दिया। उसने अपनी पत्नी को लाखों बार कहा था कि वह अपने कागज़ इधर-उधर न फैलाए, लेकिन उसने कभी नहीं सुना। पता नहीं आजकल की औरतें खुद को क्या समझती हैं? उसके पिता के ज़माने में तो यह बर्दाश्त नहीं किया जाता। वह कमीनी डीएसपी। डीसीपी, जो भी कहो, वह पुलिसवाली। खुद को क्या समझती है? उसे उससे बहुत नफरत थी, उसके घर आकर उसे ऐसे डांटती थी जैसे वह कोई बिगड़ा हुआ स्कूली बच्चा हो। आखिरकार उसने अपना कंप्यूटर चालू किया और लॉग इन किया।

वह चिंतित था। अगर उसके ग्राहक (और उस समय उसका केवल एक ही ग्राहक था) को पता चल जाता कि वह पुलिस के साथ मिलीभगत कर रहा है, तो वह उसका धंधा छीन सकता था। हैंडल बार उस ग्राहक को खोना नहीं चाहता था जिसने अग्रिम भुगतान किया था, जो दी गई जानकारी पर ज्यादा ध्यान नहीं देता था, अनावश्यक

आमने-सामने की मुलाकातें नहीं करता था, कोई बकवास नहीं करता था, बिलकुल भी नहीं। उसे बस हनी सिंह की दिनभर की गतिविधियों का ब्यौरा लिखकर जमा करना होता था।
उसने ईमेल अकाउंट में लॉग इन किया और देखा कि ड्राफ्ट फोल्डर में एक अनपढ़ा मैसेज पड़ा है, जो अजीब था क्योंकि उसने वहां कुछ भी नहीं रखा था और उसका क्लाइंट भी उसे शायद ही कभी मैसेज भेजता था; असल में, कॉन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर होने के बाद से क्लाइंट की तरफ से कोई मैसेज आया ही नहीं था। सिर्फ वही क्लाइंट को मैसेज भेजता था और कभी जवाब नहीं मिलता था। क्या पुलिस के किसी चालाक आदमी ने उसके क्लाइंट के लिए मैसेज छोड़ा था? हे भगवान, नहीं। उसने मैसेज पर क्लिक किया और उसकी परेशानी कई गुना बढ़ गई।

शनिवार को जब आप हनी सिंह का पीछा कर रहे थे, तब आपके पीछे कौन था? और आपने अपनी साप्ताहिक रिपोर्ट में इसका ज़िक्र क्यों नहीं किया? याद रखिए, मुझे घटिया काम बिल्कुल पसंद नहीं है। यह आपकी पहली गलती है, इसलिए मैं इसे बर्दाश्त कर रहा हूँ, जो मेरे सिद्धांतों के खिलाफ है। मैं दोहराता हूँ, मुझे अब और नींबू मत परोसिए। और अगर मुझे कभी पता चला कि आप मेरे साथ किसी भी तरह की चालाकी कर रहे हैं - यह मत भूलिए कि मुझे पता है कि आप और आपकी पत्नी कहाँ रहते हैं, मुझे यह भी पता है कि आपके बेटे और उनकी पत्नियाँ और आपके पोते-पोतियाँ कहाँ रहते हैं - तो इसके परिणाम बेहद गंभीर होंगे। यह आपकी पहली और आखिरी चेतावनी है।

हैंडलबार का पेट बुरी तरह खराब हो गया, गले में तेजाब उमड़ आया, दिल में जलन होने लगी, मुंह सूख गया जैसे किसी ने उसके मुंह की आखिरी बूंद तक सोख ली हो। डर से उसकी आंखों में आंसू आ गए और उसकी मजबूत रीढ़ की हड्डी में ठंडा पसीना दौड़ने लगा। उसे लगा जैसे उसे दिल का दौरा पड़ जाएगा। वह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे उस नोट का जवाब देना चाहिए या नहीं। उसे पूरा यकीन था कि उसके मुवक्किल को पता चल जाएगा कि उसने नोट पढ़ लिया है; उसे अनपढ़ा मार्क करने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि वह जानता था कि उसका मुवक्किल किसी न किसी तरह से पता लगा लेगा और इससे रहस्यमयी मिस्टर सिंह और भी नाराज हो सकते

थे। और अभी-अभी मिली संक्षिप्त चेतावनी को देखते हुए, हैंडलबार ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहता था। अचानक, उसके इकलौते मुवक्किल के बारे में अब तक जो कुछ भी उसने नेक समझा था, वह भयानक लगने लगा। उस आदमी के शब्दों में धमकी झलक रही थी। उसने डीसीपी फेरेरा को फोन करने के लिए फोन उठाया, लेकिन रुक गया। वह क्या कर सकती थी? असल में, अगर उसने उसे फोन किया तो चेतावनी मिलने के बावजूद वह पुलिस के साथ मिलीभगत कर रहा था। उसने खुद को किस मुसीबत में फंसा लिया था? सबसे अहम बात, इस समय उसे यही परेशान कर रहा था कि वह इससे कैसे निकले?

पंद्रह मिनट बीत गए, और जब उन्हें पूरा यकीन हो गया कि दिल का दौरा पड़ने का एहसास भी खत्म हो गया है, तो उन्होंने नए सिरे से सोचना शुरू किया कि आगे उनके पास क्या विकल्प हैं। क्या वे चिकित्सकीय कारणों का बहाना बना सकते थे? लेकिन वे जानते थे कि उनका ग्राहक इतना समझदार था कि इसे आसानी से जाने नहीं देता —वह झूठ को तुरंत पहचान लेता। यह कोई स्कूल नहीं था जहाँ उनकी अनुपस्थिति को किसी डॉक्टर के मेडिकल सर्टिफिकेट से साबित किया जा सके। और अगर ग्राहक उनकी खराब सेहत के बहाने पर यकीन नहीं करता, तो उनके परिवार की जान खतरे में पड़ जाती। नहीं, वे ग्राहक से पीछा नहीं छुड़ा सकते थे, इस बात का उन्हें पूरा यकीन था। स्पष्ट धमकी के बावजूद भी उन्होंने पुलिस में शिकायत करने की हिम्मत नहीं की। पुलिस उन्हें और उनके परिवार को चौबीसों घंटे सुरक्षा नहीं देगी—और चाहकर भी नहीं दे सकती थी; उनके बेटे और उनकी पत्नियाँ अलग-अलग शहरों में रहते थे, दोनों के बच्चे स्कूल जाते थे। यह संभव नहीं था। और वे उनकी सुरक्षा किससे करेंगे? यहाँ दुश्मन अज्ञात था।

अगर उसे इस घटना के बारे में बताना पड़े—हालांकि उसके मुवक्किल ने कोई स्पष्टीकरण नहीं मांगा था, लेकिन अगर ऐसा दोबारा कभी हुआ—तो उसके पास अपने मुवक्किल के सामने यह स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था कि हनी सिंह का पीछा कर रहे गुंडों को वह पूरी तरह से देख नहीं पाया था, और उसे अपनी गलती माननी पड़ेगी; उसे अब भी संदेह था कि क्या वह यह बताएगा कि वे गुंडे पुलिसकर्मी थे और पुलिस भी उससे मिलने आई थी।

लेकिन मुंबई का सबसे बेहतरीन प्राइवेट जासूस, अपने पीछे लगी गाड़ी को कैसे नहीं देख पाया? हैंडलबार अक्सर अपनी प्रतिभा पर गर्व करता था, खुद को इस धंधे का

सबसे माहिर समझता था – और अगर वह इसे देखने से चूक गया, तो उसके क्लाइंट को कैसे पता चला? क्या उसके क्लाइंट ने कोई अचानक जांच करवाई थी या कोई दूसरी टीम काम के दौरान उसका पीछा करती थी? नहीं, एक बार पुलिस की गाड़ी को न देख पाना उसके स्वाभिमान को बस थोड़ा-बहुत मंजूर था, तीन महीने तक हर दिन किसी न किसी को न देख पाना? बिलकुल नहीं। तो क्या उसका पीछा कर रहे चालाक पुलिसवाले भी यह नहीं देख पाए कि कोई और भी उनका पीछा कर रहा है? खैर, उसके हिसाब से पुलिस भी नाकामियों से अछूती नहीं है। शनिवार को ज़रूर कोई पुलिस काफिला रहा होगा, अपने क्लाइंट का ईमेल देखने के बाद पहली बार उसके चेहरे पर मुस्कान आई।

खैर, हर किसी से गलतियां होती हैं, उसने आखिरकार स्वीकार किया। लेकिन भविष्य में उसे असाधारण रूप से सतर्क रहना होगा। उसके शरीर में डर की एक नई लहर दौड़ गई। अगर उसके रहस्यमय ग्राहक ने उसे एक लक्ष्य का पीछा करने के लिए कहा और फिर उसी लक्ष्य का पीछा करने के लिए एक और टीम को काम पर रखा, तो यह मामला गंभीर होना चाहिए।

उसने फैसला किया कि वह अपने मुवक्किल को कोई जवाब नहीं भेजेगा, क्योंकि इस समय खुद को समझाने या माफी मांगने का कोई मतलब नहीं था। उसने यह भी तय किया कि वह डीसीपी रीता फरेरा से बात करेगा—या बेहतर होगा कि जतिन से बात करे, जो उस घमंडी महिला से थोड़ा ज्यादा मिलनसार था—और उनसे कहेगा कि वे हनी सिंह का पीछा न करें, क्योंकि इससे उसका कारोबार खतरे में पड़ जाएगा। क्या उसे धमकी का जिक्र करना चाहिए? नहीं, उसने फैसला किया, अभी नहीं। उसे नहीं लगा कि इसकी जरूरत है, और यही हैंडलबार की पहली गलती थी। अगर रीता फरेरा और उनके साथियों को पता होता कि हनी सिंह का पीछा करने वाले लोगों का एक और समूह है, तो शायद वे उन्हें पकड़ लेते और पता लगा लेते कि शिशिर सिंह या श्री राजा का वह लापता मुवक्किल कौन था।

हैंडलबार की दूसरी और उससे भी बड़ी गलती यह थी कि उसने जेम्स बॉन्ड की तरह व्यवहार करने और आगे से सारी बागडोर अपने हाथ में लेने का फैसला किया। उसने निष्कर्ष निकाला कि उसे खेल में पूरी तरह से उतरना होगा और अपने रहस्यमय ग्राहक की पहचान उजागर करनी होगी।

लेकिन जब आप एक सरासर मूर्ख हों, आपका बुद्धि स्तर किसी लंबे समय तक बजने

वाले ग्रामोफोन रिकॉर्ड की आरपीएम के बराबर हो, और आप एक ऐसे अनाम, बेनाम प्रतिद्वंद्वी से लड़ना चाहते हों जिसकी दुष्ट प्रतिभा इतनी असाधारण हो कि इंटरपोल थिंक टैंक भी हैरान रह जाए, तो ऐसा संकल्प न केवल खतरनाक था, बल्कि जानलेवा भी हो सकता था। डेविड और गोलियत एक काल्पनिक कहानी है, और सांता क्लॉस वास्तविक नहीं है, लेकिन श्री हैंडलबार जोगिंदर राजा दृढ़ निश्चयी, अतिआत्मविश्वासी और बेहद अवास्तविक थे।

पॉलियानाइश वह शब्द है जिसका इस्तेमाल सेक्सी ने मिस्टर हैंडलबार जॉगिंदर राजा का वर्णन करने के लिए किया होगा: अवास्तविक रूप से आशावादी।

13 Thirteen

शाम ढलने के बाद रीटा दफ्तर से निकली; परछाइयाँ भी गायब हो चुकी थीं। रात काली थी, हवा ठंडी थी। तारे चमक रहे थे और

अरब सागर के ऊपर रात का आसमान साफ था, लेकिन समुद्र बिल्कुल भी शांत नहीं था। लहरें चट्टानों और सैरगाह से इतनी ज़ोर से टकरा रही थीं कि उनकी आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी, यहाँ तक कि उसकी सफेद जेट्टा 1.4 पेट्रोल कार की खिड़कियाँ बंद होने पर भी। यकीनन, जर्मनों ने भारतीय छोटे इंजन की ईंधन-बचत की पसंद को गंभीरता से लिया था। हालांकि, छोटा 1.4 लीटर इंजन काफी तेज़ था।

रीटा अपने विचारों में खोई हुई थी—मुकाबला, पहली बार, पीछे छूट गया था। कॉलेज के दशकों बाद जब वह ऐश मैटल से दोबारा मिली थी, तभी से उसे यह एहसास था कि उनके बीच कोई स्थायी रिश्ता नहीं हो सकता। अजीब बात यह थी कि यह क्षणभंगुरता उसकी उम्मीदों से कहीं ज़्यादा समय तक टिकी रही और अब स्थायी लगने लगी थी। दोनों को आगे बढ़ना था, और वह जानती थी कि किसी न किसी मोड़ पर इसका अंत होना ही था, उम्मीद है कि शालीनता से। अलग-अलग महाद्वीपों पर प्यार करना न तो संभव था और न ही उचित। जब वह अपने पहले प्यार के लिए अपना करियर छोड़ने को तैयार नहीं थी—वह प्यार जो दिल में धड़कता है, जिसके

सपने देखे जाते हैं, वह प्यार, दुर्भाग्य से, जीवन में केवल एक बार होता है—तो बाकी सब एक खूबसूरत समझौता है; क्या वे बार-बार यही नहीं कहते? अब वह अपना करियर क्यों कुर्बान करे? वह लंबे समय से प्यार के सर्कस में जोकर की भूमिका निभा रही थी। वह हर जगह फिट बैठती थी और कहीं नहीं। असफल प्रेम कहानियों की प्रतीक। वह मिल्स एंड बून्स की कहानियों की तरह लग रही थी। उसने खुद को उस निराशाजनक विचार से बाहर निकाला। अतीत को ज़िंदा रखने का कोई मकसद नहीं था, जब तक कि आप आत्मपीड़क न हों।

फिर भी, उसे प्यार पर भरोसा था; जितना वह दो बार टूटे दिल के साथ रख सकती थी। हैरानी की बात यह थी कि भले ही यह प्यार नहीं था, फिर भी यह खास सा लगता था। वह ठीक-ठीक बता नहीं सकती थी कि कैसे और क्यों, जैसे कभी-कभी आप भी नहीं बता पाते। ज़्यादातर पुरुष आँखें बंद करके सिर्फ़ शब्दों में यह नहीं समझा सकते कि गले में अच्छी गाँठ कैसे बाँधी जाती है; इसका मतलब यह नहीं था कि वे टाई नहीं पहन सकते थे। इसका मतलब यह था कि वे इसका वर्णन नहीं कर सकते थे। यह सर्वविदित तथ्य है कि कोई भी वास्तव में यह नहीं बता सकता कि छींक आना या चरम सुख का अनुभव कैसा होता है; इसका मतलब यह नहीं था कि लोगों को ये दोनों अनुभव नहीं होते।

ओबेरॉय एक मशहूर होटल है। हल्की ट्रैफिक में गाड़ी चलाते हुए वह सोच रही थी कि आखिर ये कॉन्फ्रेंस आयोजक कौन हैं जिनके पास दुनिया भर से मेहमानों को बुलाने और फिर उन्हें ओबेरॉय में ठहराने के लिए इतना पैसा है। और अगर वे वाकई महंगी पेस्ट्री, सैंडविच और कॉफी के साथ मेज पर बैठकर आपराधिक मनोविज्ञान पर चर्चा करते हैं, तो पुलिस को इन सत्रों में क्यों नहीं बुलाया जाता? शायद वह अपने वास्तविक जीवन के अनुभव को इन सत्रों में शामिल कर सके। या शायद वह कोई नया सिद्धांत सीख सके जिसे व्यवहार में लाया जा सके।

वह सुबह आठ बजकर नौ मिनट पर होटल पहुंची। मुंबई में बाकी जगहों की तरह ही यहाँ भी पार्किंग की जगह के लिए होड़ लगी हुई थी। जब वैलेट ने उसकी कार ली और उसे टोकन दिया तो वह काफी खुश हुई। उसने चौकीदार को देखकर मुस्कुराया और तेज़ी से होटल की भीड़ में गायब हो गई। होटल के कर्मचारी या तो व्यस्त थे या फिर लॉबी में आती हुई महिला में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। भला उन्हें क्यों होती? यह एक सार्वजनिक स्थान था, भले ही प्रवेश के अधिकार आरक्षित थे, लेकिन

रीता किसी गली की लड़की या वेश्या जैसी नहीं दिखती थी।

***

ऐश ने अपना वादा निभाया। उसने सम्मेलन के अन्य मेहमानों के साथ खाना खत्म किया, सबको अलविदा कहा और जल्दी से रेस्टोरेंट से बाहर निकल गया। आठ बजकर सैंतीस मिनट हो गए थे। वह होटल की लॉबी में यह देखने के लिए भागा कि क्या रीटा उसका इंतज़ार कर रही है। नहीं। वह रिसेप्शन पर यह देखने गया कि क्या कोई उससे मिलने आया है, कोई संदेश आया है। कुछ नहीं। वह कुछ मिनटों तक लॉबी में इधर-उधर घूमता रहा, उसकी नज़रें प्रवेश द्वार पर टिकी रहीं ताकि रीटा उसे देखने से पहले उसकी एक झलक पा सके। दस मिनट बाद उसने हार मान ली और ऊपर जाकर अपने कमरे में इंतज़ार करने का फैसला किया।

लिफ्ट से बाहर निकलकर उसने अपनी कार्ड-की को दरार में डाला और अंधेरा दरवाजा खोल दिया।

'हाथ ऊपर करो।'

उसे अपनी पीठ पर बंदूक की ठंडी नली का स्पर्श महसूस हुआ, लेकिन वह मुस्कुराया; वह न तो घबराया और न ही डर से बेहोश हुआ।

***

'वाह! तुम यहाँ कैसे आ गए?'

ऐश ने नैचुरल लिनेन का सूट, खुली कॉलर वाली सफेद शर्ट और चमकीले टैन रंग के जूते पहने थे। वह बिल्कुल डेट पर जाने के लिए तैयार लग रहा था। या यूं कहें कि उससे मिलने के लिए।

'मैंने अपना आकर्षण दिखाया, आपको क्या लगता है?' रीटा ने झूठ बोला। उसने बेईमानी से अपने पुलिस बैज का इस्तेमाल किया था, भले ही उसने कानून लागू नहीं किया था, लेकिन अपनी पहचान साबित करने के लिए ज़रूर किया था।

'सच में? और उन्होंने तुम्हें अंदर आने दिया?'

'हां। मैंने उनसे कहा कि मैं आपकी मुंबई की लोकल गर्लफ्रेंड हूं।'

'मुंबई की लोकल गर्लफ्रेंड?' ऐश सोचने लगा। 'कहीं और की गर्लफ्रेंड से अलग...?'

'इंग्लैंड वाला।'

'इस समय इंग्लैंड में मेरी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है।'

'तो फिर स्कॉटलैंड?'

'नहीं।'
'उत्तरी आयरलैंड?'
'नहीं।'
'नीदरलैंड।'
'यह तो यूनाइटेड किंगडम में भी नहीं है।'
'लेकिन क्या तुम्हारे पास वहाँ कोई है?' रीटा ने प्रभाव दिखाने के लिए अपनी भौहें ऊपर उठाईं।
'नहीं। ये क्या है, ऐश मैटल के जीवन और समय के बारे में पूछताछ? मुझे लगा कि आप एक महत्वपूर्ण मामले पर काम कर रहे हैं।'
'मैं एक महिला हूँ, मुझमें एक साथ कई काम करने की क्षमता है।' रीटा ने अपनी लिनेन की जैकेट उतार दी, जिसमें कमर में लगी बंदूक दिखाई दे रही थी।
ऐश ने पीछे मुड़कर उसे अपनी बाहों में भर लिया।
चुंबन कई मिनट तक चला। जीभें मिलीं, आपस में उलझ गईं, एक-दूसरे के मुंह को टटोलने लगीं, एक सर्प की तरह नृत्य करने लगीं, जबकि उनके हाथ शरीर को टटोलते रहे, जब तक कि ऐश का हाथ नीचे फिसलकर होल्स्टर में रखी बंदूक को छूने लगा।
मौखिक पूछताछ के बाद जब दोनों के मुंह अलग हुए तो उसने कहा, 'मैं हमेशा से एक आकर्षक महिला को केवल अपनी अंतर्वस्त्र में बंदूक लिए हुए देखना चाहता था।'
'आपने योद्धा राजकुमारी ज़ेना के बहुत सारे एपिसोड देख लिए हैं।'
'उसने सिर्फ अधोवस्त्र नहीं पहना था।'
'अगर मुझे सही याद है तो उसने बहुत कम कपड़े पहने थे।'
रीटा ने अपनी स्मिथ एंड वेसन पिस्तौल को अलग किया, उसे छत की ओर तानकर सावधानीपूर्वक कारतूस निकाले और मन ही मन गिनती की ताकि कोई कारतूस चैंबर में न रह जाए। ऐश ने अभी तक कमरे में मौजूद तिजोरी का इस्तेमाल नहीं किया था, इसलिए उसने बंदूक और कारतूस को ठोस स्टील के डिब्बे में रखा और रात के लिए ताला लगा दिया।
'मैंने अभी-अभी तुम्हारा सपना चकनाचूर कर दिया।' रीटा ने बंद तिजोरी की ओर इशारा किया।
'उम्मीद है, यह सपने का सिर्फ एक हिस्सा है।'
उन्होंने फिर से चुंबन किया।

कमरा असल में एक सुइट था। रीता हमेशा सोचती थी कि होटल के कमरों में लकड़ी का इतना गंभीर दिखने वाला फर्नीचर क्यों होता है। उसे लकड़ी के इस्तेमाल से होने वाली टूट-फूट समझ में आती थी, लेकिन क्या वे हर कुछ सालों में इसे बदलना नहीं चाहेंगे? एक सजावटी लेखन डेस्क जिसका आजकल कोई इस्तेमाल नहीं करता। एक ऐसा मजबूत बिस्तर जिस पर हाथी भी आराम कर सकते थे। बिस्तर खिड़की की तरफ नहीं था; नज़ारा दिखाने वाली खिड़की बाईं ओर थी। और नज़ारा सिर्फ़ समुद्र का नज़ारा नहीं था, बल्कि समुद्र ही एकमात्र नज़ारा था, जब तक कि कोई खिड़की के बिल्कुल पास जाकर सड़क और ट्रैफिक को न देख ले। दोनों खिड़की की ओर बढ़े और समुद्र के दृश्य की प्रशंसा करने लगे। रीता आगे खड़ी थी, ऐश उसके पीछे, अपनी बाहों को उसकी पतली कमर के चारों ओर लपेटे हुए। सूरज ढल चुका था, अब बाहर अंधेरा हो चुका था। नीचे प्रसिद्ध क्वीन्स नेकलेस दिखाई दे रहा था, जिसकी रोशनी उस हल्की धुंध में घुल गई थी जो समुद्र के किनारे हर चीज़ को घेर लेती है। मुंबई सोता है और जल्दी उठ जाता है; वह सोता नहीं, बस झपकी लेता है। नीचे सड़क पर गाड़ियाँ चल रही थीं, लेकिन पाँचवीं मंज़िल पर मौजूद वाहनों और उनके बीच की ऊर्ध्वाधर दूरी ने सभी अवांछित आवाज़ों को दबा दिया था। होटल से लगभग दो किलोमीटर दूर स्थित प्रतिष्ठित गेटवे ऑफ इंडिया, उनके ठीक पीछे सीधी रेखा में दिखाई दे रहा था। दूर तक केवल गहरा पानी था, जिसमें गश्ती नौकाओं की कुछ टिमटिमाती रोशनी दिखाई दे रही थी।

'तो यह समुद्र है या महासागर?' ऐश ने पूछा। रीटा को महसूस हुआ कि उसकी उंगलियां उसकी कमीज का ऊपर वाला बटन खोल रही हैं।

'यह महज़ बयानबाज़ी है। यह ज़मीन की तरह नहीं है जिस पर इंसानों का मालिकाना हक हो और वे सीमाएँ तय कर सकें। भला कोई कैसे यह तय कर सकता है कि अरब सागर कहाँ खत्म होता है और हिंद महासागर कहाँ से शुरू होता है, या दो जल निकायों के बीच कोई रेखा कैसे खींच सकता है? ऐसा तो नहीं है कि उस काल्पनिक रेखा को पार करने पर रंग बदल जाता है।'

रीटा की कमीज़ के सारे बटन खुल चुके थे। जैसे ही ऐश ने उसकी बाहें ऊपर उठाईं और उसे उतार दिया, रीटा को अपनी गर्दन पर ऐश की साँसें महसूस हुईं। इसके बाद कुछ ही मिनटों में उसने उसकी बेल्ट खोली और उसकी जींस ऐसे नीचे गिरा दी जैसे वो कई साइज़ बड़ी हो। वह एक शरमाती हुई बार्बी की तरह जींस से बाहर निकली,

फिर भी उसका चेहरा समुद्र या महासागर की ओर था, जबकि ऐश ने अपनी बाहें उसके चारों ओर से खोल दी थीं; धातु के बकल की खनक और उसकी पीठ के पीछे कपड़ों की सरसराहट ने उसे बताया कि ऐश भी उसके वश में आ चुका है।
'तुम बेहद खूबसूरत लग रही हो,' उसने धीरे से उसके कान में फुसफुसाया।
रीता ने अपनी आंखें बंद कर लीं।
'सर्वशक्तिमान भगवान ने डिजाइन में बहुत बड़ी गलती कर दी है,' ऐश ने फुसफुसाते हुए कहा जब दोनों पूरी तरह से नग्न थे और वह अभी भी उसके पीछे था।
'कृपया मुझे समझाएं।' किसी अजीब कारण से दोनों ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली थी। ऐसा तो नहीं था कि कोई ऐश के होटल के कमरे के बाहर खड़ा होकर उनकी बातें सुन रहा हो। या सुन रहा हो।
'देखो, उसे पुरुष से अधिक लंबा स्त्री का चित्र बनाना चाहिए था।' उसने स्पष्ट किया, उसके हाथ अब उसकी कमर पर थे और ऊपर की ओर बढ़ रहे थे।
'मुझे यकीन नहीं है कि मैं आपकी बात समझ पा रहा हूं।'
'औरत आदमी से लंबी है, इसलिए आदमी को झुकना नहीं पड़ेगा।' उसकी जीभ उसके कान में ऐसे घुस गई जैसे कोई सांप खरगोश के बिल में घुस रहा हो। 'लेकिन, मुझे लगता है कि इंसान ने भगवान के बनाए नियम में कुछ बदलाव कर दिए हैं, इसीलिए औरतें ऊंची एड़ी के जूते पहनती हैं, है ना?'
'क्या—' ऐश के हाथों और जीभ के स्पर्श से रीता पहले से ही एक सुखद मदहोशी में डूबी हुई थी; होटल पहुँचने के समय की तुलना में अब उसका शरीर कई डिग्री ज़्यादा गर्म हो गया था। वह पूछना चाहती थी कि झुकने का क्या मतलब है, लेकिन उसकी अगली हरकत ने सवाल करने की गुंजाइश ही नहीं छोड़ी। ऐश ने अपने घुटने मोड़कर अपने धड़ को उसके नीचे किया, अपने दाहिने हाथ से उसके पेट को पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा और दूसरे हाथ से खुद को उसके भीतर समाहित कर लिया। रीता के मुँह से अनजाने में एक आह निकली, उसने अपनी बाहें फैलाईं, अपने पैरों को थोड़ा सा फैलाया और अपने धड़ को आगे की ओर झुकाने के लिए मजबूत खिड़कियों पर सहारा लिया ताकि ऐश को सहारा मिल सके। कुछ ही सेकंड में, दोनों एक तरह के आनंदमय क्षण में डूब गए।
उनका प्रेम-प्रसंग तीव्र और बेकाबू था। वे किशोरों की तरह चरम सुख तक पहुँचे। मानो कोई झरना लंबे समय से शांत पड़ा हो और अचानक कहीं से उसका मुख्य वाल्व

टूट गया हो और वासना ने जबरदस्त दबाव के साथ द्वार खोल दिए हों। पशुवत वासना की एक बहुप्रतीक्षित मुक्ति। ऐश के साथ आखिरी बार संबंध बनाने के बाद से रीटा किसी और के साथ नहीं रही थी। ऐश की साँसों से पता चलता था कि वह भी किसी और के साथ संबंध नहीं बना रहा था। उसने चीख को दबाने के लिए अपने निचले होंठ को दाँतों के नीचे दबा लिया। उसका वीर्य उसके अंदर समा गया और, उसके अभी भी सीधे खड़े रहने के दौरान, बाहर निकलकर उसकी जांघों पर बह गया। एयर कंडीशनिंग के बावजूद दोनों पसीने से तरबतर थे। और थक चुके थे। अंत में वह पीछे हटा और रीटा घूमकर उसकी बाहों में समा गई।

यह कब तक चलेगा? शाम को होटल जाते समय रीटा को अपने सारे विचार याद आ गए। जब ऐश उसके करीब आ रहा था, तब वह भावुक होकर लगभग 'आई लव यू' कहने ही वाली थी, लेकिन सिनात्रा ने पीढ़ियों से ऐसी परिस्थितियों के बारे में चेतावनी दी थी: "कुछ मूर्खतापूर्ण कहकर सब कुछ खराब मत कर देना।"

उसने बस इतना ही कहा, 'यह अद्भुत था।'

'मैं कल नई दिल्ली जा रहा हूँ और सप्ताहांत तक वापस आ जाऊँगा,' ऐश ने बिस्तर पर लेटते हुए कहा। अभी भी बिना कपड़ों के, लेकिन प्रेम प्रसंग के बाद तरोताज़ा महसूस कर रहा था।

'क्या यह मेरे लिए आपसे दोबारा मिलने का निमंत्रण है?'

'क्या तुम सप्ताहांत में मेरे साथ नहीं रुकते?'

"मेरे बॉयफ्रेंड को यह पसंद नहीं आएगा।" रीटा ने फिर से उसे चिढ़ाया।

'आप का लडका दौसत है?'

वह जोर से हंस पड़ी। 'ठीक है ऐश मैटल, तुमने अपना खाना खा लिया है, मैंने नहीं खाया और मुझे बहुत भूख लगी है। जब तक मैं नहाती हूँ, तब तक तुम अपनी डेट के लिए कुछ ऑर्डर कर दो।'

आप क्या लेंगे?

'अंडे, बीन्स और टोस्ट।'

और शैम्पेन?

'मुझे मनाया जा सकता है,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

ऐश ने बेडसाइड टेबल से रूम सर्विस मेनू उठाया। रीटा सोच रही थी कि वह खुद को चादर से ढक ले या नग्न अवस्था में ही चली जाए। कपड़े अभी भी खिड़की के पास

ढेर में पड़े थे, जहाँ से उसने उन्हें उतारा था। उसने एक मिनट सोचा, फिर बिना खुद को ढके उठी और संलग्न बाथरूम की ओर चलने लगी।

'क्या किसी ने तुम्हें बताया है कि तुम्हारी कमर इतनी आकर्षक है कि कोई भी उस पर फिदा हो जाए?' ऐश के हाथ में अभी भी रूम सर्विस का मेन्यू था, लेकिन वह उसकी पीठ को घूर रहा था।

'धन्यवाद, इससे मेरा दिन बन गया।'

'मुझे लगा कि तारीफ न करना असभ्यता होगी।'

मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होती।

'हां। मुझे भी ऐसा ही लगा था, लेकिन शायद तुम्हारा पिछवाड़ा ऐसा कर दे।'

'गधे।'

'धन्यवाद। तो ऐसे लेते हैं तारीफ, लड़की।'

बाथरूम में इतने साबुन, शैंपू, कंडीशनर, मॉइस्चराइजर और लोशन भरे पड़े थे कि रीटा या ऐश उन सबको इस्तेमाल भी नहीं कर सकते थे। संसाधनों की कितनी बर्बादी!

रीटा शावर में गई और उसे चालू कर दिया। जैसे ही पानी की पहली फुहार उस पर पड़ी, उसने एक बार फिर ऐश के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचा। ऐश मैटल के साथ सेक्स बेहद अच्छा था; इसने उसके अकेलेपन के दर्द को और बढ़ा दिया, मानो वह अकेलेपन की खाई में और भी गहराई तक डूब रही हो। उसकी राय में, सेक्स को बेवजह बदनाम किया जाता है जबकि यह सबसे पवित्र प्राकृतिक क्रिया है। लेकिन यह सब किस ओर जा रहा था? उसे पता था, एक दिन ऐश उसे फोन करके बताएगा कि उसे लंदन में कोई और मिल गया है। फिर क्या होगा? उसकी उम्र भी बढ़ती जा रही थी, और वह कुंवारी मरना नहीं चाहती थी। और उसे कॉलेज के किसी पुराने दोस्त के साथ मौज-मस्ती करने का मौका भी कितनी बार मिलेगा?

वह शॉवर से बाहर निकली। वहाँ ढेर सारे तौलिए भी थे। शायद बेहतरीन मिस्री सूती कपड़े के। सफ़ेद और मोटे। इतने मोटे कि अगर पाँच तौलिए एक के ऊपर एक रखे जाएँ तो वो गद्दा बन जाएँगे। उसने खुद को सुखाया और पूरे कद के शीशे में देखा। चिकना, सुडौल और आकर्षक। उसे शीशे में अपना दमकता हुआ रूप दिखाई दिया; वह खुश थी और दिख भी रहा था। इसमें क्या बुराई थी?

वह बाथरोब पहने हुए बाहर निकली।

मैंने आपके खाने का ऑर्डर दे दिया है।

'धन्यवाद। ऐश, चलो एक समझौता करते हैं...'
उसने देखा कि ऐश अचानक सीधा खड़ा हो गया, मानो उसने उसकी आँखों में कुछ गंभीर देख लिया हो।
'किस तरह का समझौता?'
'अगर हम दोनों 40 साल की उम्र तक अविवाहित रहे तो हममें से एक नौकरी छोड़ देगा और दूसरे के पास चला जाएगा।'
'आपका मतलब है कि अगर तब तक हमें कोई और नहीं मिला तो?'
'हाँ।'
'मुझे नहीं पता आपके साथ ऐसा है या नहीं, लेकिन मेरे पीछे दुनिया भर में बहुत सारी महिलाएं पड़ी हैं।'
'तुम बड़े ही कमीने हो। मैं सच कह रहा हूँ।'
'जानती हो, मुझे हमेशा से समझदार और मजबूत महिलाएं पसंद आई हैं, ना कि नासमझ और नाजुक। मैं तुम्हारी स्पष्टवादिता और सीधेपन की सराहना करता हूँ। मुझे अच्छा लगता है कि तुम जानती हो कि तुम्हें क्या चाहिए। और मैं तुमसे सहमत हूँ। बात पक्की। लेकिन याद रखना, लोग कहते हैं: अपनी इच्छाओं के बारे में सावधान रहो।'
लेकिन अगर मैं फिर भी काम करना चाहूँ तो क्या होगा?
'मैं नौकरी छोड़ दूंगा। मैं हमेशा घर पर बैठकर लेख लिख सकता हूं और जरूरत पड़ने पर यात्रा कर सकता हूं।'
'पिछले कई सालों में किसी ने मुझसे इतनी अच्छी बात नहीं कही। शुक्रिया।' उसने उसे चूमा, लेकिन इससे पहले कि कुछ हो पाता, दरवाजे पर दस्तक हुई।
'रूम सर्विस।' ऐश चादर के नीचे घुस गया। रीटा ने बाथरोब को कसकर लपेटा और दरवाजा खोला।

***

अंडे, बीन्स और टोस्ट खत्म हो चुके थे। शैम्पेन भी लगभग खत्म हो चुकी थी। दोनों बिस्तर पर बैठ गए। ऐश ने अभी तक अपने कपड़े नहीं बदले थे, और रीटा अभी भी बाथरोब पहने हुए थी।
'तो तुम्हें क्या बात परेशान कर रही है?' ऐश ने पूछना शुरू किया।
'वर्तमान मामला।'

'क्या आप मुझे इसके बारे में कुछ बताना चाहेंगे?'
रीता ने एक पल सोचा। क्या वह किसी बाहरी व्यक्ति को चल रही जांच में शामिल कर सकती थी? उसने पहले भी ऐसा किया था, लेकिन तब उसके तत्कालीन सुपरवाइजर जोशी की सहमति से ही किया था। वह बिना बताए यूं ही फोन उठाकर सेक्सी को यह नहीं पूछ सकती थी कि क्या वह किसी आपराधिक मनोवैज्ञानिक से सलाह ले सकती है। और इस समय वह उससे क्या कहेगी? "हम अंशकालिक प्रेमी हैं... दिन में अजनबी, रात में आपराधिक मामलों पर चर्चा करते हैं?"
उसने सलाह लेने का फैसला किया। ऐश ने तब बहुत मदद की थी, ऐश अब भी बहुत मदद कर सकता था। उसे उस पर भरोसा था। पाठ्यपुस्तक जाए भाड़ में।
उसने ऐश को मामले का संक्षिप्त विवरण दिया: शिशिर सिंह, ब्रुसेल्स में उसकी हत्या, और उसका हमशक्ल हनी सिंह। उसने यह भी बताया कि हैंडल बार हनी सिंह का पीछा कर रहा था, और हैंडल बार को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उसे यह काम कौन करवा रहा है। उसने उसे कंप्यूटर की तकनीकी बारीकियों के बारे में भी बताया।
'और आपको इस मामले का नेतृत्व करने के लिए क्यों चुना गया...?' ऐश ने अपनी बात खत्म करने के बाद पूछा।
मुझे बताया गया कि यह योग्यता के आधार पर मिला है, लेकिन पिछली सफलता कभी-कभी वाकई डरावनी हो सकती है। 'सेक्सी' इस बात को नहीं समझता कि सफलता कौशल और भाग्य का मेल है, और कौन हर बार मेरे भाग्य की गारंटी देगा? मुझे यकीन है कि आप जानते हैं कि कभी-कभी सब कुछ भाग्य पर निर्भर करता है, और प्रतिभा - या आप इसे जो भी कहना चाहें - को मुफ्त में ही सफलता मिल जाती है। लेकिन, सफलता का एक नकारात्मक पहलू यह है कि यह कभी-कभी दूसरों को आपके अजेय होने का झूठा एहसास दिला देती है। उन्हें लगता है कि जो ऊपर जाता है वह कभी नीचे नहीं आएगा। मुझे सच में समझ नहीं आ रहा कि इस समस्या का समाधान कैसे निकालूँ। सच में। मुझे बताइए आप क्या सोचते हैं?
ऐश कुछ मिनटों तक चुपचाप बैठा रहा, मानो वह अपने दिमाग में जानकारी को व्यवस्थित कर रहा हो, उसे सही क्रम में रखकर समझने की कोशिश कर रहा हो। जब उसने बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज़ बहुत संयमित थी, उसका चेहरा गंभीर और पेशेवर भाव से भरा हुआ था।

मुझे ऐसा लग रहा है कि यहां कुछ और ही चल रहा है।
'कैसा?'
ऐश फिर चुप हो गया। रीटा ने उसके चुप होने का इंतज़ार किया।
कुछ तो गड़बड़ है। कोई हनी सिंह के बारे में काफी कुछ जानना चाहता है, लेकिन हमें नहीं पता कि वह कौन है और उसे उसमें दिलचस्पी क्यों है। और भगवान के लिए, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि हत्यारा यह सब क्यों जानना चाहेगा। अगर हत्यारे को हनी सिंह के बारे में और जानना होता तो वह लूट से पहले ही इस विषय पर अध्ययन कर लेता, न कि उसके बाद। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?
इसीलिए वह ऐश की प्रशंसा करती थी; वह उसे सोचने पर मजबूर करता था, वह उसे अपने विचारों को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करना, उन्हें शब्दों में व्यक्त करना, विपरीत और समवर्ती दोनों पहलुओं पर सोचना सिखाता था।
ऐश ने सिर हिलाया। 'असल में, कातिल का यहाँ कोई लेना-देना नहीं है। सोचो ज़रा। कातिल - फिलहाल तो कम से कम - हीरों और हत्या के जुर्म से बच निकला है। उसे क्या फ़र्क पड़ेगा अगर हम हनी सिंह को गिरफ़्तार करें या फाँसी दें? हनी सिंह का पीछा करने से शायद हम उसी तक पहुँच पाएँगे अगर वह कोई गलती कर दे। तो सवाल यह है कि आखिर कोई हनी सिंह पर नज़र क्यों रखेगा?'
'कोई और भी है जो सोचता है कि हनी सिंह ही हत्यारा है। कोई ऐसा व्यक्ति जिसका चोरी हुए हीरों में स्वार्थ निहित है—'
'एक मिनट रुकिए,' ऐश ने बीच में टोकते हुए कहा। 'निगरानी व्यवस्था हत्या के बाद स्थापित की गई थी, और जैसा कि आपने अपने सारांश में सही बताया है, यह संभवतः हत्या के परिणामस्वरूप ही की गई थी।'
'लेकिन हैंडल बार को काम पर रखने वाले व्यक्ति को यह कैसे पता चला कि बेल्जियम में हीरा व्यापारी की हत्या करने वाला व्यक्ति हनी सिंह जैसा दिखता है?'
'आपको यही पता लगाना होगा। मुझे लगता है कि यही आपके अधिकांश, बल्कि शायद सभी सवालों का जवाब है। क्या आप मेरा अनुमान जानना चाहते हैं?'
'बताओ, मुझे बताओ।'
'हत्यारे या हत्यारों को इस घटना से पहले हनी सिंह के अस्तित्व के बारे में पता था। हनी सिंह का पता अपराध के बाद नहीं चला। क्या आप श्री हनी सिंह से मिल चुके हैं?'

'अभी नहीं, लेकिन बहुत जल्द। उससे संपर्क करने से पहले मैं उसके बारे में और उसके आस-पास की हर बात जानना चाहता था। हम नहीं चाहते थे कि हमारी तलाशी पूरी होने से पहले उसे भनक लग जाए। अगर उसे पता चल गया कि हम उसकी जांच कर रहे हैं तो हमारी छवि खराब हो सकती है।'

'समझ में आता है।'

वे तब तक बात करते रहे जब तक उनके पास कोई और विकल्प नहीं बचा, और उन्हें यह भी एहसास हुआ कि वे तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अपने सिद्धांतों के अनुरूप ढालने की कोशिश कर रहे थे, जबकि कुछ तथ्य मौजूदा सिद्धांतों से मेल नहीं खाते थे। इसके अलावा, उनके पास अभी भी बहुत कम तथ्य बचे थे।

'क्या मुझे थोड़ी कॉफी मिल सकती है?' रीटा ने अनुरोध किया।

'इस समय? कैफीन लेने के बाद आप कैसे सो पाएंगे?'

कॉफी उसके लिए किसी जादुई औषधि की तरह थी। वही कॉफी सुबह उसे जगाने और सोने के लिए पर्याप्त आराम देने में कैसे मदद करती थी, यह बात वह कभी-कभी खुद भी सोचती थी। लेकिन खैर! अगर यह काम करती है, तो करती है।

'मेरी चिंता मत करो।'

उन्होंने सुबह दो बजे बत्तियाँ बुझा दीं। चाँदी जैसी चाँदनी से कमरा जगमगा उठा। आसमान साफ था; शीशे से तारे दिखाई दे रहे थे। मुस्कुराते हुए, टिमटिमाते हुए, खुश।

'क्या आप जानते हैं कि तारे क्यों चमकते हैं?'

रीटा मुड़ी और उसे हैरानी भरी नज़रों से देखा: आखिर तुम्हें क्या हो गया है? 'तो क्या तुम दिन के इस समय मुझे कुछ बेकार की बातें ही बताओगे या मुझसे प्यार करोगे?'

ऐश अचंभित दिख रहा था।

'क्यों, अगर मैं चाहूँ तो इसमें क्या गलत है? क्या इससे तुम्हारे पुरुष अहंकार को बहुत ठेस पहुँचती है?'

'नाह—'

'तो मुझे ले चलो।'

***

'यह बहुत बढ़िया था,' ऐश ने बाद में कहा।

'धन्यवाद फ्रायड।'

'एह...?'
'मुझे तुम्हें चिढ़ाने में बहुत मज़ा आया। बहुत अच्छा लगा। शुभ रात्रि।' उसने अपना सिर उसकी बांह में रख लिया और आंखें बंद कर लीं।

14
Fourteen

रीटा सुबह-सुबह घर लौट आई। वह कल वाले कपड़े पहनकर काम पर नहीं जाना चाहती थी। ऐसा नहीं था कि कोई

मैं पूछूंगी—शायद पुरुषों को पता भी न चले—लेकिन जुबान को छेड़ने की क्या जरूरत है?
शीश महल पहुँचते ही उसे एहसास हुआ कि वह फुर्ती से चल रही है। वह खुश थी। उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी और वह हमेशा ऐसे ही तनावपूर्ण मामलों में उलझी रहती थी, जैसे कि अभी उसके सामने था। आपराधिक मामले शायद ही कभी शांत और सुकून भरे होते हैं। अवचेतन मन तनाव में था, लेकिन आज ऐसा लग रहा था जैसे निजी जीवन की कुछ उलझनें सुलझ गई हों। मन को शांति मिली थी।
उसने योग करने का फैसला किया। उसका मेटाबॉलिज्म बहुत अच्छा था, लेकिन पतला होना ही फिट होना नहीं था। वह फुर्ती, ताकत, लचीलापन, सहनशक्ति और शरीर के तालमेल के लिए व्यायाम करती थी। बाद में उसने नहाया, काम के नए कपड़े पहने - कमीज और जींस, एस एंड डब्ल्यू बंदूक, बंदूक को ढकने के लिए पतली जैकेट - और जल्दी काम पर निकल गई। टीम दिन-रात काम कर रही थी, और वह जानती थी कि उसे बहुत कुछ पढ़ना होगा। टीम ने जो भी जानकारी जुटाई थी, उसका सारांश उसे दे दिया गया होगा।

***

आपने चाहे मीडिया के विभिन्न माध्यमों – टेलीविजन, फिल्मों या जासूसी किताबों – के जरिए कुछ भी सुना हो, जांच कोई सटीक विज्ञान नहीं है। जो तरीका एक मामले

में कारगर साबित होता है, जरूरी नहीं कि दूसरे में भी कारगर हो। बेशक, सभी बुनियादी नियमों का पालन करना जरूरी है: यह खोदो, वह खोदो, लेकिन सफलता की कोई गारंटी नहीं होती। सफलता की संभावना बढ़ाने का एकमात्र तरीका है पूरी तरह से जांच करना, हर संभव रास्ते की पड़ताल करना, किसी को भी न छोड़ना और पूरी तरह से जांच-परख कर ही किसी बात पर भरोसा करना। रीटा और उनकी टीम ठीक यही कर रही थी।

रिकॉर्ड से पता चला कि श्री शिशिर सिंह ने मुंबई से ब्रुसेल्स तक रॉन जोगानी की जासूसी की थी। हालांकि, हवाई अड्डे पर लगे सौ से अधिक सुरक्षा कैमरों में से किसी में भी उनकी तस्वीर नहीं कैद हुई। या तो वे भेस बदले हुए थे या किसी तरह कैमरे से बचने में कामयाब रहे।

2 अप्रैल को सुबह 2:10 बजे मुंबई से ब्रुसेल्स जाने वाली जेट एयरवेज की फ्लाइट 9W 228 में सवार हुए अन्य 197 यात्रियों में से किसी का भी हीरे के व्यापार से कोई संबंध नहीं था। इनमें से 144 भारतीय या भारतीय मूल के थे। 53 विदेशी नागरिकों को भी इस सूची से बाहर कर दिया गया, क्योंकि भारतीय पुलिस के अधिकार क्षेत्र से बाहर होने के कारण, भले ही वे सेक्सी से हस्तक्षेप करने का अनुरोध करते, उनकी जांच करना संभव नहीं था। नेने और उनकी टीम ने महिलाओं और बच्चों के साथ यात्रा कर रहे परिवारों को भी सूची से हटा दिया। ऐसा नहीं था कि इसका कोई पूर्व उदाहरण नहीं था, लेकिन सामान्य ज्ञान के आधार पर उन्होंने मान लिया कि सशस्त्र डकैती करने के इरादे से यात्रा करने वाले लोग बच्चों के साथ यात्रा नहीं करते। उन्हें और ट्रांजिट यात्रियों (जिनके पास आगे की फ्लाइट कनेक्शन थे या जिन्होंने अन्य यूरोपीय स्थानों के लिए ट्रेन ली थी) को हटाने के बाद, संभावित संदिग्धों की कुल संख्या घटकर 73 रह गई। इनमें शिशिर सिंह सहित 59 पुरुष और 14 महिलाएं शामिल थीं। 11 अन्य लोगों को सूची से हटा दिया गया, क्योंकि वे मुंबई के निवासी नहीं थे। ऐसा नहीं था कि केवल मुंबई के निवासियों ने ही लूटपाट या हत्या की, बल्कि यह छंटनी की प्रक्रिया थी, और वलसाद के किसी व्यक्ति को शामिल करना कम से कम पहले चरण में हास्यास्पद माना गया। नेने की टीम ने उनमें से प्रत्येक से मुलाकात की, उनसे बात की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

पुलिस ने फोटो लाइनअप तैयार किया। चूंकि उनमें से कुछ प्रवासी भारतीय थे जो कभी वापस नहीं लौटे, इसलिए भारत में मौजूद सभी 110 लोगों को अलग-अलग

पांच-पांच तस्वीरों का एक सेट दिखाया गया - जिनमें से एक माननीय श्री शिशिर सिंह की थी - और उनसे पूछा गया कि क्या वे ब्रुसेल्स जाने वाली अपनी उड़ान में किसी सहयात्री को पहचान सकते हैं। कुछ लोगों ने शिशिर सिंह को पहचान लिया, लेकिन कुछ अन्य लोगों ने उसी फोटो लाइनअप में मौजूद अन्य लोगों को पहचान लिया क्योंकि कुछ अन्य तस्वीरें पुलिसकर्मियों की थीं। यहां तक कि वे दो लोग भी, जिन्हें वे एयरलाइन रिकॉर्ड से जानते थे कि वे 29B और 29C सीटों पर बैठे थे - शिशिर सिंह खिड़की वाली सीट (29A) पर थे - उन्हें पहचानने में असफल रहे।
रॉन जोगानी को ले जाने वाली उड़ान से तीन दिन पहले मुंबई से ब्रुसेल्स जाने वाले यात्रियों पर भी इसी तरह की जांच की गई थी। इससे कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकल सका। विभिन्न भारतीय हवाई अड्डों से बेल्जियम जाने वाली हर उड़ान की जांच करना शारीरिक रूप से असंभव था। यह एक तरह से पर्याप्त जांच करने का प्रयास था, अगर किस्मत अच्छी रही तो शायद कुछ सुराग मिल जाए। किसी भी जांच में ज्यादा जानकारी होना हमेशा फायदेमंद होता है।
फ्लाइट अटेंडेंट की भी गहन जांच की गई।
रिपोर्ट को संक्षिप्त करके डीसीपी रीता फरेरा को सौंप दिया गया, जिन्होंने यह देखकर मुस्कुरा दिया कि कुछ सिद्धांत हर बार सही साबित होते हैं। दुनिया भर में गवाहों की याददाश्त दयनीय मानी जाती है। अधिकांश लोग शिशिर सिंह को उसके साथ उड़ान भरने के दो दिन बाद फोटो लाइन-अप में भी नहीं पहचान पाते, तीन महीने बाद तो पहचानना नामुमकिन है। रीता अब भी इस बात पर अडिग थीं कि अपराध स्थल के पास या शायद वहीं पर एक दूसरा व्यक्ति, और संभवतः एक तीसरा व्यक्ति भी, मौजूद था। इसमें कोई संदेह नहीं था।

***

विरोधाभास (संज्ञा): एक अलंकार जिसमें स्पष्ट रूप से परस्पर विरोधी शब्द एक साथ आते हैं। "बेहद आनंददायक", "अस्त-व्यस्त संरचना", और "असमान रूप से समान" जैसे उदाहरण उतने ही यथार्थवादी हैं।
पिछली चोरियों की छानबीन करते हुए, रीता और उनकी टीम को कुछ साल पहले मुंबई में एक ज्वैलरी की दुकान पर हुई एक ऐसी ही मिलती-जुलती चोरी का पता चला।
भिन्न, क्योंकि कार्यप्रणाली बिल्कुल अलग थी।

ठीक उसी तरह, जैसा कि एक ज्वैलरी की दुकान पर हुआ था, जहां कम से कम तीन करोड़ रुपये के हीरे - और केवल हीरे - किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा चुरा लिए गए थे जिसे अभी तक पुलिस ने पकड़ा नहीं है, क्योंकि वह चोरी भी उतनी ही सावधानी से की गई थी।

जिस शाम डकैती का पता चला, उससे एक शाम पहले ऐसा प्रतीत हुआ कि एक अकेला व्यक्ति (जब तक किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया, दोषी नहीं ठहराया गया और मामला बंद नहीं हुआ, तब तक यह सब अनुमान ही था) मुंबई के समृद्ध इलाके पेडर रोड स्थित आभूषण की दुकान पर ग्राहक बनकर आया था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, उसके पहनावे और तौर-तरीकों से वह धनवान प्रतीत होता था। लंबा कद, आकर्षक रूप, गोरा रंग और महंगे कपड़े, इन सभी बातों ने उस समय दुकान के भोले-भाले कर्मचारियों पर यही प्रभाव डाला था। ऐसा माना जाता है कि वह अपनी मंगेतर को शादी का प्रस्ताव देने के लिए हीरे की अंगूठी की तलाश में था, और इसी कारण उसने कई महंगी अंगूठियां देखीं। वह हीरों से परिचित प्रतीत होता था; वह जानता था कि अंगूठी में जड़ा हीरा देखने से उसका रंग पीला पड़ जाता है, इसलिए उसने ऑर्डर देने से पहले बिना जड़े हीरे देखने की मांग की। आखिरकार उन्होंने एक महंगा हीरा चुना—2.8 कैरेट से अधिक का, प्रिंसेस कट सॉलिटेयर—फिर कैटलॉग से अंगूठी का डिज़ाइन तय किया, नकद में पाँच प्रतिशत जमा कराया, लेकिन तभी उन्हें पेशाब करने की तीव्र इच्छा हुई और उन्होंने ज्वैलरी स्टोर में ग्राहकों के लिए बने शौचालयों के बारे में पूछताछ की। जैसे ही उन्होंने सभी औपचारिकताएँ पूरी कीं, उनकी सेवा करने वाली सेल्सगर्ल दूसरे ग्राहक की सहायता करने लगी और उन्होंने उन्हें जाते हुए नहीं देखा। दरअसल, किसी ने भी उन्हें दुकान से जाते हुए नहीं देखा क्योंकि, जैसा कि बाद में जांचकर्ताओं ने पता लगाया, वह कभी गए ही नहीं।

ग्राहकों की उच्च श्रेणी को देखते हुए, शौचालय साधारण शौचालय नहीं थे: फर्श इतालवी संगमरमर का था, नल सोने की परत वाले थे, तौलिए मिस्र के सूती कपड़े के थे, और यहाँ तक कि एक शॉवर भी था। भला किसी आभूषण की दुकान में शॉवर क्यों? हालांकि, शॉवर के ऊपर एक नकली छत बनाई गई थी ताकि गीज़र को छिपाया जा सके। महंगे कपड़े पहने ग्राहक ने सगाई की अंगूठी का ऑर्डर देने के बाद आलीशान शौचालय में प्रवेश किया, जाहिर तौर पर किसी तरह शॉवर के ऊपर बने स्थान पर चढ़ गया और रात भर के लिए वहीं छिप गया। उस शाम जब दुकान बंद हुई,

तो चौकीदार ने अपना नियमित चक्कर लगाया। जब उसे यकीन हो गया कि सभी लोग चले गए हैं, तो उसने रात की बत्तियाँ जला दीं, अलार्म सेट किया और आश्चर्य की बात यह थी कि अलार्म का जंक्शन बॉक्स शौचालय के अंदर ही था। उसने दुकान को ताला लगाया, चाबियाँ प्रबंधक को सौंप दीं और एक अन्य व्यक्ति के साथ दुकान के मुख्य द्वार के बगल में बने एक छोटे से कमरे में रात के पहरेदार के रूप में तैनात हो गया।

रात के किसी समय—जब तक कि इस बात की पुख्ता पुष्टि न हो जाए, यह सब अनुमान ही है—एक अज्ञात ग्राहक नीचे उतरा, दुकान का अलार्म बंद किया और डिस्प्ले कैबिनेट तोड़कर जितने हीरे लूट सकता था, लूट लिए। जांचकर्ताओं ने बाद में पता लगाया कि चोर बने उस ग्राहक ने बड़ी तिजोरी से छेड़छाड़ करने की कोशिश की थी—उसका ताला और डंडा क्षतिग्रस्त पाए गए—लेकिन उसे किसी तरह यह समझ आ गया कि तिजोरी में अलग से अलार्म लगा हुआ है; इसलिए उसने आखिरी समय में इसे छोड़ दिया। कुल मिलाकर तीन करोड़ रुपये के हीरे गायब होने की सूचना मिली, जिसका मतलब है कि, यह मानते हुए कि अधिकांश जौहरी कभी भी अपने पूरे स्टॉक की घोषणा नहीं करते और निश्चित रूप से सही कीमत भी नहीं बताते, कम से कम चार, पांच या छह करोड़ रुपये के हीरे थे। इसके बाद उस व्यक्ति ने शौचालय की खिड़की में लगी लोहे की सलाखों को किसी छोटी आरी से काटकर निकाल लिया और चुपके से भाग गया।

अगली सुबह जब दुकान दोबारा खुली तो टूटे हुए कांच के कैबिनेट और फर्श पर बिखरे हुए कुछ सामान को देखकर चोरी का पता तुरंत चल गया।

अपराधी को पता था कि परिसर में सुरक्षा कैमरे लगे हुए हैं और वह वीडियोटेप अपने साथ ले जाना भूल गया था, इसलिए उसकी कोई भी रिकॉर्डिंग कभी नहीं मिली।

सुनने में एक जैसा लगा।

आवाजें अलग-अलग लग रही थीं।

स्थानीय पुलिस को अंदरूनी मिलीभगत का संदेह था। यह असंभव माना जा रहा था कि कोई व्यक्ति सड़क से सीधे अंदर आए, दुकान बंद होने के समय अंदर छिपने की जगह जाने, फिर दुकान का अलार्म बंद करे और अकेले ही लूट का सामान लेकर भाग जाए। किसी न किसी की मदद जरूर मिली होगी। या फिर कोई व्यक्ति दुकान पर कई बार आकर जगह की रेकी कर रहा था और योजना बना रहा था। चूंकि रिकॉर्डिंग कैमरे

चौबीसों घंटे में रीसायकल होते थे, इसलिए किसी भी संभावना को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता था। फिर भी, पुलिस ने सभी कर्मचारियों से पूछताछ की और गवाहों के बयानों में जो समानता थी, वह पूरी तरह से पुख्ता नहीं थी।
किसी ने तो उसकी मदद जरूर की होगी; कम से कम रात में भागने में तो जरूर। कोई वाहन था क्या?
सभी इस बात पर सहमत थे कि सगाई की अंगूठी के लिए हीरा खरीदने आया व्यक्ति लंबा था। भारतीय मानकों के अनुसार, लंबे पुरुष की परिभाषा पांच फुट दस इंच से अधिक की लंबाई वाले व्यक्ति की होती है।
अधिकांश लोगों का मानना था कि उस व्यक्ति की उम्र लगभग तीस वर्ष के आसपास थी।
उसके पहनावे को लेकर मतभेद था—उसकी कमीज़ें सफेद से लेकर क्रीम और हल्के गुलाबी रंग की थीं। ज़्यादातर लोग नीली डेनिम जींस पर सहमत थे। लेकिन किसी को भी उसके जूते याद नहीं थे।
लगभग सभी को उसकी बाईं कलाई पर बंधी रोलेक्स घड़ी याद थी। वह व्यक्ति इतना होशियार था कि उसे पता था कि ज्वैलरी की दुकान के सभी सेल्स स्टाफ उस घड़ीसाज़ को पहचान लेंगे। लेकिन पुलिस को भरोसा नहीं था कि कोई यह पता लगा पाएगा कि घड़ी असली है या नकली। शायद लोगों को धोखा देने के लिए नकली बनाई गई थी ताकि वे किसी अमीर आदमी से सौदा कर रहे हों।
दिलचस्प बात यह है कि नोट उनकी तथाकथित मंगेतर चांदनी के नाम पर था, जिनके लिए उन्होंने अंगूठी मंगवाई थी। शुक्र है कि किसी ने भी मिस्टर बोनी कपूर से यह नहीं पूछा कि क्या उन्होंने अपनी खूबसूरत पत्नी श्रीदेवी के लिए खरीदारी की थी। शायद इसलिए कि उनकी उम्र बीस के दशक के अंत में नहीं थी या शायद इसलिए कि बॉलीवुड की यह जोड़ी तब तक शादी के बंधन में बंध चुकी थी।
कई महीनों तक इधर-उधर भटकने और दुकान में काम करने वाले सभी लोगों को निर्दोष साबित करने के बाद, पुलिस को आखिरकार कुछ भी हासिल नहीं हुआ। समान।
इसका मतलब था कि अपराधी या अपराधी अभी भी फरार थे, जिसका मतलब था कि मामला अभी भी खुला था, जिसका मतलब था कि यह वही गिरोह हो सकता था, क्योंकि उन्हें हीरों का शौक था। और स्थानीय हीरा व्यापार में किसी से उनका संबंध

था, जिसके चलते उन्होंने अपना लूटा हुआ माल छिपाया।
समान।
ज्वैलरी स्टोर में हुई घटना सशस्त्र डकैती नहीं थी।
भिन्न।
लेकिन।
शायद ऐसा इसलिए था क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं थी?
सच तो यह है कि हत्या जैसी कोई घिनौनी घटना नहीं हुई, लेकिन यह मानने का कोई कारण नहीं था कि चोर निहत्था था। किसी ने भी उसकी योजना में दखल नहीं दिया, इसलिए उसे किसी हथियार का इस्तेमाल करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। अगर रॉन जोगानी ने गलत समय पर दखल न दिया होता, तो शायद ब्रुसेल्स के होटल में हुई डकैती को भी निहत्थे डकैती माना जा सकता था?
समान।
कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं, कोई जैविक प्रमाण नहीं, कोई पदचिह्न नहीं।
समान।

***

पुलिस के रिकॉर्ड में चोरी की रिपोर्ट तभी चमकती है (चमकना शब्द का प्रयोग थोड़ा व्यंग्यात्मक है, लेकिन) जब या तो चोरी में बड़ी रकम शामिल हो (साइकिल चोरी की गहराई में कोई नहीं जाता) या जब चोर लूट का माल लेकर भागने में सफल हो जाता है (सफल शब्द का प्रयोग विरोधाभासी है)। और पुलिस फाइलों के उन अभिलेखों में रीटा की टीम ने एक और चोरी का पता लगाया।
ताजमहल के लिए मशहूर मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार में गुजराती मूल के एक जौहरी थे: शांतिदास झावेरी। शांतिदास झावेरी विशेष रूप से सम्राट की शाही रानियों के लिए ही हीरे का काम करते थे, लेकिन पीढ़ियों बीतने और समय के साथ अंग्रेज़ीकरण होने के बावजूद, झावेरी ब्रदर्स आज भी देश में हीरे के सबसे बड़े नामों में से एक है। उनका एक सबसे पुराना और प्रतिष्ठित स्टोर नई दिल्ली के कनॉट प्लेस में स्थित था, और उसका भी वही हाल हुआ जो पेडर रोड स्थित आभूषण स्टोर का हुआ था। नई दिल्ली में हुई चोरी मुंबई के जौहरी की चोरी के लगभग दस महीने बाद हुई थी, जिसका मतलब यह था - अनुमान के तौर पर ही, क्योंकि अभी तक किसी को भी सज़ा नहीं मिली है - कि मुंबई की चोरी के बाद किसी ने स्थिति को शांत होने का

इंतज़ार किया और उस समय का पूरा फायदा उठाकर अगली चोरी की योजना बनाई। यह डकैती भी मुंबई वाली डकैती से काफी हद तक मिलती-जुलती थी।
भव्य शोरूम में भूतल पर एक गोलाकार एट्रियम था जिसके चारों ओर कमरे थे, और मेज़ानाइन तल तक जाने के लिए एक लिफ्ट और सीढ़ियाँ थीं। मेज़ानाइन पर एट्रियम के ऊपर एक गोलाकार पैदल मार्ग था, जिसकी ऊँचाई दोहरी थी और उस पर रंगीन कांच का गुंबद था जो देखने में किसी पुराने ज़माने का लगता था, और दिन के समय पहले से ही शानदार शोरूम में रंगीन चमक बिखेरता था। इस गहनों के महल में कदम रखने का सामर्थ्य रखने वाले धनी ग्राहकों का एट्रियम में बने स्वागत कक्ष में स्वागत किया जाता था, और परामर्श के बाद उन्हें आवश्यक कमरों में से एक में ले जाया जाता था। ऊपरी तल पर कुछ कमरे कार्यालय और तिजोरियाँ थे, और अन्य कमरों के नाम - और यहाँ रचनात्मक प्रतिभा की सराहना की जानी चाहिए - स्वर्ण-कक्ष, रजत-कक्ष, माणिक-कक्ष, पन्ना-कक्ष, हीरा-कक्ष, और "तुम्हारे पास बहुत पैसा है बेवकूफ" जैसे रखे गए थे।
एक साल पहले, जब शनिवार की सुबह शोरूम खुला, तो किसी ने वहां चोरी कर ली थी। हीरे के कमरे में सेंधमारी हुई थी और करोड़ों के हीरे चुरा लिए गए थे। अब, अगर यह न मान लिया जाए कि मर्लिन मोनरो की आत्मा वहां से गुज़र रही थी और अपनी सहेलियों को उठा ले गई, तो यह तर्क देना मुश्किल था कि गिरोह ने केवल हीरों को ही निशाना बनाया था।
क्या यह समान लगा?
हीरों को निशाना बनाने के कारणों को समझने के लिए आइंस्टीन होने की ज़रूरत नहीं थी: एक तो, हीरों का आकार और मूल्य का अनुपात सबसे अच्छा होता है; मुट्ठी भर हीरे करोड़ों में तब्दील हो सकते हैं, जबकि सोना या अन्य आभूषण, चाहे कितने भी कीमती क्यों न हों, परिवहन के लिए बहुत भारी होते हैं। इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता था कि इस गिरोह ने, जिसने ये कारनामे किए थे, यह पता लगा लिया था कि हीरों को गुप्त रूप से कहाँ और कैसे ठिकाने लगाना है।
समान।
दरवाजे सुरक्षित थे, खिड़कियां पूरी तरह बंद थीं, दीवारें सही-सलामत थीं। किसी भी तरह की सेंधमारी या जबरन घुसपैठ का कोई निशान नहीं था। चार दिनों तक जांचकर्ताओं को सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यही थी कि आखिर वह व्यक्ति

या वे लोग इस प्रतिष्ठित दुकान में घुसे कैसे। आखिर कोई दुकान के अंदरूनी हिस्से में घुसकर डकैती को अंजाम कैसे दे पाया? जवाब कभी सीधे पश्चिम से पूर्व या इसके विपरीत नहीं जाते, है ना? इस पहेली का हल उत्तर दिशा से मिला। घुसपैठिया ऊपर से आया था। जब उन्होंने बारीकी से जांच की, तो उन्हें पता चला कि रंगीन कांच का गुंबद हटा दिया गया था और घुसपैठिया लटकती रस्सी के सहारे छत से दक्षिण की ओर आया था। छत के कंक्रीट में बने पूरे गुंबद को खोदा गया था, जिससे पता चलता है कि यह काम एक दिन में नहीं हुआ था। इसमें कई दिनों की योजना और मेहनत लगी होगी। पुलिस को पास ही कंक्रीट में लगा एक बड़ा धातु का हुक मिला, जिसका इस्तेमाल रस्सी को सहारा देने के लिए किया जाता था। यह तो ज्यामिति का कमाल था। वहाँ अभी भी एक पुली और तार मौजूद थे—स्वाभाविक रूप से, उन पर से सारे निशान मिटा दिए गए थे—जिससे पुलिस को पता चला कि इस काम के लिए एक मोटर लगाई गई थी और बाद में उसे हटा दिया गया था। बिलकुल झक्कास स्टाइल, कोई शौकिया काम नहीं: एकदम बॉलीवुड स्टाइल। और सभ्य नागरिकों की तरह, बदमाशों ने निकलने के बाद गुंबद को मज़बूत गोंद से वापस लगा दिया ताकि प्रकृति के कठोर तत्वों से उसे हिलने या नुकसान होने से बचाया जा सके। कितनी समझदारी!

सभी सुरक्षा कैमरों से टेप निकाल लिए गए थे।

समान।

अत्याधुनिक चोर अलार्म बंद नहीं किया गया था। फिर भी, महंगे उपकरण ने सुरक्षाकर्मियों को घुसपैठ की सूचना नहीं दी, जबकि ऐसा करने के लिए उसे प्रोग्राम किया गया था। इसका मतलब यह था कि घुसपैठिए को शोरूम के सुरक्षा सिस्टम की अच्छी जानकारी थी और उसने किसी तरह अलार्म से आने वाले सिग्नल को इंटरसेप्ट कर लिया था। सभी सुरक्षा अलार्म एक सामान्य सिद्धांत पर काम करते हैं: सेंसर लगातार हलचल, शरीर की गर्मी या जो भी जानकारी उनमें दर्ज होती है, उसकी स्कैनिंग करते रहते हैं। यदि किसी भी सेंसर को कोई अवांछित हलचल, छवि या तापमान में बदलाव दिखाई देता है, तो सिग्नल परिसर में स्थित मुख्य जंक्शन बॉक्स को भेज दिया जाता है, जो टेलीफोन लाइनों या अंतर्निहित सिम का उपयोग करके सुरक्षा कार्यालय को SOS सिग्नल भेजता है। सैद्धांतिक रूप से, यह सब रियल टाइम में होता है। और सुरक्षाकर्मी कुछ ही मिनटों में घटनास्थल पर पहुंच जाते हैं। लेकिन

कंप्यूटर चलाने वाले हर व्यक्ति को यह सिखाया गया है कि रियल टाइम कभी भी रियल टाइम नहीं होता। हमेशा कुछ समय का अंतराल होता है, भले ही वह नैनोसेकंड का ही क्यों न हो। लेकिन यही नैनोसेकंड सुरक्षा श्रृंखला की सबसे कमजोर कड़ी होते हैं। और घुसपैठिए को यह बात स्पष्ट रूप से पता थी।

कोई भी सुरक्षा पूरी तरह से अचूक नहीं होती। कोई भी तकनीक अचूक नहीं होती। यह एक आम गलतफहमी है कि सभी हाई-टेक गैजेट्स केवल उन्हीं लोगों की देन हैं जो उन्हें खरीद सकते हैं और इस्तेमाल कर सकते हैं, जबकि वास्तव में वे उन लोगों की दया पर निर्भर हैं जो उन्हें हैक कर सकते हैं। कंप्यूटर पासवर्ड हर दिन क्रैक किए जाते हैं। यहां तक कि पेंटागन में भी सेंध लगाई जा चुकी है। इसके विपरीत, और दोनों का अनादर किए बिना, यह सोचना कितना मुश्किल होता कि नई दिल्ली के किसी आभूषण शोरूम या ब्रुसेल्स के किसी होटल की सुरक्षा को भेदना कितना आसान होता? यह किसी सजे-धजे पार्क में पिकनिक मनाने जैसा ही आसान होता। मुंबई की डकैती से भिन्न। ब्रुसेल्स की डकैती से कुछ समानताएं हैं, जहां गिरोह ने कंप्यूटर की अद्भुत कुशलता का प्रदर्शन किया था।

किसी भी व्यक्ति को चोट नहीं आई। घटनास्थल पर कोई सबूत नहीं मिला। किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया। ज़रा ध्यान से सुनिए। चौदह महीने बाद भी पुलिस के पास एक भी संदिग्ध नहीं था: बचाव के लिए दिए गए स्पष्टीकरणों के अलावा फाइलों में और कुछ नहीं मिला। कई अन्य मामलों की तरह, यह मामला भी ठंडे बस्ते में पड़ा रहा और दिन-ब-दिन ठंडा होता जा रहा था।

संक्षेप में कहें तो, अगर कोई इन समानताओं को नज़रअंदाज़ भी करना चाहे, तो भी यह तर्क देना मुश्किल होगा कि उनमें कोई समानता नहीं है। और अगर कोई लोकपाल आपकी लापरवाही या जानबूझकर की गई चूक के लिए कार्रवाई करे, तो आपके लिए पहले के मामलों की जाँच करने से भी ज़्यादा मुश्किल होगा अपनी बात समझाना। खैर, दोनों मामलों में पचास प्रतिशत से ज़्यादा समानता होने के कारण जाँच ज़रूरी थी और रीटा ने दोनों पुराने मामले फिर से खोल दिए। उसके मन में एक बात पक्की थी। भले ही चोर एक ही व्यक्ति न हो, लेकिन इस पूरे काम के पीछे का मास्टरमाइंड एक ही लग रहा था; चोरी के हीरे बेचने वाला व्यक्ति या संगठन भी एक ही हो सकता है। उसने पुलिस के पुराने सिद्धांत का पालन किया: पैसे का पीछा करो।

मुंबई की डकैती में जिस चतुराई से काम किया गया था, उसे देखकर कोई भी

अचंभित हुए बिना नहीं रह सका, क्योंकि दुकान बंद होने के दौरान उसके अंदर छिपकर बिना कोई सुराग छोड़े भाग निकलना, लेकिन नई दिल्ली की डकैती उससे कहीं ज़्यादा शातिर थी। यह बिल्कुल किसी किताब में लिखी कहानी जैसी थी। दांव ऊंचे थे और लूटी गई रकम भी ज़्यादा थी। और फिर ब्रसेल्स वाली घटना। ये सभी घटनाएं एक जैसी थीं, लेकिन फिर भी कुछ चीज़ें बिल्कुल अनोखी थीं। सटीकता। योजना। समय। क्रियान्वयन। तात्कालिक उपाय। भाग निकलना।

तीन लोग भाग निकले।

ऑस्ट्रेलियाई इसे ट्राइफेक्टा कहते हैं: तीन मैचों में तीन जीत।

किसी भी क्रिकेटर के लिए यह हैट्रिक ही होती।

रॉन जोगानी की हत्या को छोड़कर, चौथे के न होने का कोई कारण नहीं था। हो सकता है कि मूल योजना में हत्या का ज़िक्र न किया गया हो। उन्हें यह ज़रूर पता होगा कि हत्या के बाद चारों ओर जांच-पड़ताल शुरू हो जाएगी।

मुंबई-ब्रसेल्स उड़ान के यात्री घटना के तीन महीने बाद फोटो लाइनअप में शिशिर सिंह को पहचान नहीं पाए थे। क्या दो साल बाद नई दिल्ली के एक ज्वैलर के बिक्री कर्मचारियों को उसी प्रक्रिया से गुजारने का कोई मतलब था? रीता ने अनिच्छा से इस प्रक्रिया को मंजूरी दे दी।

हालांकि, शिशिर सिंह को किसी ने नहीं पहचाना।

15
Fifteen

रीटा ने अब तक मिली सारी जानकारी का विश्लेषण किया। कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थान का एक से अधिक बार निरीक्षण नहीं कर सकता था। आप केवल एक बार ही उस स्थान पर जा सकते हैं।

किसी ऐसी जगह पर जाएं जहां किसी की नजर न पड़े—हालांकि दूसरी बार भी जाना एक बड़ा जोखिम है; अगर आप वहां तीसरी या चौथी बार जाते हैं तो कोई न कोई आपको जरूर देख लेगा, कोई न कोई आपको याद रखेगा, खासकर किसी बंद जगह

जैसे दुकान में, चाहे वह कितनी भी बड़ी क्यों न हो।
डकैतियों की बढ़ती घटनाओं के साथ-साथ एक दिलचस्प बात यह भी थी कि गिरोह की दिलेरी भी बढ़ती जा रही थी। वे और भी साहसी होते जा रहे थे। पहली डकैती मुंबई में हुई थी, जो ज़ाहिर तौर पर उनका गढ़ था। इसके अलावा, इसमें तकनीकी कुशलता का भी कोई संकेत नहीं मिला था। पहली सेंधमारी के बाद उनकी तकनीकी कुशलता और दृढ़ता दोनों ही चरम पर पहुंच गई थीं - कंक्रीट से रंगीन कांच के गुंबद को तोड़ने में उन्हें कई दिन लग गए थे। दिल्ली में मिली सफलता ने शायद उन्हें विदेश में, किसी होटल में, इससे भी बड़ी डकैती की योजना बनाने के लिए प्रेरित किया होगा। लूटी गई रकम को देखते हुए, रीता सोच रही थी कि अब सारा पैसा कहां है? अगर पुलिस को खातों तक पहुंच मिल जाए, तो कुछ खास तारीखों पर हुए असामान्य रूप से बड़े लेन-देन का पता लगाना असंभव नहीं होगा, लेकिन पुलिस को खातों तक पहुंच कैसे मिलेगी? लेकिन किसी भी हालत में, पैसा हत्यारे के नाम पर भी नहीं हो सकता। यह किसी फर्जी कंपनी या नकली नाम के खाते में भी हो सकता है।
तीन डकैतियों में सुराग ढूंढना एक डकैती की तुलना में शायद थोड़ा आसान हो। यह सिर्फ संभावना पर निर्भर करता है। लेकिन, अंतर्ज्ञान, चाहे वह कितना भी अचूक क्यों न लगे, सबूत का विकल्प नहीं हो सकता। रीटा को सबूत चाहिए था। उसके मन में कुछ विचार और धारणाएँ पनप रही थीं, लेकिन कुछ भी ठोस नहीं था।
रॉन जोगानी का टिकट बुक करने वाले ट्रैवल एजेंट की तलाश नाकाम रही। वैसे भी किसी को इससे कोई उम्मीद नहीं थी। अगर कोई सशस्त्र डकैती जैसा जघन्य अपराध करना चाहता था, तो इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड छोड़ना तो हद से ज्यादा बेवकूफी होगी। कम से कम वे सारे सबूत मिटा तो सकते थे।

***

नेने ने हनी सिंह और उनके परिवार का पूरा इतिहास संक्षेप में बताया। उनके दादा विभाजन के दौरान विस्थापित हो गए थे; वे पंजाब आए और अमृतसर में साइकिल के पुर्जों का निर्माण शुरू किया। अगली पीढ़ी - हनी सिंह के पिता - ने व्यवसाय को कई गुना बढ़ाया। हनी सिंह का जन्म श्री गुरु तेग बहादुर अस्पताल में हुआ था और उनका जन्म स्थानीय नगर पालिका कार्यालय में पंजीकृत था। नहीं, वे जुड़वा नहीं थे, न तो एक जैसे और न ही अलग-अलग। और हनी सिंह के पिता का कुछ समय बाद ही हृदय गति रुकने से निधन हो गया, इसलिए उनका कोई और भाई-बहन नहीं था।

अगर मान भी लें कि उनकी मां ने किसी के साथ गुप्त रूप से संबंध बनाकर कहीं बच्चे को जन्म दिया था, तो क्या संभावना थी कि वह बच्चा हनी सिंह की तरह हूबहू दिखेगा? सौतेले भाई? जैविक रूप से असंभव। अनसुना।

कहानी यहीं समाप्त होती है।

रीता ने कुछ देर सोचा। क्या ऐसा हो सकता है कि कोई हनी सिंह से काफी मिलता-जुलता हो? नहीं! इतने सारे संयोगों ने इस सिद्धांत को कमजोर, बल्कि बेकार साबित कर दिया था। पहला और सबसे असाधारण संयोग यह था कि दो लोग हूबहू एक जैसे दिखते थे। दूसरा संयोग यह था कि वे एक ही शहर में थे। मुंबई 180 लाख लोगों का एक विशाल महानगर था, इसलिए अगर दो हूबहू दिखने वाले लोग एक ही शहर में भी होते, तो भी एक का दूसरे को ढूंढ लेना संयोग से कहीं ज्यादा चमत्कार था। चौथा संयोग: वह बदमाश - शिशिर सिंह या जो भी हो - उस सीधे-सादे आदमी को देख लेता है और उस सीधे-सादे आदमी को इसका जरा भी अंदाजा नहीं होता। यह ऐसा था जैसे ताश के पत्तों में से लगातार चार इक्के निकाल लिए जाएं। पहले इक्के की संभावना बावन में से एक होती है: बहुत अधिक संभावना। लेकिन, तीन और पत्ते निकालने और उन सभी पर एक ही बिंदी होने की संभावना 65 लाख में से चौबीस होती है। समय सीमा को ध्यान में रखते हुए यह असंभव है। जोगानी की हत्या के कुछ दिनों बाद ही हनी सिंह पर निगरानी शुरू कर दी गई थी। तो क्या हत्या से पहले उस शातिर जुड़वां भाई को हनी सिंह के बारे में कुछ पता नहीं था और उसने हत्या के दो दिन बाद ही उसे ढूंढ निकाला? यह असंभव है। संभवतः उन्हें हनी सिंह के बारे में पहले से ही जानकारी थी।

फिर कृत्रिम अंगों का विकल्प भी था, जिसे नकारा नहीं जा सकता था। बस दो ऐसे आदमियों की ज़रूरत थी जिनकी लंबाई और शारीरिक बनावट एक जैसी हो—सिर्फ़ थोड़ी-सी समानता, एक बॉडी डबल। और कोई भी कुशल प्लास्टिक सर्जन कुछ पुनर्निर्माण सर्जरी करके एक को दूसरे जैसा बना सकता था। रीता के अनुसार, असली चुनौती यह थी कि क्या इसे पलटा जा सकता है? क्या वह आदमी जीवन भर किसी और की तरह दिखने को तैयार होगा? या क्या इसे पलटा जा सकता है—मतलब, यह सब खत्म होने के बाद वह आदमी चेहरे का एक और पुनर्निर्माण करवाकर हनी सिंह जैसा न दिखे? यह निराशाजनक लग सकता है, लेकिन रीता के अनुभव में, लोग पैसे के लिए हदें पार कर जाते थे। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ बेटों ने पैसे,

सिंहासन और क्षेत्रों के लिए अपने पिता की हत्या कर दी।
लेकिन उस विश्लेषण से उसे जीवन की एक और सच्चाई के अलावा और क्या पता चला? पुलिस मुंबई या भारत के हर प्लास्टिक सर्जन की छानबीन करके यह पता नहीं लगा सकती थी कि कोई हनी सिंह जैसा दिखता है या नहीं। और अगर वे हर किसी से यह सवाल पूछते भी तो क्या होता? इस बात का कोई सबूत नहीं था कि सर्जरी देश के अंदर ही हुई थी।
विक्रम ने हनी सिंह की यात्राओं से संबंधित सभी विवरण एकत्र कर संक्षेप में प्रस्तुत कर दिए थे।
परिणाम: कुछ नहीं!
उसके पास वैध पासपोर्ट भी नहीं था; परिणामस्वरूप उसने कभी भारत से बाहर यात्रा नहीं की थी।
उनके सूचीबद्ध किसी भी टेलीफोन नंबर - मोबाइल या लैंडलाइन - से कोई भी अंतरराष्ट्रीय कॉल नहीं की गई।
जिस दिन रॉन जोगानी के घर में चोरी हुई और उसकी हत्या हुई, उस दिन हनी सिंह के मुंबई से बाहर होने का कोई रिकॉर्ड नहीं था। उसके मोबाइल फोन रिकॉर्ड से पता चला कि उसने अपने दो कर्मचारियों को फोन किया था और उनमें से दो से तीन कॉल रिसीव किए थे। उसके लिए सब कुछ सामान्य था।
किट्टी वर्गीस की कहानी कुछ और ही थी। फाइल में उसके बारे में कुछ भी नहीं था, जिससे रीता हैरान रह गई। किट्टी एक मॉडल थी, एक जानी-मानी हस्ती थी। ऐसे में उसके बारे में जानकारी जुटाना उसके प्रेमी के बारे में जानकारी जुटाने से कहीं ज्यादा आसान होना चाहिए था। विक्रम ने फाइल में कुछ भी क्यों नहीं डाला?

***

ऑपरेशन रूम में मेज पर चार लोगों का समूह बैठा था।
रॉन जोगानी की हत्या की फाइल - जो पहले से ही दो इंच से अधिक मोटी थी - जांचकर्ताओं की रिपोर्ट, चार्ट, गवाहों के बयान, नक्शा, तस्वीरें, एकत्रित या प्राप्त साक्ष्य, जैसा कि इस मामले में था, सब कुछ अब उनके सामने था। लेकिन कुछ भी नहीं बदला।
'विक्रम, हनी सिंह पर तो आपने शानदार काम किया है, लेकिन आपकी रिपोर्ट में किट्टी वर्गीज के बारे में कुछ भी नहीं मिला? वह एक जानी-मानी हस्ती हैं, मुझे लगा

था कि उनके बारे में डेटा आसानी से मिल जाएगा...' रीता ने सवाल किया।
'आप सही कह रही हैं, महोदया। इसे प्राप्त करना बहुत आसान था और यह इतना दिलचस्प था कि इसे एक रिपोर्ट में समेटना संभव नहीं था, इसलिए मैंने सोचा कि मैं इसे आप सभी के सामने प्रस्तुत करूँ ताकि हम सब मिलकर इसका मूल्यांकन कर सकें।'
रीता को आभास हो गया था कि विक्रम के पास कोई तुरुप का पत्ता है। उसे ज़रूर कुछ ऐसा पता चला था जिससे उन्हें कुछ सफलता मिल सकती थी। उसने बाकी दोनों की ओर देखा। जतिन और नेने के चेहरे पर भी वैसी ही उत्सुकता के भाव थे: भौंहें उठी हुई थीं, पुतलियाँ फैली हुई थीं, और शरीर अनायास ही चौकन्ना हो गया था।
'तो फिर, हमें दे दो।'
'बेल्जियम की यात्रा के दौरान, मिस किट्टी वर्गीस जर्मनी में थीं, सटीक कहें तो कोलोन में। वह एक फैशन शो समूह का हिस्सा थीं जो वहां गया था। पूरी टीम हिल्टन कोलोन होटल में ठहरी थी, जो प्रसिद्ध डोम कैथेड्रल के पास था। वह 29 मार्च को समूह के साथ भारत से रवाना हुईं और 7 अप्रैल को उनके साथ वापस लौटीं। मैंने यह पता लगाने के लिए और छानबीन नहीं की कि क्या वह किसी रात या रातों में लापता हो गईं, क्योंकि पूछताछ करने से निश्चित रूप से उनका पता चल जाएगा। मैंने आगे बढ़ने से पहले आपस में चर्चा करना बेहतर समझा।' विक्रम रुका।
'आगे बोलो... मुझे लगता है कि तुम्हें हमें और भी कुछ बताना है।' रीता समझ गई कि विक्रम के पास अभी और भी जानकारी है।
'पेडर रोड पर हुई चोरी के समय मिस किट्टी वर्गीज मुंबई में थीं, लेकिन यह बात ज्यादा मायने नहीं रखती क्योंकि वह मुंबई की निवासी हैं, लेकिन—'
'लेकिन जब ज़वेरी में डकैती हुई, तब वह नई दिल्ली में थी,' रीटा ने उसकी बात पूरी की।
'आप कैसे जानते हो?'
'मुझे यह पता नहीं था, मैंने बस इसका अनुमान लगाया था। क्या मैं सही हूँ?'
'हां। चोरी की घटना से चार दिन पहले वह दिल्ली में एक फैशन शो के लिए गई थी और उसके दो दिन बाद वापस लौटी थी।'
'क्या यह महज़ एक संयोग नहीं हो सकता?' जतिन ने कहा।
'यह सुनियोजित भी हो सकता है।' विक्रम ने अपने हाथ में पकड़े फोल्डर को खोला

और किट्टी वर्गीज की तस्वीरें सबको दिखाईं।
किट्टी वर्गीस एक मॉडल थीं और दिखने में भी बिल्कुल मॉडल जैसी ही थीं। तीखे नैन-नक्श, उभरी हुई गाल की हड्डियां, हल्के ऊंट के रंग की आंखें, घने लहराते कंधे तक लंबे बाल जिनमें गहरे लाल रंग की हाइलाइट्स थीं और लेयर्स में कटे हुए थे। उनका शरीर चुस्त-दुरुस्त और शानदार शेप में था, और आईपीएल मैचों की कुछ चीयरलीडर्स को भी टक्कर दे सकता था; उनका चेहरा भी बॉलीवुड की कुछ हॉट अभिनेत्रियों को शर्मिंदा कर सकता था। यकीनन सबकी निगाहें उन पर टिक जाती थीं। वह रीता से निश्चित रूप से छोटी और लंबी थीं। स्नीकर्स में शायद पांच फुट नौ इंच। किट्टी और हनी एक खूबसूरत जोड़ी लगती थीं। रीता सोचती, काश वे अपने नामों को लेकर कुछ कर पातीं। किट्टी-हनी।
क्या वह ब्रुसेल्स के होटल में दूसरी व्यक्ति हो सकती है? रीटा ने मन ही मन यह बात नोट कर ली। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों नहीं हो सकता। इसी तरह, उसे यह भी समझ नहीं आ रहा था कि जर्मनी में दूसरों के साथ टूर पर रहते हुए वह बिना किसी को पता चले बेल्जियम कैसे भाग सकती थी।
'विक्रम, बेल्जियम में विक्टर से इस बारे में बात करो। उन्हें हमें यह बताना होगा कि क्या कोलोन से ब्रुसेल्स तक और वापस एक रात में जाने का कोई तरीका है?'
'हां मैम।'
'और क्या?'
'किटी और हनी की मुलाकात चार साल पहले एक पार्टी में हुई थी, जिसकी मेजबानी हनी सिंह के इंजीनियरिंग कॉलेज के दोस्त वीर सिंह ने की थी। वह एक तरह के आईटी विशेषज्ञ थे जो एक साल बाद संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए। और फिर वह गायब हो गए।'
'गायब हुआ?'
'सभी दोस्तों की नजरों से ओझल। उसका कोई ज्ञात पता नहीं है; उसके तथाकथित दोस्तों में से किसी को भी नहीं पता कि वह अब कहां है। ऐसा लगता है जैसे वीर सिंह अमेरिका जाने के बाद धरती से गायब हो गया हो। दोस्तों के बीच तरह-तरह की कहानियां चल रही हैं—जिनमें से ज्यादातर मनगढ़ंत हैं—कुछ का मानना है कि उसने नशा करना शुरू कर दिया और अब वह नहीं रहा, कुछ को यकीन है कि उसने सिलिकॉन वैली में खूब नाम कमा लिया है और अब पुराने दोस्तों से संपर्क में रहने में

उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि उन्हें डर है कि वे भी उसे अमेरिका बुला लेंगे, वहीं कुछ अन्य लोगों का मानना है कि उसने किसी गोरी महिला से शादी कर ली है और अब वह आरामपसंद जीवन जी रहा है।'

रीटा को लगा कि ऐसी कहानियों का शायद ही कोई वास्तविक आधार होता है। दरअसल, जानकारी की कमी ही दोस्तों को कुछ तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है। सच्चाई यह थी कि शायद उन्हें कभी भी सच पता न चले।

मुझे एक सूत्र से जो कहानी मिली है, उसके अनुसार वीर के गायब होने से तीन-चार महीने पहले, उसका और श्री हनी सिंह का किसी बात पर झगड़ा हुआ था। किस बात पर? यह कोई नहीं जानता। लेकिन यह निस्संदेह कोई महत्वपूर्ण बात थी। चूंकि ये दोनों ही मुख्य व्यक्ति थे, इसलिए गलतफहमी या झगड़े के बाद पूरा समूह बिखर गया - किसी ने भी वास्तव में यह नहीं देखा कि क्या हुआ था, बस इतना पता है कि दोस्ती कड़वाहट के साथ खत्म हुई और दोनों ने एक-दूसरे से सारे संबंध तोड़ लिए। पार्टियां बंद हो गईं, समूह बिखर गया क्योंकि शायद कोई भी किसी का पक्ष नहीं लेना चाहता था। और बाद में, जब तक वीर विदेश चला गया, तब तक शायद सभी लोग आगे बढ़ चुके थे, इसलिए फिर कभी सब कुछ पहले जैसा नहीं रहा। वे अब भी कभी-कभार मिलते हैं, लेकिन अब उतने करीबी नहीं रहे।

विक्रम ने अपने एक दोस्त से जुगाड़ करके हासिल की हुई मूल समूह की एक पुरानी तस्वीर रीता को दी, जिसने उसे गौर से देखा। तस्वीर में नौ लोग थे: पांच पुरुष और चार महिलाएं, जिनमें हनी सिंह, किट्टी वर्गीस और वीर सिंह शामिल थे। उसने गौर किया कि वीर सिंह हनी सिंह से मामूली ही छोटे थे, जिसे ऊँची एड़ी वाले अच्छे जूतों से आसानी से छिपाया जा सकता था। और चूंकि तस्वीर पूरी लंबाई की नहीं थी, तो भला कौन कह सकता था कि हनी सिंह ने तस्वीर में ऊँची एड़ी के जूते नहीं पहने थे और वीर सिंह ने फ्लैट जूते नहीं पहने थे?

'क्या श्री वीर सिंह के बारे में कोई और जानकारी है?'

'वीर सिंह भी एक मोना-सिख था: एक और लंबा-चौड़ा सिख, लेकिन इसके अलावा और कुछ नहीं। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने से पहले ही उसके माता-पिता का कुछ ही समय में देहांत हो गया। कोई भाई-बहन नहीं। कभी शादी नहीं की। कोई पूर्व प्रेमिका नहीं। वह दादर स्टेशन के पास एक बरसाती में रहता था, लेकिन जाहिर है कि वह तीन साल पहले खाली हो गई थी, इसलिए जैसा कि मैंने कहा, मुझे उसके बारे में कुछ

भी पता नहीं चला।'
तो क्या हनी और वीर के बीच वाकई में मनमुटाव था?
'मेरी जांच के अनुसार, हां।'
रीता का दिमाग चकरा गया। क्या दोस्तों के बीच किसी झगड़े की वजह से दुश्मनी या बदले की भावना पनपी? या फिर सिर्फ पैसे और ऐशो-आराम की लालसा, जिसे पुरानी दोस्ती या बिछड़ने के बाद दोस्तों की कोई परवाह नहीं थी? आखिर, विश्वासघात कोई नया शब्द नहीं था जो अंग्रेजी शब्दकोश में जुड़ा हो: यह तो 13वीं सदी से ही मौजूद था। विश्वासघात तो सृष्टि के आगमन के समय से ही मानव इतिहास का हिस्सा रहा है, है ना?
पहले से ही अनसुलझे समीकरण में एक और चर जुड़ गया था। ऐसा लग रहा था मानो सिंहों की एक लंबी सूची हो।
Sishir Singh.
हनी सिंह।
वीर सिंह।
'आप क्या सोचते हैं?' रीता ने पूछा, उसकी निगाहें जतिन से नेने और फिर वापस जतिन पर घूम रही थीं।
'क्या ऐसा हो सकता है कि वीर सिंह ही हनी सिंह का पीछा करवा रहा हो?' जतिन ने सबसे पहले बात की।
'यह बात मेरी समझ से परे है। वीर सिंह को हनी सिंह के बारे में हमारे प्यारे श्री हैंडलबार राजा से कहीं ज्यादा जानकारी होनी चाहिए, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?' और, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, अगर वह डकैती और हत्या में शामिल था तो उसे हनी सिंह का पीछा करने की क्या जरूरत है?
'हां, लेकिन...' रीटा ने अपने विचारों को समेटते हुए कहा। '...अगर वह - या जो भी - एक और डकैती की योजना बना रहा है, तो उस व्यक्ति पर नज़र रखना समझदारी होगी जिस पर वे इसका आरोप लगाने की योजना बना रहे हैं, है ना?'
'क्या आपको लगता है कि वे एक और योजना बना रहे होंगे?' नेने ने पूछा।
'हो सकता है, यह उनके अंतिम लक्ष्य पर निर्भर करता है। पैटर्न से पता चलता है कि पिछले तीन सालों से हर साल एक डकैती हुई है, जिसका मतलब है कि वे काफी तैयारी करते हैं। बेशक, ब्रसेल्स में चीजें योजना के मुताबिक नहीं हुईं या शायद यह

पहले से ही तय था कि अगर कोई उनकी योजना में बाधा डालता है तो योजना को जारी रखने के लिए किसी को खत्म करना होगा। सच है, हत्या करना और लूटना बहुत अलग चीजें हैं, लेकिन ये लोग मुझे आम लोग नहीं लगते जो दोबारा लूट करने से पहले पश्चाताप करने चर्च जाएंगे। हालांकि, मेरा अनुमान है कि उन्हें हत्या करने की स्थिति से बचने के लिए बेहतर योजना बनाने के लिए समय चाहिए होगा। लेकिन, कभी भी कुछ भी हो सकता है।'

'आपने बिल्कुल सही बात कही, महोदया।' विक्रम।

'हमें वीर सिंह को ढूंढना होगा। इंटरपोल से बात करते हैं, देखते हैं क्या वे अमेरिका में एयरलाइन या इमिग्रेशन रिकॉर्ड ढूंढ सकते हैं। उनके पास ज़रूर होंगे। 9/11 के बाद से अमेरिका सुरक्षा और रिकॉर्ड को लेकर पहले से कहीं ज़्यादा सतर्क हो गया है। सवाल यह है कि अगर अमेरिका जानकारी साझा करेगा भी तो कितना? मैं बेल्जियम में विक्टर से बात करूंगी और यह भी पता करूंगी कि क्या हमारे कमिश्नर के कोई निजी संपर्क हैं।' जैसे ही रीटा के मुंह से 'निजी संपर्क' शब्द निकला, उसे एहसास हुआ, शायद ऐश मैटल के स्कॉटलैंड यार्ड में काम करने के दौरान कुछ संपर्क हों, जो बदले में अमेरिका की संघीय सरकार में किसी को जानते हों? यह एक मुश्किल कोशिश थी, लेकिन फिर भी कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं था। 'किसी के पास और कोई जानकारी है?'

'श्री राजा - श्री हैंडलबार राजा - ने फोन करके पूछा कि क्या हम अपने लोगों से कह सकते हैं कि वे हनी सिंह का पीछा न करें...' जतिन ने निजी जासूस का अनुरोध बताया। 'उन्होंने वादा किया कि हनी सिंह के जीवन में कोई भी असामान्य घटना या कोई भी बदलाव होने पर, वे तुरंत हमें इसकी सूचना देंगे।'

'क्या आपको उस पर भरोसा है?'

'क्या वह कोई मूर्खतापूर्ण काम नहीं करेगा?'

उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। उनके चेहरों पर एक बेहद जरूरी मुस्कान आई; वे पिछले कुछ घंटों से इस मामले में मग्न थे।

'नहीं। वह कोई भी जानकारी नहीं छिपाएगा।'

'मुझे नहीं लगता कि वह ऐसा करेगा। हम हमेशा रैंडम चेक कर सकते हैं।'

'तो अब से हम हनी सिंह का पीछा नहीं करेंगे, लेकिन उसके मुवक्किल के पास जाने वाली हर चीज़ को हम मंज़ूरी देंगे। यही समझौता है - उसे मानना या न मानना उसकी

मर्ज़ी है।' अगर कोई पहले से ही सारा काम कर रहा हो तो हनी सिंह का पीछा करने में समय, पैसा और संसाधन खर्च करने का कोई मतलब नहीं था। 'लेकिन नेने,' रीता ने उसकी ओर मुड़कर कहा, 'अपने लोगों से कहो कि वे समय-समय पर मिस्टर राजा पर नज़र रखें।'

अब तक मिली जानकारी पर एक घंटे और चर्चा करने के बाद उन्होंने अलग होने से पहले अगले चरण पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया।

***

मीटिंग के बाद रीटा अपने ऑफिस में वापस आ गई थी।

कहते हैं, जब सब कुछ विफल हो जाए, तो मूल बातों पर लौट जाओ और शुरुआत से शुरू करो। मानव मन के लिए कुछ भी अकल्पनीय नहीं है। अगर आपने अभी तक इसे नहीं पकड़ा है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि यह था ही नहीं। बल्कि, संभवतः आपने किसी सुराग, किसी विसंगति को नज़रअंदाज़ कर दिया है। अधिकतर मामले विसंगतियों से ही सुलझते हैं। किसी ने, कहीं न कहीं कोई विसंगति देखी होगी, लेकिन शायद उस समय उस पर ध्यान नहीं दिया गया होगा। कोई भी विसंगति अपने आप में विसंगति नहीं होती: यह समूह की प्रतिभा, उनकी योजना और बारीकी को दर्शाती है। उसने एक कप ताज़ा कॉफ़ी बनाई और अब तक मिली सारी जानकारी का विश्लेषण करने के लिए बैठ गई।

उसे वजह पता थी: हीरे, पैसा। शायद यह एक तरह का सट्टा था, लेकिन फिर भी यह एक समझदारी भरा सट्टा था। तर्कसंगत।

उसे समय का पता था: सटीक तारीखें, अनुमानित समय। सटीक समय का महत्व हो भी सकता था और नहीं भी। इसलिए, कम से कम अभी तो अटकलें लगाने की आवश्यकता नहीं थी।

उसे तीनों स्थान ठीक-ठीक पता थे: मुंबई, नई दिल्ली, ब्रुसेल्स, इसी क्रम में।

उसे पता था कि मामला क्या था: चोरी, और जाहिर तौर पर, रॉन जोगानी की हत्या। उसने फाइलों और अपनी परिकल्पना के आधार पर, तीनों डकैतियों के लिए एक मोटा-मोटा खाका तैयार कर लिया था।

उसे यह पता लगाना था कि यह किसने किया।

या फिर अगर इनमें से कुछ लोगों के नाम भी जुड़ जाएं तो पूरी कड़ी जुड़नी शुरू हो जाएगी। जैसे हीरे किसने खरीदे, बेल्जियम कौन गया...

फिर बात बुद्धिमत्ता और बाकी चीजों की खुदाई की आ गई।
पन्ने अभी पूरी तरह से एक साथ नहीं जुड़ पाए थे, लेकिन रीटा को यह एहसास हो रहा था कि कवर पर बनी तस्वीर कुछ हद तक समझ में आने लगी है।
वीर सिंह ने किट्टी वर्गीज का परिचय हनी सिंह से कराया।
वीर सिंह और हनी सिंह के बीच कुछ मतभेद हुए और वे अलग हो गए।
अन्य दोस्तों ने किसी का पक्ष नहीं लिया, लेकिन किट्टी वर्गीज हनी सिंह के साथ खड़ी रहीं।
मुंबई की निवासी होने के कारण किट्टी वर्गीज के मुंबई में होने की संभावना को खारिज करते हुए, यह स्पष्ट है कि नई दिल्ली में हुई डकैती के समय वह आसपास ही मौजूद थीं। ब्रुसेल्स की यात्रा अभी भी एक प्रश्नचिह्न बनी हुई है।
उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए। उसे यहाँ क्या कमी लग रही थी?
क्या वीर सिंह के मन में किटी के लिए एक खास जगह थी? फिर हनी सिंह आया और दोनों के बीच अच्छी दोस्ती हो गई? वीर सिंह पीछे हट गया, लेकिन शायद किटी को भूल नहीं पाया? शायद समय के साथ जब उसने उन दोनों प्रेमियों को साथ देखा तो उसकी कड़वाहट और बढ़ गई? शायद वीर सिंह कभी भारत से बाहर गया ही नहीं, कभी अमेरिका नहीं गया? बस खुद को अलग-थलग कर लिया, चुपचाप बैठा रहा और अपनी योजनाओं पर काम करता रहा?
उसे थोड़ा फिल्मी लगा, पर यह बात उसने मानी, लेकिन यह निश्चित रूप से संभव था, हालांकि जो कुछ भी संभव था, वह होने की संभावना नहीं थी।
उसके मन में भी ऐसा ही एक विचार आया और उसने जतिन को फोन किया।
'आपको क्या लगता है कि किसी ने हनी सिंह का पीछा तीसरी डकैती के बाद ही क्यों किया, पहली दो डकैतियों के बाद क्यों नहीं?'
जतिन कुछ देर चुप रहा। 'शायद इसलिए कि किसी का कत्ल हो गया है?'
'या शायद पिछली दो डकैतियों के बाद किसी ने उसका पीछा किया हो और हमें इसके बारे में पता न हो?'
'यह भी एक संभावना है, महोदया। लेकिन मुझे यकीन है कि अगर श्री राजा ने अतीत में कभी किसी का पीछा किया होता तो उन्होंने हमें जरूर सूचित किया होता।'
मुंबई में हमारे पास कितने लाइसेंस प्राप्त निजी जासूस हैं?
मैं जाँच कर सकता हूँ।

'और श्री राजा से भी पूछिए। हो सकता है कि उन्होंने खुलकर जवाब न दिया हो, क्योंकि हमने उनसे कभी पूछा ही नहीं। बेहतर होगा कि पहले पता कर लें कि क्या उन्होंने पहले कभी हनी सिंह का पीछा किया था या किसी अन्य मामले में इसी तरह के गुप्त ग्राहक से निपटा था?'
'ठीक है महोदया।'
रीटा ने फोन नीचे रख दिया।
फिर उसके मस्तिष्क की तंत्रिकाओं में एक और हलचल हुई।
हो सकता है कि हत्यारे को पता हो कि वह कैमरे में कैद हो गया है। और इसी से घटनाक्रम शुरू हुआ। बेल्जियम में किसी के लिए लिफ्ट में लगे गुप्त कैमरे से ली गई उस गुप्त तस्वीर को जारी करने के बाद हत्या और उसकी जांच पर नजर रखना असंभव नहीं था।
उसने फैसला किया कि हनी सिंह से संपर्क करने से पहले उन्हें कुछ और दिन सोचने और अधिक जानकारी जुटाने के लिए इंतजार करना होगा।
लेकिन अगली सुबह मीडिया ने उसकी योजना पर पानी फेर दिया।

16 Sixteen

मीडिया मुद्दों को जन्म दे सकता है, व्यक्तित्वों को गढ़ सकता है, सफलता का निर्माण कर सकता है और असफलताओं को परिभाषित कर सकता है। जब रीटा सुबह उठी तो...

आज की सबसे चर्चित खबर थी: इंटरपोल मुंबई में एक हत्यारे की तलाश कर रही है। यह खबर सिर्फ एक अखबार में नहीं थी; बल्कि सभी अखबारों में थी। आखिर क्यों सभी अखबारों ने इसे दिन की सबसे बड़ी खबर मान लिया था, यह बात उसकी समझ से परे थी। लेकिन फिर जब उसने नहाया और नाश्ता किया, तो उसे इसका कारण समझ में आ गया। चुनाव खत्म हो चुके थे, मानसून समय पर आया था, ईंधन की कीमतें नियंत्रण में थीं, किसी वीआईपी की मौत या भाग जाने की घटना नहीं हुई थी,

फिल्मों की रिलीज का दौर शांत था, कोई फिल्म स्टार किसी नाजायज रिश्ते में नहीं था, आईपीएल सीजन खत्म हो चुका था, भारतीय क्रिकेट टीम पाकिस्तान या किसी अन्य वनडे मैच के खिलाफ नहीं खेल रही थी, आसपास कोई सार्वजनिक अशांति नहीं थी, भारत युद्ध में नहीं था, और मध्य पूर्व में भी कोई अशांति नहीं थी। लेकिन मीडिया चैनलों को खबर चाहिए थी, उन्हें एक कहानी चाहिए थी, उन्हें अपने कर्मचारियों को वेतन देने और अपने अस्तित्व को सही ठहराने के लिए राजस्व चाहिए था। और उसे यह सब उन्हें देना ही था। मुंबई और पूरे देश को घेरने वाली अनगिनत समस्याओं के बीच, उन्होंने इस भूले-बिसरे हत्याकांड को ऐसे उछाला जैसे बेल्जियम में तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया हो और भारत की ओर बढ़ रहा हो। खबरों की कमी का दौर था। यह सामान्य ज्ञान के सवालों का समय था। समाचार चैनलों ने इसे ऐसे दिखाया जैसे पोप को मरीन ड्राइव पर किसी कुत्ते को लात मारते हुए पकड़ा गया हो।

अंततः मामला हाथ से निकल ही गया।

खबर फैलाने वाले का पता लगाने की रीता की कोशिशें नाकाम रहीं। कोई भी यह पता नहीं लगा पाया कि सबसे पहले मीडिया को खबर किसने लीक की थी; न ही यह पता चल पाया कि सबसे पहले यह खबर किस पत्रकार के हाथ लगी थी। फिर भी, किसी बात का पता न चलना यह नहीं था कि वह मौजूद ही नहीं थी। किसी ने तो पूरे मामले की तह तक जाकर उसे सबके सामने उजागर कर दिया था। शुक्र है कि विवरण संक्षिप्त थे और किसी का नाम नहीं लिया गया था। तथाकथित विशेषज्ञों ने बेतुकी बातें कीं, जिससे यह साबित हो गया कि उन्हें इस मामले की कोई जानकारी नहीं थी। उनका पूरा विश्लेषण गूगल से लिया गया था: 'अगर ऐसा है तो वैसा होगा' टाइप का घिसा-पिटा विश्लेषण।

हालांकि, मुंबई पुलिस के शामिल होने की खबर अपराधियों तक जरूर पहुंची होगी। उन्हें इस बात का कोई संदेह नहीं था।

अब तक रीता के पास दो ही विकल्प थे: या तो हनी सिंह से बात करे या उसे यह सोचने दे कि कोई उस पर नज़र नहीं रख रहा है। मीडिया ने उससे यह विकल्प चुनने की आज़ादी छीन ली थी।

ऑफिस जाने के बजाय - पिछली शाम जब वह काम से निकली थी तब से कोई नई जानकारी या आशाजनक सुराग नहीं मिले थे, वरना कोई न कोई उसे जरूर फोन करता - उसने विक्रम को अंधेरी ईस्ट चलने के लिए बुलाया।

'लेकिन मैडम, काफी देर हो चुकी है। हनी सिंह अब तक काम पर जा चुके होंगे,' विक्रम ने कहा।
'मुझे पता है,' रीता ने जवाब दिया। 'मैं अभी उससे मिलने नहीं जा रही। मैं पहले उसका घर देखना चाहती हूँ। आपने कहा था कि वह अपनी माँ के साथ रहता है। चलिए, उनसे मिलते हैं। हमें शिशिर सिंह की तस्वीर उन्हें दिखानी चाहिए। देखते हैं उनका क्या कहना है। मुझे लगता है कि अगर कुछ गड़बड़ है, तो उन्हें सिखाने या उन पर दबाव डालने से पहले उनसे मिलना ही बेहतर है। लेकिन, हम ऐसा दिखावा करेंगे कि हमें पता ही नहीं था कि हनी सिंह इस समय घर पर नहीं होगा। आपके आने तक मैं कोई बहाना सोच लूँगी।'
मां सबसे बेहतर जानती है; जॉनसन एंड जॉनसन बहुत पीछे दूसरे स्थान पर रहा, रीटा को पुराने जे एंड जे विज्ञापन की वह पंक्ति याद आ गई।
'ठीक है महोदया। मैं आपसे तीस मिनट में मिलूंगा।'

***

विक्रम रीता के घर तीस मिनट के बजाय चालीस मिनट में पहुँच गया, जैसा कि उसने वादा किया था। मुंबई का ट्रैफिक बहुत खराब था। दोनों महाकाली केव्स रोड की ओर चल पड़े। ट्रैफिक ज्यादा नहीं था और विक्रम ने कुशलता से पीछे के रास्तों से गाड़ी निकाली। उसने लिंकिंग रोड ली, खार पाली रोड पर दाएँ मुड़ा, बाएँ मुड़ा और दाईं ओर खार स्टेशन को पार किया, सबवे पार किया, बाएँ मुड़ा और फिर जेएलएन रोड पर दाएँ मुड़ा, और फिर एनएच8 पर बाएँ मुड़ गया।
'मजेदार है ना?' रीटा ने हाईवे पर पहुंचते ही टिप्पणी की।
'क्या?'
'इस रास्ते से तो कोई सच्चा मुंबईवासी ही जा सकता है। मैं तो मौका मिलते ही हाईवे पर चला जाता। मुंबई और यहाँ के लोगों की यही खासियत है, है ना?'
'आप सही कह रहे हैं। मैं ट्रैफिक से बचने के लिए हर संभव प्रयास करता हूं और गाड़ी को इस तरह से घुमाता हूं जिससे हर सेकंड की बचत हो सके।'
अगले पंद्रह मिनट तक वे चुपचाप गाड़ी चलाते रहे। ट्रैफिक को देखकर रीता को उस पागल मोटरसाइकिल सवार की याद आ गई जिसे उसने और जतिन ने देखा था। जतिन को स्थानीय पुलिस स्टेशन में जाकर उस मसखरे को हल्की सी सजा दिलवानी थी। क्या उसने ऐसा किया था? लेकिन हत्या की जांच के चलते यह बात उसकी

प्राथमिकता सूची से हट गई होगी, और भला इसमें उसे दोष क्यों दिया जाए।
महाकाली गुफाओं वाली सड़क की ओर मुड़ते ही रीता अपनी स्नातक की पढ़ाई के दौरान चुने गए विषयों में से एक, समृद्ध भारतीय इतिहास में मग्न हो गई। नाम से भले ही यह काल और मृत्यु की शक्तिशाली हिंदू देवी जैसा लगता हो, लेकिन महाकाली गुफाएँ वास्तव में बौद्ध गुफाओं के ऐतिहासिक अवशेष थीं, जो कभी उनके मठ हुआ करती थीं। ये उन्नीस काली गुफाएँ ईसा पूर्व पहली शताब्दी और ईस्वी सन् 600 के बीच ठंडे ज्वालामुखी लावा से तराशी गई थीं। अंधेरी कुर्ला रोड को पहाड़ी पर स्थित इन गुफाओं से जोड़ने वाली सड़क को महाकाली गुफाओं वाली सड़क कहा जाता था।
वह हमेशा खुद को भाग्यशाली मानती थी कि अपने काम के दौरान उसे ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण देखने या कम से कम उनके करीब जाने का मौका मिलता था, जिनके बारे में ज्यादातर लोग सिर्फ किताबों में पढ़ते हैं। उसने मन में ठान लिया कि किसी सप्ताहांत में खाली समय मिलने पर वह इन गुफाओं का दौरा करेगी। वह यह भी जानती थी कि अपने काम के बोझ और पेशे की व्यस्तता को देखते हुए, ऐसी सौ से अधिक योजनाएँ और स्थल पहले से ही उसकी सूची में थे। लेकिन यह सिर्फ एक ख्वाब था।
गाड़ी तकशिला परिसर में दाखिल हुई और मानो किसी हथौड़े की तरह यादें उसके दिमाग में कौंध गईं: वह पहले भी एक मामले की जांच के लिए यहाँ आ चुकी थी। यहाँ पहले भी एक हत्या हुई थी। उस समय उसने जो मौत की दुर्गंध महसूस की थी, वह फिर से उसके सामने आ गई; उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के सड़े-गले अवशेष मिले थे जो शव मिलने से पहले कई महीनों तक सड़ता रहा था। मौत की वह घिनौनी गंध भले ही उसकी नाक से चली गई हो, लेकिन वह हमेशा उसके मन में बसी रहेगी।
यह क्या था, अपराध और धोखे का कोई अड्डा?
यह जगह अपराध का गढ़ जैसी बिल्कुल नहीं दिखती थी। यहाँ सभ्य और कानून का पालन करने वाले नागरिक रहते थे।
हनी सिंह का अपार्टमेंट बाईं ओर तीसरी इमारत में था। पहली मंज़िल पर। विक्रम की जिप्सी से उतरते ही रीता ने ऊपर देखा। एक छोटी सी बालकनी थी जिसमें मुंबई की कई बालकनियों की तरह गमलों में पौधे लगे थे और एक कपड़े सुखाने का स्टैंड था जिस पर कुछ कपड़े सूख रहे थे। सादगी भरा जीवन। विक्रम ने अपनी गाड़ी लॉक की और वे पहली मंज़िल की सीढ़ियों से नीचे उतरे। रीता ने गौर किया कि इमारत में

लिफ्ट भी नहीं थी। किसी भी चीज़ से यह संकेत नहीं मिलता था कि उस आदमी ने करोड़ों रुपये कहीं छिपा रखे हैं।
दरवाजा खोलने वाली महिला ने चटख गुलाबी रंग का सलवार कमीज पहना हुआ था। वह दुबली-पतली और बेजान लग रही थी; उसकी झुर्रीदार त्वचा ऐसी लग रही थी मानो किसी ने उस पर बहुत ज्यादा झुर्रियां बना दी हों। मानो फटी हुई चमड़ी हो। उसकी उम्र सत्तर के आसपास रही होगी; रीता ने तुरंत अनुमान लगाया कि हनी सिंह तीस साल से कम उम्र का था और उसकी संतान देर से पैदा हुई होगी, जिससे हनी के पिता की मृत्यु के बाद उसके बच्चे को जन्म देने की संभावना और भी कम हो जाती है। रीता का मानना था कि चालीस साल की उम्र की महिला अनौपचारिक यौन संबंध बनाते समय कहीं अधिक सावधान रहती है। रीता और विक्रम को देखकर उसके चेहरे पर एक गंभीर भाव आया जो एक घमंडी मुस्कान में बदल गया। उसने बस इतना ही कहा, 'जी?' वह ऐसी नहीं लग रही थी जैसे वह मेहमानों की प्रतीक्षा कर रही हो या इस समय किसी बिन बुलाए मेहमान का स्वागत करने के मूड में हो। रीता ने अनुमान लगाया कि श्रीमती लकी सिंह जब जवान थीं, तब काफी खूबसूरत रही होंगी। यह समझना आसान था कि हनी सिंह को अपनी सुंदरता कहां से विरासत में मिली है। फिर, लगभग अचानक ही, उसके चेहरे के भावों में एक बदलाव आया, मानो रीटा ने अभी-अभी घोषणा की हो कि उसने लॉटरी जीत ली है।
'अरे, तुम हो! मुझे पता था कि तुम आओगे। अंदर आओ... अंदर आओ, दरवाजे पर क्यों इंतजार कर रहे हो?' वह मानो जीवंत हो उठी थी।
रीता अचंभित थी। उसने विक्रम की ओर देखा जो उतना ही असमंजस में दिख रहा था।
'क्या हम पहले मिल चुके हैं, श्रीमती सिंह?' रीता ने विनम्रता से पूछा, जब वे अपने मेजबान के पीछे-पीछे उस बैठक कक्ष में दाखिल हुईं जो एक छोटे से प्रवेश द्वार के अंत में था।
'नहीं, लेकिन मेरी अंतरात्मा ने मुझे बताया था कि तुम आओगे। अब बताओ, तुम क्या लोगे, चाय या कॉफी?'
'और आपको ऐसा क्यों लगा कि मैं आऊंगा?'
'मेरे बेटे, मेरे प्यारे की वजह से। वह खुद को बहुत बड़ा आदमी समझता है, लेकिन मुझे सब पता है। आखिर मैं उसकी माँ हूँ, है ना?'

रीता ने सिर हिलाया। यहाँ ज़रूर कुछ भ्रम था। श्रीमती लकी सिंह ने उसे किसी और के लिए ही समझ लिया था।
'मैं भाग्यशाली हूं,' उसने कहा।
काश मैं भी होती, रीटा ने लगभग कहते हुए कहा, और तभी उसे याद आया कि उसका नाम लकी था; वह भाग्यशाली होने की बात नहीं कर रही थी।
'आपसे मिलकर अच्छा लगा मैडम, मैं रीता हूं और ये विक्रम हैं।'
'रीटा क्या?'
रीता को समझने में एक मिनट लगा। 'रीता फरेरा, और ये विक्रम पाटिल हैं।' रीता ने जानबूझकर पुलिस रैंक का जिक्र नहीं किया।
'क्या आपके अलग-अलग उपनाम हैं?'
इससे कोई फायदा नहीं हो रहा था।
'मुझे बहुत खेद है, लेकिन श्रीमती सिंह, मैं आपकी बात समझ नहीं पा रही हूँ?'
'मुझे पता है कि तुम वही हो जिसे वह सालों से मुझसे छिपा रहा है। मुझे तुम्हारे बारे में कुछ महीने पहले ही पता चला।'
हनी सिंह उससे क्या छिपा रहा था?
'चिंता मत करो बेटा, मैं बूढ़ी हो सकती हूँ, लेकिन मेरा नज़रिया बहुत खुला है। दूसरे धर्म के लोगों से मुझे ज़रा भी परेशानी नहीं होती। मेरा एकमात्र धर्म यही है कि मेरी प्रियतमा खुश रहे।' लकी सिंह की आँखें अब प्रसन्न थीं, पुतलियाँ फैली हुई थीं; वह सचमुच खुश दिख रही थीं।
हे भगवान!
रीता के दिमाग में बुढ़िया की उलझन साफ झलक रही थी। रीता फरेरा। किट्टी वर्गीस। दोनों ईसाई नाम। जाहिर है किसी ने उसे बताया होगा कि उसका बेटा एक ईसाई लड़की से प्रेम कर रहा है या शायद हनी सिंह ने कुछ इशारे किए होंगे, और श्रीमती लकी सिंह ने रीता को हनी की प्रेमिका समझ लिया होगा। बस! श्रीमती रीता सिंह। लकी सिंह सचमुच वास्तविकता से कटे हुए थे। भगवान की चतुराई का एक और नमूना।
'अरे नहीं, श्रीमती सिंह—'
'अरे बेटा, शर्माओ मत। क्या वो तुम्हारा कज़िन है?' लकी ने विक्रम की तरफ इशारा किया, जो अब तक पूरी पहेली सुलझा चुका था और अपनी हंसी रोकने की कोशिश

कर रहा था। रीता ने तुरंत नज़रें हटा लीं; उसे ज़ोर से हंसना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसने हंसने से बचने के लिए अपना गाल दबा लिया। उसे समझ आया कि लकी सिंह को इस बात पर हैरानी क्यों हुई थी कि रीता और विक्रम के सरनेम अलग-अलग हैं। शायद लकी सिंह को लगा होगा कि रीता अपने भाई के साथ आई है। या पिता के साथ? विक्रम के उसके पिता होने का ख्याल आते ही हंसी और बढ़ गई।

'श्रीमती सिंह, मैं वह नहीं हूँ जो आप मुझे समझती हैं।'

'आप मेरे मन की बात तभी जान सकते हैं जब आप वही हों जो आप होने का दावा नहीं करते।'

हे यीशु, मुझे बचाओ।

'मान लीजिए, श्रीमती सिंह। मैं डीसीपी रीता फरेरा हूं और ये मेरे सहयोगी एएसपी विक्रम पाटिल हैं।'

'हनी ने मुझे कभी नहीं बताया कि तुम पुलिस में हो?' लकी सिंह लगभग अचंभित रह गया।

'ऐसा इसलिए है क्योंकि हनी सिंह मुझे नहीं जानते, श्रीमती सिंह।'

'अगर हनी तुम्हें नहीं जानती तो तुम यहां कैसे हो?'

'मैं यही समझाने की कोशिश कर रहा हूँ, श्रीमती सिंह। हनी सिंह ने आपको क्या बताया है?'

'उन्होंने मेरे लिए पहले ही एक खूबसूरत बहू चुन ली है।'

'हो सकता है वो सही हो, लेकिन वो बहू मैं नहीं हूँ।' रीता जानती थी कि हनी सिंह सही कह रहा था; किटी बेहद खूबसूरत थी, लेकिन उसने अपने जवाब में अस्पष्टता बनाए रखी। वह यह ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी कि उन्हें सब कुछ पता है। वह यहाँ जानकारी देने नहीं आई थी, बल्कि हनी की माँ से जितना हो सके उतनी जानकारी निकलवाने आई थी।

'ठीक है, मैं चाय लाती हूँ, फिर बात करेंगे।' लकी सिंह ने जवाब का इंतज़ार नहीं किया, न ही कॉफी या शीतल पेय का विकल्प दिया। वह बस उठी और कमरे से चली गई।

रीता ने विक्रम की ओर देखा और दबी आवाज़ में हँस पड़ी। उसने खुद की ओर इशारा किया, फिर नीचे की ओर, फिर विक्रम की ओर और बैठक के प्रवेश द्वार की ओर

इशारा करते हुए कहा: मैं यहीं हूँ, तुम शौचालय जा दो।
मानक संचालन प्रक्रिया।
विक्रम बाथरूम में जाकर पुलिस के काम आ सकने वाली किसी भी चीज़ की तलाश करता था। अगर उसे समय और मौका मिलता, तो वह मामले से जुड़ी किसी भी महत्वपूर्ण चीज़ की खोज में बेडरूम में भी ताक-झांक करता था।
विक्रम ने अंगूठे से इशारा किया: संदेश प्राप्त हो गया।
लकी सिंह चाय के कप और बिस्कुट से भरी ट्रे लेकर वापस लौटे।
'क्या मैं शौचालय का उपयोग कर सकता हूँ, श्रीमती सिंह?'
'बिल्कुल। हनी के कमरे वाला इस्तेमाल करो।' उसने दाहिनी ओर वाले कमरे की तरफ इशारा किया।
रीता ने श्रीमती सिंह को यह समझाने में समय लगाया कि वह हनी सिंह की प्रेमिका नहीं थी। वह एक पुलिस अधिकारी थी जो उससे कुछ जानकारी हासिल करना चाहती थी।
'उसने क्या किया है? किसी की बेटी के साथ भाग गया है?'
'नहीं श्रीमती सिंह, उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। यह सिर्फ एक नियमित जांच है।'
'मुझे इसके बारे में बताओ,' लकी सिंह ने चाय को तश्तरी में डाला और जोर से घूंट भरी।
आप ने इसके लिए पूछा।
रीता ने शिशिर सिंह की तस्वीर निकाली और उसे दे दी।
'ये मेरी हनी है। ये तस्वीर कहाँ ली गई थी?'
मां को सबसे बेहतर पता होता है।
'होटल की लिफ्ट में, चिंता की कोई बात नहीं है।'
अगर कोई हनी सिंह का किरदार निभा रहा था, तो उसने वाकई बहुत बढ़िया अभिनय किया था। इतना बढ़िया कि माँ धोखे में आ गई।
विक्रम वापस आ गया था। शौचालय में बिना शक पैदा किए कितना समय बिताया जा सकता है, इसकी एक अलिखित सीमा है। उसका सिर हिलाना बहुत हल्का था, लेकिन रीता समझ गई; उसे कुछ भी आपत्तिजनक नहीं मिला था, जो निराशाजनक था, लेकिन वे क्या उम्मीद कर रहे थे? बोर्डिंग कार्ड की नकल?

'क्या आप वीर सिंह नाम के किसी व्यक्ति को जानती हैं, श्रीमती—'
'मेरे घर में उस एहसानफरामोश बदमाश का नाम तक मत लेना,' लकी सिंह गुस्से से चिल्लाई; उसका चेहरा खून से लाल हो गया था, वह बेहद क्रोधित लग रही थी।
और इससे रीता को वह बात समझ आ गई जो वीर का जिक्र करके वह जानना चाहती थी। हनी सिंह और वीर सिंह के बीच की दुश्मनी सच्ची थी। और पारिवारिक थी।
'माफ़ कीजिए श्रीमती सिंह, मेरा इरादा किसी अप्रिय याद को ताज़ा करने का नहीं था, लेकिन हमें वीर सिंह को ढूंढना होगा।'
इसका मेरे हनी से क्या लेना-देना है? मेरे हनी ने उसे भाई की तरह माना। मैंने उसे अपने बेटे की तरह माना, कभी उसमें और हनी में कोई फर्क नहीं किया। वह कई दिनों तक, सप्ताहांतों में हमारे साथ रहा, मैंने उसके सारे कपड़े धोए और खाना बनाया। और अंत में, उसने हमें ऐसे छोड़ दिया जैसे हम कोई अवांछित आवारा हों? भगवान करे उसे कीड़े खा जाएं।
यह दिलचस्प होता जा रहा था। ऐसा नहीं था कि लकी सिंह को पता होगा कि वीर सिंह कहाँ है या अगर उसे पता भी होता तो वह रीता को बता देती, लेकिन फिर भी इससे हनी और वीर के बारे में दूसरों की कही बात की पुष्टि हो रही थी: वे करीब थे, फिर अलग हो गए।
'क्या हुआ?'
'मुझे नहीं पता। हनी ने इसके बारे में कभी कुछ नहीं कहा, बस इतना बताया कि उनके बीच बहुत बड़ा झगड़ा हुआ था।' पिछले कुछ मिनटों में उसने जो गुस्सा दिखाया था, उसके बावजूद अंदर ही अंदर वह दुखी थी; उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे। उसने अपनी गुलाबी आस्तीन के पिछले हिस्से से अपनी नम आँखों को पोंछा।
'मुझे खेद है श्रीमती सिंह,'
'कोई बात नहीं। लेकिन अगर आप वीर को ही ढूंढ रहे हैं तो आपके पास हनी की तस्वीर क्यों है?' लकी अब संशय में लग रहा था।
अच्छा सवाल है।
'ओह, वो? हमारे डेटाबेस में दर्ज है कि श्री हनी सिंह आखिरी व्यक्ति थे जिनसे वीर सिंह ने सार्वजनिक स्थान पर बातचीत की थी। जैसा कि मैंने कहा, यह बहुत पुरानी तस्वीर है।'

'मुझे नहीं लगता कि हनी उसके बारे में बात करना चाहेगी।'
'हमें अभी भी पूछना होगा।'
'मैं समझ सकता हूँ।'
'श्रीमती सिंह, क्या आपको पता है कि वीर सिंह आजकल कहां है?'
'नहीं। मुझे नहीं पता और मुझे परवाह भी नहीं है। मैंने उसे आखिरी बार...' वह किसी पुराने एल्बम से कुछ याद करने की तरह आसमान की ओर देखने लगी, '...तीन साल पहले देखा था, शायद उससे भी पहले।'
'तो पता नहीं वो कहाँ गया, कोई चिट्ठी-पत्री भी नहीं?' रीटा ने बात जारी रखी।
'नहीं, और मैं अब उसके बारे में और बात नहीं करना चाहता। क्या कुछ और है?'
'अभी नहीं, श्रीमती सिंह।' रीता उठ खड़ी हुई।
विक्रम ने इस बात को समझ लिया।
विदाई उतनी गर्मजोशी भरी नहीं थी जितनी चाय पार्टी थी। रीटा ने उनके पीछे दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनी।
'आप क्या सोचती हैं, मैडम?' विक्रम ने सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए पूछा।
'तुम्हारा मतलब है कि तुम मेरे पापा हो, इसके अलावा?' रीटा ने पलटकर जवाब दिया।
'यह बहुत ही मजेदार था। मैं हंसते-हंसते लोटपोट होने ही वाला था।'
'मेरे द्वारा देखा जा सकता था।'
'वीर का ज़िक्र होते ही वह ज़रूर नाराज़ हो गई,' विक्रम ने जिप्सी में बैठते हुए कहा।
रीता ने अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स का चारों ओर नज़र घुमाई। उसने फिर गौर किया कि यह न तो बदबूदार था और न ही जर्जर, लेकिन यह शहर का सबसे आलीशान इलाका भी नहीं था।
'वीर सिंह और विक्रम को ढूंढना बेहद जरूरी है।'

17
Seventeen

'यह फेरबदल क्यों?'
अदला-बदली? सेक्सी से निपटने के साथ एक चेतावनी भी जुड़ी थी; इसके लिए पूर्व शर्त यह थी कि व्यक्ति के दिमाग में पहले से ही वेबस्टर इंग्लिश डिक्शनरी ऐप डाउनलोड किया हुआ हो।
सेक्सी शांत भाव से बैठा था। हमेशा की तरह एकदम सलीके से कपड़े पहने, बाल भी बिखरे नहीं थे। उसकी लंबी, मैनीक्योर की हुई उंगलियां जोड़ में थीं, आंखें पतले चश्मे के पीछे थीं जिसे उसने बोलने से पहले उतार दिया। हालांकि, उसका सवाल बेवजह नहीं था। उसकी सचिव को लगभग सभी मौजूदा मामलों की साप्ताहिक रिपोर्ट मिलती थी, और चूंकि रॉन जोगानी की हत्या एक अंतरराष्ट्रीय घटना थी, इसलिए यह बहुत संभव था कि उसने इसका सारांश मांगा हो और खुद को अपडेट रखा हो। इसलिए, वह जानता था कि शुरुआती जांच बेल्जियमवासियों द्वारा रीटा और उसकी टीम को दी गई तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति को ढूंढने के लिए की गई थी। तो फिर रीटा यहां वीर सिंह नाम के इस दूसरे व्यक्ति का पता लगाने में मदद मांगने क्यों आई थी? फिर जांच का रुख क्यों बदल गया?
रीटा ने हाल के घटनाक्रमों, पिछली रिपोर्ट भेजे जाने के बाद से पिछले कुछ दिनों में हुई अन्य डकैतियों के बारे में जानकारी, और उन समानताओं के बारे में बताया जिनके कारण टीम ने अन्य संभावनाओं पर विचार किया, साथ ही एक पुराने मित्र से शत्रु बने व्यक्ति के लापता होने का खुलासा भी किया।
'और उसने भारत छोड़ दिया, क्या आपने यही कहा?' सेक्सी ने एक मिनट पहले दी गई जानकारी पर विचार करने के बाद पूछा।
'जी श्रीमान।'
'क्या आपको पता है कि वह कहां भाग गया है?'
हमें नहीं पता कि वह भाग गया है या नहीं, सेक्सी; यह महज एक संयोग भी हो सकता है, रीटा कहना चाहती थी, लेकिन इसके बजाय उसने जवाब दिया: 'हमें यकीन नहीं है कि वह जानबूझकर गायब हुआ है या यह महज़ एक संयोग है, लेकिन हमारे पास जो जानकारी है वह यह है कि वह अमेरिका चला गया है।'
'अमेरिकी सुरक्षा एजेंसियां कोई जानकारी जारी नहीं करेंगी - जैसा कि आप जानते हैं, वे कुछ हद तक आत्मकेंद्रित हैं... जब तक कि हमारे पास उनके साथ आदान-प्रदान करने के लिए कुछ न हो।'

वह पूरी तरह गलत नहीं था। 9/11 के बाद सुरक्षा के मामले में अमेरिका काफी हद तक अलग-थलग और आत्मकेंद्रित हो गया था, और यह उचित भी था। उस घटना के बाद से वे अपने देश में आतंकवाद के सभी कृत्यों को विफल करने में काफी हद तक सफल रहे थे।

'हमारे पास सौदेबाजी के लिए कुछ भी नहीं है, सिवाय इस तथ्य के कि वीर सिंह संभवतः एक अपराधी हो सकता है, हालांकि हमारे पास उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं है, महोदय।'

'मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं। मुझे इस आदमी के बारे में सारी जानकारी भेजो। आप श्री हनी सिंह से कब संपर्क कर रहे हैं?'

'आज ही, महोदय।' सुबह अपनी माँ से मिलने के बाद, हनी सिंह से उसी दिन मिलना सबसे अच्छा था, हालाँकि रीता को पूरा विश्वास था कि श्रीमती लकी सिंह ने अपने बेटे से इस मुलाकात के बारे में पहले ही बात कर ली होगी।

रीटा ने कमिश्नर को यह बताने का अवसर लिया कि वह उस आपराधिक मनोवैज्ञानिक से परामर्श कर रही थी जिसे उसके पूर्व सुपरवाइजर जोशी ने पेश किया था, लेकिन उसने - आश्चर्यजनक रूप से - इस बात का कोई विवरण नहीं दिया कि ऐश मैटल और उसके बीच हुई बातचीत केवल अंडरवियर पहने हुए हुई थी। या शायद वह भी नहीं।

रीटा ने यह भी बताया कि खबर लीक होने के बाद मीडिया अपडेट की तलाश में था। उन्हें नहीं लगता था कि सेक्सी को यह बताने की ज़रूरत है कि यह कैसे हुआ।

'मीडिया को सीधे मुझसे संपर्क करने के लिए कहा जा सकता है, मैं उन सभी को संभाल लूंगा। बस मेरे सचिव से एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करने के लिए कह दीजिए।'

रीटा जानती थी कि सेक्सी अस्पष्टता का उस्ताद था। उसके बोलने के बाद प्रेस को कुछ भी पता नहीं चलेगा; हालांकि उनकी शब्दावली की भरपूर परीक्षा जरूर होगी। अच्छा है।

'शुभकामनाएं। और कुछ, मिस फेरेरा?'

'जी नहीं, जी हाँ। धन्यवाद, जी हाँ।'

मीटिंग खत्म होने के बाद, रीटा बाहर निकली, उसकी शब्दावली में काफी वृद्धि हो चुकी थी।

अपने कमरे में लौटकर उसने ब्रसेल्स में विक्टर को फोन किया और वही अनुरोध दोहराया। उसने वीर सिंह के संभावित संबंध के बारे में अपनी परिकल्पना समझाई और विशेषज्ञों द्वारा विश्लेषण के लिए उसकी एकमात्र तस्वीर भेजने का वादा किया। विक्टर और उसकी सरकार का इस मामले में स्पष्ट रूप से निजी हित था। वह यह देखने के लिए सहमत हो गया कि इंटरपोल अमेरिका से क्या जानकारी निकलवा सकता है, हालांकि उसे भी अमेरिकी सरकार द्वारा कोई जानकारी जारी करने पर संदेह था।

वीर सिंह के बारे में कोई जानकारी मिलने की रीता को बहुत उम्मीद नहीं थी, लेकिन हर संभव कोशिश करनी ही पड़ती थी। जब तक आप पासा नहीं फेंकते, तब तक आपको पता नहीं चलता कि क्या होगा। वह पहले ही दो पासे फेंक चुकी थी। तीसरा पासा, उसने मुस्कुराते हुए कहा, वह सप्ताहांत में फेंकेगी जब ऐश मुंबई वापस आ जाएगा।

***

दोपहर के भोजन के बाद रीता और विक्रम हनी सिंह के कार्यालय के लिए रवाना हुए। उन्होंने पुष्टि कर ली थी कि वह वहीं मौजूद हैं, लेकिन उन्होंने पहले से फोन नहीं किया था। उनकी माँ ने यह काम पहले ही कर दिया होता। पी डी'मेलो रोड पर मुड़ते समय उन्हें ट्रैफिक जाम मिला, लेकिन सौभाग्य से ईस्टर्न फ्रीवे बीकेसी तक पूरी तरह से साफ था।

बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स कांच की इमारतों की एक श्रृंखला है जो देखने में जेलों जैसी लगती हैं, जिनमें सुबह नौ से शाम पांच बजे तक काम करने वालों के लिए बेहतर कोठरियाँ और शानदार सुविधाएँ हैं। ऐसी ही कांच की जेलों की भरमार के बीच एक और फीकी इमारत थी - सामने से कांच की, लेकिन दूसरी बड़ी, नई और चमकदार इमारतों के सामने बौनी सी - जिसमें श्री हनी सिंह का दफ्तर था। उसने श्री हैंडलबार को ढूंढने के लिए चारों ओर देखा, लेकिन वह कहीं नहीं दिखे। घटिया काम। या शायद वह इतने अच्छे से छिपे हुए थे कि उसने भी उन्हें नहीं देखा। या शायद उन्हें पता था कि हनी सिंह शाम तक दफ्तर से नहीं निकलेंगे, इसलिए पहरा देने में समय क्यों बर्बाद करें।

भूतल पर सुरक्षा का कोई नामोनिशान नहीं था। रीता ने बगल की दीवार पर लगे बोर्ड को देखा जिस पर सभी कार्यालयों की सूची थी, उसमें हनी सिंह का कार्यालय सबसे

ऊपरी मंजिल पर लिखा हुआ मिला और उसने लिफ्ट का बटन दबा दिया।
दसवीं मंजिल पर सुरक्षा का मामला कुछ अलग ही था। पाँच फुट चार इंच का एक छोटा कद का आदमी फ्रंट डेस्क पर बैठा था— दुबला-पतला, अधेड़ उम्र का, गंजा सिर जिस पर अंदर लगी हेलोजन लाइटें चमक रही थीं। साठ के दशक के पुरुषों जैसी पतली मूंछें। गंदी जींस, पुरानी नकली आरएल पोलो नीली टी-शर्ट। दो लोगों को पास आते देख उसने ऊपर देखा।
'हम श्री हनी सिंह से मिलने आए हैं, वे कहाँ हैं?' रीता ने विनम्रतापूर्वक पूछा।
'कौन जानना चाहता है?' सड़क किनारे बाल काटने वाले और अब दफ्तर प्रशासक बन चुके टिटू ने गरजते हुए कहा। वह दिल से वफादार था, लेकिन उसकी पृष्ठभूमि और शिक्षा को देखते हुए शिष्टाचार का उस पर कोई असर नहीं पड़ता था।
रीटा ने उसे देखकर मुस्कुराया: एक चिहुआहुआ कुत्ता डोबरमैन होने का नाटक कर रहा था। उसने भी उसके साथ खेलने का फैसला किया।
'हम दोनों करते हैं।' उसने विक्रम और अपनी ओर इशारा किया।
'और तुम कौन?' टिटू ने अपनी गली-मोहल्ले की अंग्रेज़ी में पूछा। टूटी-फूटी बोली के अलावा, उसके शब्द इतने तीखे थे मानो उसके मुँह में कोई जली हुई स्टील की धार हो जिससे वे और भी चुभने लगे हों। रीता सोच रही थी कि जब उस छोटे कद के लड़के ने "तुम" कहा तो उसने उसे "you" लिखा या "U"?
रीता ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने विक्रम की ओर देखा, जिसने इशारा समझ लिया। उस छोटे कद के आदमी से काफी लंबा दिखते हुए उसने अपना पुलिस बैज निकाला और उसके चेहरे के ठीक सामने रख दिया।
बैज देखते ही उस बौने का कठोर रवैया तुरंत टूट गया।
'अब,' रीटा ने शांत भाव से कहा। 'मुझे बताओ तुम कौन हो?'
'मैं स्वयं टिटू हूं, महोदया।' वह सावधान मुद्रा में खड़ा हो गया।
'और आप क्या करते हैं मिस्टर टिटू... यहाँ दादागिरी करने और लोगों को डराने के अलावा?'
'मैं ऑफिस मैनेजर हूं, मैडम।'
'तो क्या मिस्टर हनी सिंह आपके बॉस हैं?'
'जी मैडम। चाय या कॉफी चाहिए मैडम?'
'क्या आज आपका बॉस यहाँ है?' रीता ने पूछा, जबकि खुफिया जानकारी से पुष्टि हो

चुकी थी कि हनी सिंह मौके पर मौजूद था।
'मालिक अंदर हैं, लेकिन आज बहुत व्यस्त हैं महोदया। उन्होंने मुझे आगंतुकों को अंदर आने की अनुमति न देने के लिए कहा है।'
'उसे बता दो कि हम अब यहां हैं, ताकि वह हमें देख ले।'
'मैडम, अगर मैं उन्हें परेशान करूं तो वे बहुत गुस्सा हो जाते हैं।'
'ठीक है, परेशान मत करो। मुझे बताओ कि उनका कार्यालय कहाँ है और हम वहाँ जाकर उनसे खुद मिलेंगे।'
'नहीं महोदया। आप इंतज़ार कीजिए। मैं उन्हें फ़ोन करता हूँ।' उन्होंने अपनी डेस्क पर रखा फ़ोन उठाया और कुछ नंबर डायल किए।

18 Eighteen

जब उस बदज़ुबान प्रशासक ने अपने मालिक को फोन किया तो उसका लहजा एकदम बदल गया और काफी दयालु हो गया। 'कुछ
पुलिस के लोग आपसे मिलना चाहते हैं, साहब।' रीता को दूसरी तरफ से तेज़ कर्कश आवाज़ सुनाई दी, जिससे पता चला कि हनी सिंह को परेशान होना पसंद नहीं आया। उन्हें यह दखलअंदाज़ी अच्छी नहीं लगी। टिटू ने सहमति में सिर हिलाया और उन्हें परेशान करने के लिए माफ़ी मांगी। 'मैंने आपको बताया था, साहब व्यस्त हैं,' उसने रिसीवर को स्टैंड पर रखते हुए कहा। रीता ने उससे बात नहीं की। उसने रिसीवर उठाया जिसे उसने अभी नीचे रखा था और रीडायल बटन दबा दिया। 'अब क्या बात है? क्या मैंने अभी आपको नहीं बताया कि मैं एक महत्वपूर्ण सम्मेलन में व्यस्त हूँ—'
'और मैं पुलिस जांच के बीच में हूं, श्री हनी सिंह। मेरा यह कर्तव्य है कि मैं आपको बता दूं कि पुलिस जांच में सहयोग न करने और चल रही पुलिस जांच को बाधित करने के बीच बहुत कम अंतर होता है और दोनों ही मामले अपने आप में आपराधिक अपराध हैं।'
लेकिन मैं वास्तव में एक क्लाइंट कॉन्फ्रेंस के बीच में हूँ...
'क्या आपने कभी आपातकाल शब्द के बारे में सुना है?'

'हाँ?'
'अब समय आ गया है। कॉल खत्म करो क्योंकि हम आ रहे हैं।' हनी के कुछ और कहने से पहले ही रीटा ने फोन रख दिया।
उसने टिटू की ओर देखा, जिसने बिना पूछे ही तुरंत रिसेप्शन डेस्क के पीछे बाईं ओर स्थित दरवाजे की ओर इशारा कर दिया।
रीता ने गहरी साँसें लीं। वह थोड़ी परेशान थी कि बातचीत में "पुलिस जाँच" शब्द आ गया था; उसे हनी सिंह से मिलकर उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए इस बारे में बताना चाहिए था। नियमों में यह बात साफ़-साफ़ लिखी थी। सुनो। हर शब्द को बहुत ध्यान से सुनो। हर बात के पीछे छिपे अर्थ को समझो। विराम चिह्नों को समझो। चेहरे को समझो। हाथ-पैरों को बार-बार खुजलाने पर ध्यान दो, आँखों में किसी भी तरह की बनावटी कमज़ोरी को देखो। बोलने के लहजे, हर चीज़ का विश्लेषण करो। विषय को ध्यान से देखो।
कार्यालय का दरवाजा खोलने से पहले उसने खुद को याद दिलाया कि सब कुछ ठीक है, हर कोई निर्दोष है, और यही होना चाहिए: जब तक दोषी साबित न हो जाए, तब तक निर्दोष। उसने विक्रम की ओर देखा कि क्या वह तैयार है; उसने सिर हिलाकर सहमति दी।
वे अंदर चले गए।
कार्यालय किसी सूप या सूप जैसा लग रहा था; मछली का स्टू स्वाद में तो अच्छा लग सकता है, लेकिन उसमें तरह-तरह की मछलियाँ तैरती देखना बिल्कुल भी सुखद नहीं होता। हनी सिंह के लिए यह कार्यालय शायद इधर-उधर बिखरा होने के बावजूद कुशलतापूर्वक काम करता होगा, लेकिन यहाँ कागज़, कंप्यूटर चिप्स, पुर्ज़े, केबल और न जाने क्या-क्या हर जगह बिखरा पड़ा था, यहाँ तक कि इकलौती कुर्सी पर भी।
हनी सिंह ने शरारती मुस्कान बिखेरी, नमस्कार कहा और अपनी डेस्क के पीछे चले गए, जिस पर एक साथ चार लैपटॉप चल रहे थे। उन्होंने हाथ मिलाने के लिए अपना मजबूत हाथ आगे बढ़ाया।
जब रीटा ने अपने शरीर को हिलाया और औपचारिक अभिवादन के बाद परिचय कराया, तो यह किसी बुराई से कम नहीं था।
रीता ने वहाँ मौजूद इकलौती कुर्सी पर नज़र डाली, जो कागज़ों से ढकी हुई थी। हनी सिंह शर्मिंदा लग रहे थे। वे अपनी डेस्क के पीछे से बाहर आए, कागज़ उठाए और

उन्हें पहले से ही कागज़ों से भरी खिड़की पर रख दिया।
'माफ़ कीजिए, मेरे पास आमतौर पर कोई मेहमान नहीं आते। मैं दूसरी कुर्सी का इंतज़ाम कर देता हूँ, बस एक मिनट रुकिए।' वह बाहर गया और एक मिनट के भीतर पहियों वाली एक ऑफिस कुर्सी को लुढ़काते हुए वापस आ गया।
एक मिनट बाद रीता और विक्रम कुर्सियों पर बैठ गए।
'पुलिस जांच में मैं किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?' न तो उसकी आवाज़ में कोई बनावटी सिसकी थी, न ही कोई हकलाहट। केवल जन्मजात या प्रशिक्षित झूठे ही आँखों में आँखें डालकर झूठ बोल सकते हैं। क्या हनी सिंह उनमें से एक था या वह एक ऐसे खेल में एक ईमानदार दर्शक था जिसमें उसे उसकी सहमति या जानकारी के बिना शामिल किया गया था? या तो उसने इस दिन और इस जांच के लिए अच्छी तैयारी की थी या वह एक माहिर झूठा था या वह सच बोल रहा था। यह कहना मुश्किल था।
'क्या आप वीर सिंह को जानते हैं?'
'तुम तो जानती ही हो कि मैं उसे जानती हूँ। तुम आज सुबह मेरी माँ से मिली थी।' वीर सिंह का ज़िक्र सुनकर हनी नाराज़ हो गई। वीर के साथ हनी के रिश्ते के बारे में रीता को जो पता था, उसके बाद यह बात उसे ज़रा भी हैरान नहीं कर पाई, क्योंकि रीता ने वीर का ज़िक्र किया था तो हनी की माँ घायल बैल की तरह भड़क उठी थी। बल्कि, इससे बात और पक्की हो गई: दुश्मनी सिर्फ़ एकतरफ़ा नहीं थी।
'क्या आपको पता है कि वह अभी कहां है?'
'नहीं। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह सब किस बारे में है? वीर से मिले हुए मुझे तीन साल हो गए हैं, तो अब जब पुलिस उसे ढूंढ रही है, तो उसने क्या किया है? और इसमें मेरा क्या लेना-देना है?'
'श्रीमान सिंह, कृपया मेरे प्रश्नों का उत्तर दें और मैं वादा करता हूं कि मैं आपके अधिकांश, यदि सभी नहीं, प्रश्नों का उत्तर दूंगा।'
'इसमें कितना समय लगेगा?' हनी ने अपनी कलाई पर अपनी ओमेगा घड़ी दिखाते हुए देखा।
'अगर आप बिना समय बर्बाद किए जवाब दें, तो मैं कहूंगा एक घंटा।'
'ठीक है डीसीपी फेरेरा।' उसने अपनी डेस्क पर रखे चारों लैपटॉप झट से बंद कर दिए।
'तो हमें वीर सिंह के बारे में और बताएं, आप दोनों का ब्रेकअप कैसे और क्यों हुआ?'

'यह शर्मनाक है, और शायद आप सोचेंगे कि मैं बुरा इंसान हूँ। वीर ने ही मुझे मेरी गर्लफ्रेंड किटी से मिलवाया था। हमने डेटिंग शुरू की, लेकिन हमें नहीं पता था कि वह किटी को पसंद करता था। कहने की जरूरत नहीं है कि हम तीनों के बीच बात नहीं बनी, इसलिए हम अलग हो गए।'

रीटा को एहसास हुआ कि उसने इसे पहले से ही संभावित परिदृश्यों में से एक के रूप में मान लिया था।

'और आप लोग फिर कभी नहीं मिले?'

'नहीं।'

'और आपको पता नहीं है कि वह कहां है?'

'मुझे पता चला कि भारत से जाने के बाद वह सिलिकॉन वैली के लिए रवाना हो गया था।'

रीता ने विक्रम की ओर देखा, जिसने भी गौर किया कि भौगोलिक निर्देशांक पचास राज्यों से घटाकर केवल सिलिकॉन वैली तक सीमित कर दिए गए थे। लेकिन क्या यह छोटी सी जानकारी किसी काम आएगी, कौन जाने?

रीटा ने वह अनौपचारिक तस्वीर निकाली जो उसने सुबह लकी सिंह को दिखाई थी; ब्रुसेल्स में लिफ्ट में ली गई वह तस्वीर, और उसे हनी को दे दी।

उसने कुछ सेकंड के लिए तस्वीर को देखा, फिर रीता की ओर देखा, फिर विक्रम की ओर देखा, लेकिन पूरे एक मिनट तक कुछ नहीं बोला।

रीता यह समझ नहीं पा रही थी कि वह इस बात से चिंतित था कि उसे पता चल गया था कि तस्वीर कहाँ ली गई है, या उसे इस बात की चिंता थी कि किसी ने उसकी जानकारी के बिना तस्वीर खींच ली और फिर कोई उसका पीछा कर रहा है? उसके चेहरे पर हैरानी का भाव बना रहा। अगर वह नाटक कर रहा था, तो वह सफल हो रहा था।

'आपको यह कहां से मिला?'

'क्या वह तुम हो?'

'बिल्कुल मेरे जैसा दिखता है।'

'तो फिर आपको ही मुझे बताना चाहिए कि यह तस्वीर कहां ली गई थी।'

'क्या यही वह व्यक्ति है जिसकी आप तलाश कर रहे हैं?'

'श्री सिंह, यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है।'

'मुझे नहीं पता। ऐसा लगता है कि किसी ने मेरी जानकारी के बिना, मेरे सिर के ऊपर से यह तस्वीर खींची है। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि कहाँ से और क्यों।'
'अपना समय लो...' रीटा को अभी तक टालमटोल का कोई संकेत नहीं दिख रहा था। हनी सिंह असमंजस में नजर आए।
क्या वह आश्चर्यचकित होने के कारण भ्रमित था? या फिर इस बात को लेकर भ्रमित था कि पुलिस इतनी दूर तक कैसे पहुंच गई?
'सच कहूँ तो, मैं आपको नहीं बता सकता,' उसने कहा और जिस तस्वीर को वह घूर रहा था, उससे नज़रें उठाकर बोला। 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि इसका वीर से क्या संबंध है?'
'यह तस्वीर लिफ्ट के अंदर ली गई है।' रीटा ने उसके सवाल को अनसुना कर दिया।
'कहाँ?'
'हम भी यही जानना चाहेंगे।'
'मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है कि लिफ्ट में किसी ने मेरी तस्वीर कहाँ और क्यों खींची।'
'श्री सिंह, मेरे अगले प्रश्नों का उत्तर देने से पहले, मैं चाहता हूं कि आप बहुत ध्यान से सोचें—'
'अरे, और भी कुछ है?' हनी सिंह ने बीच में टोकते हुए कहा, उनकी घबराहट साफ झलक रही थी, वे परेशान दिख रहे थे।
'और भी बहुत कुछ। क्या आप शिशिर सिंह नाम के किसी व्यक्ति को जानते हैं?'
'नहीं। वह कौन है?'
'कोई बात नहीं। अब ध्यान से सुनो और मुझे बीच में मत टोकना। क्या आपने पिछले कुछ हफ्तों या महीनों में किसी को अपना पीछा करते हुए देखा है?'
'मेरा पीछा कर रहे हो? क्यों? कौन मेरा पीछा कर रहा है?' उसकी आवाज़ में झुंझलाहट थी, उसका चेहरा गुस्से या हताशा से लाल हो गया था। शायद दोनों ही।
'शांत हो जाइए श्रीमान सिंह, आपको कोई खतरा नहीं है।'
'लेकिन कोई मेरा पीछा क्यों करेगा? क्या कोई मुझे जान से मारने की योजना बना रहा है?'
'फिर से, यही तो हम पता लगाना चाहते हैं। लेकिन... मेरे सवाल पर वापस आते हुए, क्या आपको पूरा यकीन है कि आपने किसी अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों या कुछ

कारों को सामान्य से अधिक नहीं देखा है?'
'बिल्कुल नहीं।'
अब तक हनी सिंह ने पलक तक नहीं झपकाई थी और न ही बेईमानी के कोई आम संकेत दिखाए थे—न कोई अनैच्छिक घूंट, न ही शब्दों का अभाव। रीता को पूरा यकीन था कि वह सच बोल रहा है। लेकिन आखिरी सवाल के जवाब में उसने कहा कि वह हैंडलबार राजा को देख ही नहीं पाया—इस बात ने रीता को असमंजस में डाल दिया। वह इस काम में इतने समय से थी कि वह समझ सकती थी कि भले ही उसने पूरी ईमानदारी से "बिल्कुल नहीं" कहा हो, हनी सिंह झूठ बोल रहा था। पक्का। हैंडलबार राजा शायद पहली नज़र में दिखाई न दिया हो, लेकिन अगर वह बार-बार हनी सिंह का पीछा कर रहा था, तो वह आदमी कम से कम उसके अवचेतन में तो ज़रूर दर्ज हो गया होगा। हनी सिंह जैसा कोई व्यक्ति मिस्टर हैंडलबार और उसकी खस्ताहाल कार को लगभग तीन महीने से रोज़ाना—शायद दिन में दो-तीन बार—उसका पीछा करते हुए कैसे नज़रअंदाज़ कर सकता था? लगभग नामुमकिन। सवाल यह था कि हनी झूठा बयान क्यों दे रहा था? वह पुलिस को गुमराह क्यों कर रहा था? और जैसा कि हमेशा होता है, अगर आप एक छोटे से झूठ को पकड़ लेते हैं, तो आप पहले कही गई हर बात या उसके बाद कही जाने वाली हर बात पर संदेह करने लगते हैं।
अगर हनी सिंह के हावभाव में बेईमानी के संकेत उस एक जवाब में नहीं दिखे, जिसके बारे में रीता को पूरा यकीन था कि वह झूठ बोल रहा है, तो रीता ने उसके पिछले सभी जवाबों पर भी भरोसा खो दिया। हनी सिंह इस साधारण तथ्य को मानने से इनकार कर रहा था कि उसने किसी को उसका पीछा करते हुए देखा था। क्यों? क्या वह इस मामले को खुद सुलझाने की योजना बना रहा था? रीता के मन में अगला सवाल यह था कि क्या हनी सिंह को यह बताने के बाद कि उसका पीछा किया जा रहा है, उसका पीछा करना भी उचित था। अगर हनी सिंह ने वाकई पहले किसी को पीछा करते हुए नहीं देखा था, तो अब देख ही लेता।
क्या होगा यदि गुप्त ग्राहक के पास दूसरा विकल्प किसी बंदूकधारी को भेजना हो?
'क्या आपको पूरा यकीन है?'
'हां। मुझे कोई नजर नहीं आया।'
'श्री सिंह, इसमें कोई शक नहीं कि अगर आप भोपाल जाने वाली ट्रेन में सवार हैं, तो

देर-सवेर आप भोपाल पहुंच ही जाएंगे। बाद में ट्रेन को दोष देने का कोई फायदा नहीं।'
रीता की आवाज़ में इतना तीखा व्यंग्य था कि लोहे को भी पिघला सकता था। वह देख सकती थी कि विक्रम उसे हैरानी से देख रहा है।
'मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपका क्या मतलब है?'
'मेरा मतलब यह है कि अगर आप अभी हमें सच नहीं बताएंगे, तो हम आपकी मदद नहीं कर सकते।'
'में सही बोल रहा हु।'
रीटा ने ऊपर से तो शांत दिखने की कोशिश की, लेकिन हनी के बार-बार झूठ बोलने से वह अंदर ही अंदर परेशान थी। 'मैं फिर से दोहराती हूँ: तुम्हारे पास सच बताने का एक छोटा सा मौका है। मुझे नहीं पता कि तुम मेरे बारे में क्या जानती हो, लेकिन मैं किसी को भी सच बताने का दूसरा मौका देने में विश्वास नहीं करती।'
'क्या आप मुझे धमकी दे रहे हैं, डीसीपी फेरेरा?'
'अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो इसे एक चेतावनी समझता। इस समय हम दोनों में से किसी को नहीं पता कि बाहर कौन है; मैं तुम्हें बस इतना बता सकता हूँ कि कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है। किस मकसद से, मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं है, लेकिन मैं पता लगा लूँगा। इसलिए, अगर तुम किसी को जानते हो या किसी पर शक करते हो, तो अभी मुझे बताने का समय है।'
हनी एकदम चुप हो गया, मानो वह अपने मन में किसी बात के फायदे और नुकसान पर विचार कर रहा हो।
'मैं क्यों?'
'तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'
'कोई मेरा पीछा क्यों कर रहा है?'
'चलिए मैं आपसे एक पुरानी लोककथा से एक सवाल पूछता हूँ - क्या आपने कभी लोगों को मछली पकड़ते देखा है, श्री सिंह?'
'हां, बस एक बार कुछ दोस्तों के साथ। क्यों?'
'क्या आप या आपके किसी दोस्त ने मछली पकड़ी?'
'हां।' हनी असमंजस में दिखी।
'समुद्र में इतनी सारी मछलियाँ होने के बावजूद, क्या आपके जाल के अंत में फंसी मछली ने पूछा, "मुझे ही क्यों चुना गया?"'

हनी ने कोई जवाब नहीं दिया, बस एक टेढ़ी मुस्कान दी।
'हमारी सहानुभूति आपके साथ है, लेकिन कृपया मुझसे आत्म-दया से भरे सवाल न पूछें। हम निश्चित रूप से पता लगाएंगे कि आपको क्यों निशाना बनाया गया है, लेकिन इस बीच मान लेते हैं कि किसी के पास कोई ठोस मकसद जरूर होगा।'
'हो सकता है आप सही हों। क्या यह आदमी, जो मेरा पीछा कर रहा है, किसी खस्ताहाल गाड़ी में है? मुझे लगता है मैंने उस गाड़ी को कई बार देखा है, लेकिन मुझे एहसास नहीं था कि कोई सचमुच फिल्मों की तरह मेरा पीछा कर रहा है। अब जब आपने पूछा है तो मुझे लगता है मैंने उसे एक से ज़्यादा जगहों पर देखा है... लेकिन क्यों?'
सच्चाई सामने आ जाती है।
'जैसा कि मैंने कहा, अभी तो मुझे पता नहीं है, लेकिन जल्द ही पता चल जाएगा।' रीता को लगा कि हनी सिंह को यह बताना उचित नहीं होगा कि एहतियात के तौर पर वह अपने आदमियों को एक बार फिर उसके पीछे लगा देगी। 'ज़्यादा चिंता मत करो। अगर कोई तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहता तो उनके पास कुछ महीने थे। अगर उन्होंने अभी तक ऐसा नहीं किया है तो इसका मतलब है कि वे तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहते। हालांकि, मुझे तुम्हें अतिरिक्त सावधानी बरतने के लिए कहना पड़ेगा।' रीता ने विक्रम की ओर देखा जो अभी भी चुपचाप अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा था; उसने भौंहें उठाकर पूछा कि क्या हनी से उसके कोई और सवाल हैं। उसने माथे पर शिकन डालकर हल्के से सिर हिलाकर मना कर दिया।
रीटा ने पूछा कि उसने जानी-पहचानी कार कहाँ देखी थी और हनी ने उन्हें बताया कि वह उसके घर और ऑफिस के बीच कहीं थी।
'क्या इससे पहले कभी ऐसा कुछ हुआ है?'
'नहीं।'
बातचीत में थोड़ी देर का विराम आया। फिर:
'आपने कहा था कि आप मुझे बताएंगे कि यह सब क्या है? मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वीर सिंह को ढूंढने वाला कोई व्यक्ति तीन-चार साल बाद भी मेरा पीछा कर रहा है, जबकि मैंने उसे आखिरी बार देखा था या उससे बात भी की थी। मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह दुनिया में कहां है या वह जिंदा भी है या नहीं।'
'यह हत्या की जांच है, श्रीमान सिंह।' रीटा ने फैसला किया कि अब असली बात

सामने लाने का समय आ गया है।
अगर उसे पता था कि रीता वास्तव में क्या ढूंढ रही है, तो उसने यह बात ज़ाहिर नहीं होने दी। लेकिन रीता अब समझ चुकी थी कि हनी सिंह के मामले में सच और झूठ की सीमा तय करना मुश्किल था। वह बेईमान था, लेकिन वह उस व्यक्ति जैसा नहीं लग रहा था जिसकी उन्हें तलाश थी; शिशिर सिंह जैसे दिखने वाले किसी व्यक्ति को ढूंढने की शुरुआती खुशी पर संदेह का साया पड़ रहा था।
'कौन...वीर?'
'नहीं। आपने अखबारों में पढ़ा होगा कि अप्रैल में ब्रुसेल्स में एक हत्या हुई थी। श्री रॉन जोगानी को उनके होटल के कमरे में गोली मार दी गई थी और हत्यारे लाखों के हीरे लेकर फरार हो गए थे।'
'हाँ...' हनी ने बिना सोचे-समझे कहा। 'मैंने इसके बारे में पढ़ा है और मेरा सवाल अब भी वही है, इन सबका मुझसे क्या लेना-देना है?'
'हत्या स्थल से भागते हुए संदिग्ध को कैमरे में कैद कर लिया गया।'
रीता कुछ देर रुक गई, उसे उम्मीद थी कि हनी सिंह कुछ बोलेगा। लेकिन पूरे साठ सेकंड तक उसकी ओर से ठंडी निगाहों के अलावा कुछ नहीं आया।
'तो अगर आपके पास हत्यारे की तस्वीर है तो आप संदिग्ध को गिरफ्तार क्यों नहीं कर लेते?'
रीटा को पता था कि वह पल भर में दुविधा को समझ जाएगा। उसने उसका इंतजार किया।
'आप यह नहीं कह रहे हैं कि जो तस्वीर आपने मुझे दिखाई थी—'
'मैं बिल्कुल यही कह रही हूँ। जो तस्वीर मैंने आपको दिखाई थी,' - उसने उसकी मेज पर पड़ी तस्वीर को एक बार फिर उसकी ओर धकेलते हुए कहा - '...यही है। और यह तस्वीर ब्रुसेल्स के होटल में लिफ्ट के अंदर ली गई थी, और जिसे आपकी माँ और आपने आपकी तस्वीर के रूप में पहचाना है।'
उलझन। आशंका। झुंझलाहट। चेहरे पर शिकन। हनी के चेहरे पर ये सभी भाव एक के बाद एक तेज़ी से बदलते रहे। फिर रीटा ने उसकी आँखों में डर देखा, जिसका मतलब कुछ भी हो सकता था या कुछ भी नहीं। दुविधा यह थी कि अगर वह अपराध में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शामिल होता तो वह डरा हुआ होता, लेकिन अगर उसे ब्रसेल्स हत्याकांड के बारे में अखबारों में पढ़ने तक पता ही नहीं था, तो वह बुरी तरह

डरा हुआ होता।
'ज़रूर कोई गड़बड़ हुई है। मैं कभी ब्रुसेल्स नहीं गया।'
'हम वह जानते हैं।'
'यह कैसे हो सकता है...' वह बीच में ही रुक गया। 'तो मुझे आपको हत्या की सही तारीख और समय बताने की भी ज़रूरत नहीं है, ताकि मैं अपना बचाव कर सकूँ। आपको पता होना चाहिए कि इस तस्वीर में मैं नहीं हो सकता। यह महज़ एक संयोग हो सकता है...'
'यह तो वाकई एक अजीब संयोग लगता है, है ना?'
'तुम्हारा क्या मतलब है?' हनी का चेहरा पीला पड़ गया।
रीता को पूरा यकीन था कि हनी सिंह ने झूठ बोलने की कोशिश की थी, लेकिन आखिरकार उसने हार मान ली और सच कबूल कर लिया। उसे इस बात की भी चिंता थी कि अगर हनी सिंह इसमें शामिल नहीं होता, तो विक्रम और उसके ऑफिस आने की खबर हत्यारों तक पहुंच सकती थी और इससे ऐसी घटनाएं हो सकती थीं जो फिलहाल उनके एजेंडे में नहीं थीं। उसके मन में यह ख्याल आया कि अगर हनी सिंह की जान को वाकई कोई खतरा है, तो उसे कुछ करना होगा। उसे कुछ और जानकारी देनी होगी। अगर उससे कोई गलती हो भी जाए, तो वह सावधानी बरतना चाहेगी, वह किसी की जान को खतरे में नहीं डाल सकती थी। उसने तब तक इंतजार किया जब तक हनी सिंह के चेहरे पर थोड़ी रौनक नहीं लौट आई।
'हमें लगता है कि यह एक सोची-समझी साजिश है, संयोग नहीं।' उसने उसके सवालों को रोकने के लिए इशारे किए। 'हमें यह भी लगता है कि यह कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो आपको जानता हो या अच्छी तरह जानता हो—'
'वीर सिंह?'
'शायद हाँ, शायद नहीं। तो अब आप उनके बारे में और क्या बता सकते हैं?'
'जैसा कि मैंने कहा, हम घनिष्ठ मित्र थे। बहुत घनिष्ठ मित्र।' हनी ने इंजीनियरिंग कॉलेज के दिनों से लेकर मुंबई में अपने-अपने व्यवसाय शुरू करने तक की अपनी लंबी दोस्ती का ब्योरा दिया। वीर भी सूचना प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ थे। वीर का कोई परिवार नहीं था, इसलिए वह लगभग हर सप्ताहांत हनी के अपार्टमेंट में समय बिताते थे। वीर की मुलाकात किटी से उनके एक व्यावसायिक संपर्क के माध्यम से हुई थी और बाद में उन्होंने किटी का परिचय हनी से कराया और फिर सब कुछ वहीं से शुरू

हो गया।
'वीर की लंबाई कितनी थी?'
'मुझसे एक इंच छोटा।'
'वजन, रंग, शारीरिक बनावट?'
'लगभग मेरे जैसा ही, हम कॉलेज की बास्केटबॉल टीम में एक साथ थे, एक ही जिम जाते थे, लगभग एक ही मात्रा में व्यायाम करते थे, इसलिए हमारी शारीरिक बनावट स्वाभाविक रूप से तुलनीय थी, जब तक कि पिछले तीन वर्षों में उसमें कोई बदलाव न आया हो।'
और उसका चेहरा?
'ज़ाहिर है, हम एक-दूसरे की हूबहू नकल नहीं थे। हमारे बीच कुछ समानताएँ थीं, या यूँ कहें कि थीं—क्योंकि मुझे नहीं पता कि अब वह कैसा दिखता है—जैसे त्वचा का रंग, थोड़ा नुकीला जबड़ा, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि हमारी जड़ें मिलती-जुलती थीं; हमारे पूर्वज पंजाब के एक ही क्षेत्र से आए थे।'
'क्या कभी किसी ने आपको वीर सिंह समझ लिया या वीर ने आपको? क्या कभी किसी ने ऐसा किया है? कभी?'
'नहीं।'
'अंधेरे में भी नहीं?'
नहीं, कभी नहीं, कम से कम मैं तो नहीं। अगर उसने गलती से भी मुझे समझ लिया होता, तो उसने मुझे कभी बताया ही नहीं। लेकिन मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा। वह ऐसा क्यों करेगा? ठीक है, हमारा ब्रेकअप हो गया था, लेकिन वह अब भी मेरा बहुत करीबी दोस्त था, हम भाई-बहनों की तरह एक-दूसरे को प्यार करते थे। वह ऐसा क्यों करेगा जिससे मुझे दुख हो, वह मुझे क्यों निराश करेगा?
'परिभाषा के अनुसार, केवल वही लोग आपको धोखा दे सकते हैं जिनसे आप प्यार करते हैं या जिन पर आप भरोसा करते हैं। इस बारे में सोचिए। कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आप जानते भी नहीं या जिस पर आपने कभी भरोसा नहीं किया, वह आपको कैसे धोखा दे सकता है? और पुराने दोस्त के धोखे की बात करें तो, इससे भी बुरी घटनाएं हो चुकी हैं, श्री सिंह।'
'आप मुझे हनी कह सकते हैं।'
'नहीं,' रीता मुस्कुराई। 'यकीन मानिए, मुझे आपको मिस्टर सिंह कहने में कोई दिक्कत

नहीं है।'
अगर तुम सन्नी होते तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती, लेकिन मैं किसी को हनी कहकर नहीं बुलाऊँगी? छी!
'तो आपको लगता है कि उसने मुझे फंसाया है या वह मुझे फंसा रहा है?'
'फिर से... शायद हो, शायद न हो। हमारे पास इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं।'
'तो फिर वो मेरा पीछा क्यों करवाएगा? अगर वो मुझे फंसाना चाहता है, तो उसने चोरी और हीरे चुरा लिए हैं और अब तक बच निकला है। अब मेरा पीछा करवाने से उसे क्या फायदा होगा?'
रीता जानती थी कि उसे यहाँ एक सीमा तय करनी होगी। हनी सिंह के जीवन को संभावित खतरे ने शायद उसे पहले से तय जानकारी से अधिक विवरण देने के लिए प्रेरित किया हो, लेकिन अपने पूरे सिद्धांत और अनुमान को विस्तार से बताना उसके एजेंडे में नहीं था। वह अतीत में हुई चोरियों के बारे में और भविष्य में होने वाली चोरियों के बारे में अपनी परिकल्पना को उजागर नहीं करना चाहती थी, भले ही हनी सिंह ही वह व्यक्ति हो जो कबूलनामे के लिए खड़ा है।
'हम ठीक यही स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं, श्री सिंह।'
रीता ने हनी सिंह से किट्टी वर्गीस के बारे में पूछने के बारे में सोचा, लेकिन अंत में यह विचार छोड़ दिया। उसका मॉडल को आगाह करने का कोई इरादा नहीं था। वह नहीं चाहती थी कि हनी या किट्टी को पता चले कि पुलिस ने ब्रुसेल्स में हुई हत्या और भारत में हुई अन्य चोरियों के बीच एक संभावित संबंध का पता लगाया है। अभी तक कोई सबूत नहीं था, केवल अनुमान था। रीता ने यह पता लगाने की कोशिश की कि क्या हनी को कभी किसी और के लिए भी गलत समझा गया था, सिर्फ वीर सिंह के लिए ही नहीं। कुछ नहीं मिला। क्या उसकी पहचान कभी चोरी हुई थी? नहीं। क्या वह कभी क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी जैसी किसी साधारण चीज़ का शिकार हुआ था? नहीं। उसने एक और घंटा छानबीन में बिताया, लेकिन उसे ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे हनी सिंह को दोषी ठहराया जा सके या उसे आगे बढ़ने का कोई सुराग मिल सके। उसने भौंहें थोड़ी ऊपर उठाकर विक्रम की ओर देखा: क्या मुझसे कुछ छूट गया है?
विक्रम ने बस एक मिलीमीटर सिर हिलाया: नहीं।
'ठीक है, श्रीमान सिंह,' रीता खड़ी हो गईं। 'अब हम आपको आपके काम में अकेला

छोड़ देते हैं। अगर आपको कोई ऐसी बात याद आए जिससे हमारी मदद हो सके या कोई असामान्य बात दिखे, तो कृपया हमें फोन कर दीजिएगा।' उन्होंने अपना कार्ड उन्हें दे दिया। विक्रम ने भी हनी सिंह को अपना कार्ड दे दिया। 'और अगर हमें आपसे बात करनी हो तो आपका सबसे अच्छा नंबर क्या है?'

हनी ने ऊपर वाला दराज खोला, दो कार्ड निकाले और दोनों जासूसों को दे दिए। 'मैं हमेशा अपना मोबाइल साथ रखता हूँ।' उसने अपनी मेज पर रखे आईफोन की ओर इशारा किया।

रीटा ने कहा, लिफ्ट में मौजूद उस आदमी के पास ब्लैकबेरी नहीं है।

रीता और विक्रम लिफ्ट से नीचे उतरे और जिप्सी तक पैदल चलकर गए। इमारत के पीछे केवल एक पैदल निकास था जो अगले कार्यालय भवन की ओर जाता था, इसलिए विक्रम को गाड़ी को पूरी तरह से पीछे की ओर निकालने के लिए अपने सभी ड्राइविंग कौशल का इस्तेमाल करना पड़ा क्योंकि स्वैच्छिक जेल में जल्दबाजी में प्रवेश करने वाले लोग बाहर निकलने वालों के प्रति कोई शिष्टाचार दिखाने के इच्छुक नहीं थे।

'मुझे यह मानना मुश्किल लगता है कि हनी सिंह को पता नहीं था कि उनका पीछा किया जा रहा है। उन्होंने पहले झूठ बोला, और फिर उन्हें धुंधला-सा याद आया कि उन्होंने किसी को देखा था। अगर मेरा पीछा इतने लंबे समय से हो रहा होता तो मैं यह भी पता लगा लेती कि कौन, क्यों, कहाँ, क्या? क्या आपको जिज्ञासा नहीं होती, महोदया?'

'अगर मुझे पता होता कि कोई मेरा पीछा कर रहा है, तो मैं वास्तव में काफी चिंतित होता। लेकिन वह कहता है कि जब तक हमने उसे गंभीरता से सोचने के लिए नहीं कहा, तब तक उसे इसका एहसास भी नहीं हुआ।'

शाम का व्यस्त समय शुरू हो चुका था और विक्रम को बांद्रा ईस्ट से बांद्रा वेस्ट पार करके रीता को उसके घर छोड़ने में एक घंटे से अधिक का समय लग गया।

विक्रम को अलविदा कहने से पहले रीता ने धीरे से कहा, 'गलत रास्ते पर बिताया गया हर दिन सही रास्ते से एक दिन दूर ले जाता है।'

19 Nineteen

श्री जोगिंदर राजा उर्फ हैंडलबार, जो कि सर्वश्रेष्ठ अंतर-आकाशगंगा निजी जासूस हैं, देवियों और सज्जनों, ऐसा नहीं कर पाए।

अपने द्वारा निर्धारित चुनौती में सफल होना उसके लिए असंभव था। हनी सिंह का पीछा करने के लिए उसे नियुक्त करने वाले रहस्यमय ग्राहक का पता लगाने की चुनौती ने उसे केवल निराशा में डाल दिया था। उसे एहसास हुआ कि उसके ग्राहक द्वारा इस्तेमाल की गई तकनीक उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक सुरक्षित थी। वीपीएन सुरक्षा कवच अभेद्य प्रतीत हो रहा था। इसके अलावा, डर ने उसके मन को भी झकझोर दिया। ग्राहक ने उसे पहले ही चेतावनी दे दी थी। और उस डीसीपी महिला ने बातचीत में उल्लेख किया था कि किसी न किसी तरह से इससे जुड़ी एक हत्या की जांच चल रही है। क्या होगा यदि ग्राहक वीपीएन सुरक्षा कवच को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैंडलबार के बारे में किसी तरह से जानकारी जुटा लेता है और अपने परिवार के खिलाफ धमकी को अंजाम देने का फैसला कर लेता है? और किसलिए? क्या उसे इस बात की परवाह थी कि ग्राहक कौन है? ग्राहक ने उसे सौंपे गए काम में लापरवाही बरतने के लिए फटकार लगाई थी, जो अपने आप में कोई बड़ी गलती नहीं थी। अधिकांश लोगों की तरह, अपनी अक्षमता पर निराशा व्यक्त करने के बाद उसने अपने ग्राहक की गलती को उचित ठहराया और आगे बढ़ गया। शुक्रवार का दिन था और उसकी अगली रिपोर्ट अगले दिन जमा करनी थी। शुक्र है, पुलिस ने उसे अकेला छोड़ दिया था, इसलिए ग्राहक को अब किसी के द्वारा हनी सिंह का पीछा करने से कोई परेशानी नहीं होगी।

शुक्रवार की सुबह वह अपनी जगह लेने के लिए जल्दी निकल पड़ा था, लेकिन लोखंडवाला के ठीक बाहर उसकी गाड़ी के आगे वाले टायर में पंचर हो गया। अपनी किस्मत को कोसते हुए उसने मदद के लिए पुकारने की कोशिश की, लेकिन आखिरकार उसने पीछा करना छोड़ दिया और खुद ही गाड़ी बदल ली। उसे पता था कि उसके पैंतालीस मिनट बर्बाद हो चुके हैं और हनी सिंह अब तक अपने घर से

दफ्तर के लिए निकल चुका होगा, इसलिए उसने सीधे बीकेसी जाने का फैसला किया। बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स पहुँचते ही उसे पार्किंग में हनी की कार दिखी। यह सोचकर कि उसने पीछा करने का सिर्फ पहला चरण ही गंवाया है, वह थोड़ा आगे एक निजी बैंक की पार्किंग में गया और कार वहीं छोड़ दी। वह कुछ मीटर पीछे चला गया और एक अस्थायी चाय की दुकान पर रखी छोटी सी प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी कुर्सी को पेड़ के विशाल तने के पीछे कर लिया, ऊपरी तौर पर छाया ढूंढने के लिए, लेकिन असल में ऐसी जगह की तलाश में जहाँ से वह छुपकर हनी सिंह के भवन से बाहर निकलने का रास्ता देख सके; उसने मसाला चाय और गोल्ड फ्लेक किंग्स का एक पैकेट मंगवाया और बैठ गया। पिछले कुछ महीनों से यही उसकी दिनचर्या बन चुकी थी। चाय बेचने वाले के पास अखबारों का ढेर लगा रहता था, जिससे वह दोपहर के भोजन तक कुछ घंटों के लिए व्यस्त रहता था। अब तक उसका भेद नहीं खुला था और अब खुलने की कोई चिंता भी नहीं थी। उसका शिकार इतना संभ्रांत था कि वह इस छोटी सी दुकान पर नहीं आता। जब तक कोई उसे ढूंढते हुए दुकान के पास से न गुजरे, तब तक उसकी नज़र उस पर नहीं पड़ेगी। यहाँ तक कि वह तेज़-तर्रार डीसीपी भी अपने पुलिसवाले के साथ एक दिन पहले वहाँ आई थी और उसने देखा था कि वह किसी को ढूंढ रही थी, शायद उसे ही, लेकिन वह चूक गई। उसने शायद उसे उसकी कार में होने की उम्मीद की होगी, लेकिन उसके और उसकी कार के अलग होने के कारण उसकी पैनी नज़र भी उसे नहीं पकड़ पाई। वह एक बार चूक गया होगा, लेकिन वह अब भी सबसे अच्छा जासूस था, है ना? देखो, वह यहाँ भीड़ में कैसे घुलमिल गया है?

हालांकि, उन्हें इस बात की चिंता सता रही थी कि डीसीपी फरेरा की वह महिला हनी सिंह से किसलिए मिलने गई थी। उन्होंने जतिन सिंह को फोन करके पता करने का सोचा था, लेकिन अपनी योजना पर अमल नहीं किया, और अब यहाँ बैठे-बैठे उन्हें यह बात परेशान कर रही थी। उन्होंने मन में ठान लिया कि जब वे अपने मुवक्किल को इस सप्ताह की रिपोर्ट सौंपेंगे, तब उनसे बात करेंगे।

चाय की चुस्की लेते हुए और हर घूंट के बाद अपने रुमाल से अपनी बड़ी मूंछों को थपथपाते हुए, वह 11:15 बजे समाचार पढ़ने के लिए बैठ गया। उसने दिन का पहला कप भी खत्म नहीं किया था कि उसने हनी सिंह को हल्के नीले रंग की टी-शर्ट और गहरे रंग की जींस पहने आते देखा - वह लगभग छह से सात सौ मीटर दूर था,

लेकिन हैंडलबार को यकीन था कि वही उसका लक्ष्य है। दूरी ने उसकी दृष्टि या अपने लक्ष्य को पहचानने की क्षमता को प्रभावित नहीं किया; उसने पिछले सौ दिनों में केवल एक ही व्यक्ति का पीछा किया था। हनी सिंह को नज़रअंदाज़ करना या पहचानने में गलती करना मुश्किल था: इसमें ज़रा भी संदेह नहीं था। अरे, वह तो यह भी जानता था कि श्रीमती लकी सिंह नियमित रूप से किस मंदिर में जाती हैं। वह उस दूधवाले को भी पहचानता था जो हर सुबह उनके अपार्टमेंट में आता था। वह किट्टी वर्गीस के शारीरिक माप या उसके स्विमसूट का साइज़ बिना पलक झपकाए बता सकता था। लक्ष्य को न पहचानना तो नामुमकिन था। 700 मीटर? वह अब हनी सिंह को उसकी शरीर की गंध से भी पहचान सकता था।

हनी सिंह को चुपके से अपनी ही इमारत में घुसते देख हैंडलबार को नई ऊर्जा मिली। उसने अपनी प्याली उलट दी, बची हुई चाय खत्म की और उठ खड़ा हुआ। जेब में लाइटर होने के बावजूद, वह माचिस मांगने के बहाने दुकानदार के पास गया। वह दो मीटर से थोड़ा ही करीब पहुंचा, लेकिन खड़े होते ही उसे और भी साफ दिखाई दिया। यह वाकई हनी सिंह ही था, लेकिन वह टैक्सी से आया था, जिसका मतलब था कि उसने अपनी कार ऑफिस की पार्किंग में छोड़ी थी और कहीं गया था और अब लौट रहा था। उसे गेट से कुछ कदम पहले ही उतार दिया गया था, जिससे हैंडलबार हैरान रह गया। यह तो बस पहली बार था: हनी सिंह ने पहले कभी टैक्सी नहीं ली थी—जब से वह उसे देख रहा था। यह पहली बार था जब हनी सिंह ऑफिस से निकला और आने के तुरंत बाद बाहर चला गया। वह आम तौर पर पूरे दिन ऑफिस में ही रहता था; जितने समय से हैंडलबार उसे देख रहा था, हनी सिंह दिन में सिर्फ पांच बार ऑफिस से बाहर निकला था। आपातकालीन ग्राहक मुलाकातों के दौरान, जब हैंडलबार का अनुमान था कि कोई गंभीर समस्या आ गई है और तुरंत भेजने के लिए कोई कर्मचारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन, किसी जगह पर तुरंत पहुंचने के लिए हनी सिंह टैक्सी क्यों लेंगे, गाड़ी क्यों नहीं चलाएंगे? शायद आज उनकी गाड़ी भी खराब हो गई थी?

उसने अपनी मूंछों के सिरों को बारी-बारी से घुमाया: पहले दायां, फिर बायां: हमेशा इसी क्रम में। अपना सैमसंग फोन निकालकर उसने ज़ूम किया और एक तस्वीर खींच ली।

और मानो ये सारी अनियमित गतिविधियाँ काफी नहीं थीं, हैंडलबार ने देखा कि हनी सिंह गेट पर रुका और चुपके से इधर-उधर देखने लगा, मानो किसी को, किसी चीज़

को खोज रहा हो। क्या उसे किसी ने चेतावनी दी थी कि कोई उसका पीछा कर रहा है? वो कमीनी डीसीपी औरत। पेट में दर्द होने लगा। क्या पता हनी सिंह चाय की दुकान पर जाकर उससे पूछताछ कर ले? इससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात, अगर उसके क्लाइंट को ज़रा भी भनक लग गई, तो उसे तुरंत नौकरी से निकाल दिया जाएगा - इसमें कोई शक नहीं। बड़ी समस्या तब होगी जब क्लाइंट को पता चल जाए कि पुलिस हैंडलबार के संपर्क में है और वही कमीनी पुलिसवाली औरत हनी सिंह को निगरानी की जानकारी दे रही है, तो उसे गंभीर परिणामों के लिए तैयार रहना चाहिए। क्लाइंट शायद वो न करे जो उसने अपने रिश्तेदारों को करने की धमकी दी थी, लेकिन हैंडलबार भी कुछ बदमाशों से भिड़ना और अपनी कुछ हड्डियाँ तुड़वाना नहीं चाहता था। कौन जाने?

उसके विचार फिर से हनी की ओर लौट आए। वह कहाँ से आया था और किससे छिप रहा था? क्या हैंडल बार ने पुलिस की गाड़ी नहीं देखी जो शायद पहले से ही पार्किंग में खड़ी थी? क्या पुलिस आज फिर आई थी? क्या बैंक की इमारत में अपनी कार पार्क करने के लिए तीन मिनट जाने के दौरान वह उसे देख नहीं पाया? धत् तेरे की! उसने मन ही मन बड़बड़ाया। उसने पुलिस के घर आने की बात छुपा दी थी और बच निकला था, और उसका ग्राहक शायद अभी भी इससे अनजान था। उसने उस डीसीपी और उसके पुलिसकर्मी को एक दिन पहले देखा था, लेकिन वह आसानी से अनजान होने का नाटक कर सकता था: उसे नहीं पता था कि कल जो बिना नंबर वाली गाड़ी आई थी वह पुलिस की थी। और अगर उसे पता भी होता तो वह कैसे जान पाता कि इमारत में इतने सारे व्यवसाय होने के कारण पुलिस वास्तव में किसके यहाँ आती है? लेकिन अगर वह डीसीपी महिला आज फिर आसपास थी, तो ग्राहक को किसी तरह पता चल सकता था।

हैंडलबार राजा का दिमाग उलझनों से भरा था, उसके विचार इधर-उधर भटक रहे थे। अगर हनी चाय की दुकान पर आ जाए तो उसे क्या करना चाहिए? सड़क किनारे चाय की दुकान पर बैठना मना तो नहीं था, है ना? फिर भी, कुछ मिनटों तक वह ठीक से सोच नहीं पाया, जब तक उसे यकीन नहीं हो गया कि हनी सिंह का चाय की दुकान पर आने का कोई इरादा नहीं है। हनी सिंह को इमारत में जाते और गायब होते देख उसने राहत की सांस ली। उसने अपना तनाव कम करने के लिए दुकानदार को देखकर मुस्कुरा दिया। अगर दुकानदार ने उससे "क्या हुआ" नहीं पूछा, तो उसके चेहरे पर सब

कुछ ठीक ही होना चाहिए।
हालांकि, यह राहत अल्पकालिक थी।
पांच मिनट से भी कम समय में उसने हनी सिंह को किट्टी वर्गीस के साथ अपनी कार में निकलते देखा। इमारत से निकलते ही उन्होंने बाईं ओर मुड़कर हैंडलबार की दिशा में तेज़ी से गाड़ी चलाई और चाय की दुकान पर खड़े हैंडलबार को मानो अनभिज्ञता ही कर दिया। हैंडलबार के पास उनका पीछा करने का कोई मौका नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि जब तक वह अपनी कार तक पहुँचेगा, तब तक वे दोनों नज़र से ओझल हो चुके होंगे। हनी सिंह की कार उसकी नज़र से ओझल होने के बाद ही उसे कुछ सूझा। हनी सिंह ने नीली टी-शर्ट नहीं पहनी थी। कार की खिड़की से उसकी जींस दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन हनी सिंह ने लाल रंग की चेक शर्ट पहनी हुई थी। उसने कपड़े क्यों बदले? हैंडलबार ने झटपट एक और तस्वीर खींची और सोचने के लिए बैठ गया। यह अजीब था। हनी सिंह कुछ कर रहा था। क्या? वह आज दो बार अपने कार्यालय से क्यों निकला? पहले टैक्सी से, इस बार अपनी कार से। और उसने अपनी शर्ट भी बदल ली? अगर हनी और/या किट्टी को पता था कि उन्हें देखा जा रहा है, तो उन्होंने कुछ नहीं दिखाया। दोनों युवा बिना धीमे हुए या देखे ही चाय वाले के पास से बेफिक्र होकर निकल गए थे। हनी और किटी को ले जा रही कार का पीछा करने से चूक जाने पर उसने अपनी दूसरी चाय मंगाई, एक और सिगरेट जलाई और बैठ गया। हैंडलबार इस जगह पर महीनों बिता चुका था, कुछ और घंटे बिताने में कोई हर्ज नहीं था। उसे यकीन था कि हनी सिंह अभी दिन भर के लिए नहीं गया है और वापस आ जाएगा। इससे उसे सोचने का समय मिल गया।
लेकिन वह विचार-विमर्श नहीं कर सका।
मुंह में आई पहली घूंट की गड़गड़ाहट बिना किसी चेतावनी के झट से बाहर निकल गई। उसने अपना सिर हिलाया। उसने पलकें झपकाईं, अपनी आँखें इतनी कसकर बंद कर लीं कि लगभग पाँच सेकंड तक दर्द होने लगा, फिर उन्हें खोलकर ध्यान केंद्रित किया। क्या वह किसी सम्मोहन में था? क्या चाय बेचने वाला उसकी चाय में कुछ और पत्तियाँ मिला रहा था? उसका दिमाग उसकी आँखों से आ रहे संकेतों को समझ नहीं पा रहा था। हैंडल बार राजा जहाँ बैठा था, उससे कुछ सौ मीटर दूर नीली टी-शर्ट पहने हनी सिंह खड़ा था।
हनी सिंह इमारत से उतनी ही सावधानी से बाहर निकले जितनी सावधानी से कुछ

मिनट पहले अंदर आए थे; वे सहज नहीं लग रहे थे, जो आश्चर्य की बात थी क्योंकि यह उनकी अपनी ऑफिस बिल्डिंग थी। वे डरे हुए और घबराए हुए लग रहे थे, मानो वे यहाँ रहना नहीं चाहते हों। लेकिन वे यहाँ कैसे हो सकते थे, जबकि हैंडलबार ने उन्हें कुछ मिनट पहले ही लाल शर्ट पहने गाड़ी चलाते हुए देखा था? हैंडलबार इमारत के गेट पर नज़र रखे हुए थे और हनी सिंह की कार वापस नहीं लौटी थी। न ही हैंडलबार ने अपने लक्ष्य को वापस आते देखा था, जिसे नज़रअंदाज़ करना लगभग नामुमकिन था।

कैसे कर सकता है...?

हैंडलबार ने झटपट अपना फोन निकाला, ज़ूम करके एक तस्वीर खींची, तभी उसने नीली टी-शर्ट पहने हनी सिंह को एक टैक्सी रोककर बैठते हुए देखा। टैक्सी ने यू-टर्न लिया और विपरीत दिशा में तेज़ी से चली गई।

ऐसा कैसे हो सकता है... और फिर उसका दिमाग थोड़ा सक्रिय हुआ।

उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें कुछ महीने पहले क्यों नियुक्त किया गया था। उनके मुवक्किल को शुरू से ही इस बात का शक था, लेकिन उन्हें पुष्टि की आवश्यकता थी। जो कुछ उन्होंने देखा था, उसके बाद यह बात हैरान करने वाली नहीं थी।

हनी सिंह ने दो रन बनाए।

हैरानी की बात यह थी कि हैंडलबार पिछले कई महीनों से हनी सिंह पर नज़र रख रहा था, फिर भी उसने हूबहू दिखने वाले उस शख्स को पहले क्यों नहीं पहचाना। और अगर वह शख्स हनी के दफ्तर न आया होता, तो शायद आज भी हैंडलबार उसे पहचान न पाता।

गलत।

अगर उसने उन दोनों को एक साथ न देखा होता, तो शायद आज भी उसे पहचान न पाता। एक टैक्सी में आ रहा था, दूसरा गाड़ी चलाकर जा रहा था; दोनों ने अलग-अलग रंग के टॉप पहने थे। क्या इसका मतलब यह था कि उसने उन दोनों को पहले भी देखा था? हो सकता है। बात बस इतनी थी कि उसे पता ही नहीं था कि उसने देखा है। धत् तेरे की! नीले कपड़े वाला आदमी हो सकता है... लेकिन हैंडल बार या कोई और उन दोनों में से दूसरे को कैसे पहचान पाता? क्या होगा अगर दूसरा आदमी रात में किटी से मिलने आता? क्या वह बिस्तर पर सही आदमी को पहचान पाती? चाहे वह इस गंदे ख्याल को कितनी भी साफ-साफ कल्पना कर ले - किटी हनी सिंह

एक या हनी सिंह दो या दोनों के साथ सो रही हो - उसे पता था कि इससे उसके बिल नहीं भरेंगे। बिल भरने के लिए बाद में समय मिल ही जाएगा।

घबराहट में उसे एहसास हुआ कि उसने अपनी आधी जली सिगरेट कप में बची चाय में डाल दी थी और दोनों को फेंक दिया था। उसने दूसरी चाय मंगाई। एक नई सिगरेट जलाई और अखबार के पीछे खुद को छिपाए बिना बैठ गया। उसे घटित हो रही घटनाओं की पूरी जानकारी चाहिए थी। उसे लगा कि यह उसके मुवक्किल के लिए कोई महत्वपूर्ण घटनाक्रम होना चाहिए। उसके मुवक्किल ने उसे अग्रिम भुगतान कर दिया था और अब तक उसने ऐसा क्या किया था जो इतना महत्वपूर्ण हो सकता था? अब तक, वह कभी-कभी सोचता था कि उसका मुवक्किल हनी सिंह पर नज़र रखने के लिए उसे पैसे क्यों दे रहा है। उसने अनुमान लगाया कि उसके मुवक्किल का मकसद हमेशा से यह पुष्टि करना था कि हनी सिंह का दूसरा रूप भी है। वह अपने मुवक्किल को इस बारे में अंधेरे में नहीं रख सकता था और न ही रखेगा, भले ही वह महिला पुलिसकर्मी उससे ऐसा करने को कहे। क्या उसे यह छोटा सा रहस्य उसे बताने की ज़रूरत भी थी? वह जानता था कि उसे बताना ही होगा, क्योंकि उसने पुलिस से हनी का पीछा न करने का वादा किया था। अगर उसने इसे छिपाया, तो पुलिस - अगर और जब उन्हें पता चला - तो उन पर कड़ी कार्रवाई करेगी, है ना? उसे अपनी साप्ताहिक रिपोर्ट को ड्राफ़्ट फ़ोल्डर में रखने से पहले पुलिस से जाँच और संशोधन करवाना पड़ता था। उसके पास आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता यही था कि वह पुलिस को कोई ठोस तर्क दे जिससे वे मान जाएँ और उसे जानकारी आगे भेजने दें। कैसे, यह उसे नहीं पता था।

उसकी चिंता—हनी सिंह दो कौन था?—ज्यादा देर तक नहीं टिकी। उसने मान लिया कि उसका ग्राहक भी यही जानना चाहेगा, और इससे उसका शुरुआती अनुबंध बढ़ सकता है। और ज़्यादा पैसा। शायद, उस बेवकूफ पुलिसवाली के दिमाग में भी यह बात बैठ जाए कि निजी जासूस जोगिंदर राजा ही हनी सिंह दो का पता लगाने के लिए सबसे सही व्यक्ति है। हाँ, उसे उसे इसी तरह मनाना होगा।

वह अभी भी अपने मन के घुमावदार रास्तों पर ही भटक रहा था कि तभी उसे दूर से एक कार दिखाई दी। सफेद होंडा अकॉर्ड। ड्राइवर की झलक देखने से पहले ही उसने कार की नंबर प्लेट देख ली। हनी सिंह - लाल चेक वाली शर्ट पहने हुए - अपने दफ्तर लौट रहा था। किट्टी उसके साथ थी। मतलब: अगर किट्टी कार में थी, तो यह हनी सिंह

की ही कार थी। उसने ज़ूम करके फिर से तस्वीर खींची। समय था दोपहर 3:14। हैंडलबार ने भी यह बात नोट कर ली।
किट्टी ने हनी सिंह को ऑफिस में छोड़ा और शाम 4:03 बजे अपनी अकॉर्ड कार में बैठकर चली गई।
दिन के बाकी समय में कुछ खास नहीं हुआ। हैंडलबार ने दिन भर में आठ बार चाय पी, दो पैकेट सिगरेट पी और दो सैंडविच खाए। किटी अपने प्रेमी को लेने 6:54 बजे वापस आई। हैंडलबार उन दोनों के पीछे किटी के घर गया और दिन भर के लिए निकल गया। उसे नौकरी करते हुए इतना समय हो गया था कि वह जानता था कि शुक्रवार की रात होने के कारण हनी सिंह शायद वहीं रुकेगा। दोपहर के बीच में उसने जो अश्लील कल्पना की थी, वह उस पर ही भारी पड़ गई। काश उसके क्लाइंट ने उसे उन दोनों को करीब से देखने के लिए कहा होता। वह सबसे पहला कैमरा किटी के बेडरूम में लगाता। उसकी ताक-झांक करने वाली सोच, बॉलीवुड की घटिया फिल्मों के डायलॉग और आइटम नंबर गुनगुनाने की उसकी मनमुटाव तब तक खत्म नहीं हुई जब तक वह वर्सोवा से लोखंडवाला होते हुए अपनी बिल्डिंग में नहीं पहुँच गया।

***

उसी रात खाने पर, श्री राजा ने श्रीमती राजा से अपनी निराशा के बारे में बड़े जोश से बात की। उन्होंने दो हनी सिंहों के पकड़े जाने और अपने मुवक्किल और पुलिस को क्या छिपाना है और क्या बताना है, इस दुविधा के बारे में विस्तार से बताया। अपने गुप्त मुवक्किल द्वारा दी गई धमकी की गंभीरता को स्पष्ट किए बिना, उन्होंने श्रीमती राजा को बताया कि मुवक्किल ने उन्हें पहले ही उस चालाक महिला पुलिसकर्मी द्वारा लगाए गए अन्य निगरानी उपकरणों को नज़रअंदाज़ करने के बारे में चेतावनी दी थी। एक और गलती और सबसे अच्छी स्थिति यह थी कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा; सबसे बुरी स्थिति का ख्याल भी सुखद नहीं था। इसके विपरीत, अगर उन्होंने मुवक्किल के सामने भेद खोल दिया, तो पुलिस को भी पता चल जाएगा।
'जोगिंदर जी, आपको पुलिस को इस धमकी के बारे में बताना चाहिए...'
'क्यों?'
'पुलिस को आपकी मदद करने के लिए सब कुछ जानना ज़रूरी है। सच कहूँ तो, आपको दोनों में से किसी से भी कुछ नहीं छिपाना चाहिए क्योंकि हो सकता है कि आपके मुवक्किल को किसी न किसी तरह से यह बात पता चल जाए। मैं आपको

मुवक्किल को नाराज़ करने का जोखिम नहीं उठाने दे सकता। और उनके साथ न्याय करते हुए, अगर वे इतने लंबे समय से हमारे बिलों का भुगतान कर रहे हैं, तो यह उचित ही है कि आप उन्हें जो भी जानकारी मिली है, उसकी रिपोर्ट करें। मुझे लगता है कि अगर आप यह बात डीसीपी फेरेरा को समझाएँगी, तो वह आपकी स्थिति को समझ जाएँगी। वह एक समझदार महिला लगती हैं।'
'वह तो बेवकूफ औरत है! अगर वह हमारी बात न माने तो क्या होगा?'
'उससे पूछो, उसे बताओ मत।'
'उससे पूछो...' उसने चिढ़कर कहा। 'अगर मैं पुलिस को दिखाने के बाद ग्राहक की रिपोर्ट में सुधार कर दूं तो क्या होगा? पुलिस को कैसे पता चलेगा?'
'पुलिस से इसे छिपाने का क्या फायदा?'
'क्योंकि अगर मैं अपने ग्राहक के प्रति वफादार रहूँगी तो हमें और अधिक व्यवसाय मिल सकता है, मेरी प्यारी।'
'लेकिन क्या होगा अगर दूसरा हनी सिंह ही वह संदिग्ध हो जिसकी तलाश आपका मुवक्किल और पुलिस दोनों कर रहे हों?'
'इसलिए?'
'तो फिर उसे पुलिस को नहीं बल्कि अपने उस मुवक्किल को सौंपने में क्या फायदा है जिसे आप जानते भी नहीं?' हैंडलबार चुप रहा।
'अगर आप आज जो कुछ देखा उसे नजरअंदाज कर दें तो क्या होगा?' श्रीमती राजा ने पूछा।
'खतरा यह है कि अगर क्लाइंट की कहीं और कोई दूसरी टीम हो और वे उसे बता दें, तो हम बर्बाद हो जाएंगे। हम ऐसा नहीं कर सकते।'
'आपको इस बारे में कब फैसला लेना है?' श्रीमती राजा ने एक और सवाल पूछा।
'खैर, अभी फैसला लेने की जरूरत नहीं है। ऐसा तो है नहीं कि मुझे आज रात ही रिपोर्ट लिखनी है। मुझे थोड़ा सोचने दो। मुझे यकीन है कि सुबह तक कुछ और विचार आ जाएंगे।' हैंडल बार ने अपनी पत्नी के सवालों के जवाब देते हुए खुशी-खुशी बातचीत खत्म की। उसे यह भी पता था कि आज रात उसके दिमाग में चल रहे बुरे विचार उसे एक पल भी सोने नहीं देंगे। अगर उसके मुवक्किल की धमकी, उस बदतमीज पुलिसवाली और उसके चमचे, और उन दोनों हनी सिंहों की वजह से उसे थोड़ी देर के लिए भी नींद नहीं आई, तो मसालेदार किट्टी वर्गीज तो उसे हर तरह से

जगाए रखेगी।

Twenty

शनिवार, 15 अगस्त: भारत को जन्मदिन की शुभकामनाएं। रीता सुबह उठते ही बहुत खुश थी। ऐश वापस लौट रहा था।

आज रात दिल्ली। मुंबई की अपनी पिछली यात्रा के विपरीत, उसने सप्ताहांत रीता के साथ बिताने और सोमवार दोपहर को लंदन के लिए रवाना होने की योजना बनाई थी। ऐसा नहीं था कि उसका घर गंदा या अव्यवस्थित था, फिर भी उसने सब कुछ ठीक-ठाक है या नहीं, यह जाँच कर ली। उसने तौलियों का एक सेट निकाला और मुस्कुराते हुए सोचा कि क्या उन्हें अतिथि बाथरूम में रख देना चाहिए, लेकिन फिर उसने ऐसा न करने का फैसला किया। कभी-कभी उसकी हल्की-फुल्की अश्लील टिप्पणियों के बावजूद - 'सेक्सी' शब्द का प्रयोग तो उसने निश्चित रूप से व्यंजना के विपरीत, अपशब्द के रूप में किया होगा, उसने सोचा - ऐश एक बहुत अच्छा दोस्त था। रीता उसे पसंद करती थी क्योंकि उसकी संगति अच्छी थी, सेक्स अद्भुत था और उनका रिश्ता पूरी तरह से निःशर्त था। कोई अपेक्षा नहीं। कोई ईर्ष्या नहीं। उसने कभी नहीं पूछा कि क्या उसकी अनुपस्थिति में रीता किसी से मिली थी। इसका मतलब यह नहीं था कि उसे परवाह नहीं थी, लेकिन कुछ अन्य लड़कों की तरह ऐसी छोटी-मोटी बातें उसे परेशान नहीं करती थीं।

ऐश से मिलने से पहले दिन भर उसके शरीर पर कालिख जमती रहेगी, इस बात को ध्यान में रखते हुए उसने नहाने में थोड़ा ज़्यादा समय लगाया, पर कोई बात नहीं! उसने क्लिनिक हैप्पी परफ्यूम ज़रूरत से ज़्यादा लगाया, फिर अपनी रोज़ाना की जींस और शर्ट पहनी, जिसमें स्मिथ एंड वेसन पिस्टल कमरबंद में थी और ऊपर से उसे ढकने के लिए एक बुंडी भी थी। घर से निकलने से पहले उसने शाम के लिए एक काली ड्रेस चुनी थी, उसे निकाला और उसे ऐसे "हैलो" कहा जैसे उसे कुछ समय से न पहनने से बेचारी नाराज़ हो गई हो। और उसने स्टिलेटो हील्स पहनना नहीं भूला: क्या

उनका एकमात्र उद्देश्य आदम से हव्वा को थोड़ा छोटा बनाने के ईश्वर के डिज़ाइन को पूरा करना नहीं था? वह मुस्कुराई।
विक्रम ने पहले ही फोन कर दिया था और जब रीता बाहर निकली तो वह पहले से ही इमारत के गेट के बाहर इंतजार कर रहा था।
टीम ने एक दिन पहले ही तय कर लिया था कि मिस किट्टी वर्गीस से मिलने का समय आ गया है। कोलोन से ब्रुसेल्स की दूरी लगभग 225 किलोमीटर थी। यूरोप के अच्छे राजमार्गों और जर्मनी में उपलब्ध तेज़ रफ़्तार कारों को ध्यान में रखते हुए, अगर कोई बिना रुके गाड़ी चलाए, तो यह दूरी आराम से तीन घंटे से कुछ ज़्यादा समय में तय की जा सकती थी। आने-जाने में लगभग सात घंटे। यह निश्चित रूप से संभव था, लेकिन उन्हें ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि जतिन ने यह सुनिश्चित कर लिया था कि किट्टी वर्गीस कोलोन में जितने दिन रहीं, उतने दिनों में वह गायब नहीं हुई थीं। ज़ाहिर है, वह किसी के साथ कमरा साझा नहीं करती थीं - कम से कम अपने पद के हिसाब से तो नहीं, वह एक मॉडल थीं, कोई जूनियर मेकअप असिस्टेंट नहीं - लेकिन रिहर्सल और फ़ैशन शो के दौरान वह दिन भर किसी न किसी के साथ रहती थीं। किसी को भी याद नहीं था कि किट्टी लगातार सात घंटे के लिए गायब हुई हों। इसकी पुष्टि के लिए, जतिन ने ब्रुसेल्स में विक्टर से संपर्क किया, जिन्होंने बदले में शहर और उसके आसपास के सभी कार रेंटल की जाँच की। किट्टी वर्गीस नाम की किसी भी महिला या किसी भी भारतीय महिला को कोई कार किराए पर नहीं दी गई थी। उन्होंने यह भी पता लगाने की कोशिश की कि क्या किसी होटल की टैक्सी को विदेश यात्रा के लिए किराए पर लिया गया था, लेकिन कुछ भी पता नहीं चला। उस मार्ग पर चलने वाली ट्रेनों और बसों से उस अवधि के यात्रियों का रिकॉर्ड जमा करने को कहा गया था। उन्हें भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं मिली।
जब कोई नई जानकारी सामने नहीं आई, तो वीर सिंह के बारे में किट्टी वर्गीज से मिलना जरूरी था, ताकि उनका पक्ष भी जाना जा सके, क्योंकि कुछ अनसुलझे पहलुओं को सुलझाना आवश्यक था।

***

वर्सोवा में अपार्टमेंट बिल्डिंग के बाहर कार पार्क करने के बाद जब विक्रम ने अंदर प्रवेश किया तो गेट पर तैनात चौकीदार ने पुलिस बैज दिखाकर कोई आपत्ति नहीं जताई।

किट्टी वर्गीज तस्वीरों से भी कहीं ज़्यादा खूबसूरत थीं। उनकी दमकती त्वचा, कांस्य रंगत, निर्मल तालाब जैसी बड़ी-बड़ी आंखें, लंबी पलकें और हल्का सा, लेकिन लगभग स्वाभाविक सा पाउट। बालों को लापरवाही से फ्रेंच बन में बांधा गया था, जिसे एक हेयर क्लिप से टिकाया गया था। लंबे, सुडौल पैर। उन्होंने हल्के गुलाबी रंग की रेशमी-सैटिन जैसी शर्ट पहनी थी - कंधों पर एपॉलेट्स, बटन वाली पैच पॉकेट - जो उनके घुटनों से कुछ इंच ऊपर थी और वह उसमें पूरी तरह सहज थीं। वह महिला अद्वितीय कामुकता बिखेर रही थीं। और यह बिना किसी मेकअप के था। जी हां, किट्टी वर्गीज एक मॉडल थीं: कैटवॉक मॉडल और क्लोज-अप मॉडल।

'नमस्कार, मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?' उसने दरवाजा खोलते हुए पूछा, जब उसने रीता और विक्रम को बिना बताए आते देखा। उसकी आवाज़ भारी थी। बल्कि, किट्टी वर्गीस की आवाज़ मोहक थी। अगर कोई बेचारा उसकी खूबसूरती और अदाओं से बच भी जाता, तो उसकी आवाज़ उसे ज़रूर अपनी गिरफ्त में ले लेती। भगवान के राज्य में तो दृष्टिहीन भी ऐसी मोहक स्त्री से अछूते नहीं थे।

बेचारा विक्रम।

रीता ने पहले विक्रम का परिचय कराया और खुद को समझाया कि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि यह एक नियमित पूछताछ है।

'क्या आप वही हैं जो कल हनी से मिले थे?'

रीता को पूरी उम्मीद थी कि उसे हनी सिंह के यहाँ उनके आने के बारे में एक दिन पहले ही पता चल गया होगा। शुक्र है, किटी में इतनी अक्ल थी कि उसने अनजान होने का नाटक नहीं किया। 'अंदर आ जाओ,' उसने कहा और उनके लिए दरवाज़ा खोल दिया।

ऐसा लग रहा था कि किट्टी ने हाल ही में खूब कपड़े खरीदे थे। या फिर शो के आयोजकों ने उसे ढेर सारे कपड़े ट्राई करने के लिए भेजे थे। वे सब इधर-उधर बिखरे पड़े थे। ड्रेस, अंडरवियर, जूते, स्टॉकिंग्स, गार्टर्स, स्कार्फ। इनमें से कुछ कपड़े किट्टी की तरह ही आकर्षक थे।

किट्टी नंगे पैर थी। वह सोफे पर धंस गई और एक ही झटके में अपने पैरों को मोड़ लिया - लचीली और सुंदर - अपनी बेदाग मॉडल जैसी त्वचा का थोड़ा और प्रदर्शन करते हुए, जबकि रीता और विक्रम सामने वाले सोफे पर बैठे थे।

'हम यहां सिर्फ कुछ सवाल पूछने आए हैं मिस वर्गीज... क्या मैं आपको किट्टी कहकर

बुला सकता हूँ?'
'बेशक, सब मुझे इसी नाम से बुलाते हैं। क्या मैं आप दोनों के लिए कुछ पीने के लिए लाऊं? चाय, कॉफी या कोक?'
'अगर तुम भी लोगे तो ही,' रीता ने विक्रम की ओर देखते हुए जवाब दिया, कहीं उसे कोई आपत्ति न हो। लेकिन उसके चेहरे पर कोई आपत्ति नहीं दिखी। उसके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि अगर किटी उसे पोटेशियम साइनाइड पीने को कहे तो वह खुशी-खुशी पी लेगा।
'मैं कॉफ़ी पीने ही वाली थी। केतली में पानी उबल गया है। मुझे एक मिनट दीजिए।' वह उठी और लगभग बिल्ली की तरह चाल चलते हुए लिविंग रूम से बाहर निकल गई। बिल्ली जैसी अदा। रीटा को लगा कि रैंप पर सालों चलने से यह उसकी आदत बन गई थी। उसने चारों ओर देखा। अपार्टमेंट आलीशान था। लिविंग रूम में इटैलियन मार्बल का फर्श था; दीवारें किटी की मॉडलिंग की बड़ी-बड़ी तस्वीरों से सजी थीं। अगर आप किटी वर्गीज हैं, तो आपको अपनी दीवारों को सजाने के लिए मोना लिसा की ज़रूरत नहीं है। एक कोने में एक अलमारी थी जिस पर हनी के साथ किटी की एक तस्वीर फ्रेम में लगी थी। उनके बच्चे वाकई बेहद खूबसूरत होंगे।
कॉफी वाकई बहुत अच्छी थी। गरम और गाढ़ी। सिर्फ विक्रम ने उसमें दूध और चीनी मिलाई थी।
'मैं आपकी कैसे मदद कर सकती हूँ?' किट्टी ने फिर पूछा।
रीटा ने लिफ्ट से ली गई वह अनौपचारिक तस्वीर निकाली और किटी को दे दी, जिसने उसे मुश्किल से एक मिनट तक देखा।
'इसके बारे में क्या है?'
'क्या आप तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति को पहचानते हैं?'
'यह शहद है।'
'ज़रूर?'
'बिल्कुल, सौ प्रतिशत। मुझसे गलती कैसे हो सकती है?'
'क्या आप बता सकते हैं कि यह तस्वीर कहाँ ली गई थी?'
किट्टी ने तस्वीर पर दोबारा नजर डाली, लेकिन सिर हिलाकर कहा, 'पक्का नहीं।'
'इसे फिर से देखो, किटी। क्या कोई संभावना है कि यह तुम्हारा पुराना दोस्त वीर सिंह हो?'

वीर सिंह का नाम सुनते ही किटी की आँखों में हल्की सी घबराहट झलक उठी: शायद डर या बेचैनी का संकेत। ऐसा इसलिए भी हो सकता था क्योंकि किटी को लगता था कि रीता को कुछ पता है, या फिर यह महज़ चिंता हो सकती थी क्योंकि हनी सिंह ने उसे पुलिस के सवालों के बारे में एक दिन पहले ही बताया होगा। इसे समझने का कोई सटीक तरीका नहीं था। लेकिन घबराहट थी और किटी ने इसे महसूस किया। उसने तिरछी नज़र से विक्रम को देखा जो घटना को लिख रहा था। किटी घबराई हुई लग रही थी।

'क्या आप हमें कुछ बताना चाहेंगी, किटी?'

'आप मुझसे क्या उम्मीद कर रहे हैं?'

'कुछ भी। हमें वीर सिंह को ढूंढना होगा ताकि उसे हमारी जांच से बाहर किया जा सके।'

'हत्या की जांच?'

यह स्पष्ट था कि हनी सिंह ने उससे बात की थी। और वह क्यों नहीं करता? शायद उसे उम्मीद थी कि पुलिस किट्टी से पूछताछ करेगी या शायद यह उसकी प्रेमिका के साथ एक सामान्य बातचीत थी: पुलिस तो हर दिन पूछताछ करने नहीं आती। और वीर सिंह उनका साझा मित्र था, इसलिए अगर उसने बात न की होती तो संदेह होता। इसके अलावा, रीता और विक्रम ने हनी सिंह को अपनी प्रेमिका या किसी और से बात न करने के लिए नहीं कहा था।

'जी हां,' रीता ने जवाब दिया। 'क्या आपको पता है कि हम वीर सिंह को कहां ढूंढ सकते हैं?'

'जहां तक मुझे पता है, वह कई साल पहले अमेरिका चले गए थे।'

आप उसे कितना जानते थे?

'आपका क्या मतलब है?'

मामला वैसा नहीं था जैसा सतह पर दिख रहा था।

किट्टी देखने और सुनने में दोषी लग रही थी, मानो कोई बिल्ली का बच्चा अपनी मूंछों में दूध फंसा हुआ पकड़ा गया हो।

'अच्छा, क्या वीर सिंह और आप हनी का परिचय कराने से पहले दोस्त नहीं थे, क्या मैं सही कह रहा हूँ?'

'आप सही कह रहे हैं। वीर से मेरी मुलाकात उस विज्ञापन एजेंसी के ज़रिए हुई थी

जिसमें मैं उस समय काम कर रहा था। वह वेबसाइट से जुड़े किसी काम के लिए आए थे - वह बेहद कुशल थे, शायद कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर के मामले में हनी जितने ही अच्छे। जी हां, वीर ने ही कुछ महीनों बाद मुझे हनी से मिलवाया था।'
'और फिर हनी और वीर के बीच गलतफहमी हो गई और जाहिर सी बात है कि तुमने हनी का साथ दिया, और समय के साथ वीर के विदेश चले जाने के बाद तुम्हारे सभी दोस्तों का उससे संपर्क टूट गया,' रीटा ने आगे बताया।
'एकदम सही।'
'तो तुम मुझसे क्या छुपा रही हो, किटी?' रीता अब उसी कहानी को बार-बार सुनकर परेशान हो रही थी, जिसे उसने पहले विक्रम द्वारा की गई जांच में सुना था और फिर किटी के सामने श्रीमती लकी सिंह और हनी सिंह ने उसे अलग-अलग शब्दों में बताया था।
'इसका क्या मतलब है?'
'इसमें कुछ और भी है जो तुम मुझे नहीं बता रहे हो। वो क्या है?'
'वीर के साथ मेरा एक छोटा सा अफेयर था। क्या आप यही जानना चाहते हैं? लेकिन हमें जल्दी ही एहसास हो गया कि हम एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं और हमने दोस्त बने रहने का फैसला किया। जैसा कि मैंने आपको बताया, उसी ने मुझे हनी से मिलवाया था...'
तो यह महज एक आकस्मिक रिश्ता नहीं था। किट्टी वर्गीज का वास्तव में एक ऐसे व्यक्ति के साथ अफेयर था जो कथित तौर पर लापता था।
उन्हें वीर सिंह से अब बात करने की सख्त जरूरत थी, कम से कम उन्हें दोषमुक्त करने के लिए ही सही।
'अगर आपको बताने में कोई आपत्ति न हो तो, वह असंगति क्या थी?'
'उन्हें मेरे करियर का चुनाव पसंद नहीं था। उन्हें लगता था कि मॉडलिंग कोई "सभ्य" पेशा नहीं है, जिसमें इतनी यात्रा करनी पड़ती है और दर्शकों और कैमरे के सामने छोटे कपड़े पहनने पड़ते हैं। और मैं हार नहीं मानना चाहती थी। खासकर इसलिए क्योंकि मुझे नहीं लगता कि मैं कुछ और कर सकती हूँ।'
ठीक है। यह समझना आसान है कि उनका ब्रेकअप इतनी जल्दी क्यों हुआ। हालांकि, वीर सिंह के गायब होने से उसकी कहानी की सच्चाई जानने का कोई तरीका नहीं था। और अगर वे उसे ढूंढ भी लेते, तो महिलाओं के करियर विकल्पों पर उसकी राय पूछने

से पहले कई सवाल पूछने पड़ते। ठेठ पुरुषवादी सोच। महिलाओं की नैतिकता के रक्षक। दूसरी लड़कियों को खुलेआम कपड़े पहने देखने में कोई आपत्ति नहीं, लेकिन अपनी महिलाओं को लिबास में रखना चाहते हैं। वीर का वाकई नुकसान हुआ। किट्टी वर्गीज तो आईफोन की तरह थी: उसके चाहने वालों की कोई कमी नहीं थी।
'क्या हनी सिंह को पता था कि तुम्हारा वीर के साथ अफेयर था?'
'नहीं।'
'क्या अब उसे यह बात पता है?'
'नहीं। क्या तुम उसे बताओगी?' किटी ने भावहीन चेहरे से पूछा।
'इस साल अप्रैल के पहले सप्ताह में तुम कहाँ थी?' रीटा ने सवाल को अनसुना कर दिया। वह किसी से भी कुछ भी वादा करने की आदी नहीं थी, और निश्चित रूप से पूरी सच्चाई जाने बिना तो बिल्कुल नहीं।
'यह तो आसान है। मैं विदेश में थी, एक फैशन शो के लिए कोलोन में थी।'
क्यों?'
'सिर्फ हमारे रिकॉर्ड के लिए।'
'अब आप मुझसे क्या छिपा रहे हैं?'
'बहुत कुछ। किटी, तुम्हें समझना होगा कि मुझे तुम्हारी ज़िंदगी के बारे में जानने का कोई निजी मकसद नहीं है। मैं इस समय एक से ज़्यादा अपराधों की जाँच कर रहा हूँ और मैं चाहकर भी तुम्हें सब कुछ नहीं बता सकता। इसलिए बेहतर होगा कि तुम मेरे सवालों के जवाब दो। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे सवालों के जवाब यथासंभव दूँगा। क्या हम सहमत हैं?'
'ठीक है।'
'क्या आप काम के सिलसिले में काफी यात्रा करते हैं?' रीटा को इसका जवाब पता था।
'बहुत थोड़ा।'
'क्या हमेशा विदेश में ही विदेशी जगहों पर जाना होता है?' रीटा को इस सवाल का जवाब भी पता था।
'नहीं। असल में ज्यादातर भारत के भीतर ही।'
'तो क्या आपके पास पिछले एक या दो वर्षों में की गई सभी आधिकारिक यात्राओं का रिकॉर्ड है?' रीता को किटी से विशेष रूप से दिल्ली यात्रा का विवरण चाहिए था,

लेकिन वह इसके लिए पूछना नहीं चाहती थी।
'वह किसके लिए है?'
'जैसा कि मैंने कहा, हम इस समय एक से अधिक घटनाओं की जांच कर रहे हैं, इसलिए यह केवल एक नियमित पूछताछ है।'
'क्या मुझे चिंतित होना चाहिए?'
'नहीं, अगर आपने कुछ गलत नहीं किया है।'
'क्या आप... ज़रा रुकिए।' किटी सीधी खड़ी हुई और थोड़ी उत्तेजित हो गई। 'क्या आप यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि मैं अब भी वीर सिंह के साथ डेटिंग कर रही हूँ और सिर्फ़ उससे मिलने के लिए ही घूमती रहती हूँ और उससे अपनी मुलाक़ातें छुपाती हूँ?'
'मुझे इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि आप किससे डेट करते हैं। मैं वीर सिंह से मिलना चाहती हूं, लेकिन आपके प्रेम जीवन की जांच करने के लिए आपके यात्रा रिकॉर्ड की आवश्यकता नहीं है।'
'क्या मुझे वकील की आवश्यकता है?'
'किटी, तुम टीवी पर बहुत ज्यादा अमेरिकी कानूनी ड्रामा देख रही हो। अगर मुझे तुमसे पूछताछ करनी हो तो मैं बत्ती और सायरन लेकर यहाँ आ सकती हूँ और कोई वकील तुम्हारी मदद नहीं कर पाएगा। यह मुंबई है और मैं कांस्टेबल नहीं हूँ। मैं क्राइम ब्रांच में डीसीपी हूँ।' रीता ने अपनी आवाज़ ऊँची नहीं की, लेकिन उसकी धमकी भरी बातें संदेश देने के लिए काफी थीं।
'मेरे अधिकार हैं।'
'यह बैठक समाप्त हो गई है। विक्रम, चलो चलते हैं।'
विक्रम ने अपना पर्दा बंद किया और तुरंत उठ गया।
'रुको। तुम्हारा क्या मतलब है?'
'मैं आपको लेने के लिए पुलिस वैन भेजूंगा और हम पुलिस स्टेशन में बात करेंगे। कॉफी के लिए धन्यवाद।'
'आपका मतलब सचमुच ऐसा नहीं है।'
'मुझे आजमा कर देखो। मैं असाधारण रूप से धैर्यवान और विनम्र रहा हूँ, लेकिन मुझे बिना किसी और उलझन के सच्चाई चाहिए। तुम्हें लगता है कि तुम्हारे अधिकार हैं, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मेरे क्या अधिकार हैं।'

'ठीक है, ठीक है... मुझे माफ़ करना मैंने ज़्यादा प्रतिक्रिया दे दी। कृपया शांत हो जाओ, रीटा। मैं जल्द से जल्द सारे यात्रा रिकॉर्ड ढूंढकर तुम्हें भेज दूंगी।' रीटा के अचानक भड़कने से किटी का चेहरा पीला पड़ गया। रीटा पहले तो बेहद विनम्र थी, लेकिन अब वह किसी दंभी शेरनी की तरह लग रही थी। बहुत कम लोगों में इतनी हिम्मत होती है कि वे उसका सामना कर सकें।
'मुझे सोमवार सुबह तक सारे रिकॉर्ड मेरे डेस्क पर चाहिए। कृपया अब और मेरी सहनशीलता की परीक्षा न लें।'
'लेकिन तुम्हें वादा करना होगा कि तुम हनी को नहीं बताओगे कि मेरा कभी वीर के साथ अफेयर था।'
'जब तक यह मेरी जांच का हिस्सा नहीं है, और आपको यह नहीं पता कि वीर सिंह इस समय कहां है, तब तक मैं अनावश्यक रूप से कोई जानकारी नहीं देने वाला हूं।'
'मैं कसम खाती हूँ कि हनी और वीर के ब्रेकअप के बाद से मैंने उसे नहीं देखा है।'
किटी अब लगभग गिड़गिड़ा रही थी।
'मुझे मत बताओ। मुझे परवाह नहीं है। मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि वीर सिंह अभी कहां है, और अगर आपको सच में नहीं पता तो आपको बिल्कुल भी चिंता नहीं करनी चाहिए।'
'क्या आपको सच में लगता है कि वीर हत्या के लिए जिम्मेदार हो सकता है?'
'मैंने ऐसा नहीं कहा। जहां तक मेरी संदिग्धों की सूची का सवाल है, जब तक यह मामला बंद नहीं हो जाता, तब तक हर कोई संदिग्ध है।'
'वीर ऐसा क्यों करेगा?'
'बदला लेने के लिए? या हनी को फंसाकर उससे बदला लेने के लिए और साथ ही लाखों रुपये कमाने के लिए। या शायद उसे परवाह ही नहीं है...'
'वह ऐसा नहीं करेगा।'
'हम उसे ढूंढकर उससे बात करने के बाद उसे निर्दोष साबित कर देंगे। हालांकि मैं आपकी बात पर विश्वास करना चाहता हूं, लेकिन मैं वीर की तलाश नहीं रोक रहा हूं।'
किट्टी थोड़ी डरी हुई थी, थोड़ी बेचैन भी, लेकिन रीता जानती थी कि उसने जिस तरह से उसके साथ सख्ती बरती थी, उससे किट्टी के यात्रा रिकॉर्ड सोमवार तक मिल जाएंगे। ज़रूरत से ज़्यादा समय न बिताते हुए, रीता और विक्रम ने अलविदा कहा और चले गए।

क्या किट्टी भी इसमें शामिल थी? वह कैसे शामिल हो सकती थी? हो सकता है कि वह सीधे तौर पर शामिल न हो, लेकिन रीटा को अंदर से महसूस हो रहा था कि वह भी पूरी तरह निर्दोष नहीं थी।
वीर सिंह का पता न चल पाना चिंता का विषय था।
हो सकता है कि वह अमेरिका चला गया हो और फिर कभी पीछे मुड़कर न देखा हो।
हो सकता है कि उन्होंने कभी अमेरिकी दूतावास का दौरा ही न किया हो।
क्रॉफर्ड मार्केट स्थित मुख्यालय की ओर जाते हुए रीता ने कहा, 'हमारे पास अनुमानित तारीखें हैं, विक्रम। क्या आप कमिश्नर के पीए से आव्रजन अधिकारियों को फोन करने के लिए कह सकते हैं? वीर सिंह के देश से बाहर जाने का रिकॉर्ड तो होना ही चाहिए।'
'हां मैम।'

21 Twenty-One

जतिन ने पूरी कोशिश की, लेकिन वह यह पता नहीं लगा सका कि मुंबई में हुई पिछली दो चोरियों से पहले हनी सिंह का किसी ने पीछा किया था या नहीं।

दिल्ली। हैंडलबार ने तो ऐसा बिल्कुल नहीं किया था। वह कितने निजी जासूसों से संपर्क कर सकता था? पूछताछ भी कोई खास मददगार नहीं थी; इतना समय बीत चुका था कि किसी भी राहगीर को किसी के पीछा करने की कोई बात याद नहीं थी। हनी सिंह ने तो बेशक इससे इनकार कर दिया था। जाँच करने के और कोई रास्ते नहीं थे।
खैर, रीता और उनकी टीम के पास तीनों घटनाओं को जोड़ने वाला बाहरी सूत्र ही था; उनके पास कोई प्रत्यक्ष सबूत नहीं था, अप्रत्यक्ष सबूत भी नहीं। यह पूरी तरह संभव था कि ये तीनों घटनाएं अलग-अलग और एक-दूसरे से असंबंधित थीं। या हो सकता है कि इनमें से कोई दो घटनाएं आपस में जुड़ी हों जबकि तीसरी घटना अपने आप में

एक अलग घटना हो। उन्हें पता था कि दिल्ली में हुई चोरी के समय किट्टी वर्गीज दिल्ली में थी और मुंबई में हुई चोरी के समय मुंबई में थी, जिसकी पुष्टि उसके यात्रा रिकॉर्ड से हो जाएगी जो वह सोमवार को भेजेगी। और जब रॉन जोगानी की हत्या हुई, तब वह ब्रसेल्स से 200 किलोमीटर से अधिक दूर थी - ब्रसेल्स में नहीं। तो अगर वह किसी तरह से इसमें शामिल भी थी, तो इससे हनी सिंह कैसे दोषी साबित होता है? अगर वह सह-अपराधी थी, तो फिर इस पूरे मामले का सूत्रधार कौन था?

'अगर हनी सिंह कभी देश से बाहर नहीं गए, तो ब्रुसेल्स के होटल में लिफ्ट के पास उनकी तस्वीर कैसे आ गई?' रीता ने झुंझलाहट भरे लहजे में कहा।

रीता, विक्रम, जतिन और नेने - ये चारों लोग रीता और विक्रम के किटी के साथ सुबह की मीटिंग से लौटने के बाद से ही तरह-तरह के सिद्धांतों पर चर्चा कर रहे थे। खाने-पीने की चीजों के मामले में नेने पर हमेशा भरोसा किया जा सकता था - उसे सबसे अच्छे स्थानीय स्ट्रीट फूड की दुकानों की जानकारी थी। टीम के लिए लाया गया लाल लहसुन की चटनी वाला वड़ा पाव इतना स्वादिष्ट था कि वजन के हिसाब से यह दिमाग को जगाए रखने में कॉफी से भी बेहतर था।

'हम यहां कुछ बेहद महत्वपूर्ण चीज को नजरअंदाज कर रहे हैं, दोस्तों।'

'क्या यह बिल्कुल संभव है...?' जतिन रुक गया, मानो वह अभी भी सोच-विचार कर रहा हो।

'जो भी हो, उसे बाहर निकालो।'

'मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या लिफ्ट में कैमरा खो जाने वाली पूरी घटना फर्जी थी।' रीता को तुरंत समझ आ गया। 'आपका मतलब है कि कथित श्री शिशिर सिंह को छिपे हुए कैमरे के बारे में पता था और उन्होंने मनचाही तस्वीर वहाँ रख दी, और ऐसा दिखाया जैसे वे उसे देख ही नहीं पाए?'

'जी हां। इस बारे में सोचिए, महोदया। अगर वे बाकी सभी कैमरों को फ्रीज कर दें, पूरे होटल की सुरक्षा को यह विश्वास दिला दें कि वे पूरे परिसर की लाइव फीड देख रहे हैं जबकि वे बेवकूफ लोग पिछले दिन का रिप्ले देख रहे हों, तो उस दिमाग के लिए एक चुनी हुई तस्वीर को स्थिर कैमरे में फीड करना कितना मुश्किल होगा?'

'शानदार। बहुत ही शानदार, जतिन,' रीता ने ताली बजाई।

'आपका मतलब है कि यह तस्वीर स्थानीय स्तर पर किसी लिफ्ट में ली गई थी?' नेने ने पूछा।

कमरे की एक दीवार पर टंगी शिशिर सिंह या हनी सिंह की बड़ी सी तस्वीर को सबने गौर से देखा। उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे पता चले कि वह तस्वीर कहाँ खींची गई थी। जिस कोण से वह तस्वीर खींची गई थी, उससे साफ था कि उसके पीछे कोई ऐसी पृष्ठभूमि नहीं थी जिससे यह पता चल सके कि वह कहाँ की है। बिलकुल नहीं।
'लेकिन हनी सिंह की तस्वीर क्यों चुनी गई?' कुछ मिनट बाद नेने ने सवाल किया।
'शायद यह संयोगवश हुआ हो...' जतिन ने इस बारे में सोचा ही नहीं था।
'नहीं। यह संयोग नहीं हो सकता। किसी ने हनी सिंह को कम से कम सरसरी तौर पर तो जाना होगा, तभी उसकी तस्वीर वहाँ रखी गई है। वरना वे उसका पीछा करने के लिए उसे कैसे ढूँढते?' रीता ने कहा।
'तो अगर यह सिर्फ एक तस्वीर का हेरफेर था तो हनी सिंह का अनुसरण क्यों किया और उस पर पैसे क्यों खर्च किए?' नेने ने आगे सवाल किया।
'हो सकता है कि हनी सिंह का पीछा करना ही पुलिस की संलिप्तता का पता लगाने का एकमात्र तार्किक तरीका रहा हो, और अगर यही मकसद था, तो हम इसमें फंस गए। हो सकता है कि वे हनी सिंह का पीछा सिर्फ हमारा पीछा करने के लिए कर रहे हों। पिछली दो घटनाओं में - और मेरा अंतर्ज्ञान कहता है कि वे आपस में जुड़ी हुई हैं - केवल लूटपाट हुई थी, हत्या नहीं हुई थी, और क्योंकि यह घरेलू मामला था, इसलिए उन्हें ठीक-ठीक पता होगा कि कौन सा पुलिस स्टेशन जांच करेगा। उन्हें झूठे सुराग छोड़ने और हमें उनका पीछा करने के लिए बरगलाने की ज़रूरत नहीं थी। उस तस्वीर ने विक्टर को मुंबई तक पहुंचाया और हमें हनी सिंह तक ले आया। अगर यही इरादा था, तो यह कामयाब रहा,' रीता ने तुरंत तर्क दिया।
'लेकिन जब होटल और एयरलाइन के कर्मचारियों को तस्वीर दिखाई गई तो उन्होंने शिशिर सिंह को पहचान लिया?'
'खैर, हम जानते हैं कि अलग-अलग नस्लों के लोगों में पहचान कभी भी पूर्ण नहीं होती। अगर चोरी और हत्या करने वाला व्यक्ति आकार, कद, त्वचा के रंग और बालों के स्टाइल में हनी सिंह से ज़रा भी मिलता-जुलता था, तो यह एक गलती हो सकती थी। इसलिए हनी सिंह का चुनाव यूं ही नहीं हुआ था। किसी की नकल करने के लिए असली व्यक्ति को जानना ज़रूरी है। उन्हें पता था कि अगर कुछ गड़बड़ हुई तो वे हनी सिंह को बलि का बकरा बना देंगे।' रीता बोलते हुए वीर सिंह के वर्णन के बारे में सोच रही थी।

'तो इस सब में किट्टी की क्या भूमिका है?'
'यह, कई अन्य चीजों की तरह, एक रहस्य है—'
रीता के अपनी बात पूरी करने से पहले ही जतिन के मोबाइल फोन की घंटी बज उठी।
'जोगिंदर राजा!' जतिन ने कॉलर को देखा और कहा, और कॉल लेने के लिए अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। 'क्या?' वह लगभग चिल्ला उठा, 'एक मिनट रुको जोगिंदर... मैं तुम्हें स्पीकर पर डाल देता हूँ ताकि हम सब सुन सकें।' उसने एक मिनट के लिए कॉल म्यूट किया और कहा: 'जोगिंदर राजा लाइन पर हैं, उनका कहना है कि उन्होंने कल हनी सिंह के हमशक्ल को देखा।'
'क्या?'
'जोगिंदर, आप अभी स्पीकरफोन पर हैं। मेरे साथ कमरे में डीसीपी रीता फरेरा और वरिष्ठ निरीक्षक पाटिल और नेने मौजूद हैं। हमें बताएं कि आपने क्या देखा।'
हैंडलबार राजा द्वारा पिछले दिन की घटनाओं का वर्णन सुनकर कमरे में मौजूद चारों पुलिसकर्मी स्तब्ध रह गए। उन्होंने दो हनी सिंहों को देखा था - एक कार्यालय परिसर के आसपास घबराकर घूम रहा था, दूसरा किट्टी के साथ गाड़ी से बाहर निकला और फिर अंदर आया - दोनों अलग-अलग कपड़ों में थे। नहीं, कोई भ्रम नहीं था, उन्हें यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी; उनके फोन में दोनों की तस्वीरें भी थीं। नहीं, वह उनमें से किसी का भी पीछा नहीं कर पाए क्योंकि यह सब अचानक हुआ था। हाँ, यह पहली बार था जब उन्होंने उन दोनों को एक साथ देखा था।
हैंडलबार घबराया हुआ लग रहा था, लेकिन उसने उन्हें यह भी बताया कि पिछले हफ्ते उसके रहस्यमय ग्राहक ने उसे धमकी दी थी क्योंकि वह और हनी सिंह पुलिस का पीछा कर रहे थे और वह उनसे बच निकले थे।
'क्या आप कह रहे हैं कि आपके मुवक्किल ने पुलिस निगरानी टीमों को देख लिया था?' रीता ने पूछा। ऐसा इसलिए नहीं था कि उसे राजा की बात समझ नहीं आई थी, बल्कि उसने उम्मीद भरी निगाहों से नेने की ओर देखा: आखिर उनकी सक्षम पुलिस टीमों ने पीछा करने वालों को कैसे नज़रअंदाज़ कर दिया?
'जी मैडम, उन्होंने कहा कि हनी सिंह के पीछे एक से अधिक लोग लगे हुए हैं—'
'आपका मतलब है कि दूसरी टीम भी पिछले कुछ महीनों से हनी सिंह पर नजर रख रही है?'
'मैं उस महिला को नहीं जानता।'

'लेकिन आपने कभी किसी को अपना पीछा करते हुए नहीं देखा?'
हैंडल पर कोई आवाज नहीं हुई।
शर्म से लाल हो चुका नेने उठा और कमरे से बाहर चला गया। बाकी तीनों ने कुछ नहीं पूछा। वे जानते थे कि नेने उस इलाके में पिछले सप्ताहांत तैनात निगरानी टीमों को एक अहम घटना को नज़रअंदाज़ करने के लिए खूब खरी-खोटी सुनाएगा। हैंडल बार ने जो बताया था, उससे लग रहा था कि पीछा करने वाले लगभग पूरे दिन वहीं मौजूद थे। सालों की पुलिस ट्रेनिंग के बाद भी ऐसी चीज़ों को नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन, बल्कि हास्यास्पद था।
'आपने एक हफ्ते तक हममें से किसी को भी यह बात क्यों नहीं बताई, श्रीमान राजा?' नेने के जाने के बाद रीता गुस्से से बोली।
हैंडलबार ने अपने परिवार को मंडरा रहे खतरे का हवाला देकर अपने कार्यों को उचित ठहराया। वह डरा हुआ था, और भले ही खतरा कितना भी खोखला क्यों न हो, वह जोखिम उठाने को तैयार नहीं था। उसकी बातें तनावपूर्ण लग रही थीं, और ऐसा होना स्वाभाविक भी था।
रीटा का गुस्सा शांत हो गया, हालांकि हैंडल बार ने उनका एक हफ्ता बर्बाद कर दिया था। अगर पुलिस को पता होता कि एक बार पीछा किए जाने से वे बच गए थे, तो वे अगले दिन और भी सतर्क रहते। अगर उन्हें उनके बारे में पता होता, तो वे दूसरी बार उस व्यक्ति या व्यक्तियों को नहीं चूकते। वाकई एक बड़ा मौका गँवा दिया गया!
'मैं आपसे पूछना चाहता था कि मुझे आज अपनी साप्ताहिक रिपोर्ट में क्या लिखना चाहिए?'
'आपका क्या मतलब है?'
'क्या मुझे यह रिपोर्ट करनी चाहिए कि मैंने हनी सिंह का डुप्लिकेट देखा?'
'बिलकुल नहीं।'
'लेकिन अगर किसी और ने इसे देख लिया और मेरे मुवक्किल को इसकी सूचना दे दी तो क्या होगा? मैडम, वह फिर से मेरे पीछे पड़ जाएगा।'
'हमें सोचने दीजिए। हम कुछ घंटों में आपसे संपर्क करेंगे। इस बीच, आपने हनी सिंह भाइयों की जो तस्वीरें ली हैं, वे हमें भेज दीजिए।'
'ओके मोहतरमा।'
'धन्यवाद श्रीमान राजा।' रीता ने जतिन के फोन पर लाल बटन दबाया।

***

जतिन के फोन पर बीप बजी। हैंडलबार ने दो तस्वीरें भेजी थीं। जतिन ने उन्हें खोला, गौर से देखा और अविश्वास से सिर हिलाते हुए अपना फोन रीता को दे दिया। रीता ने भी ऐसा ही किया और फोन विक्रम को दे दिया। तीनों अवाक रह गए।

डोपेलगैंगर: किसी जीवित व्यक्ति का प्रेत जैसा दिखने वाला प्रतिरूप। हनी सिंह का एक डोपेलगैंगर था, और इसने सब कुछ बदल दिया। उनकी पूरी खोज, उनका विश्लेषण, उनके अनुमान, उनके सिद्धांत, सब कुछ निरर्थक लगने लगा। जब कोई प्रतिमान बदलता है तो सब कुछ शून्य से शुरू हो जाता है, क्या ऐसा ही नहीं कहते?

'वह असली नहीं हो सकता,' रीटा ने आखिरकार चुप्पी तोड़ी।

'क्या आपको लगता है कि हैंडलबार ने कहानी गढ़ी है?'

'मैं उसे इतनी चतुराई के लिए इतने अच्छे अंक नहीं दूंगा। एक संभावना यह हो सकती है कि किसी ने उसे सिखाया हो, हालांकि इसका पता लगाना आसान होना चाहिए। जतिन, मिस्टर राजा को फोन करो और उनसे कहो कि वे तस्वीरें डिलीट न करें। फिर मैं चाहता हूं कि तुम तुरंत उनके अपार्टमेंट जाओ और उनके द्वारा भेजी गई तस्वीरों पर तारीख और समय का स्टैम्प देखो। अपने साथ किसी ऐसे व्यक्ति को ले जाओ जो तकनीक में माहिर हो, जो यह पता लगा सके कि तस्वीरें वास्तव में उसी समय और स्थान पर ली गई थीं, न कि उनके फोन में इम्पोर्ट की गई थीं या फोटोशॉप की गई थीं। इससे उनकी कहानी की पुष्टि हो जानी चाहिए।'

Jatin nodded.

'और जाने से पहले इन तस्वीरों को प्रिंटिंग प्रेस को दे दीजिएगा, वे इन्हें साफ करके बड़ा कर देंगे। धन्यवाद।'

'मैडम, दूसरी संभावना क्या है?' जतिन के कमरे से चले जाने के बाद विक्रम ने पूछा। 'आपने कहा था कि एक संभावना यह हो सकती है कि हैंडलबार राजा नाटक कर रहा हो...'

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि दो अलग-अलग माता-पिता से हूबहू दिखने वाला हमशक्ल हो सकता है। क्या यह जैविक रूप से असंभव नहीं है? मुझे संदेह है कि इतिहास में ऐसा कोई मामला दर्ज है। अगर हैंडल बार ने सचमुच दो हनी सिंह देखे, जैसा कि उसने बताया, तो किसी ने हनी सिंह जैसा दिखने के लिए बहुत सारा प्लास्टिक इस्तेमाल किया होगा।'

'मुंबई में ज्यादा प्लास्टिक सर्जन नहीं हैं। हम पता लगा सकते हैं।'
'मैंने इसके बारे में पहले सोचा था, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि सर्जरी मुंबई में नहीं हुई थी, विक्रम। या अगर हुई भी थी, तो उसका रिकॉर्ड नहीं है।'
विक्रम ने सिर हिलाकर सहमति जताई। 'आपको क्या लगता है कि हमने श्री राजा को अपने मुवक्किल को क्या लिखने दिया?'
'मुझे लगता है कि हमें डबल का ज़िक्र नहीं करना चाहिए, कम से कम इस हफ्ते तो नहीं। नेने से कहो कि वह अपने सबसे अच्छे आदमियों को हनी सिंह और हैंडलबार पर नज़र रखने के लिए लगाए। इस बार हमारे आदमियों को कुछ भी चूकना नहीं चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या कोई पत्ता लाल या नारंगी है जबकि उसे हरा या पीला होना चाहिए। और मुझे हैंडलबार और उसकी पत्नी पर नज़र रखने के लिए एक सादे कपड़ों वाली टीम चाहिए - चौबीसों घंटे सुरक्षा, बिना उन्हें पता चले या किसी को हमारे आदमियों को देखे। इस बार कोई गलती नहीं होनी चाहिए।'
सबके चले जाने के काफी देर बाद तक रीता सोचती रही। अगर दूसरा हनी सिंह हैंडलबार का ग्राहक होता, तो क्या वो खुद को सबके सामने लाता? ये बात समझ में नहीं आती थी, क्योंकि उसे पता होता कि वो पकड़ा जाएगा और असली हनी सिंह के आस-पास होने की वजह से उसकी पहचान भी हो जाती। लेकिन हैंडलबार की नज़र में आने का सबसे बुरा नतीजा क्या हो सकता था? हैंडलबार एक रिपोर्ट लिखकर उसे बता देगा। और अगर हनी सिंह पर नज़र रखने वाले दूसरे कॉमेडियन भी उसी के पैसे पर काम करते, तो वे भी उसे यही बात बताते। ज़्यादा से ज़्यादा वे ये बताते कि हैंडलबार ने भी उसे देखा था। भला ये क्या बात है! तो दूसरे हनी सिंह को खुद को सबके सामने लाने में कोई नुकसान नहीं था, अगर उसे यकीन था कि उसके पैसे लेने वाले लोगों के अलावा कोई और उस पर नज़र नहीं रख रहा था। ज़्यादातर जासूसी पहेलियाँ उलझी हुई होती हैं क्योंकि उनमें कुछ हिस्से गायब होते हैं; ये पहेली एक अतिरिक्त हिस्से की वजह से और भी पेचीदा हो गई थी। ये सब कैसे मेल खाता है? रीता ने अपने मन में हैंडलबार राजा द्वारा बताई गई पूरी कहानी को एक-एक करके दोहराया।
हनी सिंह नंबर दो उस समय मौके पर पहुंचा जब हनी सिंह नंबर एक अभी भी दफ्तर में था, और वह अंदर चला गया। वह कहां गया? वह परिसर के बाहर कहीं छिपा रहा होगा जब तक उसने दूसरे को जाते हुए नहीं देखा? लेकिन उसे कैसे पता चला कि

असली हनी सिंह उसी समय और दिन दफ्तर से निकलेगा जिस समय और दिन वह वहां गया था? इसके लिए ज्यादा स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं थी: अगर हनी सिंह नंबर दो वास्तव में हैंडलबार का रहस्यमय ग्राहक था तो रीता और पुलिस विभाग उसकी तकनीकी क्षमता से पहले से ही वाकिफ थे। आजकल सभी मुलाकातों का रिकॉर्ड लोगों की ऑनलाइन डायरियों में दर्ज होता था। अगर हनी सिंह की डायरी अपडेट रहती थी तो जानकारी छिपी नहीं रह सकती थी, खासकर ऐसे व्यक्ति के लिए जो होटल के सुरक्षा नेटवर्क में सेंध लगा सकता था और निगरानी कैमरों को नियंत्रित कर सकता था। रीता को जो बात हैरान कर रही थी वह यह थी कि नकली हनी सिंह को असली हनी सिंह के दफ्तर से इतनी जरूरी चीज क्या चाहिए थी? क्या वह किसी और को नहीं भेज सकता था? या उसे किसी पर भरोसा नहीं था? जो भी हो, यह जरूरी और तत्काल होना चाहिए। जैसे, शायद दफ्तर में जासूसी उपकरण लगाना, जिसमें केवल वही माहिर था? और नकली हनी सिंह दफ्तर में कैसे घुसा? क्या वहां चौकीदार और रिसेप्शनिस्ट टिटू नहीं था? अगर वह था, तो उसने हनी सिंह को उम्मीद से पहले और बदले हुए कपड़ों में लौटते हुए ज़रूर देखा होगा। वाकई, यह तो एक बड़ा सुराग होता। टिटू का उस दिन का शेड्यूल भी देखना ज़रूरी था।

और अगर हनी सिंह नंबर दो, हैंडलबार का रहस्यमयी ग्राहक नहीं था, तो कौन था? और इस नए आयाम पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी? मतलब, अगर यह उसके लिए एक नया आयाम था। शायद उसे पहले से ही अपने हमशक्ल के अस्तित्व के बारे में पता था, और यह सब सिर्फ सबूत जुटाने के लिए रचा गया था, और शायद अब हनी सिंह पर निगरानी बंद कर दी जाएगी? रीता खुश नहीं थी। यहाँ बहुत सारे 'शायद' थे। इसके अलावा, उन्होंने हैंडलबार को हमशक्ल के अस्तित्व की जानकारी देने से रोक दिया था। अगर दूसरे निगरानी दल ने हमशक्ल को नहीं देखा होता, तो ग्राहक को अभी भी पता नहीं होता। और अगर उन्होंने हमशक्ल को देख लिया होता और रिपोर्ट कर दी होती, तो उस जानकारी को छिपाने के लिए हैंडलबार पर क्या असर पड़ सकता था? शायद बहुत बुरा?

उसे इस बात की तसल्ली थी कि उसने मिस्टर और मिसेज़ हैंडल बार को सुरक्षा में रख दिया था। फिर भी, उसके मन में एक अनसुलझा सवाल था कि वह अज्ञात ग्राहक कौन था? और वह क्या चाहता था?

वह फिर से हैंडलबार की कहानी पर लौट आई। क्या उसने यह नहीं कहा था कि

असली हनी सिंह के जाने से पहले उसका नकली हनी सिंह वहाँ था? वह कहाँ छिपा था? यह तो आसान था। भीड़ में छिपने के लिए लाखों जगहें मिल सकती हैं। लेकिन —एक विचार अचानक उसके दिमाग में कौंध गया—क्या होगा अगर हनी सिंह को अपने नकली हनी सिंह और दूसरे हनी सिंह के बारे में पता होता और वह छिपने के बजाय उससे मिलने दफ्तर चला जाता?

फोन की घंटी बजी और यह विचार मिट गया। उसने डिस्प्ले पर देखा। कॉल स्विचबोर्ड के माध्यम से रूट की गई थी। 'डीसीपी रीटा फेरेरा।'

'हेलो डीसीपी फेरेरा,' पुरुष की आवाज ने कहा। 'आखिरकार, सारी जांच-पड़ताल के बाद, मैं आपसे संपर्क करने में सफल हो गया।'

'और अगर मैं पूछूं तो आप मुझे क्यों ढूंढ रहे हैं?'

'आप लोग मुझे ढूंढ रहे हैं, डीसीपी फेरेरा, मैं नहीं। मेरे एक दोस्त ने फोन करके बताया कि आपके किसी आदमी ने उनसे संपर्क करके मेरे बारे में पूछा था।'

'और आप कर रहे हैं...?'

'वीर सिंह।'

रीता ने दोबारा डिस्प्ले पर देखा। स्विचबोर्ड के ज़रिए रूट की गई कॉल वहां दर्ज होनी चाहिए थी। उनका पता लगाना नामुमकिन नहीं होना चाहिए। 'जी हां श्रीमान सिंह, हम हैं। आपको किसने बताया?'

'कोई बात नहीं, है ना? आप मुझसे बात करना चाहते थे और मैंने फोन किया। जिस व्यक्ति ने आपका काम आसान किया, उसे क्यों परेशान करना? मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?'

'ठीक है। श्री सिंह, हमें आपसे जल्द से जल्द बात करनी है, आपसे मिलना है।'

'किसलिए? क्या मैं किसी मुसीबत में हूँ?'

'बिल्कुल नहीं, यह एक जांच है और बेहतर होगा कि हम मिलें। मैं समझा दूंगा।'

'मैं शहर में नहीं हूँ, डीसीपी फेरेरा, क्या मैं आपके सवालों का जवाब फोन पर नहीं दे सकता?'

मैं तुम्हें देखना चाहता हूं।

'आप कहां हैं श्रीमान सिंह?'

'मैं नहीं आ पा रहा हूँ, लेकिन आपकी किस्मत अच्छी है। मैं मुंबई जाने की योजना बना रहा था, तो क्यों न मैं सोमवार को आपसे मिलने आ जाऊं? मैं इससे बेहतर कुछ

नहीं कर सकता।'
'यह तो बहुत बढ़िया है। मुझे पता ही नहीं था कि आप भारत में हैं।'
'मैं काफी समय से वापस आ चुका हूं।'
'क्या हम इसे सोमवार सुबह मेरे कार्यालय में कहें?'
'मेरी फ्लाइट दोपहर के भोजन के समय ही पहुंचेगी। अगर आप मुझे अपना डायरेक्ट नंबर दे दें तो मैं लैंड करते ही आपको कॉल कर दूंगी - इससे मुझे दोबारा सारी झंझटों से बचने में मदद मिलेगी।'
रीटा ने उसे नंबर दिया।
और इससे उसके मन में अनसुने विचार आने लगे। जिस आदमी की वे इस जांच की शुरुआत से ही तलाश कर रहे थे, उसने फोन करके कहा कि वह उससे मिलने आना चाहता है। अकेले। इसमें कुछ गड़बड़ ज़रूर थी। उसने तुरंत स्विचबोर्ड पर कॉल करके पता किया कि कॉल कहां से आया था। ऐसा लग रहा था कि वीर सिंह ने किसी ऐसे मोबाइल से कॉल किया था जिसकी कॉलर आईडी छिपी हुई थी। कोई बात नहीं, उसे पता था कि और भी तरीके हैं। आम नागरिकों के लिए मोबाइल कॉल गुमनाम होते हैं। पुलिस, किसी भी मोबाइल ऑपरेटर के साथ मिलकर, निकटतम मोबाइल टावर का उपयोग करके असली कॉलर आईडी का पता लगा सकती है। यह तुरंत नहीं होता; यह मुश्किल था, नामुमकिन नहीं। उसने नेने को फोन किया, उसे कॉल के बारे में बताया और उससे नंबर ढूंढने और वीर सिंह की लोकेशन का पता लगाने को कहा, अगर वह, जैसा कि उसने कहा था, भारत में था। यह कुछ ही घंटों की बात थी। उसने फैसला किया कि वह सोमवार को वीर सिंह के आने का इंतजार नहीं करेगी, जैसे ही उन्हें पता चलेगा कि वह कहां है, वह उसे तुरंत बुला लेगी।
अब शाम के सात बज चुके थे। ऐश की फ्लाइट मुंबई में 8:55 बजे लैंड करने वाली थी। देर रात तक ऑफिस में रुकने का कोई फायदा नहीं था। उसने घर जाकर आराम करने का फैसला किया।

22
Twenty-Two

शीला उसका असली नाम नहीं था। उसके असली नाम को उसके और उसके माता-पिता के अलावा कोई नहीं जानता था, जिन्होंने उसका नाम रखा था। लेकिन वे बहुत पहले ही मर चुके थे।

हर असाइनमेंट के साथ वह अपना नाम और रूप बदल लेती थी। आधी रात हो चुकी थी और उसने तय सीमा से ज़्यादा शराब पी ली थी, तभी उसके मोबाइल फोन की घंटी बजी: कॉलर आईडी "अज्ञात"। उसे अच्छी तरह पता था कि इस सुनसान समय में कौन होगा। यह उसका हैंडलर था, जिससे वह अपनी ज़िंदगी में सिर्फ़ एक बार मिली थी और जो रांची या पटना या बिहार के इन दोनों शहरों के बीच कहीं रहता था। वही सारे काम तय करता था और सारा पैसा इकट्ठा करता था। किसी को मारने के लिए दस लाख रुपये काफ़ी थे। चूंकि महिला भाड़े की हत्यारों की संख्या ज़्यादा नहीं थी, इसलिए शीला कमाई का अस्सी प्रतिशत और उचित खर्चा खुद रख लेती थी।
शर्तें सीधी-सादी थीं: पूरा भुगतान अग्रिम में, कोई सबूत, सुराग या यहां तक कि कोई सुराग भी नहीं छोड़ा जाएगा, ऐसा कुछ भी नहीं जिससे किसी का पता चल सके, कोई सवाल नहीं पूछा जाएगा और काम पूरा होने तक सौदा होने के बाद कोई संपर्क नहीं किया जाएगा।
शीला ने लक्ष्य का नाम और निर्देशांक लिख लिए। फोन कॉल के बाद उसने हिसाब लगाया कि सुबह-सुबह की ड्राइव होगी और फ्लाइट देर से होगी। चिंता की कोई बात नहीं।

***

कोवलम बीच रिसॉर्ट,
केरल
उसकी पीठ की तरफ पीठ करके खड़ा वह आदमी लंबा था—शायद छह फुट एक इंच या दो इंच, सिर मुंडा हुआ, पेड़ के तने जैसा गठीला शरीर और उसकी पूरी पीठ पर एक विशाल बहुरंगी टैटू था: किसी ड्रैगन या किसी एलियन जैसी आकृति, जैसा कि उसके सहायक ने बताया था। वह बीच बार में स्टूल पर बैठा था, सिर्फ़ स्विमिंग ट्रंक पहने, नंगे पैर। शीला जानती थी कि उसे उसी के लिए भेजा गया है। उसे और किसी पुष्टि की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी जाँच करना बेहतर था। उसने चुपके से अपने

मोबाइल से एक तस्वीर खींची और उसे मैसेज कर दिया और साठ सेकंड तक इंतज़ार किया। उसका मोबाइल वाइब्रेट हुआ। भेजने वाला "अज्ञात" था, लेकिन वह जानती थी कि कौन होगा। ज़्यादातर लोग गुमनाम रूप से एसएमएस नहीं भेज सकते; कॉल तो कर सकते हैं, लेकिन मैसेज नहीं। लेकिन उसके सहायक को ऐसे लोग पता थे जो उसकी पहचान छिपाने की तकनीकी तरकीब जानते थे। संदेश छोटा और सीधा था: "हाँ, यह वही है।" शीला की जाँच नहीं हुई थी। वह शावर रूम में गई और अपनी पीठ पर बने बड़े टैटू को दिखाने के लिए बिकिनी पहन ली, और ऐसे बाहर निकली जैसे कोई आम होटल मेहमान समुद्र तट पर घूमने जा रही हो। वह बेफिक्र होकर बार की तरफ गई, स्ट्रॉबेरी मार्गारिटा मंगाई और उस आदमी से तीन स्टूल दूर बैठ गई, यह जानते हुए भी कि उसने उसे देख लिया है। आमतौर पर पुरुष उसे नज़रअंदाज़ नहीं करते थे—खासकर जब वह बिकिनी में होती थी। बारटेंडर उसका ड्रिंक बनाने में जुट गया, जबकि वह सामने फैले विशाल समुद्र को देखती रही और उस आदमी से नज़रें मिलाने से बचती रही।

मनोवैज्ञानिकों ने सांख्यिकीय रूप से यह सिद्ध किया है कि मानव मस्तिष्क सापेक्षिक गुणों की तुलना में निरपेक्ष गुणों को अधिक याद रखता है। लोग किसी विशिष्ट, निरपेक्ष विशेषता को याद रखने या उससे जुड़ाव महसूस करने की प्रवृत्ति रखते हैं। ज़मीन से छह फुट लंबा व्यक्ति लंबा माना जाता है। लेकिन उसे WWE के बिग शो या खली के बगल में खड़ा कर दें, तो अचानक वह अपेक्षाकृत "छोटा" लगने लगता है। यही बात काले, गोरे, मोटे और पतले लोगों पर भी लागू होती है। भूरे बालों का रंग? गहरा भूरा? हल्का भूरा? कॉफी जैसा भूरा? चॉकलेट जैसा भूरा? लॉरियल कंपनी तो भूरे रंग के लगभग पचास शेड्स पर एक कोर्स भी चला सकती है।

गंजा होना लगभग अपरिहार्य है।

यहां निशाना गंजा व्यक्ति था।

मूंछें कोई निश्चित या पहचानने योग्य चीज़ नहीं हैं। हैंडलबार मूंछें लगभग निश्चित होती हैं।

मान लीजिए आपने किसी को हवाई अड्डे से एक खूबसूरत महिला को लेने भेजा और उसी फ्लाइट में सिंडी क्रॉफर्ड, सुष्मिता सेन और जेनिफर एनिस्टन भी आ रही हों? तो चुनाव सापेक्ष हो जाता है। अगर आप उसी व्यक्ति को ऊपरी होंठ पर तिल वाली लड़की को लेने भेजते, तो वह निश्चित रूप से सिंडी को लेकर लौटता।

चेचक के निशान बिल्कुल स्पष्ट होते हैं। दिखाई देने वाले तिल बिल्कुल स्पष्ट होते हैं। शीला की पीठ पर लिंडा गुडमैन के सूर्य राशि चिन्हों का एक बड़ा, स्पष्ट टैटू, जो बिकिनी पहनने के कारण दिखाई दे रहा था, शायद उन लोगों को लंबे समय तक याद रहेगा जिन्होंने बस एक नज़र डाली थी। वे उसका चेहरा, बाल, त्वचा का रंग और शरीर की बनावट भूल जाएंगे। सिवाय बारटेंडर सतीश मेनन के, जिसने उसे लंबे समय तक करीब से देखा था, जो अच्छा नहीं था। सतीश के लिए तो यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं था।

वह इंतजार करती रही।

उसे तुम्हारे पास आने दो। वह आएगा ही, उसे पता था। वह खेल को अच्छी तरह जानती थी। अरे! खेल के नियम तो उसी ने बनाए थे।

'आपका पेय आ गया है मैडम।' सतीश, बारटेंडर, उनका गुलाबी पेय लेकर आया।

'ओह, यह बहुत अच्छा लग रहा है, धन्यवाद।'

'क्या आप इसे अपने कमरे में लगाने के लिए हस्ताक्षर करना चाहेंगे?'

शीला ने चारों ओर ऐसे देखा मानो उसे इस बात का संदेह हो कि वह अपने कमरे के बारे में किसी को बता पाए। 'नहीं, अगर ठीक हो तो मैं वापस जाने से पहले नकद भुगतान कर दूंगी?'

'जी हां, महोदया।'

शीला ने एक घूंट लिया, गिलास नीचे रखा और पानी की ओर चल पड़ी, जो बार से मुश्किल से दस मीटर दूर था। शाम ढल चुकी थी, लेकिन सूरज की हल्की गर्मी ठंडे पानी को और भी गर्म कर रही थी। बीच पर कुछ ही लोग थे, दूर दो परिवार अपने बच्चों के साथ थे, और एक हनीमून मनाने वाला जोड़ा था जो एक-दूसरे में पूरी तरह खोया हुआ था। अगर वे उसे इतनी दूरी से देखते, तो शायद उन्हें सिर्फ उसका टैटू ही याद रहता। उसने पानी में डुबकी लगाई, पानी से खेली और दस मिनट बाद अपने ड्रिंक के पास लौट आई। गंजा आदमी अभी भी वहीं था, अपनी बीयर पी रहा था, समुद्र या शीला या दोनों को निहार रहा था।

'क्या तुम यहां अकेले हो?' उसने आखिरकार पूछा।

'हां तुम कैसे हो?'

'हाँ, अकेले।' वह उठा और उसके बगल वाले स्टूल पर बैठ गया। वह दिखने में बुरा नहीं था। तराशा हुआ चेहरा, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, बिल्कुल वैसा ही जैसा उसे

बताया गया था। बिल्कुल भी मोटा नहीं। वास्तव में, वह ऐसा लग रहा था जैसे वह अक्सर जिम जाता हो। उसके एब्स इस बात का सबूत थे। 'अगर मैं पूछूँ तो, आप जैसी कोई इस बीच रिसॉर्ट में अकेले क्या कर रही हैं?'

मैं आपसे भी यही सवाल पूछ सकता हूं।

'मैं अवकाश पर हूं।'

'तुम्हारे बारे में सबकुछ?'

'हां। देखो, अगर मैं अकेला न होता तो इस दुनिया की सारी खूबसूरती से वंचित रह जाता। तुम्हारी तरह,' उसने कहा।

'यह तो व्यंग्यात्मक प्रशंसा है।'

मुझे पूरा यकीन है कि आपके प्रशंसकों की कोई कमी नहीं है—'

'और फिर भी, मैं अकेले ही छुट्टियां मना रहा हूं।'

'शायद आप बंधनों में बंधना नहीं चाहते। मेरी तरह।'

'तो आपकी कहानी क्या है?'

'मेरा जन्म मुंबई में हुआ था, खैर, उस समय इसे बॉम्बे कहा जाता था। मैंने वहीं से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की, फिर दिल्ली के इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया, वापस लौटा और अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया। यह बहुत अच्छा नहीं चला, इसलिए मैं अमेरिका चला गया और वहां अपनी किस्मत आजमाने के लिए कुछ अन्य प्रतिभाशाली लोगों के साथ एक कंपनी स्थापित की। हमने एक एल्गोरिदम लिखा जिसे एक बहुत बड़ी कंपनी ने पूरी तरह से खरीद लिया, और हम सभी ने मुनाफा कमा लिया।'

'तो लोड हो गया?'

'दुर्भाग्यवश, मेरी कमाई के बराबर नहीं।'

'क्यों? क्या तुमने सारा पैसा औरतों और शराब पर खर्च कर दिया?'

'काश मैंने ऐसा किया होता, लेकिन मेरी शादी हुई, तलाक हुआ, फिर से शादी हुई, फिर से तलाक हुआ...'

'ऐसा लगता है कि आप एक ही दिन में कई बार तलाक ले चुकी हैं।'

'आप ऐसा कह सकते हैं, और मैं यह कहकर अपनी गलती को सही ठहरा सकता हूँ कि दोनों बार मेरी गलती नहीं थी, लेकिन इसका क्या फायदा? मुझे फिर भी बहुत नुकसान हुआ, खासकर पहले तलाक में। मैं सावधान था और शुक्र है कि मैंने शादी से

पहले समझौता कर लिया था, वरना मैं दो बार कंगाल हो जाता।' उसने प्रभाव दिखाने के लिए कर्कश हंसी हंसी।
'तो आप कोवलम की इस संपत्ति में क्या कर रहे हैं? मेरा मतलब है, यह सुंदर तो है, लेकिन यह बिल्कुल सुनसान इलाके में है।'
'मुझे तो यहाँ बहुत शांति मिलती है, क्या आपको नहीं?'
'तो आप इसी रिसॉर्ट में रहते हैं?'
'नहीं। मैं कोचीन के पास बैकवाटर में एक हाउसबोट पर रहता हूं, लेकिन मैं कभी-कभी अच्छी संगत की तलाश में यहां आता हूं।'
'और क्या आपके यहाँ हमेशा कोई न कोई मेहमान आता रहता है?'
'जरूरी नहीं, लेकिन मुझे कहना होगा कि मैं कई लोगों की तुलना में अधिक भाग्यशाली रहा हूं,' उन्होंने कहा।
'क्या मैं यह मानकर सही होऊंगा कि आप स्थायी संबंध की तलाश में नहीं हैं?'
'हां, आपका यह अनुमान बिल्कुल सही होगा।'
'तो तुम सेक्स की तलाश में हो?' उसने उसकी आँखों में देखा।
'मैं साथी की तलाश को महज किसी प्रकार के शारीरिक मिलन तक सीमित नहीं करूंगा।'
'मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे आपका शब्दों से खेलने का तरीका पसंद है, जिस तरह से आप अपने अनैतिक संबंधों को दोस्ती के आवरण में छिपाते हैं।'
'क्या मैं आपको एक ड्रिंक पिला सकता हूँ?' उसने उसकी बात को अनसुना करते हुए पूछा।
'निर्भर करता है...'
'पर?'
'उस एहसान का बदला चुकाने के लिए मुझे क्या करना होगा?'
'अगला राउंड आप खरीद सकते हैं, आपके मन में क्या योजना है?'
'मैं सोच रहा था कि क्या आप साथ के लिए ड्रिंक खरीद रहे हैं—'
मैं पहले से ही आपकी कंपनी में हूं।
'अगर यही साथ की सीमा है, तो मैं बिल्कुल तैयार हूँ। मेरे लिए एक मार्गरीटा, मुझे लगता है कि इस बार मैं नींबू वाला मार्गरीटा लूंगी।'
उसने बारटेंडर को हाथ हिलाकर इशारा किया, जो तुरंत आया और ऑर्डर ले लिया।

मुझे खेद है कि मुझे आपका नाम नहीं पता चला।
'शीला,' उसने कहा और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।
'आपसे मिलकर अच्छा लगा, शीला, मैं वीर सिंह हूं।'
दोनों ने कुछ और ड्रिंक्स पी और एक घंटा एक-दूसरे को जानने-समझने और छेड़ने में बिताया, और अंत में, रात भर साथ रहने के लिए सहमत हो गए।
'तुम्हारा कमरा नंबर क्या है?' वीर ने पूछा।
'आपका क्या है?'
'1104.'
'आप अपना काम जारी रखिए, मैं कपड़े बदल लूंगी और बाद में आपके कमरे में आपसे मिलूंगी?'
'ठीक है। मुझे एक कॉल करनी है, वो मैं रास्ते में करूँगा और फिर अपने कमरे में मिलते हैं।' उसने सभी ड्रिंक्स का नकद भुगतान किया और चला गया।

***

सिग पी238 सिर्फ 5.5 इंच लंबी और लगभग 430 ग्राम वजनी है, और कोई भी यह सोचकर हैरान हो सकता है कि यह छोटी सी बंदूक किसी बड़ी सिग सॉयर जितनी सटीक और शक्तिशाली नहीं होगी। लेकिन ऐसा नहीं है। और वैसे भी, हर बंदूक नज़दीकी रेंज में बेहतरीन होती है। शीला अपना हैंडबैग लेकर बाथरूम में चली गई, जबकि वीर सिंह बिस्तर पर लेटा हुआ एक जोशीले पल की उम्मीद कर रहा था। पोसाइडन साइलेंसर लगाने में उसे उम्मीद से ज़्यादा समय लगा—मिनट घंटों जैसे लग रहे थे, लेकिन वह कोई नौसिखिया नहीं थी, उसने यह काम पहले भी कई बार किया था। वीर सिंह का दिमाग अभी कामुक इच्छाओं को समझ ही रहा था कि 9mm की गोली ने उसे अचानक घेर लिया और उसके दिमाग में चल रही सारी कामुकता के साथ उसे भी मार डाला। गोली उसकी दाहिनी आंख को चीरती हुई दिमाग में जा घुसी, और इस प्रक्रिया में उसका चेहरा बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो गया। ठीक निर्देशानुसार।
तो यूं ही बेवजह साथ ढूंढने का मेरा सपना टूट गया, ड्रिंक्स के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। उसने एक बार लापरवाही से उसकी तरफ देखा और होटल के कमरे से बाहर चली गई।
अगली सुबह पुलिस को होटल परिसर में दो शव मिले। वीर सिंह और सतीश मेनन

के। सतीश इस घटना का शिकार हो गया था; उसने शीला को वीर सिंह के साथ बातें करते और करीब आते देखा था, और हालांकि दोनों बार से एक साथ नहीं निकले थे, कोई भी समझदार व्यक्ति यह अनुमान लगा सकता था कि वे फिर से मिलने के लिए मिलेंगे। शीला की आदत नहीं थी कि वह कोई काम अधूरा छोड़ दे।

***

शीला रात के अंधेरे में निकल पड़ी—लाशों के मिलने से बहुत पहले—मुख्य सड़क से दूर, गलियों में चलते हुए पाँच किलोमीटर पैदल चली, जब तक उसे एक पुरानी एम्बेसडर कार नहीं मिल गई जिसे वह खोलकर स्टार्ट कर सके। उसने बाकी का रास्ता खुद चलाकर त्रिवेंद्रम हवाई अड्डे तक का सफर तय किया और वहाँ से एक लाइट ट्रेन से कोलकाता गई। उसने हवाई अड्डे से अपने हैंडलर को फोन करके बताया कि काम पूरा हो गया है। उसने रेलवे स्टेशन के विश्राम कक्ष में नहाया, अपनी पीठ से टैटू कवर उतारा और उसे शौचालय में बहा दिया, फिर एक आकर्षक महिला का रूप बदलकर सलवार कमीज पहनी और उसी शाम हावड़ा से दिल्ली जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस में सवार हो गई और दिल्ली पहुँचने से पहले ही कहीं उतर गई। शीला अब मर चुकी थी। अगले काम में वह किसी और के लिए कोई और बनकर जाएगी।

23
Twenty-Three

रीटा ने माइक्रोवेव में एक फिश पैटी को गर्म किया, उसे मेयोनेज़, सरसों और लेट्यूस के साथ ब्रेड रोल के बीच में रखा और अपने लिए एक सैंडविच बनाया।
खुद बनाया हुआ बर्गर। उसे ऐश का इंतज़ार करने में कोई फायदा नहीं दिख रहा था, क्योंकि उसने उड़ान से पहले ही अपना खाना खा लिया होगा और अगर वह चाहता तो उड़ान के दौरान कुछ और स्नैक्स भी ले सकता था। उसने एक ड्रिंक लेने के बारे में सोचा लेकिन फिर मना कर दिया। अगर ऐश आ ही रहा था तो उससे पहले शराब पीकर होश खोने से बेहतर था इंतज़ार करना। वैसे भी, इस मामले ने उसे मुश्किल में डाल दिया था। हफ़्तों तक एक ही जगह उलझे रहने के बाद टीम के पास क्या था?

सुराग? कोई नहीं। सुराग? कुछ खास नहीं। सबूत? शून्य। सिद्धांत? ढेरों। अब यह मामला 80 के दशक की किसी फ्लॉप फिल्म जैसा लग रहा था: एक ऐसी फिल्म जिसमें निर्देशक भी बीच में ही कहानी से भटक गया हो।

शुक्र है, समस्या से ध्यान हटाने के लिए, उसकी नज़र उस शाम के लिए तैयार रखी ड्रेस पर पड़ी: छोटी काली ड्रेस और स्टिलेटो हील्स। उसने जल्दी से नहाया और शाम के लिए तैयार हो गई। दोस्त के साथ रोमांटिक वीकेंड होने के अलावा, उसे यह भी एहसास था कि ऐश से मिलने की उसकी उत्सुकता इस बात से भी बढ़ रही थी कि ऐश ने इस मामले के बारे में सोचा होगा। उसके साथ काम करने के अपने पिछले अनुभव से वह जानती थी कि विश्लेषण करने के लिए उसे सबूतों को सीधे देखने की ज़रूरत नहीं होती। और एक प्रशिक्षित आपराधिक मनोवैज्ञानिक होने के नाते, उसने इतने लंबे समय तक अभ्यास किया था कि उसने कई ऐसे अजीब मामले देखे थे जो ऊपरी तौर पर समझ में नहीं आते थे, लेकिन उनमें छिपे हुए संबंध पुलिस को अपराधियों तक ले जाते थे। या, कम से कम, वह कुछ नए संदिग्धों या सुरागों का पता लगाने में मदद कर सकता था।

सूरज डूब चुका था, चाँद थका हुआ लग रहा था। अंधेरी रात की भरपाई करने के लिए उसने कुछ मोमबत्तियाँ जलाईं और खिड़की को थोड़ा सा खोला, क्योंकि सुबह से ही तेज़ हवा चल रही थी। हवा के झोंके रुक-रुक कर आ रहे थे, मोमबत्तियों को झिलमिला रहे थे और वेनिला की खुशबू पूरे अपार्टमेंट में फैला रहे थे।

ऐश दस बजकर कुछ मिनट पर दरवाजे पर थी।

'अरे बाप रे... आज रात कोई मुझे बहकाने की कोशिश कर रहा है।'

'तुम कितने घमंडी हो, तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हारे लिए सजी-धजी हूँ?' रीटा ने उसके होंठों पर चुंबन किया।

'तुम सही कह रही हो। तुम्हें मेरे लिए कपड़े उतारने चाहिए। सिवाय उन ऊँची एड़ी वाली सैंडल के।'

कुछ देर बाद वे थककर बिस्तर पर लेट गए।

'क्या मैं आपके लिए कुछ पीने को लाऊं?' उसने पूछा।

'मुझे अपने ही अपार्टमेंट में कभी ड्रिंक नहीं परोसी गई; चलो, कोशिश करो। तुम्हें पता है सब कुछ कहाँ रखा है।'

वह पहले भी यहाँ आ चुका था, लेकिन यह पहली बार था जब उसने उसके संगीत

संग्रह को देखा। वह बैठक कक्ष में सोफे पर बैठी थी।
'आपके पास बहुत सारा जैज़ और रॉक संगीत है,' उसने दो गिलास और जिम बीम की बोतल लेकर लौटते हुए कहा।
'मेरे पिताजी हमेशा कहते थे कि संगीत की केवल दो ही विधाएँ हैं - शास्त्रीय संगीत के अलावा, जो सभी संगीत की जड़ है - जैज़ और रॉक। उनके विचार में बाकी सब विकृतियाँ हैं।'
'और आपकी क्या राय है?'
'जैसी बाप वैसी बेटी। मुझे भी यही लगता है। आपका क्या विचार है?'
मैं रेडियो सुनता हूँ, मुख्यतः क्लासिक रॉक। कभी-कभी मैंने जैज़ भी सुना है, लेकिन मुझे नहीं पता कि शुरुआत कहाँ से करूँ। जब तक मैं ड्रिंक्स बनाता हूँ, आप कुछ चला दीजिए ना?
रीटा बेहद सलीकेदार थी और उसे पता था कि उसके संग्रह में हर रिकॉर्ड कहाँ रखा है। वह चलकर गई, "ब्लैक सेंट एंड सिनर लेडी" रिकॉर्ड निकाला और उसे टर्नटेबल पर रख दिया।
कुछ हल्की-फुल्की खड़खड़ाहट के बावजूद, चार्ल्स मिंगस का संगीत "सोलो डांसर" उस शांत कमरे में तेज़ी से ऊपर-नीचे होता रहा।
'क्या आपको मेरे मामले के बारे में सोचने का समय मिला?'
'जी हां, बिल्कुल। मेरे अनुपस्थित रहने के दौरान क्या कोई नई जानकारी मिली है जिसके बारे में मुझे पता होना चाहिए?'
रीता ने ऐश को सब कुछ बता दिया। हनी सिंह, उसकी माँ और उसकी प्रेमिका के साथ हुए इंटरव्यू। वीर सिंह और किट्टी के बीच कभी प्रेम संबंध थे। हनी सिंह की कहानी: हनी सिंह के हमशक्ल को देखा जाना। वीर सिंह का अचानक आया फोन और यह कि वह उससे मिलने मुंबई आ रहा है।
देखिए, अगर हत्यारा रिश्तेदार या कारोबारी सहयोगी नहीं है, अगर कोई पुरानी दुश्मनी सामने नहीं आती, अगर हत्या की सूचना देने वाला व्यक्ति खुद अपराधी नहीं है, और जैसा कि आपके मामले में है, अगर पीड़ित और हत्यारे का आपस में कोई संबंध नहीं है, और फिर से आपके मामले की तरह, अगर हत्यारे ने कोई सुराग या अपनी तस्वीर नहीं छोड़ी है, तो शर्लक होम्स को भी हत्यारे को ढूंढने में मुश्किल होगी। आपको संबंध ढूंढना होगा। बेशक, आपके पास एक मकसद है: हीरे। आपके पास कोई

डीएनए नहीं है, कोई उंगलियों के निशान नहीं हैं, कोई सुराग नहीं है, यहां तक कि लाश भी नहीं है।
रीटा ने सिर हिलाया, वह उसके विश्लेषण की लय को तोड़ना नहीं चाहती थी।
फिर आपके पास पहले हुई उतनी ही कारगर चोरियों के सुराग हैं। एक बार संदिग्ध की प्रेमिका उस इलाके में मौजूद थी जहां चोरी हुई थी। तीन में से एक घटना महज एक संयोग हो सकती है। बिल्कुल आकस्मिक। और मानो मामला पहले से ही काफी जटिल न हो, आपको संदिग्ध से हूबहू मिलता-जुलता एक व्यक्ति मिल गया है, और एक पुरानी दुश्मनी भी है जो इस घटना के मूल में हो सकती है।
'क्या मतलब, मैं फेल हो जाऊँगा?'
'मैंने असंभव नहीं कहा, मैंने कठिन समय कहा, जो कि आप झेल रही हैं। जब आपके पास अच्छे पत्ते हों तो कोई भी जीत सकता है; असली कला तो तब जीतने में है जब आपको खराब पत्ते मिले हों, मिस फेरेरा।'
स्मार्ट गधा।
लेकिन सही है।
'आपके सामने जांच की वही पुरानी दुविधा है। आप संदिग्ध की तलाश में कितनी दूर तक जा सकते हैं? आप दुनिया के हर व्यक्ति को शामिल नहीं कर सकते, क्योंकि सीधे शब्दों में कहें तो, इस विशेष स्थिति में कोई भी हत्यारा हो सकता है। और इसका उल्टा भी चुनौतीपूर्ण है। अगर आप केवल उन लोगों से संपर्क करते हैं जो जोगानी को जानते थे, तो आप शायद असली हत्यारे को छोड़ देंगे, जो, मुझे अब लगता है, जोगानी का परिचित नहीं था,' ऐश ने आगे कहा।
'आप क्यों कहते हो कि?'
'पहली बात तो यह है कि अगर ऐसा होता, तो आप और आपकी टीम उन्हें अब तक ज़रूर ढूंढ लेते। कोई भी सारे सुरागों को छिपा नहीं सकता, कोई न कोई कड़ी आपको उन तक ज़रूर पहुंचा देती। दूसरी बात, फिर आप उन दो पिछली चोरियों का क्या स्पष्टीकरण देंगे जो जोगानी से संबंधित जगहों पर नहीं हुई थीं? इसलिए, इस व्यक्ति या समूह का जोगानी से कोई ठोस संबंध नहीं है। क्या आप मेरी बात से सहमत हैं?'
रीता ने सिर हिलाया।
'अब बात यह है कि आप कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, पहेली तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक आपके पास हर टुकड़ा न हो। कोई महत्वपूर्ण टुकड़ा या तो गायब है

या आपने उसे नजरअंदाज कर दिया है।'
'कैसा?'
'क्या आपको यकीन है कि आपने जांच से किसी को कुछ ज्यादा ही जल्दी बाहर तो नहीं कर दिया है?'
'आपका मतलब उनकी पत्नी और व्यापारिक सहयोगियों से है?'
'हो सकता है, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, अगर कोई बात जोगानी से परिचित या उससे जुड़े किसी व्यक्ति से संबंधित होती तो मामला बहुत सरल हो जाता। आपने अब तक और किसे बाहर किया है?'
'कोई नहीं। बल्कि सूची में और भी लोग जुड़ते जा रहे हैं। यह नकली हनी सिंह सबसे नया है। शुरू से ही हमारा यही मानना था कि वीर सिंह पर्दे के पीछे से काम कर रहा होगा—'
'आपका मतलब किट्टी वर्गीज से है?'
'हां। मुझे पक्का शक था कि वे किसी न किसी तरह अभी भी साथ मिलकर खेल रहे हैं। लेकिन, अगर दूसरा हनी सिंह है, और अगर वह वीर सिंह नहीं है तो वह कौन है और उसका क्या संबंध है?'
'आपको ऐसा क्यों लगता है कि नकली हनी सिंह, वीर सिंह नहीं है?'
'अगर वह ऐसा होता, तो वह मुझे फोन करके मुझसे मिलने के लिए राजी नहीं होता।'
लेकिन वह अभी तक नहीं आया है।
'हाँ, वो ज़रूर मिलेगा। या अगर वो भारत में है तो हम उसे ढूंढ लेंगे। और अगर वो भारत में नहीं है तो ज़ाहिर है वो इस मामले में शामिल नहीं है। हमें आव्रजन अधिकारियों से पता करना चाहिए, और अगर हमें यकीन हो जाता है कि उसने तय समय सीमा के भीतर भारत का दौरा नहीं किया है, तो हमें उसे हर हाल में जांच से बाहर कर देना चाहिए।'
'यह तभी संभव है जब आपको फोन करने वाला व्यक्ति वास्तव में वीर सिंह हो।'
रीटा ने आंखें घुमाईं। उसके दिमाग में एक साथ लाखों बातें चल रही थीं, इसलिए वह इस बात को पूरी तरह से भूल गई थी।
'मुझे गलत मत समझिए, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वह वह नहीं है जो वह होने का दावा करता है, लेकिन यह एक संभावना है, क्या आपको नहीं लगता?'
'बिल्कुल। लेकिन, जब हम कॉल को ट्रेस करेंगे तो हमें यह भी पता चल जाएगा कि

फोन के दूसरी तरफ कौन था, इसलिए मुझे उस कॉल के छूट जाने से इतनी परेशानी नहीं है।'
'जानते हो मुझे इन सबमें सबसे मजेदार क्या लगता है?'
'मजेदार? क्या?'
'मैंने पिछली बार आपने जो कहा था, उस पर गौर किया। क्या मैं इसे सही समझ रहा हूँ कि श्री हनी सिंह श्री राजा द्वारा पीछा किए जाने से बच गए, श्री राजा आपके पुलिसकर्मियों द्वारा पीछा किए जाने से बच गए, और फिर पुलिसकर्मी किसी अन्य समूह द्वारा पीछा किए जाने से बच गए? यानी तीन समूह पीछा किए जाने को नहीं देख पाए। यह हास्यास्पद है, यह कैसे संभव है? खासकर पुलिसकर्मी - उन्हें तो हर तरह की निगरानी के लिए सतर्क रहने का प्रशिक्षण दिया जाता है?'
'तो आपके विचार से क्या हुआ होगा?'
'मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है, मुझे बस यह अजीब लगता है। काश मुझे पता होता। तो हनी सिंह के हमशक्ल के बारे में आपकी क्या राय है?'
'मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि असली हनी सिंह को अपने जुड़वा भाई के बारे में पता है या नहीं? जब असली हनी सिंह वहीं था, तब उसका हमशक्ल इमारत में घुस गया। या तो वह छिप गया, या इंतज़ार किया - इस जोखिम के साथ कि कोई और उसे देख सकता है - या फिर वह सीधे असली हनी सिंह से मिलने अंदर चला गया।'
'ऐसे में तो कुछ और भी ज्यादा संदिग्ध बात है।'
'वह क्या है?'
'तीन महीने से अधिक समय तक उस नकली व्यक्ति की पहचान क्यों नहीं हुई? अगर वे आपस में मिले हुए हैं, तो यह उनकी पहली मुलाकात नहीं हो सकती। तो इतने समय तक श्री राजा की निगरानी में वह कैसे नहीं आया?'
वे आधी रात के बाद तक बहस करते रहे। मोमबत्तियाँ अब मंद पड़ चुकी थीं, मानो बुझने ही वाली थीं। जिम की शराब की बोतल काफी हद तक खत्म हो चुकी थी। वे सो गए।

***

सुबह छह बजे से कुछ पहले फोन की घंटी बजने से उनकी नींद खुल गई। सूरज निकल चुका था और अपनी रोशनी फैला रहा था, और पेड़ स्थिर खड़े थे, जिससे ऐसा नहीं लग रहा था कि आज सुबह कल की तरह हवा चल रही होगी।

'डीसीपी फेरेरा,' रीटा ने कहा।
'मैडम, मैं एसआई नेने बोल रही हूँ। आपको इतनी सुबह परेशान करने के लिए क्षमा करें, हमें अभी-अभी कोवलम से एक संदेश मिला है।'
मैं जालसाजी कर रहा हूँ। और केरल?
'जी मैडम, वीर सिंह ने कल रात कोवलम से आपको फोन किया था।'
'क्या आप मोबाइल कंपनी द्वारा दी गई इस लोकेशन के बारे में निश्चित हैं?'
'मैडम, इस पर किसी मोबाइल कंपनी ने काम नहीं किया। कोवलम पुलिस ने हमें फोन किया था। वीर सिंह वहीं मौजूद थे जब उन्होंने आपको फोन किया था।'
'तो अब वह कहाँ है?'
'कहीं नहीं। कल रात बीच रिसॉर्ट में उनकी हत्या कर दी गई, जहां वे छुट्टियां मनाने गए थे। स्थानीय पुलिस ने उनके मोबाइल की जांच की और चूंकि उन्होंने आखिरी कॉल हमारे कार्यालय में की थी, इसलिए उन्होंने हमें यह जानने के लिए फोन किया कि उन्होंने किससे और क्या बात की थी?'
'क्या? कैसे मारा?'
'बहुत करीब से गोली मारी गई। मेरे पास और कोई जानकारी नहीं है, लेकिन मैं अब ऑफिस जा रहा हूँ।'
'धत् तेरे की। मैं एक घंटे में ऑफिस में तुमसे मिलूंगा।'
रीटा ने कॉफ़ी पी, नहाया, कपड़े पहने, एक और कॉफ़ी पी, ऐश को अलविदा कहा और तेईस मिनट में अपार्टमेंट से बाहर निकल गई। उसका ड्राइवर उपलब्ध नहीं था, इसलिए उसने खुद गाड़ी चलाने का फैसला किया। गाड़ी के टायर ज़ोर से घिसे और रबर छिलने लगी। शनिवार की सुबह इस समय ट्रैफिक कम होने के कारण वह पच्चीस मिनट से भी कम समय में क्रॉफर्ड मार्केट में गाड़ी पार्क कर चुकी थी।

Twenty-Four

एसआई राजेश नेने पहले से ही दफ्तर में मौजूद थे। उन्होंने विक्रम और जतिन को

फोन कर दिया था, जो रीता के आने से ठीक पहले रास्ते में थे।
ऑपरेशन रूम।
'गुड मॉर्निंग मैम।'
'सुप्रभात नेने, मुझे अब तक जो कुछ भी पता है, शुरू से लेकर अब तक सब कुछ बताओ।'
नेने ने तिरुवनंतपुरम स्थित केरल पुलिस से मिली जानकारी का ब्योरा दिया। वीर सिंह और सतीश मेनन दो ऐसे व्यक्ति थे जिनके शव पुलिस ने कोवलम के बीच रिसॉर्ट से बरामद किए थे। दोनों शवों का पोस्टमार्टम किया जा रहा था, हालांकि शुरुआती जांच में पता चला कि दोनों को 9 मिमी की बंदूक से बेहद करीब से गोली मारी गई थी, जिससे संकेत मिलता है कि पीड़ित अपने हमलावर को जानते थे और उन्हें उस पर कोई शक नहीं था। पुलिस इसे दो अलग-अलग मामले नहीं बल्कि दोहरी हत्या मान रही थी, लेकिन फिलहाल उनके पास कोई संदिग्ध नहीं था। यह बीच रिसॉर्ट उन जगहों में से एक था जहां सहमति से वयस्क लोगों के बीच कई प्रेम प्रसंग होते थे, इसलिए वहां आने-जाने वाले मेहमानों को रिकॉर्ड करने के लिए कोई निगरानी कैमरा नहीं था। अब तक पूछताछ किए गए किसी भी व्यक्ति - अन्य मेहमानों और होटल कर्मचारियों - को कोई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं थी। कुछ कर्मचारियों को छोड़कर किसी को भी वीर सिंह को देखने की याद नहीं थी, लेकिन उनके पास पुलिस को देने के लिए कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। हालांकि, सतीश मेनन अपने सहकर्मियों और यहां तक कि कुछ मेहमानों के बीच भी जाना-पहचाना चेहरा था, क्योंकि वह पूल के पास बारटेंडर था। वीर सिंह द्वारा किए गए या प्राप्त किए गए किसी अन्य फोन कॉल का कोई रिकॉर्ड नहीं था - मुंबई पुलिस को किए गए कॉल के अलावा - जिससे पुलिस को कोई सुराग मिल सके। केवल स्थानीय कॉल टैक्सी या ट्रैवल एजेंटों को फ्लाइट बुक करने के लिए किए गए थे। उन्होंने रीता को बताया था कि सोमवार सुबह त्रिवेंद्रम हवाई अड्डे से मुंबई के लिए उनकी फ्लाइट बुक थी। पुलिस को तुरंत उनके फोन पर ईमेल नहीं मिल पाए, लेकिन यूनिट इस पर काम कर रही थी। अभी तक उनके पास बस इतनी ही जानकारी थी।
अपनी बात खत्म करने के बाद नेने ने पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है क्या हुआ होगा?'
'मेरा अनुमान है,' रीता ने सोचते हुए कहा, 'कि हमने किसी तरह गड़बड़ कर दी है। दिक्कत ये है कि हमें नहीं पता कि किस वजह से या किस कारण से दहशत फैली,

लेकिन इसके सारे संकेत यही हैं। कोई घबरा गया कि हम बहुत करीब जा रहे थे। किसी को पता था कि वीर सिंह तिरुवनंतपुरम के पास उस बीच रिसॉर्ट में था, और वो इस मामले के बारे में संपर्क में था और हो सकता है कि वो कोई ऐसा कदम उठा ले जो उन्हें पसंद न आए—'

'या शायद उन्होंने किसी माध्यम से वीर सिंह को खुद सूचित किया हो ताकि अगर उन्हें पता न हो कि वह कहां है तो वे उसका पता लगा सकें।'

रीटा एक मिनट तक सोचती रही और चुप रही।

'इससे मुझे लगता है कि हनी सिंह और/या किट्टी वर्गीस में कुछ गड़बड़ है, क्योंकि वीर सिंह उनसे जुड़ा हुआ था... इसलिए जो भी हनी सिंह को फंसा रहा था, वह नहीं चाहता था कि वीर सिंह सामने आए और हम उसकी तलाश करते रहे। योजना वीर सिंह को उसकी अनुपस्थिति में फंसाने की रही होगी, लेकिन इसके लिए वीर सिंह का विदेश में रहना उनकी सुरक्षा के लिए जरूरी था। लेकिन भारत में वीर सिंह के होने से उनका भेद खुल सकता था और जाहिर तौर पर यह उन्हें मंजूर नहीं था।'

'उस नकली हनी सिंह का क्या? वह कौन है?'

विक्रम और जतिन एक साथ आए, जल्दी से अभिवादन किया और खाली सीटों पर बैठ गए। नेने ने उन्हें पिछली रात की घटनाओं और रीता और उनके बीच हुई बातचीत के बारे में बताया।

'हमसे क्या चूक हुई है दोस्तों?' रीटा ने यह सवाल खुद से भी पूछा और साथ ही उन तीनों पुरुषों की ओर से भी यही बात कही।

कुछ देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। चारों दिमागों के पुर्जे खामोशी से चल रहे थे।

'नेने, हमें कितनी जल्दी इस बात की पुष्टि मिल सकती है कि बीच रिसॉर्ट में मिला शव वीर सिंह का ही है?'

'मैं जाँच करूँगा। हालाँकि मुझे नहीं पता कि वे उसके पास से मिले कागज़ात के अलावा इसकी पुष्टि कैसे कर सकते हैं। तुलना करने के लिए कोई डीएनए नमूना नहीं है, और चूंकि उसका कोई जीवित परिवार नहीं था, इसलिए इसे साबित करना वैसे भी असंभव होगा।'

'आप सही कह रहे हैं, लेकिन हमें जितना हो सके उतने सबूत जुटाने होंगे। उनके पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, जो भी हो, उस पर लगी तस्वीरें—अगर उनकी प्रामाणिकता साबित हो सकती है, तो कम से कम हमारे पास कुछ सत्यापन तो

होगा।'
नेने फोन करने के लिए कमरे से बाहर चली गई।
विक्रम, क्या हमने श्री राजा की सुरक्षा सुनिश्चित कर ली है? रॉन जोगानी की हत्या भले ही अनियोजित रही हो, लेकिन यह हत्या निश्चित रूप से ऐसी नहीं है, और मुझे नहीं लगता कि ये लोग किसी भी ऐसी चीज से पीछे हटेंगे जो उनके लिए मुसीबत खड़ी कर सकती है। मैं सोच रहा हूँ कि क्या हमें श्री राजा से कहना चाहिए कि वे अपने रहस्यमयी मुवक्किल को एक विशेष रिपोर्ट भेजें जिसमें दो हनी सिंहों के बारे में बताया गया हो। आप लोगों का क्या विचार है?
'मुझे ऐसा लग रहा है कि दोनों हनी सिंह कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं, मैडम,' जतिन ने कहा।
'जतिन, उस अनुमान के बारे में हमें विस्तार से बताएं।'
'मुझे नहीं पता कि उसका हमशक्ल कैसे है, लेकिन हनी सिंह जानता है कि उसका एक शातिर हमशक्ल है। मैं आपको यह नहीं बता सकता कि दूसरे को किसने खोजा, क्योंकि हमें कोई पारिवारिक संबंध नहीं मिला है—'
विक्रम ने बीच में टोकते हुए कहा, 'अभी तक तो ऐसा ही है।'
'हां, अभी तक तो यही लगता है। और मुझे लगता है कि एक ही भ्रूण से पैदा हुए बिना दो लोगों का हूबहू एक जैसा दिखना नामुमकिन है। वे दिखने में मिलते-जुलते हो सकते हैं, लेकिन एक जैसे नहीं। तो उनमें से एक तो साफ तौर पर प्लास्टिक का है, होना ही चाहिए। अगर वे एक जैसे हैं तो हमें असल में पता नहीं चलेगा कि असली कौन है, है ना? तो हमें कैसे पता चलेगा कि ब्रसेल्स में कैमरे में कौन सा हनी सिंह कैद हुआ था? हमने जिसका भी पीछा किया होगा, वही ब्रसेल्स गया होगा। है ना?'
'एक मिनट रुको। अगर दो हनी सिंह हैं तो पुलिस के मुखबिरों ने दूसरे को क्यों नहीं ढूंढा?' विक्रम ने अपनी बात रखी।
'हो सकता है उन्होंने ऐसा किया हो, लेकिन उन्हें इसका एहसास न हुआ हो। हमें नहीं पता कि दूसरा कहाँ रहता है। हो सकता है वे एक ही छत के नीचे रहते हों, जो मेरी इस परिकल्पना की पुष्टि करता है कि वे मिलीभगत कर रहे हैं।'
'तो आपको लगता है कि मिसेज लकी सिंह को यह पता है?'
'किटी वर्गीज को यह बात ज़रूर पता होगी, मुझे पूरा यकीन है।' रीटा को भी लग रहा था कि उसकी यह थ्योरी किसी नतीजे पर पहुँच रही है।

विक्रम ने कहा, 'अब तक हम यही मान रहे थे कि हनी सिंह से मिलता-जुलता व्यक्ति असल में वीर सिंह ही था; उसकी हत्या ने जाहिर तौर पर इस सिद्धांत को पूरी तरह खारिज कर दिया है। लेकिन वह दो हमशक्ल पुरुषों के साथ नहीं रह सकती। यह संभव नहीं है। इससे बहुत भ्रम पैदा हो जाएगा।'

'शर्लक होम्स की कही बात याद रखो,' रीटा ने उन्हें याद दिलाया, '"जब आप असंभव को हटा देते हैं, तो जो कुछ भी बचता है, चाहे वह कितना भी असंभव क्यों न हो, वही सत्य होना चाहिए।" एक ही अपार्टमेंट में दो एक जैसे आदमियों का रहना असंभव नहीं है - न तो किटी के अपार्टमेंट में और न ही श्रीमती लकी सिंह के अपार्टमेंट में। मुखबिरों की नज़र से यह कैसे छूट सकता था? हालांकि, जो बात मेरी समझ से परे है, वह यह है कि अगर वे एक ही जगह रहते हैं, तो हनी सिंह नंबर दो को हनी सिंह नंबर एक के कार्यालय में जाकर खुद को उजागर करने की क्या ज़रूरत थी?'

तीनों एक बार फिर चुप हो गए। पल सालों की तरह धीरे-धीरे, अशुभ ढंग से बीतते गए। मामले में कुछ भी हल निकलता नहीं दिख रहा था। अब तक उनके सारे सिद्धांत चकनाचूर हो चुके थे।

'जतिन, क्या तुम्हें मिस्टर हैंडलबार राजा के फोन से तस्वीरें मिल गईं?' रीता ने सन्नाटा तोड़ते हुए पूछा।

'जी मैडम।' जतिन उठा और उसने वह फोल्डर उठाया जिसमें उसने हैंडलबार के फोन से बरामद की गई ज़ूम की हुई तस्वीरें रखी थीं।

हैंडलबार का ज़ूम कमाल का था। इसने दोनों हनी सिंहों के चेहरे बखूबी कैद कर लिए थे। बिल्कुल एक जैसे चेहरे। जो नकली लग रहा था, वह इस तरह खड़ा था कि उसकी लंबाई-वजन-बनावट रीता से मिले हनी सिंह जैसी ही दिख रही थी। चलती कार में बैठे हनी सिंह का सिर्फ चेहरा ही दिख रहा था और वह भी बिल्कुल हूबहू था। कई तस्वीरों में किटी भी बिल्कुल असली हनी सिंह जैसी ही थी। जतिन ने हैंडलबार के फोन से समय नोट कर लिया था और उसे तस्वीरों के पीछे छाप दिया था। तस्वीरों से पता चलता है कि दोनों को कुछ ही पलों के अंतराल पर देखा गया था। पहले कथित नकली हनी सिंह इधर-उधर ताक-झांक कर रहा था, फिर असली हनी सिंह किटी के साथ वहां से निकला। उसके बाद कथित नकली हनी सिंह ऑफिस की इमारत से निकला और फिर असली हनी सिंह अपने ऑफिस लौट गया, इसी क्रम में। असली हनी सिंह के असली होने का एकमात्र कारण यही बताया गया कि वह किटी वर्गीस के

साथ था।
'वे एक दूसरे को जानते हैं, मैडम,' जतिन ने फिर से कहा।
फोन कॉल के बाद नेने वापस आए और उन्होंने बताया कि उन्होंने केरल पुलिस से वीर सिंह की पहचान को जल्द से जल्द स्थापित और प्रमाणित करने के लिए कहा है। रीता ने बदले में उन्हें बताया कि उनकी अनुपस्थिति में तीनों ने क्या चर्चा की थी।
इस मामले में अभी भी कई अनसुलझे सवाल थे। हैंडलबार का मुवक्किल कौन था और उसका क्या संबंध था, या हनी सिंह का महीनों तक पीछा करवाने के पीछे उसका मकसद क्या था? मुवक्किल के लिए हैंडलबार को पैसे देना और फिर उस पर नज़र रखने के लिए एक और जासूस को नियुक्त करना ज़रूर कोई महत्वपूर्ण बात होगी। क्यों...? तभी ऐश के शब्द उसके दिमाग में गूंज उठे। "क्या हनी सिंह को मिस्टर राजा का पीछा करते हुए नज़र नहीं आया, जिन्हें आपके पुलिसवालों ने भी नहीं देखा, और फिर उन पुलिसवालों ने भी नहीं देखा? यानी तीन समूह पीछा किए जाने का पता लगाने में नाकाम रहे..."
'पता है हम क्या चूक गए? हनी सिंह और हैंडल बार का पीछा करते समय हमारे अंडरकवर एजेंटों के पीछे जो लोग थे, वे शायद हनी सिंह नंबर दो ही थे।' नेने ने यह कहकर बात खत्म कर दी और बाकी लोगों की प्रतिक्रिया जानने लगे।
यह निःसंदेह एक नया अनुमान था जिसके बारे में उन्होंने पहले कभी नहीं सोचा था। कमरा इतना शांत था कि इमारत के भूतल पर एक पत्ता गिरने की आवाज भी सुनाई दे सकती थी।
'अगर आप मुझसे पूछें तो यह और भी चिंताजनक है...' रीटा ने बोलना शुरू किया और बीच में ही रुक गई। 'क्या आप में से किसी के पास सिगरेट है?'
तीनों लड़के अचंभित दिखे। दरअसल, वे स्तब्ध रह गए। मानो वे अनजाने में अपने माता-पिता के बेडरूम में घुस गए हों और उन्हें रोमांस करते हुए देख लिया हो।
'क्या? मैं तो वयस्क हूँ।'
'लेकिन आप धूम्रपान नहीं करते,' विक्रम ने जवाब दिया।
'मैंने लगभग पांच साल पहले तक ऐसा किया था। और ऐसे क्षणों में... आप जानते हैं कि वे क्या कहते हैं, एक बार व्यसनी हो जाने पर—'
'बकवास...' विक्रम को अपनी गलती का एहसास तब हुआ जब वह शब्द उसके मुंह से निकल चुका था।

'क्या?'
'मुझे बेहद खेद है, महोदया।'
अपने बॉस को कोई मूर्खतापूर्ण या हानिकारक काम करने से रोकना एक बात है, किसी अनौपचारिक कॉर्पोरेट कार्यालय में उससे बकवास करना शायद स्वीकार्य हो सकता है, लेकिन पुलिस और सशस्त्र बलों में जहां किसी कमांडिंग ऑफिसर से उसके अधिकार या अनुरोधों पर कभी सवाल नहीं किया जाता...?
'मुझे सचमुच बहुत खेद है मैडम,' उसने फिर से माफी मांगी।
'कोई बात नहीं। मुझे पता है आपकी मंशा सही थी, पापा।' रीटा ने प्रभाव दिखाने के लिए पापा शब्द को थोड़ा लंबा खींचा।
इसके बाद बेतहाशा हंसी का दौरा पड़ गया।
'क्या हमें कुछ जानना चाहिए?' जतिन ने नेने की ओर देखते हुए पूछा।
'हां।' रीता ने विक्रम को इशारा किया कि वह श्रीमती लकी सिंह के अपार्टमेंट में हुई घटना के बारे में बताए, जब रीता ने यह मान लिया था कि विक्रम उसका भाई या पिता है।
ऐसे समय में, जब सब कुछ आपके पक्ष में नहीं लग रहा हो, हास्य-विनोद एक राहत की बात होती है। यह पुलिस अधिकारियों के रोजमर्रा के नीरस और उबाऊ जीवन से एक अलग हटकर एक राहत प्रदान करता है।
जतिन और नेने ने विक्रम की ओर देखा और एक साथ कहा: 'पापा।'
'ठीक है, तो हम कहाँ थे?'
'तुम सिगरेट ढूंढ रहे थे।'
'नहीं। उससे पहले।'
'नेने ने कहा कि हनी सिंह नंबर दो वह पूंछ था जिसे हमारे गुप्तचरों ने छोड़ दिया था।'
'धन्यवाद, हाँ। इससे भी अजीब बात यह है कि हमारे लोग उस पूंछ को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं जो उनके लक्ष्य से मिलती-जुलती है? उसे दूर से ही पहचान लिया जाना चाहिए था; चेहरा तो जाना-पहचाना ही लगना चाहिए था।'
'हो सकता है उसने अपना वेश बदला हो।'
'वाह! तो पहले वो हनी सिंह जैसा दिखने के लिए अपने पूरे चेहरे पर प्लास्टिक लगवा लेता है और फिर वो ऐसा दिखने से बचने के लिए उसे छुपाता है?'
'केवल हैंडलबार का पीछा करने के लिए ताकि हैंडलबार को पता न चले।'

'यह संभव है, बिल्कुल। लेकिन इससे यह साबित होता है कि हनी सिंह नंबर दो, हैंडलबार का रहस्यमय ग्राहक होना चाहिए, जिसका अर्थ यह भी है कि वह जानता था कि जब उसका हमशक्ल प्रकट होगा तो हैंडलबार उसे देख लेगा।'
'तो वीर सिंह का इससे क्या संबंध है? उसे जरूर संबंध होना चाहिए, वरना उसकी हत्या क्यों की जाती?'
चलिए इस परिकल्पना को आगे बढ़ाते हैं: हमारा आधार यह है कि हनी सिंह अपने हमशक्ल के बारे में जानता है। उन्होंने किसी तरह चोरियां की हैं; जोगानी की हत्या ने उन्हें शक के घेरे में ला दिया है। जैसा कि आप में से किसी ने पहले बताया था, वे हनी सिंह परिवार के किसी सदस्य का पीछा करवाते हैं ताकि पता चल सके कि स्थानीय पुलिस को कोई सुराग मिला है या नहीं। वे वीर सिंह के लापता होने की थ्योरी को और हवा देते हैं और यह उनके लिए फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि, मान लीजिए, हम उनके झांसे में आ गए। उन्होंने हैंडल बार को हमशक्ल को देखने दिया, इस उम्मीद में कि हम सोचेंगे कि यह निश्चित रूप से वीर सिंह ही है क्योंकि हमने उसे ही नकली समझा था - अपने दुश्मन हनी सिंह की तरह दिखने वाला, किसी चीज की जासूसी कर रहा है? बस! सब कुछ ठीक चल रहा था जब तक उन्हें पता नहीं चला कि असली वीर सिंह देश में वापस आ गया है, और यह उनकी योजना के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। वे उसे हमसे मिलने नहीं दे सकते थे ताकि उसे संदिग्धों की सूची से बाहर न किया जा सके? जैसे ही हम उसे देखते, हमें पता चल जाता कि वह हमारा हमशक्ल नहीं है, है ना? इसलिए, उन्हें उसे खत्म करना ही था। समय ठीक नहीं था क्योंकि, दुर्भाग्य से, उसने अपनी मौत से पहले ही हमें फोन कर दिया था, जिसके बारे में उन्हें इस समय पता हो भी सकता है और नहीं भी। तो, सबसे पहले, नेने, कृपया केरल में जांच का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति से कहें कि वे वहां की पुलिस को पीड़ितों के नाम मीडिया में लीक करने से रोकें। यदि आवश्यक हुआ तो हम कमिश्नर सक्सेना से इस बारे में फैसला लेने को कहेंगे।
लेकिन अगर वीर सिंह की हत्या उन्हीं लोगों ने करवाई है, तो उन्हें इस बात की पुष्टि मिल चुकी होगी कि काम हो गया है, है ना?
लेकिन उन्हें नहीं पता कि हमें यह बात पता है। असल में बात यह है कि वे मानते हैं कि हमें अभी भी कुछ पता नहीं है, जिससे शायद उन्हें यह गलतफहमी हो गई है कि हम अभी भी उसका पीछा कर रहे हैं। अगर वीर सिंह का नाम अखबारों में हर जगह

छपता है तो उन्हें पता चल जाएगा कि हमारे पास यह जानकारी है और हम फिर से छानबीन शुरू कर देंगे। हमें ऐसा दिखाना होगा कि हमें वीर सिंह की हत्या के बारे में कुछ नहीं पता - शायद यही हमारे लिए उनके खेल में आगे रहने का एकमात्र मौका है।
'समझ गया।' नेने फोन करने के लिए फिर से बाहर चली गई।
वह पांच मिनट में वापस आकर बोला कि केरल पुलिस मुंबई पुलिस के अनुरोध मात्र से दोहरे हत्याकांड को छिपाने के लिए सहमत नहीं थी; दोनों पुलिस बलों के बीच अतीत में कुछ अनबन हुई थी।
हुआ यूं कि पांच साल पहले—अगर सेक्सी के शब्दों में कहें तो पूरे पांच साल पहले —मुंबई पुलिस ने दक्षिण मुंबई से आए एक मामूली अनुरोध को ठुकरा दिया था। और पांच साल, भले ही लंबा समय हो, इतना भी पुराना नहीं था कि पुलिस तंत्र उसे भूल जाए। रीता के अनुरोध को ठुकराने का कोई कारण नहीं था, लेकिन यह बदले की राजनीति थी।
बाहर के लोग अक्सर इसे गंदा खेल कहते हैं, लेकिन अगर आप गौर से देखें तो राजनीति एक बेहद मजेदार खेल है। दिन के उजाले में दोस्त, रात में कट्टर दुश्मन; आज के दुश्मन कल के दोस्त; बिस्तर के साथी चादरों से भी तेज़ी से बदलते हैं; दिन में विरोधी, रात में प्रेमी। आज कड़वाहट से भरे, कल नरम। प्यादा रानी की रक्षा करता है, रानी प्यादे की बलि दे देती है। यह रिश्तों का एक रंगीन नजारा था। हालांकि, यह सब तभी तक चल सकता था जब तक आप शेरनी और उसके बच्चे के बीच न आएं।
मुंबई पुलिस आयुक्त संजय सक्सेना उस समय बहुत क्रोधित हुए जब उन्हें पता चला कि दक्षिण में किसी ने उनके कार्यालय से भेजे गए अनुरोध को ठुकरा दिया है। वह भी उस मामले में जिसकी देखरेख वे कर रहे थे और जिसमें एक अंतरराष्ट्रीय एजेंसी शामिल थी। केरल पुलिस प्रमुख को दो फोन और ग्यारह मिनट लगे और स्थानीय पुलिस अधीक्षक ने नेने को वापस फोन करके माफी मांगी और अपने पहले के रुख से पीछे हट गए। वहां की स्थानीय पुलिस ने केवल दोहरे हत्याकांड के बारे में बात की, लेकिन फिलहाल पीड़ितों की पहचान मीडिया के सामने उजागर नहीं की।

***

'ठीक है, ये है योजना,' एक घंटे बाद जब वे सब फिर से मिले तो रीटा ने कहना शुरू किया। 'मैं हर जगह छानबीन करना चाहती हूँ, ज़रूरत पड़ने पर पूरे जंगल को उखाड़ फेंकना चाहती हूँ, लेकिन मुझे इस दूसरे हनी सिंह का पता लगाना है। आदर्श रूप से,'

वह एक मिनट रुकी, अपने विचारों को व्यवस्थित किया और आगे बोली, 'हमें बिल्कुल अलग तरह के मुखबिरों को ज़मीन पर उतारना चाहिए... जिन्हें हमने पिछली बार इस्तेमाल नहीं किया था। उन्हें वही तस्वीर देनी चाहिए जो हमें विक्टर से लिफ्ट में मिली थी - हनी सिंह नंबर एक की वो तस्वीरें नहीं जो हमने अलग-अलग स्रोतों से इकट्ठा की हैं - और उन्हें खोज में लगा देना चाहिए। देखते हैं दूसरी खोज हमें कहाँ ले जाती है। शायद हमें कामयाबी मिल जाए।'

नेने और जतिन ने सिर हिलाया। विक्रम ने हमेशा की तरह इसे लिख लिया।

'नेने, कृपया तुम इसे संभालो।'

'हां मैम।'

'कृपया उन लोगों का चयन करें जो किसी भी मीडिया संस्थान से बात न करें। हम नहीं चाहते कि यह जानकारी उन्हें लीक हो। अगर उन्हें पता चल गया कि हम उसी व्यक्ति की दोबारा तलाश कर रहे हैं, तो पिछली बार से भी ज्यादा नुकसान होगा।'

'समझ गया महोदया। ऐसा दोबारा नहीं होगा।'

'धन्यवाद नेने। और जतिन, मैं चाहता हूँ कि आस-पास की सभी इमारतों की छानबीन की जाए—कम से कम उन अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्सों की जहाँ लकी सिंह और किट्टी वर्गीस रहते हैं। हमारे लोगों को हर पुरुष से व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहिए, इससे पहले कि उसे जाँच से बाहर किया जाए। संदिग्ध कहीं आस-पास ही होगा ताकि इतने लंबे समय तक उसका पता न चल सके। हमें उसे ढूंढना ही होगा।'

'हां मैम।'

जैसा कि ऐश ने स्पष्ट किया था, हत्या की जांच कभी भी सरल नहीं होती। लड़कों के जाने के बाद रीता सोच-विचार करती रही—जब तक हत्यारा रंगे हाथों पकड़ा न जाए, या किसी ने उसे देखा न हो, या हत्यारा अपने पीछे सुराग के रूप में कोई निशान न छोड़ गया हो, जैसे बाल, खून, वीर्य, उंगलियों के निशान, त्वचा के अवशेष या कोई डीएनए जिसे डिकोड किया जा सके—यह मामला उसे एक बिल्कुल अलग तरीके से झकझोर रहा था। उसे अब भी यह आभास नहीं हो रहा था कि वह सही रास्ते पर है। रॉन जोगानी हत्याकांड का मामला अब और भी पेचीदा हो गया था। केरल पुलिस विभाग वीर सिंह हत्याकांड की जांच जैसे चाहे वैसे कर सकता था और जो भी निष्कर्ष निकाले, रीता को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसे लगभग यकीन हो गया था कि यह मामला उसके मामले से जुड़ा हुआ है।

फिर भी थोड़ी सी आशंका बनी हुई थी, जो कि स्वाभाविक ही थी क्योंकि अभी भी बहुत सी बातें अनसुलझी थीं। क्या रॉन जोगानी की हत्या वाकई चोरी से संबंधित हत्या थी और फिर वीर सिंह की हत्या सिर्फ़ सबूत मिटाने के लिए की गई थी? या फिर यह कुछ और ही था, कुछ ऐसा भयावह जिसे उसने और उसकी टीम ने नज़रअंदाज़ कर दिया था और जो आगे चलकर उनके लिए मुसीबत बन सकता था? जो भी हो, अब यह संभावना कम ही लग रही थी कि यह कोई प्रतिशोध या बदले की भावना से किया गया मामला था, जैसा कि उन्होंने किट्टी वर्गीस से मिलने और यह पता चलने के बाद सोचा था कि मिस किट्टी का वीर सिंह के साथ कुछ समय का संबंध था।

शुक्र है कि इंटरपोल और मुंबई पुलिस द्वारा स्थानीय स्तर पर हत्यारे की तलाश करने की खबर अखबारों के पहले पन्नों से हटकर पहले तो स्थानीय समाचार पत्रों में चली गई, जहां उसे शुरू में अनुमान से कहीं कम जगह मिली, और फिर वह पूरी तरह से खबर बनने में विफल रही।

सच तो यह है कि मीडिया और पुलिस बल दो ऐसे दबंग हैं जिनके बीच कभी बनती नहीं। वे ज़्यादा से ज़्यादा एक-दूसरे को शिष्टाचारवश बर्दाश्त करते हैं, और यही सही भी है: एक की कमियों को उजागर करके दूसरे पर लगाम लगाई जाए। सच यह भी है कि मीडिया कॉन्फ्रेंस से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। हाँ, जनता को जानने का अधिकार था, लेकिन हर बात को लाउडस्पीकर पर या मोटे अक्षरों में हाइलाइट करके सुनने का नहीं। और अगर जनता को कोई नुकसान नहीं होने वाला था, तो उन्हें जानने की ज़रूरत ही क्या थी? आम आदमी को बेवजह डराने की क्या ज़रूरत थी, जो पहले से ही ज़्यादातर मामलों में असुविधाजनक जीवन का बोझ उठा रहा था?

रीटा जानती थी कि सेक्सी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को बड़ी सावधानी से आयोजित किया होगा और पत्रकारों को अपनी तराशी हुई शब्दावली से अवगत कराया होगा। या शायद उसने एकमात्र प्रेस कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों को सुपरग्लू की एक बड़ी खुराक दे दी हो, जिसे आयोजित करके वे चुप हो गए हों। हो सकता है कि पुलिस की उपेक्षा के कारण इस हत्या से जुड़ी खबरों और कथित विशेषज्ञ राय के स्रोत सूख गए हों या शायद मीडिया ने दिलचस्पी खो दी हो। वे चुप हो गए थे। और इससे उसे याद आया कि उसने सेक्सी के लिए इस सप्ताह का साप्ताहिक लॉग जमा नहीं किया था। आज शनिवार था, और इसे जमा करने में बहुत देरी हो चुकी थी।

रीता को एहसास हुआ कि उसने अपने जबड़े को इतनी देर तक भींच रखा था कि उसमें दर्द होने लगा था, मानो वह कुछ घंटों से च्युइंग गम चबा रही हो। तभी नेने ने उसे फोन करके बताया कि मुखबिरों का एक नया समूह इकट्ठा कर लिया गया है और उन्हें लिफ्ट से शिशिर सिंह/हनी सिंह की ली गई तस्वीर दिखाकर जानकारी दी गई है। उसे एक-दो दिन में कुछ नतीजे मिलने की उम्मीद है।
शायद इस बार उनकी किस्मत साथ दे?
हर चक्र को किसी न किसी बिंदु पर बंद होना ही था।

25
Twenty-Five

हैंडलबार के लिए पहले घबराहट, फिर गुस्सा, फिर हताशा और अंत में निराशा का दौर आया। वह दलदल में फंसे सूअर की तरह पसीने से तरबतर हो रहा था, भले ही हवा ठंडी थी।
कमरे का तापमान अठारह पर सेट था। उसने अपने अकाउंट में लॉग इन करके यह चेक किया कि उसके क्लाइंट ने ड्राफ्ट फोल्डर में छोड़ा हुआ मैसेज पढ़ा है या नहीं। उसके क्लाइंट ने पिछली शाम का अपडेट पढ़ कर डिलीट कर दिया था, लेकिन उसके लिए एक मैसेज अभी भी बाकी था। लोग जानते हैं कि उन्हें कब अपराधबोध होता है; वह जानता था कि पुलिस की सलाह मानकर दूसरे हनी सिंह का पता लगाने की बात छुपाने का वह दोषी है। अगर उसके क्लाइंट को किसी और स्रोत से इसकी जानकारी मिल गई होती — अगर पिछले रिकॉर्ड को देखें तो उसे पूरा यकीन था कि यह खबर क्लाइंट तक पहुंच गई होती — तो इस बार सफाई देना आसान नहीं होता। अपनी रिपोर्ट में उसने बचाव में अपने क्लाइंट को बताया था कि हनी सिंह के ऑफिस जाते समय उसकी गाड़ी का टायर पंचर हो गया था, इसलिए निगरानी शुरू करने में देरी हो गई थी, जो कुछ हद तक सच था। अगर हैंडलबार अकेला ही इस काम पर था और कोई टीम उस पर नज़र नहीं रख रही थी, तो खुद को बेगुनाह साबित करने के लिए यह काफी था। वह एक जायज़ कारण से देर से आया था, इसलिए दूसरे हनी सिंह से

नहीं मिल पाया। हालांकि, दो हनी सिंहों की घटना काफी बाद में हुई थी और दूसरी टीम ने भी घटना का समय और यह बात बता दी होगी कि उन्होंने उसे दोनों हनी सिंहों को देखते और उनकी तस्वीरें लेते हुए देखा था। उसने टालमटोल करने का फैसला किया। अगर वह क्लाइंट का मैसेज नहीं खोलता, तो शायद क्लाइंट यह मान लेता कि उसने अभी तक मैसेज नहीं देखा है, और तुरंत कोई सख्त कदम नहीं उठाता। शायद उसे पुलिस को बुलाना चाहिए। क्या वे ही उसे इस मुसीबत में फंसाने वाले नहीं थे? अगर वे उसके दरवाजे पर नहीं आते, तो सब कुछ पहले की तरह सरल और सुखद होता, इसलिए अब उन्हें ही इसका खामियाजा भुगतना चाहिए।

***

कमरा अंधेरा था। पर्दे जानबूझकर इस तरह खींचे गए थे ताकि कोई रोशनी अंदर न आ सके, मानो किसी ने दिन में ही रात का नाम रखने की कोशिश की हो।

'अब सामान पैक करके भागने का समय आ गया है,' हनी सिंह - या उसके जैसा दिखने वाला कोई व्यक्ति - फोन पर लगभग फुसफुसाते हुए माइक्रोफोन में बोल रहा था।

दूसरी तरफ से चटकने की आवाज आई। दूसरी तरफ वाले व्यक्ति ने कुछ कहा।

मुझे पता है मैंने ऐसा कहा था, लेकिन मुझे नहीं पता था कि स्थानीय पुलिस इतनी जल्दी इतनी करीब आ जाएगी... हाँ, वीर मर चुका है और यह अब एक बड़ी चिंता की बात है, क्योंकि अब उस पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता। हमने ठीक से सोचा नहीं था, और अब हमारे पास कोई दूसरा बलि का बकरा नहीं है।' बातचीत आगे बढ़ने के साथ ही आवाज़ धीमी होती गई।

लाइन में फिर से कर्कश आवाज आने लगी।

'इससे पहले कि सब कुछ बिगड़ जाए, हमें भागने की योजना बनानी होगी...'

चटकने की आवाज़।

'...नहीं, मेरी बात सुनो। मैंने अब तक हर संभव प्रयास किया है, लेकिन लंबे समय तक टिके रहना मुश्किल होता जाएगा, खासकर अगर पुलिस तलाशी वारंट लेकर आ जाए तो—'

चटकने की आवाज़।

'हां, सब कुछ एन्क्रिप्टेड है, लेकिन यह कोई मोर्स कोड नहीं है, और वह कोड भी अंत में टूट गया था। याद रखिए, इंटरपोल में तो दिमाग वाले लोग हैं। अगर पुलिस को

हमारे सारे कंप्यूटर मिल गए तो हम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे। आपको नहीं पता कि हमने क्या-क्या खोया है और उन्हें क्या-क्या मिल सकता है।'
एक और लंबी चटकने की आवाज।
'मैं सब कुछ कैसे नष्ट कर सकता हूँ? क्या मैं अपने कार्यालय में आग लगा दूँ?' अब उसकी आवाज़ में चिड़चिड़ाहट साफ झलक रही थी।
फिर से चटकने की आवाज।
ठीक है, देखते हैं यह हफ्ता कैसा रहता है। मैं जल्द से जल्द टिकट बुक करवा रहा हूँ। हल्का सामान पैक करना और सिर्फ वही चीजें पैक करना जिनके बिना काम नहीं चल सकता। अभी के लिए अलविदा।

***

दोपहर के भोजन के बाद रीता अपने दफ्तर में बैठी, अब तक बनी सभी थ्योरीज़ और उसके थके हुए दिमाग में चल रही कुछ नई थ्योरीज़ पर सोच-विचार कर रही थी। कहते हैं, हर वजह के पीछे कोई न कोई वजह ज़रूर होती है। उसे अभी तक पता नहीं था कि वो वजह क्या थी, लेकिन ब्रसेल्स होटल में रॉन जोगानी की हत्या के बाद हनी सिंह परिवार के किसी सदस्य के पास दूसरे पर नज़र रखने के पीछे कोई गुप्त कारण ज़रूर था। अगर पुलिस के पास कोई तस्वीर थी—जो उन्हें एक दिन बाद खबरों से पता चल ही गई होगी—तो किसी भी आम आदमी के लिए यह समझना मुश्किल नहीं था कि पुलिस देर-सवेर उनके घर ज़रूर आएगी। जैसा कि उसकी टीम ने कहा था, इसके पीछे का कारण शायद ये जानना था कि पुलिस कब और किस विभाग से आएगी और उनकी आगे की गतिविधियाँ क्या होंगी? क्राइम ब्रांच, जिसका वह हिस्सा थी, प्राथमिक प्रतिक्रिया इकाई नहीं थी, इसलिए हत्यारों ने उनसे आने की उम्मीद बिल्कुल नहीं की होगी। लेकिन जब इंटरपोल इसमें शामिल हो गया, तो सेक्सी के लिए यह मामला किसी स्थानीय पुलिस बल को सौंपने के बजाय उसे सौंपना उचित ही था, क्योंकि यह तय नहीं था कि मामला किसे सौंपा जाए। सच कहूँ तो, उन्हें अब भी समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ देखें। शायद पिछली हीरे की चोरियाँ पकड़ी न जा पातीं—क्योंकि वे देखने में एक-दूसरे से जुड़ी हुई नहीं लग रही थीं—अगर किसी एक पुलिस स्टेशन को यह ज़िम्मेदारी सौंपी जाती। लेकिन अपराधियों के लिए दुर्भाग्यवश, मामला क्राइम ब्रांच को सौंपना अच्छा नहीं रहा; क्राइम ब्रांच के पास स्थानीय पुलिस स्टेशन से कहीं ज़्यादा संसाधन थे और मुंबई पुलिस कमिश्नर की सारी शक्तियाँ

उसके पास थीं।
हालांकि, रीता को अब भी कुछ बात खटक रही थी: काश कोई एक हनी सिंह ब्रुसेल्स गया होता जिसने ब्रुसेल्स में उसकी मदद की होती?
वह मन ही मन विचार कर रही थी।
लेकिन वे यह कैसे सुनिश्चित कर सकते थे कि केवल एक ही हनी सिंह ब्रुसेल्स गया था?
दूसरे व्यक्ति के पास पासपोर्ट नहीं था।
इसमें बड़ी बात क्या है!
वह किसी दूसरे नाम से भी ऐसा कर सकता था। ठीक वैसे ही जैसे दूसरा हनी सिंह—जिस पर उसे पूरा भरोसा था—असली में शिशिर सिंह के नाम से नहीं जाना जाता था। घटना से पहले दोनों हनी सिंहों पर किसी का कोई नज़र नहीं था, इसलिए अगर वह कुछ दिनों के लिए देश से बाहर चला गया होता तो किसे पता चलता?
किट्टी वर्गीज ने कुछ नहीं बताया। मतलब, अगर उसे पता भी था तो। वह देश से बाहर थी, इसलिए शायद उसे सच में कोई जानकारी ही नहीं थी।
श्रीमती लकी सिंह को शायद पता भी न हो। उनके बेटे को यह कहने की ज़रूरत नहीं थी कि वह कुछ दिनों तक घर नहीं आ रहा है। वह नियमित रूप से फोन कर सकता था।
फोन रिकॉर्ड का क्या हुआ? और उसके ब्लैकबेरी से आए ईमेल का क्या हुआ?
इसे समझना कोई मुश्किल काम नहीं था। जो व्यक्ति होटल नेटवर्क में घुसपैठ कर सकता था, जोगानी के कंप्यूटर को दूर से ही नष्ट कर सकता था, और उसके आईपी पते को इस तरह छिपा सकता था कि प्रशिक्षित पुलिस तकनीशियन भी उसमें घुसपैठ न कर सकें, उसके लिए उसके ब्लैकबेरी के जियोलोकेशन में हेरफेर करने के लिए कुछ कोड चलाना कितना खतरनाक हो सकता था, ताकि विदेश में रहते हुए भी उसका कनेक्शन भारत के रास्ते ही हो?
एबीसी जितना आसान।
और अगर किसी कैमरे ने हनी सिंह को कैद कर भी लिया, तो कोई यह सवाल भी नहीं करेगा कि उनमें से किसे कैद किया गया है, क्योंकि दो हनी सिंहों की न तो उम्मीद थी, न कल्पना थी और न ही उनका कोई अस्तित्व था। वाकई कमाल की बात है।

दुख की बात यह थी कि हनी सिंह और उसके साथियों को अब पता चल चुका था कि मुंबई में कौन उनकी तलाश कर रहा है। इतना ही नहीं, उन्हें इस बात की भी पूरी जानकारी थी कि पुलिस वीर सिंह के बारे में पूछताछ कर रही है, जो बेचारे के लिए मुसीबतों का पहाड़ तोड़ रहा था। वीर सिंह ने शायद इस रहस्य का कुछ सुराग दिया हो या न दिया हो, लेकिन उसकी हत्या ने रीता को लगभग आश्वस्त कर दिया था कि हनी सिंह और/या किट्टी वर्गीस इसमें शामिल हैं। अगर किट्टी वर्गीस किसी भी तरह से शामिल थी, तो हनी सिंह भी इसमें शामिल था। हालांकि, इसका उल्टा निश्चित नहीं था: किट्टी वर्गीस शायद इस खेल में सिर्फ एक दर्शक हो सकती है, जब तक कि उसने दूसरे हनी सिंह को छिपाने में मदद न की हो। संभव था, बल्कि इसकी संभावना भी थी; किसी भी बात को अभी खारिज करना जल्दबाजी होगी।

थकी-हारी और तरह-तरह के सिद्धांतों को उलझाते हुए, रीटा ने ऐश को फोन करने का फैसला किया। वह पूरी तरह से भूल गई थी कि जब वह सुबह उसे छोड़कर गई थी, तब वह शहर में था और उसके बिस्तर पर था।

ऐश चॉप-सुई खा रहा था जब रीटा ने फोन किया। उसने बताया कि वह सारा दिन अपार्टमेंट में संगीत सुनता रहा। मुंबई में हर चीज़ के लिए रूम सर्विस की सुविधा थी। एक फोन कॉल करने पर ज़्यादातर किराने का सामान और खाना कुछ ही मिनटों में बिना किसी डिलीवरी शुल्क के आपके दरवाजे पर डिलीवर हो जाता था। रीटा के फ्रिज में बहुत सारे मेनू और दुकानों के कार्ड रखे थे और ऐश ने कुछ बीयर और चाइनीज़ टेक-अवे ऑर्डर किया था।

'तुम्हें पीछे छोड़ने का मुझे अपराधबोध हो रहा था...'

'मुझे लगता है कि आज रात आपको इसकी भरपाई करनी होगी।'

अब घटियापन का हमला शुरू होने वाला है।

'ऐश, मैं ऑफिस में हूँ।' कुछ आपत्तिजनक टिप्पणियों की आशंका के बावजूद, वह फिर भी शरमा गई।

'इसीलिए तो मैंने कहा था कि आपको इसकी भरपाई आज रात करनी होगी, अभी नहीं, डीसीपी मिस हॉटी।'

मैं आपसे कुछ बातों पर चर्चा करना चाहता था।

'गोली मार।'

रीता ने उसे सुबह से लेकर अब तक की सारी घटनाओं का सारांश बताया। उनका यह

दृढ़ विश्वास कि दोनों हनी सिंह एक-दूसरे को जानते थे, कि उनके गुप्तचर दल का पीछा वास्तव में हनी सिंह के हमशक्ल ने किया था, वीर सिंह को छोड़ दिया गया था और यह अनुमान कि दूसरा हनी सिंह ही हैंडल बार का रहस्यमय ग्राहक था।

'मेरी बच्ची, तुम बहुत सारी अटकलें लगा रही हो। तुम्हारे पास कोई सबूत नहीं है। यह सब सिर्फ कल्पनाओं का एक बेबुनियाद खेल लगता है। यकीन मानो, अगर वह दोषी भी है तो बच निकलेगा। इस समय तुम्हें ठोस सबूत चाहिए, अटकलें नहीं।'

'आपका क्या मतलब है?'

ऐश कुछ हद तक सही था, लेकिन...

बिना किसी सबूत के, आप अपने मन में आने वाले किसी भी बेतुके अनुमान को जोड़ सकते हैं। लाखों दिमाग लाखों तरह के अंदाजे लगा सकते हैं। मुझे गलत मत समझिए। मैं जानता हूँ कि आप एक हद तक सही हैं, क्योंकि मुझे भी यह मानना हास्यास्पद लगता है कि हर कोई पीछा किए जाने से बच गया — जब तक कि, ज़ाहिर है, यह किसी अदृश्य व्यक्ति द्वारा न किया गया हो — याद है ना? तो अगर वाकई में कोई हमशक्ल आपके लोगों का पीछा कर रहा था, तो उसने ज़रूरत से ज़्यादा सावधानी बरती होगी, शायद उसने उनका पूरा पीछा नहीं किया होगा। बस सबको एक-एक करके जाते देखा होगा और बाकी का अनुमान लगा लिया होगा। लेकिन आपको इसे साबित करने के लिए डेटा चाहिए। सोचिए, अपनी परिकल्पना को अदालत में ले जाना कितना मुश्किल होगा। हनी सिंह के पास, जैसा आपने मुझे बताया है, एक पुख्ता सबूत है — उसके पास पासपोर्ट का कोई रिकॉर्ड नहीं है, उसने अपने फोन को इस तरह सेट किया है कि जब उसने कॉल किया, जवाब दिया या ईमेल किया, तो ऐसा लगा कि वे मुंबई में थे। इसके अलावा, उसका एक हमशक्ल भी है जिसे सिर्फ मिस्टर हैंडल बार ने देखा है, और मेरे विचार से—आपके द्वारा बताई गई बातों के आधार पर—अदालत में उसकी विश्वसनीयता शून्य से भी कम होगी। यह सब कुछ डॉन क्विक्सोट के काल्पनिक सपने जैसा लगेगा। समझे ना?

रीटा चुप रही। ऐश के विचार जायज़ थे।

'इस मामले को सुलझाने का एकमात्र तरीका हनी सिंहों दोनों का पता लगाना और उन पर एक साथ दबाव बनाना है।'

ऐश कैदी की दुविधा का जिक्र कर रहा था, जो दुनिया भर की अधिकांश कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एक पुरानी तकनीक है। एक ही समूह

के दो लोगों को किसी छोटे-मोटे आरोप में गिरफ्तार करके एकांत कारावास में डाल दिया जाता है, जहाँ वे संदेशों का आदान-प्रदान नहीं कर सकते। फिर उन पर दबाव डाला जाता है। उन्हें अपने साथी को धोखा देने के लिए प्रलोभन देकर अलग-अलग सहयोग करने के लिए कहा जाता है। अधिकतर मामलों में, उनमें से एक टूट जाता है और जब उसे पता चलता है कि पुलिस के पास उसके खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं, तो वह पुलिस को बता देता है।

'हालांकि,' ऐश ने आगे कहा, 'मैं आपसे आग्रह करूंगा कि इसे गुप्त रखें। हनी सिंह को पता नहीं चलना चाहिए कि आप उनके हमशक्ल की तलाश कर रहे हैं।'

'यह संभव नहीं है। अगर हैंडलबार ने अपनी रिपोर्ट में हनी सिंह के हमशक्ल का जिक्र नहीं किया होता, तो उन्हें पता चल जाता कि हैंडलबार किसी के आदेश या प्रभाव में काम कर रहा है।'

'हो सकता है, लेकिन क्या उसे पता है कि हैंडलबार ने यह सब आपके निर्देशों पर किया है?'

'मुझे पूरा यकीन है कि वह इतना समझदार है कि यह समझ जाएगा कि इसके पीछे हमारे अलावा और कौन हो सकता है।'

'हां, मुझे लगता है ऐसा ही है। आपको कोई और तरीका ढूंढना होगा।'

फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया।

'आप घर किस समय आ रहे हैं?'

'मुझे ऐश के बारे में नहीं पता। मैं थोड़ी देर बाद आपको कॉल करूंगा। क्षमा करें।'

'कोई चिंता नहीं।'

रीता का दिमाग फिर से उस उलझन में फंस गया। हैंडलबार ने रिपोर्ट जमा कर दी थी, इसलिए राज़ खुल ही चुका था; अब तक तो ग्राहक के सामने ही खुल गया था। उसने संदेश पढ़ लिया होगा और उसमें दूसरे हनी सिंह के दिखने की बात नहीं लिखी होगी। अगर दूसरे हनी सिंह को जानबूझकर ऑफिस के बाहर छिपाया गया था ताकि कोई उसे देख ले, तो हैंडलबार को फिर से डांट पड़ेगी। इसमें कोई शक नहीं। अगर हमशक्ल का गलत जगह पर दिखना एक स्वाभाविक गलती थी, तो ग्राहक—चाहे वह हनी सिंह में से कोई भी हो—हैंडलबार के न दिखने पर बहुत खुश होगा। ऐश सही कह रहा था: रीता के हित में यही था कि वह दिखावा करे कि उन्हें हमशक्ल के बारे में कुछ पता नहीं चला।

वह अपने विचारों में डूबी हुई थी तभी ताकतवर निजी जासूस श्री हैंडलबार राजा का फोन आया।

'हैलो मैडम, मैं राजा हूं। हमारी मुलाकात तब हुई थी जब आप इस मामले के सिलसिले में मुझसे मिलने आई थीं।'

नहीं तो मैं तुमसे कैसे मिलता? प्रॉम में?

'जी हां श्रीमान हान... श्रीमान राजा,' रीता लगभग फिसल गई, 'बेशक हम मिले थे। आशा है आप ठीक होंगे। मैं आपके लिए क्या कर सकती हूं?'

'मैं इंस्पेक्टर जतिन से संपर्क करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उनसे बात नहीं हो पाई। मुझे अपने मुवक्किल से एक और संदेश मिला है।'

रीटा ने उसके संदेश पढ़कर सुनाने या समझाने का इंतजार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ; उसे दूसरी तरफ से केवल भारी साँसें सुनाई दे रही थीं।

'श्री राजा, अब आपके मुवक्किल का क्या कहना है?'

'मैंने इसे खोला नहीं है मैडम, मैं यही पता करने के लिए फोन कर रही हूँ। क्या मुझे इसे खोलना चाहिए? मैं बहुत डरी हुई हूँ।'

वह कंप्यूटर स्क्रीन के जरिए आपको गोली नहीं मार सकता।

'श्री राजा, आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है। आप हमारे साथ काम कर रहे हैं और आपकी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। संदेश खोलकर मुझे बताएं।'

कितना बड़ा मूर्ख है!

ईयरपीस के जरिए कीबोर्ड की खटखटाहट सुनाई दे रही थी, और रीटा को हैंडलबार की मोटी उंगलियों और उससे भी मोटे सिर की कल्पना हो रही थी जो लॉग इन कर रहे थे और ड्राफ्ट फोल्डर तक पहुंच रहे थे।

'श्री राजा, इसे मुझे शब्दशः पढ़कर सुनाइए।'

'क्या मैं वाकई सुरक्षित हूँ?' हैंडलबार ने पुष्टि की।

क्या मैं आकर आपके साथ आपके बिस्तर पर सो जाऊं ताकि आपको सुरक्षित महसूस हो?

'जी हां, आप सुरक्षित हैं,' उसने एक बार फिर उसके मन में उठने वाले संदेह को शांत करते हुए कहा। 'हमने यह सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षाकर्मी तैनात किए हैं कि आपको या आपके परिवार को कोई नुकसान न पहुंचे। आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, बस ऐसे ही घूमते रहिए जैसे कुछ हुआ ही नहीं है।'

'ठीक है।'
फिर हैंडलबार ने संदेश को शब्दश: पढ़ा:

तो क्या आप निगरानी के लिए इसलिए देर से पहुँचे क्योंकि आपकी गाड़ी का टायर पंचर हो गया था? क्या आपको यकीन है कि टायर की वजह से ही हुआ था? क्योंकि अगर मुझे पता चला कि आप किसी और वजह से रुके थे, तो आपके और आपके परिवार के लिए अच्छा नहीं होगा। ठीक है - आप कहते हैं कि आप देर से आए, लेकिन क्या आप जल्दी भी लौटे थे? क्या आपको कुछ भी ऐसा असामान्य नहीं दिखा जिसकी रिपोर्ट करना ज़रूरी हो? मेरे पास मेरे दूसरे एजेंटों की एक और रिपोर्ट है और उसमें लिखा है कि उन्होंने लक्ष्य से मिलते-जुलते व्यक्ति को देखा था। क्या मुझे यह मान लेना चाहिए कि आप उसे पूरी तरह से चूक गए? मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि आप मुझे झूठी जानकारी क्यों दे रहे हैं? मैं आपको चौबीस घंटे का समय देता हूँ कि आप मुझे बताएँ कि आपने वास्तव में क्या देखा - तस्वीरों के साथ, मुझे पता है कि आपने कुछ तस्वीरें खींची हैं - वरना मैं आपके पास आऊँगा और आपसे इसका हिसाब लूँगा। आप अपने शरीर का कौन सा अंग पहले गंवाना चाहते हैं...?

हैंडलबार राजा की आवाज़ कांप रही थी। रीता समझ गई कि वह आदमी डरा हुआ है। बुरी तरह सहमा हुआ है। और अगर हनी सिंह एंड कंपनी ही ग्राहक थे और वीर सिंह की निर्मम हत्या के पीछे वही लोग थे, तो यह धमकी इतनी खोखली नहीं थी। शरीर के अंग निकालना थोड़ा कठोर और नाटकीय लग रहा था, लेकिन हैंडलबार के विशाल सिर में गोली मारना भी संभव था। और यह जोखिम नहीं लिया जा सकता था।
रीता सोच रही थी कि क्या उसे हैंडलबार को अपने मुवक्किल को सच बताने के लिए कहना चाहिए। लेकिन इसका क्या मतलब निकलेगा? मुवक्किल, चाहे जो भी हो, जाहिर तौर पर पहले से ही जानता होगा। इससे बस यही लगेगा कि हैंडलबार ने अपनी मूल रिपोर्ट में बेईमानी की थी और अब जब उसका झूठ पकड़ा गया है, तो जांचकर्ता ने धमकी के आगे सच उगल दिया है? इससे श्री हैंडलबार राजा और भी बड़ी मुसीबत में फंस सकते हैं।
'अब मुझे क्या करना चाहिए?' हैंडल बार ने लगभग रुक-रुक कर फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आवाज कांप रही थी, लगभग बच्चे जैसी, मानो वह रोने ही वाला हो।

रीटा को उस आदमी की हालत पर तरस आ रहा था, उसे उस पर दया आ रही थी। चाहे वह जैसा भी रहा हो, वह बुरा या दुष्ट नहीं था। हाँ, शुरुआत में वह आत्मविश्वासी और घमंडी लग रहा था, लेकिन उसका इरादा किसी को नुकसान पहुँचाने का नहीं था। और अब वह जिस स्थिति में था, वह मुख्य रूप से उसके ग्राहक से जानकारी छुपाने के उसके आदेशों का पालन करने का नतीजा था। और अब ग्राहक ने धमकी दी थी। और बहुत बड़ी धमकी। असल बात यह थी कि वह उस अजीब ग्राहक की पहचान तो पता लगा सकती थी, लेकिन उसके पास उसे रास्ते से हटाने का कोई सबूत नहीं था। अभी तक तो नहीं।

उसकी मानसिक शांति के लिए उसे कुछ ऐसा करना था जो उसे दिखाई दे।

'श्री राजा, आपके मुवक्किल द्वारा अपने संदेश में कही गई बातों के अनुसार, कोई भी कार्रवाई करने से पहले हमारे पास चौबीस घंटे हैं। मैं आपके लिए कड़ी सुरक्षा व्यवस्था करूँगा, इसे मुझ पर छोड़ दीजिए—'

'लेकिन बात सिर्फ मेरी और मेरी पत्नी की ही नहीं है, महोदया, अपने आखिरी संदेश में उसने मेरे बच्चों और पोते-पोतियों को भी धमकी दी है।'

धत् तेरे की।

'आपने पहले ऐसा क्यों नहीं कहा?'

'चूंकि उन्होंने उस समय मुझे केवल यही चेतावनी दी थी कि मुझे दोबारा ऐसी गलतियाँ नहीं करनी चाहिए, इसलिए यह एक चेतावनी ही थी, प्रत्यक्ष धमकी नहीं।'

'मैं जतिन से आपके बच्चों के पते भी निकलवाने को कहूंगा। मैं उनके लिए भी सुरक्षा का इंतजाम करूंगा।'

'आप हमारी पूरी जिंदगी हमारी रक्षा कैसे कर सकते हैं?'

'मैं कर सकता हूँ और मैं करूँगा, मैं वादा करता हूँ। और मैं आपके इस ग्राहक तक आपकी सोच से भी जल्दी पहुँच जाऊँगा।'

'तुम्हें पता है वो कौन है?' अब उसकी आवाज़ में थोड़ी आशा झलक रही थी, मानो कोई सूखा पत्ता आसमान की ओर देखकर बारिश के बादल देख रहा हो। अगर उसका मुवक्किल पकड़ा गया तो उसकी मुसीबत हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।

'हमें सौ प्रतिशत यकीन नहीं है, लेकिन हम उसे जल्द ही पकड़ लेंगे।'

'कितनी जल्दी?'

'बहुत जल्द, और आप बिल्कुल भी चिंता न करें। जतिन आज आपसे और श्रीमती

राजा से मिलने आएगा।'
'धन्यवाद महोदया। और जब आप इस ग्राहक को पकड़ लें, तो कृपया मुझे फोन करें। मैं उसके चेहरे पर एक थप्पड़ मारना चाहता हूँ।'
बातचीत खत्म होने पर रीता वापस वहीं पहुँच गई जहाँ वह थी। अब भी उसे कोई सुराग नहीं मिला था सिवाय इस तथ्य के कि राजा के ग्राहक को पता था कि एक नकली व्यक्ति है, जो कोई नई बात नहीं थी। अगर हनी सिंह ही ग्राहक था और उसका हमशक्ल उसके आपराधिक कामों में शामिल था, तो यह समझना आसान था कि उन्हें पता चल गया था कि हैंडलबार राजा ने उनसे दूसरी बार झूठ बोला है। दोनों में से किसी के भी खिलाफ सबूत मामले को सुलझा सकते थे। दिक्कत यह थी कि उसे दोनों में से कोई भी नहीं मिल रहा था।

26
Twenty-Six

वीर सिंह की मौत। एक और हत्या। क्या वह इसके लिए जिम्मेदार थी? अगर आप पुलिस की नौकरी को सिर्फ एक नौकरी मानते हैं तो नहीं, बिल्कुल नहीं;
हत्या उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर हुई थी। लेकिन अगर आप रीता होतीं और पुलिस आपका पेशा होता, तो किसी भी हत्या या अपराध को रोकने में किसी भी पुलिसकर्मी (पुरुष या महिला) की विफलता पूरे पुलिस समुदाय की विफलता होती। रीता के अनुसार, बेचारे वीर सिंह को शायद मुंबई अपराध शाखा के रॉन जोगानी की हत्या के साजिशकर्ताओं के बहुत करीब जाने की कीमत चुकानी पड़ी, और इस तरह वह किसी न किसी रूप में उसकी मौत के लिए जिम्मेदार थी। उसने टीम के किसी सदस्य से यह पता लगाने को कहा कि वीर सिंह को किसने फोन किया था कि मुंबई पुलिस उसकी तलाश कर रही है। यह एक सुराग हो सकता है।
यह सोचते हुए उसने समय देखा: रात के 9:13 बज रहे थे। उसके तीनों सहकर्मी काफी देर पहले ही कार्यालय से निकल चुके थे।
उसे इस बात का पछतावा हो रहा था कि उसने ऐश को पूरे दिन अकेला छोड़ दिया

था। उसने ऐश को फोन किया, माफी मांगी, कंप्यूटर बंद किया और ऑफिस से चली गई।

***

ऐश घर पर था। उसने स्थानीय इतालवी रेस्तरां से पिज्जा मंगवाया था और उसका इंतजार कर रहा था तभी रीटा अंदर आई।

गले लगाओ। चुंबन करो।

'थका हुआ?'

'हां। और सप्ताहांत में आपको अकेला छोड़ने के लिए मुझे वास्तव में बहुत खेद है,' उसने कहा।

'और मैं तुम्हें एक बार फिर माफ कर देता हूँ। हालाँकि मुझे समझ नहीं आता कि तुम्हें माफी क्यों मांगनी चाहिए। मैं अभी छुट्टी पर हूँ, और तुम एक हत्या के मामले पर काम कर रहे हो। मेरे हिसाब से यही तुम्हारी प्राथमिकता होनी चाहिए; मुझे पता है कि मैं अपने निजी हितों से पहले इस पर ध्यान देता।'

'आप एक सज्जन हो।'

'इसे समझने में आपको इतना समय क्यों लगा?'

'हा-हा।'

'खैर, क्या आपको कुछ और पता चला?'

'कुछ भी नहीं से भी कम,' रीटा ने कहा, उसकी आवाज में उसकी निराशा साफ झलक रही थी।

'चिंता मत करो, उम्मीद मत छोड़ो। रीटा, कोई भी हमेशा के लिए रडार की नज़र से बच नहीं सकता। एक दिन सब पकड़े जाते हैं, चाहे वो कोई भी हो। यह एक सच्चाई है। मैं किसी काल्पनिक लेखक की बात नहीं दोहरा रहा हूँ।'

ऐश अपनी मीठी बातों या घिसे-पिटे चुटकुलों से पहले ही घंटी बज गई। पिज्जा वाला आ गया था।

'कोक?' रीटा मुस्कुराई जब ऐश पिज्जा और डाइट कोक की एक बड़ी बोतल हाथ में लिए अंदर आया।

'यह पिज्जा के साथ मुफ्त मिल रहा था, तो मैं इसे क्यों नहीं लेता?'

'सही बात है।'

'मुझे पता है कि आप थके हुए होंगे, तो चलिए जल्दी से एक ड्रिंक लेते हैं, अपना

डिनर खत्म करते हैं और फिर मैं आपको मसाज दूंगी और आप मुझे अपने दिन के बारे में बता सकते हैं?'
'मालिश? अब आप मालिश करने वाली बन गई हैं?'
'मालिशकर्ता। मालिश करने वाली महिला के लिए आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।'
'अरे, मुझे तो पता ही नहीं था। क्या अब आप मालिश करने वाले बन गए हैं?'
'खैर, मैं अपने हाथों से कमाल कर सकता हूँ।'
अब अश्लील पंक्तियाँ शुरू होने वाली हैं।
जिम की एक झलक, डाइट कोक के साथ पिज्जा और फिर से जिम बीम - यह सब बीस मिनट के भीतर हुआ, उतना ही समय जितना रीटा को ऐश मैटल को दिन भर की खोजों को बताने में लगा।
'वीर सिंह की हत्या हमें एक बात बताती है,' ऐश ने बर्तन साफ करने के बाद कहना शुरू किया। वाह! 'सुनने में भले ही यह बेतुका लगे, लेकिन यही सच है: जब उम्मीद खत्म होने लगती है, तो हताशा चरम पर पहुंच जाती है। लोग घबरा जाते हैं, लापरवाह हो जाते हैं। कुछ समझौता कर लेते हैं, तो कुछ हिंसक हो जाते हैं। वीर की हत्या इस बात का संकेत है कि अपराधी बुरी तरह घबराए हुए हैं, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?'
'मुझे पता है, हमने भी यही निष्कर्ष निकाला था। एक तरह से यह दर्शाता है कि हम सही रास्ते पर हैं। हालांकि, दो हनी सिंहों का मिलना संभावनाओं को बढ़ाता है, हालांकि हमेशा सकारात्मक तरीके से नहीं।'
'कि निर्भर करता है-'
'पर?'
'आठ का आधा चार, तीन या शून्य होता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रश्न कौन पूछता है, है ना? गणितीय रूप से, यह चार होना चाहिए, लेकिन यदि आप किसी कला कक्षा में हैं तो आप आठ के अंक को तिरछा या लंबवत काटकर क्रमशः तीन या एक गोला बना सकते हैं। संभावनाओं के विस्तार के साथ भी ऐसा ही है। हालांकि मैं इस बात से सहमत हूं कि दो हनी सिंह दुगना खतरा पैदा करते हैं, लेकिन कहावत के अनुसार भूसे के ढेर में दो सुई ढूंढना एक सुई ढूंढने से कहीं ज्यादा आसान होना चाहिए।'

'मैंने दूसरे हनी सिंह की तलाश के लिए नए सिरे से खोज शुरू कर दी है। अगर किस्मत अच्छी रही तो खोज हमें डुप्लिकेट तक ले जाएगी, या शायद हमें फिर से वही जाना-पहचाना हनी सिंह मिल जाए। उम्मीद करते हैं सब ठीक हो।'
'महान।'
'क्या आपको लगता है कि हनी सिंह को डुप्लिकेट के बारे में पता है?'
'बिल्कुल। वे मिलीभगत से काम कर रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।'
'एक बात मुझे परेशान करती है...' रीटा उठी, द डोर्स का पहला एल्बम लगाया, मेज पर रखी जिम बीम की बोतल के पास गई और उसे वापस सोफे पर ले आई जहाँ वे दोनों एक दूसरे से चिपक कर बैठ गए।
उन्होंने अपने गिलास आपस में टकराए।
तो आपको क्या बात परेशान कर रही है?
'मुझे पता है कि हमने इस पर पहले भी चर्चा की है, लेकिन फिर भी यह बात मुझे परेशान करती है क्योंकि हमारे पास इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है। निजी जासूस - श्री राजा - कई महीनों से हनी सिंह का पीछा कर रहे हैं। फिर ऐसा कैसे हुआ कि उन्होंने दूसरे हनी सिंह को पहले कभी नहीं देखा? क्या आपको यह थोड़ा आश्चर्यजनक नहीं लगता?'
'दो बातें हो सकती हैं। मैं उनसे कभी मिला नहीं हूँ, लेकिन आपने जो बताया है, उससे लगता है कि यह श्री राजा कोई बहुत बुद्धिमान या समझदार व्यक्ति नहीं हैं, इसलिए यह पूरी तरह संभव है कि उन्होंने पहले नकली को नहीं देखा हो। शायद उन्होंने दोनों को देखा हो, लेकिन चूंकि उन्होंने उन्हें एक साथ नहीं देखा, इसलिए उन्हें कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि दो हैं? यह सबसे सरल व्याख्या है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि वीर सिंह के चले जाने के बाद - या अगर हनी सिंह और उसके साथियों को पता था कि ऐसा होने वाला है, जो हममें से किसी को भी आश्चर्यचकित नहीं करना चाहिए क्योंकि हमारा मानना है कि उन्होंने ही हत्या का आदेश दिया था - तो उन्हें आपको गुमराह करने के लिए नकली को प्रकट करना पड़ा। मेरा अनुमान है कि अब जब नकली का पता चल गया है, तो वह हमेशा के लिए गायब हो जाएगा। तो -'
'हम हनी सिंह को अकेला छोड़ देते हैं और मुंबई से लापता हुए किसी व्यक्ति का पीछा करते हैं। और वे कुछ समय बाद मिल सकते हैं और पुलिस द्वारा मामला बंद करने या उसे ठंडे बस्ते में डालकर किसी ठंडे मामले की श्रेणी में डाल देने के बाद

खुशहाल जीवन जी सकते हैं।'
'यह एक शानदार योजना है, है ना?'
'सच में बहुत बढ़िया! ऐसे में हमें किसी भी कीमत पर यह स्वीकार करने से बचना चाहिए कि कोई डुप्लिकेट मौजूद है।'
'यही तो मुश्किल है। अगर श्री राजा को धमकी दी गई है, तो इसका मतलब है कि उन्हें पता है कि उन्होंने नकली दस्तावेज़ देखा है, तस्वीरें ली हैं और जानबूझकर इसे अपनी साप्ताहिक डायरी से हटा दिया है। और वे दावा करते हैं कि किसी और ने भी नकली दस्तावेज़ देखा है, इसलिए उनके पास किसी और से पुष्टि है और शायद तस्वीरें, शायद कुछ अन्य सबूत भी हैं जो खेल को उनके पक्ष में मोड़ सकते हैं।'
बाकी की शाम इस मामले पर चर्चा करते हुए गुज़री। जिम बीम पूरे जोश में थे और जिम मॉरिसन ने भी यही कहा, "यह अंत था, मेरे दोस्त", रीटा और ऐश के लिए ये बोल बिल्कुल सटीक थे, क्योंकि ऐश एक दिन में ही दुनिया से विदा हो गया था। अगली बार तक के लिए यही अंत था।

***

ऐश रीटा के लिए सुबह की कॉफ़ी लाया। रीटा को एहसास हुआ कि उसे लाड़-प्यार मिल रहा है। ऐश कल चला जाएगा और फिर वह अपने अपार्टमेंट में बिल्कुल अकेली रह जाएगी। उसने ऐश की इस आसन्न विदाई को मन में बसा लिया। 'लेकिन चिकित्सकीय दृष्टि से, दूसरे माता-पिता से हमशक्ल होना कैसे संभव है?' रीटा ने आँखें खोलने से पहले ही पूछा। 'जैसा कि तुमने पता लगाया है, यह प्लास्टिक का भी हो सकता है।'
'यह और क्या हो सकता है?'
'मैं यह घिसा-पिटा मुहावरा इस्तेमाल कर सकता हूं कि हर चीज कभी न कभी पहली बार होती है, लेकिन इस मामले में यह पहले भी हो चुका है, इसलिए यह दोबारा भी हो सकता है। इससे पहले भी कुछ ज्ञात मामले सामने आए हैं।'
'सचमुच?' उसकी आंखें हैरानी से खुल गईं।
'क्या आपको पता है कि अपराधियों की उंगलियों के निशान कब से लिए जाने लगे?'
'बीसवीं सदी की शुरुआत में...मुझे लगता है।'
'यह सन् 1903 की बात है, अमेरिका के कंसास में कहीं। उससे पहले वे बर्टिलॉन प्रणाली नामक एक विधि का इस्तेमाल करते थे, जिसमें व्यक्तियों की पहचान

स्थापित करने के लिए केवल उनके शारीरिक माप लिए जाते थे। फिर उन्हें दो अफ्रीकी-अमेरिकी कैदी मिले जो एक-दूसरे की हूबहू शक्ल थे और एक ही जेल में एक ही समय पर अपनी सजा काट रहे थे। मुझे पता है कि हम सभी जो कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए या उनके साथ काम करते हैं, संयोगों को हमेशा नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन यहाँ एक और संयोग है: उनके नाम भी एक जैसे थे: एक का नाम विल वेस्ट था और दूसरे का विलियम वेस्ट। आगे की जांच करने पर उन्हें विल वेस्ट और विलियम वेस्ट के बीच कोई पारिवारिक संबंध नहीं मिला। केवल उंगलियों के निशान ही उन्हें अलग कर पाए।'

'तो क्या हनी सिंह टू वास्तव में एक असली हमशक्ल हो सकता है?'

'आपके मामले में इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। चाहे प्लास्टिक हो या असली, आपको दोनों को ढूंढना होगा तभी पता चलेगा कि वे प्रकृति की कोई अनोखी रचना हैं या हस्तनिर्मित। हालांकि, अगर वे हूबहू एक जैसे दिखते हैं तो संयोग की एक और संभावना भी है...'

'वे दोनों मुंबई में आ जाते हैं और एक दूसरे को इतनी अच्छी तरह से जानते हैं कि अपराधों में मिलीभगत कर सकें।'

'वाह! तुम तो बड़ी समझदार लड़की हो। अब, क्या हम पहले प्यार करें और फिर नाश्ता करें या पहले नाश्ता कर लें?'

'आज के बाकी दिन के लिए क्या योजना है?'

'मुझे नहीं पता। छुट्टी के दिन दूसरे जोड़े क्या करते हैं?'

'मुझे इस बारे में सीमित अनुभव है, लेकिन क्या हम साथ में बैठकर फिल्म देख सकते हैं?'

'तो चलिए ऐसा करते हैं, लेकिन केवल एक शर्त पर।'

'और वह प्रार्थना क्या हो सकती है?' रीटा को अंदाजा था कि इसके जवाब में कुछ अश्लील बात निकलने वाली है।

'चादर के नीचे कोई कपड़े नहीं। मैं यह शोध करना चाहता हूँ कि फिल्म देखते समय आपका शरीर कैसे प्रतिक्रिया करता है। पूरी तरह से शोध के उद्देश्य से, मैं वादा करता हूँ।'

'तुम तो बिल्कुल ही गंदे इंसान हो।'

ओह, अब मैं एक विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति बन गया हूँ, क्या?

Twenty-Seven

कहते हैं कि अगर जागने पर आपको कोई सपना याद नहीं रहता, तो शायद आपने कोई सपना देखा ही नहीं था। इसका नतीजा यह होता है कि आप
सुबह दिमाग एकदम तरोताजा हो। दरअसल, गहरी नींद में सपने नहीं आते। सपने हल्की नींद में आते हैं। सपनों का न आना एक अच्छी बात है। रीता तो बिल्कुल गहरी नींद सोई थी। सोमवार को उड़ान भरने से पहले मुंबई में ऐश की यह आखिरी रात थी। दोनों चुपचाप तैयार हुए, चारों ओर उदासी छाई हुई थी, और फिर रीता उसे एयरपोर्ट छोड़कर ऑफिस चली गई।

रीता एक बार फिर अपने मामले में उलझ गई, हैंडल बार द्वारा खींची गई दो तस्वीरों को घूरती हुई। भौंहें चढ़ाकर, उन पर ध्यान केंद्रित करते हुए। किसी खास बात की तलाश में नहीं, बल्कि बस पूरी तस्वीर को एक साथ समझने की कोशिश कर रही थी। उसकी निगाह हनी सिंह की एक तस्वीर से दूसरी तस्वीर पर जा रही थी। दोनों तस्वीरें कुछ मिनटों के अंतराल पर खींची गई थीं। असल में, नौ मिनट से थोड़ा ज़्यादा के अंतराल पर। दो तस्वीरें, दुगनी समस्या। एक पहेली पर दूसरी पहेली। तभी अचानक एक विचार आया और उसे समझ आया कि ये दो अलग-अलग पहेलियाँ नहीं थीं; बल्कि एक ही पहेली के दो टुकड़े थे। और अब जाकर ये सब उसके सामने सुलझ रहा था। एक के दाम में दो। अमेरिकी इसे 'टूफर' कहते थे। उसने अनुमान लगाया कि यह शायद शुरू से ही योजना का हिस्सा था - घटना के बाद रखा गया कोई सामान नहीं था। इस पर पहले से ही सावधानीपूर्वक विचार किया गया होगा, हालाँकि पिछली चोरियों में इसे उजागर करने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी।

उसकी आँखें हताशा से ऊपर उठीं, लेकिन उसे वुडी एलन की बात याद आ गई: आप नास्तिक होकर ईश्वर से विनती भरी निगाहों से नहीं देख सकते। न ही आप ईश्वरवादी होकर तुच्छ सांसारिक मामलों में ईश्वर के हस्तक्षेप की उम्मीद कर सकते हैं। यह उसकी लड़ाई थी; उसे इसे खुद लड़ना था।

कुछ ढूंढ रहा हूँ। कुछ भी।

किसी चीज़ की उम्मीद है। कुछ भी हो जाए।
वह बीच-बीच में उठती, थोड़ा चलती और खिड़की से बाहर देखती, फिर अपनी डेस्क पर लौट आती। जहाँ वह खड़ी थी, उससे एक मंजिल नीचे तार बिछे थे। कबूतर आपस में चहचहा रहे थे या गा रहे थे, तरह-तरह की आवाज़ें निकाल रहे थे। उनमें से कई एक जैसे दिखते थे—जैसे दो हनी सिंह हों, उनमें फर्क करना नामुमकिन था। पालतू कुत्तों की तरह कबूतरों के गले में पट्टा नहीं होता, वरना उन्हें पट्टे के रंग या किसी और टैग से पहचाना जा सकता था। सच तो यह था कि पुलिस ने उन दो हनी सिंहों को सिर्फ उनकी अलग-अलग रंग की कमीज़ों से पहचाना था। उन्हें और क्या देखना था? उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। विचार किसी छोटे कमरे में टहल रहे व्यक्ति से अलग नहीं होते। वे एक बिंदु तक जाते हैं, दीवार से टकराते हैं और फिर घूमकर वापस आ जाते हैं। और उस व्यक्ति की तरह, वे भी कुछ ऐसी चीज़ें देखते हैं जो रास्ते में छूट गई हों। रीता के विचार भी कुछ अलग नहीं थे और उसने कुछ ऐसा देखा जो उसने पहले नहीं देखा था।
और अचानक—जैसे कुछ समय पहले खींची गई कोई तस्वीर—उसकी आँखों में उभरने लगी। धीरे-धीरे, जैसे अंधेरे कमरे में कुछ उभरता है। थोड़ा-थोड़ा करके। अनुभूति का एक झटपट भंडार खुल गया, सहज रूप से।
आंखें एक ही बार में हजारों बारीकियाँ देख पाती हैं, इसलिए वे बहुत कुछ नज़रअंदाज़ कर देती हैं। फिर सवाल यह भी उठता है कि देखने वाला कौन है। हो सकता है कि वे किसी एक पहलू में इतना खो गए हों कि बाकी को अनदेखा कर दिया हो। हो सकता है कोई चौंकाने वाला तत्व हो जिससे दिमाग भटक जाए और आंखें फोकस खो बैठें। आंखें तो बस एक लेंस हैं, असल में दिमाग ही है जो हम जो देखते हैं उसे प्रोसेस और एनालाइज़ करता है। कभी-कभी दर्शक का दिमाग पहले से ही कुछ तय कर लेता है, इसलिए वह उन चीजों को मिटा देता है जिन्हें वह देखना नहीं चाहता। लेकिन कैमरा अलग है। यह पल को वैसे ही कैद कर लेता है जैसा वह था। भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं। कोई फिल्टर नहीं। यह जैसा है वैसा ही कैप्चर करता है। यह हर बारीक डिटेल को कैद कर लेता है। इससे भी अच्छी बात यह है कि अगर कैप्चर करने वाले लेंस की क्वालिटी अच्छी हो तो कैप्चर किए गए पल को ज़ूम किया जा सकता है। और सैमसंग के उन समझदार लोगों को श्रेय देना ही होगा जिन्होंने अपने गैलेक्सी फोन में ज़ूम की सुविधा दी थी, जिसे हैंडलबार इस्तेमाल करता था। यह एक ऐसा

फैसला था जो हैंडलबार ने समझदारी से लिया था और जिसके लिए हमेशा उनकी सराहना की जाएगी। कुछ ही मिनटों के अंतराल पर ली गई और खींची गई दोनों हनी सिंहों की बड़ी तस्वीर में एक-दूसरे की हूबहू प्रतिकृति होने के अलावा एक और समानता थी।

इस पूरे ड्रामे की सच्चाई हैरान करने वाली थी। जब उसने पहली बार तस्वीरें देखीं तो वह इसे कैसे नहीं समझ पाई? यह बात उसे चुभ रही थी।

दोनों हनी सिंह एक ही घड़ी पहनते थे। रीता की याददाश्त असाधारण थी—एक वरदान या अभिशाप, वह एक बार देखी हुई हर चीज़ को तस्वीर की तरह याद रख सकती थी—उसे याद था कि उसने हनी सिंह की कलाई पर वही ओमेगा सीमैस्टर घड़ी देखी थी; जब वह उनसे उनके कार्यालय में मिली थी, तब उन्होंने उसे वह घड़ी दिखाई थी। वही नीले रंग का डायल। उसने अपनी दराज से एक लेंस निकाला और तस्वीरों को ध्यान से देखा। दोनों हनी सिंहों द्वारा पहनी गई घड़ियों में, दिखाई देने वाले धातु के पट्टे पर कुछ वर्षों के उपयोग से एक जैसी धारियाँ थीं, और दोनों तस्वीरों में घड़ी के वाइंडिंग बटन के पास केस पर एक जैसा छोटा सा निशान था।

यह हो सकता है?

वे अब तक शर्लक के विरोधी रहे थे — तथ्यों से पहले ही अनुमान लगा रहे थे। अब उसे पता चल गया था कि उसे संभावित गुमशुदा कड़ी मिल गई है।

हनी सिंह नाम के दो लोग कभी नहीं थे।

हनी सिंह से आखिरकार गलती हो ही गई। हीरे की चोरियां उसने बड़ी सहजता से की थीं क्योंकि उनकी योजना पूरी तरह से सुनियोजित थी। लेकिन हैंडल बार को गुमराह करने की यह योजना उतनी अच्छी तरह से नहीं बनाई गई थी। हनी सिंह ने अलग कमीज पहनी थी, लेकिन वह अपनी घड़ी उतारना भूल गया था।

ओमेगा दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित घड़ी ब्रांडों में से एक है। जब श्री आर्मस्ट्रांग ने मानवता के लिए वह ऐतिहासिक छलांग लगाई थी, तब ओमेगा घड़ी उनके हाथ में थी। अंतरिक्ष में जाने वाली यह पहली घड़ी थी। लेकिन जब आपका समय खराब हो, तो ओमेगा भी आपकी मदद नहीं कर सकती।

उसने तस्वीरें और आवर्धक लेंस उठाए और ऑपरेशन रूम की ओर चल पड़ी जहाँ वे लोग काम कर रहे थे।

'उनकी कभी पूंछ नहीं थी।' रीटा ने अचानक यह बात कह दी।

'किसकी पूंछ नहीं होती, महोदया?' जतिन ने पूछा।
'हैंडलबार का पीछा करने वाले हमारे पुलिसकर्मियों के पास कोई पीछा करने वाला नहीं था।'
'तो फिर हैंडलबार के ग्राहक को कैसे पता चला कि उसने क्या रिपोर्ट करना छोड़ दिया था?'
'उन्हें कार की विंडस्क्रीन से नहीं देखा गया था; उन्हें रियर व्यू मिरर में देखा गया था। हनी सिंह ने गुप्तचर अधिकारियों को हैंडलबार का पीछा करते हुए देखा था जब हैंडलबार उस सप्ताहांत किटी के अपार्टमेंट तक उसका पीछा कर रहा था...'
उसने चेहरों पर भ्रम देखा।
'दोनों लड़कों की कलाई घड़ी देखो, तुम्हें मेरी बात समझ आ जाएगी।'
जतिन, विक्रम और नेने ने कैमरे के लेंस से तस्वीरों का निरीक्षण किया। उन्हें तुरंत ही बात समझ आ गई।
'ये दूसरा है - क्रिकेट की तरह? दूसरा वाला। ये वही गेंद है, लेकिन दूसरी दिशा में जाती है। ये दो अलग-अलग गेंदें नहीं हैं। बड़ी चतुराई से किया गया।'
'तुम्हारा मतलब?' विक्रम को बात समझ आ गई, लेकिन फिर भी यह उसके लिए एक झटका था।
'ऐसा हो सकता है कि उन्होंने घड़ियां एक साथ खरीदी हों?'
सच में, जतिन? क्या तुम सचमुच ऐसा कह रहे हो?
'नहीं, यह वही घड़ी है - घड़ी और धातु के पट्टे पर बने निशान और धारियाँ देखो। उसे लगा ही नहीं था कि कोई इसे देख पाएगा। हनी सिंह तो एक ही है।'
लेकिन हमारे पास दोनों की तस्वीरें हैं जिनमें उनके बीच केवल कुछ मिनटों का अंतर है...
“कुछ ही मिनटों का अंतर”—ये महत्वपूर्ण शब्द हैं। हालांकि, वे एक ही फ्रेम में नहीं हैं।
'तुम्हारा मतलब...' नेने ने ऊपर देखा।
'उसके पास जो थोड़ा समय था, उसमें उसने सिर्फ कमीज बदली। जूते और जींस, वह जानता था कि दिखाई नहीं देंगे क्योंकि वह केवल कार में ही दिखेगा जब वह किट्टी वर्गीज के साथ यात्रा करेगा। बदलने का कोई कारण नहीं था। देखो, या तो उसे यह बात सूझी ही नहीं या फिर वह लापरवाह हो गया।'

'यह तो उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है।'
'हां। मुझे लगता है कि उन्होंने एक भूत का इस्तेमाल किया था, लेकिन उन्होंने इसकी योजना उतनी बारीकी से नहीं बनाई थी जितनी उन्होंने अपनी चोरियों की। या तो ऐसा हुआ होगा, या फिर उन्होंने दूसरे भूत को देखने का समय तब आगे बढ़ा दिया होगा जब हम उनके अनुमान से कहीं अधिक करीब पहुंच गए थे।'
'हम क्या करते हैं?'
'आप इसे दोबारा करके देखिए। देखिए आपको हनी सिंह के दफ्तर के मुख्य द्वार से नज़रों से ओझल होने में कितना समय लगता है, फिर पीछे के दरवाजे से इमारत में प्रवेश करने और फिर सामने आकर दिखाई देने में कितना समय लगता है। इन तस्वीरों पर दिए गए समय के साथ समय मिलाइए। ये तस्वीरें नौ मिनट और तिरपन सेकंड के अंतराल पर ली गई थीं। देखिए आप इसे कितने कम समय में कर सकते हैं, समय लगभग बराबर होना चाहिए। यह अभ्यास जल्द से जल्द पूरा करना होगा। आज रात ही।'

***

राजेश नेने, जिन्हें हनी सिंह को पुलिस लॉकअप में ले जाकर उससे सच उगलवाने के लिए कड़ी पूछताछ न करने का अभी भी बहुत गुस्सा था, इस काम को पूरी तरह से अंजाम देना चाहते थे। उन्होंने इसे अपनी टीम के किसी सदस्य या स्थानीय पुलिस को सौंपने के बजाय खुद करने का फैसला किया। उन्होंने रात के खाने के बाद बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में जतिन से मिलने की सहमति दी। योजना हनी सिंह की गतिविधियों का पुनर्निर्माण और समय निर्धारित करने की थी।
सुबह 9:23 बजे दोनों की मुलाकात उस बंद चाय की दुकान पर हुई जिसका जिक्र हैंडलबार ने रिपोर्ट में किया था। आसपास के दफ्तरों की बत्तियाँ दिनभर की थकान से मंद लग रही थीं, लेकिन कुछ दफ्तर अभी भी रोशन थे, जिससे पता चलता था कि उनमें से कुछ में अभी भी देर रात तक काम करने वाले लोग थे। बीकेसी में कुछ ऐसे दफ्तर थे जो विदेशों में स्थित कंपनियों के बैक ऑफिस का काम करते थे और स्वाभाविक रूप से अमेरिका या उस समय जो भी देश जाग रहा होता था, उसके कामकाजी घंटों के अनुसार चौबीसों घंटे काम करते थे। दिन का समय होने के बावजूद सड़कों पर कुछ लोग थे, हालांकि भीड़ दिन के मुकाबले काफी कम थी। स्ट्रीटलाइटें जल रही थीं और इमारतें बिना किसी सुरक्षाकर्मी की पूछताछ के इमारतों के अंदर-

बाहर आ-जा रही थीं। यह अच्छी बात थी। इसका मतलब यह था कि हनी सिंह के दफ्तर की इमारत में आने-जाने के दौरान नेने की निजी कार अनावश्यक रूप से ध्यान आकर्षित नहीं करेगी और न ही उस पर कोई सवाल उठाएगा। हो सकता है कि कर्मचारी कार का रजिस्ट्रेशन नंबर नोट कर लें, लेकिन अगर कर भी लें तो क्या फर्क पड़ता है? हनी सिंह यह जाँच नहीं करेंगे कि जिस इमारत में उनका दफ्तर है उसमें कौन आ रहा है; बात यह नहीं थी कि वह उस इमारत का मालिक था; वह तो बस उसमें रहने वाले कई लोगों में से एक था।

नेने ने चारों ओर नज़र घुमाई। एक नज़र में ही उसने सब कुछ देख लिया। उसे कोई भी ऐसा व्यक्ति नज़र नहीं आया जिसे वह जानता हो या जो उसे बिना वर्दी के पहचान सके। कुछ तेज़ नज़र वाले लोग, बेशक, उसके बालों के स्टाइल और हाव-भाव से उसके पेशे को पहचान लेते। आखिर एक पुलिसवाला, पुलिसवाला ही होता है। वर्दी तो आम लोगों के लिए पुलिस की पहचान होती है; पेशेवर पुलिसवालों को इसकी ज़रूरत नहीं होती – वे नेने जैसे लोगों को दूर से ही पहचान लेते हैं। बस एक ही सावधानी बरतनी थी कि हनी सिंह अभी भी दफ्तर में तो नहीं है; वे नहीं चाहते थे कि आते-जाते समय उससे आमना-सामना हो जाए। इससे शक पैदा हो सकता था। नेने ने अपना मोबाइल निकाला, पुलिस कंट्रोल रूम को फोन किया और हनी सिंह के दफ्तर से बात करवाने को कहा। उसे पता था कि यह कॉल हनी सिंह जैसे व्यक्ति के लिए भी सुरक्षित है, क्योंकि उसकी कॉल पुलिस कंट्रोल रूम के सख्त एन्क्रिप्शन से होकर गुजरेगी जो किसी भी ऐसे सॉफ़्टवेयर को नाकाम कर सकता है जो कॉल के नंबर या स्रोत का पता लगाने की कोशिश करे। हनी सिंह के दफ्तर का डेस्क फोन कुछ देर बजा और फिर वॉइसमेल पर चला गया। नेने ने फोन काट दिया। उन्होंने दस मिनट और इंतज़ार किया कि कहीं कोई इमारत से बाहर तो नहीं आता, कहीं कुछ सेकंड पहले ही कोई बाहर तो नहीं निकला था। कोई नहीं आया। आश्वस्त होते ही वे हरकत में आ गए।

उन्होंने तय किया कि जतिन, हैंडलबार की तरह चाय की दुकान पर घूमेगा और हैंडलबार की तरह ही, रोशनी की स्थिति में भारी गिरावट के बावजूद, उसी तरह के सैमसंग मोबाइल फोन से तस्वीरें लेगा। मकसद नेने की अलग-अलग तस्वीरों में अंतर ढूंढने का खेल खेलना नहीं था; तस्वीरों में नेने के गाड़ी चलाकर चले जाने के बाद उसे देखने और इमारत के गेट पर दोबारा प्रकट होने के बीच बीते समय को कैद किया

जाना था।
जतिन की कार को सड़क किनारे पार्क करके, दोनों आदमी हनी सिंह की इमारत से दूर चले गए ताकि यह पता लगा सकें कि हनी कहाँ से कार से उतरकर पीछे के गेट से अपनी इमारत में जा सकता है। मुश्किल से दो मिनट की छोटी सी ड्राइव के बाद—बैंक की इमारत को पार करते हुए जहाँ हैंडलबार ने अपनी कार पार्क की थी—सड़क कलिना की ओर बाईं ओर मुड़ गई, और उनकी कार हैंडलबार की नज़र से ओझल हो गई। फिर कुछ ही मीटर आगे एक और बाएँ मोड़ ने एक और ऑफिस कॉम्प्लेक्स की ओर प्रवेश कराया जिसमें एक साउथ इंडियन कैफे भी था, जो एक जोड़े के लिए वहाँ जाने का एक अच्छा बहाना था। साउथ इंडियन कैफे वाली इमारत में सामने से अलग-अलग प्रवेश और निकास द्वार थे और पीछे हनी सिंह के ऑफिस की इमारत की तरह ही एक पैदल मार्ग था। नेने ने इमारत में गाड़ी मोड़ी और रोक दी। ऐसा लग रहा था कि सभी इमारतों के बीच आपस में जुड़े हुए पैदल रास्ते थे। वाह!
दोनों पुलिसकर्मी वापस शुरुआती बिंदु पर लौट आए। जतिन बंद चाय की दुकान पर उतर गया और नेने हनी सिंह की इमारत में गाड़ी चलाकर अंदर गया, पार्क किया और बाहर निकल आया। जतिन ने उसे देखा और इमारत में गायब होने से पहले उसकी कुछ तस्वीरें खींच लीं। रात 10:12 बजे। जतिन ने नेने की दोबारा तस्वीर खींची, इस बार कार में, रात 10:16 बजे।
नेने ने उस छोटे से रास्ते पर गाड़ी चलाई जिसका उन्होंने अभी-अभी मुआयना किया था, साउथ इंडियन कैफे वाली इमारत के दूसरी तरफ एक पार्किंग की जगह ढूंढी, तेज़ी से चले - लगभग दौड़ते हुए, बिना किसी की भौंहें चढ़ाए - बगल वाली इमारत में गए और हनी सिंह के दफ्तर में घुस गए और मुख्य द्वार से बाहर निकल आए ताकि जतिन उन्हें फिर से देख सके। 10:33।
हनी सिंह को दो बार देखे जाने के बीच का समय अंतराल नौ मिनट से थोड़ा अधिक था।
अपनी असाधारण ड्राइविंग क्षमता के बावजूद, नेने ने लगभग पंद्रह मिनट में वही उपलब्धि हासिल कर ली थी।
नेने और जतिन नेने की कार में बैठे सोच रहे थे कि हनी सिंह ने अपने रहस्यमयी प्रदर्शन से लगभग छह मिनट कैसे कम कर दिए। खासकर तब जब किट्टी और हनी ने भीड़भाड़ वाले दिन में वही कोर्स किया था। यात्रा में और अधिक समय लगना चाहिए

था।
क्या ऐसा हो सकता है कि डीसीपी रीता फेरेरा ने इस मामले में गलत अनुमान लगाया हो? क्या वास्तव में दो हनी सिंह थे जिनके पास एक जैसी घड़ियाँ थीं?
'हो सकता है कि उसे कोई दूसरा रास्ता पता हो जो हमसे छूट गया हो। क्या हमें एक और रेकी करनी चाहिए?' जतिन ने सुझाव दिया।
'मुझे लगता है ऐसा ही है। चलो पैदल चलते हैं। शायद कोई पैदल रास्ता हो जिसे हमने नज़रअंदाज़ कर दिया हो।'
'अच्छा विचार।'
वे मोड़ तक सड़क की पूरी लंबाई तक चले। अगर मोड़ से पहले कार रुक जाती तो हैंडलबार को ज़रूर पता चल जाता। अगर उसने देखा होता तो वह ज़रूर रिपोर्ट करता कि हनी सिंह कार से बाहर निकला था। पहला बायां मोड़ जो किसी को भी वापस ले जा सकता था, वह कैफे वाली इमारत का प्रवेश द्वार था, कोई दूसरा रास्ता नहीं था। जब वे कैफे वाली इमारत के पार्किंग स्थल में खड़े थे, तभी सबसे पहले यह विचार जतिन के मन में आया।
'इस परिसर में अभी भी इतनी सारी कारें होने के बावजूद, आपको पहले एक खाली पार्किंग स्लॉट ढूंढने में थोड़ा समय तो लगा ही होगा?' उन्होंने सवाल किया।
नेने ने तुरंत बात पकड़ ली। 'और दूसरी तरफ, किट्टी वर्गीस हनी सिंह को गेट पर छोड़कर भाग जाती, इसलिए अगर हैंडलबार उनके पीछे गाड़ी लेकर आता तो वह कार का पीछा करता, यह जाने बिना कि उसका निशाना अब गाड़ी में नहीं है...'
'और हनी सिंह इस भीड़ के बीच से दौड़ते हुए निकल जाता, जो कि आपके लिए पहले इस जगह पर गाड़ी चलाकर आने और फिर पार्किंग में लगने वाले समय से कहीं ज्यादा तेज होता।'
'पकड़ लिया।' नेने ने दो उंगलियों से मज़ाकिया इशारा किया। वह भूल गया था कि हनी सिंह की इमारत के सामने तक पहुँचने में जो अतिरिक्त समय लगा, वह कैफे में गाड़ी पार्क करने और पार्किंग की जगह ढूंढने में लगा समय था। शायद उन्हीं चार-पाँच मिनटों ने हनी सिंह की शानदार चाल और नेने के दोबारा प्रयास के बीच निर्णायक अंतर पैदा कर दिया।
'चलो एक और चक्कर लगाते हैं।'
'इस बार मैं गाड़ी चलाऊंगा। मैं आपको गेट तक छोड़ दूंगा और फिर यू-टर्न लेकर चाय

की दुकान पर जाऊंगा, फिर आपका समय दोबारा नोट करूंगा।'
'हो गया।'
इस बार उन्होंने यह पैंतरा दस मिनट में पूरा कर लिया।
'क्या हमें मैडम को फोन करना चाहिए या सिर्फ ईमेल करना चाहिए?' उसने अपनी घड़ी पर नजर डाली: 11:04।
'इस समय तो बस ईमेल कर देना ही बेहतर होगा। वैसे भी, यह कोई नई खोज नहीं है, यह तो बस उसके अपने अनुमान की पुष्टि है। अगर इस परीक्षण से उसका वादा टूट जाता या गलत साबित हो जाता, तो मैं ज़रूर फ़ोन करता। मतलब, हमें वही पता है जो पहले से पता था, है ना?'
'मुझे लगता है ऐसा ही है। मैं उसे ईमेल कर दूंगी।'
वे लोग बातें करते हुए अपनी-अपनी खड़ी कारों की ओर वापस चले गए।
शुभ रात्रि। कल मिलते हैं।
'शुभ रात्रि।'
नेने तुरंत निकल गया। वह शादीशुदा था, उसका परिवार था और काफी रात हो चुकी थी। जतिन वहीं बैठा अपने फोन में पिछले एक घंटे में ली गई नेने की तस्वीरें ढूंढने लगा और मुस्कुराया। हनी सिंह को बिना हमशक्ल के दोहरी भूमिका निभाते देखना वाकई मजेदार था। वह सोच रहा था कि हनी और/या किट्टी ने आखिर इस पूरे मामले की कल्पना कैसे की होगी। और क्यों?
उसने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और धीरे-धीरे सड़क के अंत तक चला गया।
क्या आपने कभी गौर किया है कि जब आप कोई नया शब्द देखते हैं, तो वह अचानक आपके पढ़े हुए हर लेख में दिखाई देने लगता है? हर जगह? ऐसा नहीं है कि वह शब्द आपके सामने आने के बाद ही ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल हुआ हो। बस, आप उसके प्रति ज़्यादा जागरूक हो जाते हैं। यही बात हर चीज़ पर लागू होती है। अगर कोई आपको कोई नई चीज़, अच्छी या बुरी, बताता है, तो आप उसे ज़्यादा देखने लगते हैं। मुंबई में अचानक लापरवाह मोटरसाइकिल सवारों की बाढ़ नहीं आ गई थी। लेकिन रीता द्वारा एक लापरवाह सवार की ओर इशारा करने के बाद जतिन ने महसूस किया कि यह सड़कों पर एक तरह की महामारी बन गई है। अपनी हैरानी में डूबा हुआ वह अपने दाहिनी ओर से आ रही एक मोटरसाइकिल को देख ही नहीं पाया। फिर उसे एहसास हुआ कि वह अकेला नहीं है। इस शहर के मोटरसाइकिल सवारों को क्या हो

गया है? ब्रेक की तेज़ आवाज़। लगभग बीस ड्राइवर एक साथ हॉर्न बजा रहे थे, वो भी इस समय। खुली और बंद खिड़कियों से भी गालियाँ निकल रही थीं। मोटरसाइकिल सवार को कोई परवाह नहीं थी, वह बस तेज़ी से निकल गया। वो किसी चीज़ से टकरा सकता था, मर सकता था या किसी को मार सकता था, लेकिन वो रुका नहीं, उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। हालाँकि जतिन अंधेरा होने और नंबर प्लेट को देखने के लिए सही एंगल न होने के कारण रजिस्ट्रेशन डिटेल्स नोट नहीं कर पाया, लेकिन उसने देखा कि गाड़ी का रंग हरा था, न कि वो लाल जो उसने रीता के साथ देखा था। और उसे ये भी काम सौंपा गया था कि वो पता लगाए कि गाड़ी किसने चलाई और स्थानीय पुलिस स्टेशन से कहे कि वो उनसे शिष्टाचार भेंट करें और उन्हें गाड़ी चलाने के बारे में कुछ ज़रूरी सलाह दें। धत् तेरे की! वो आज अपने काम में देर हो गया। पक्का!

उन्हें पता था कि रीटा फेरेरा कभी कुछ नहीं भूलतीं; शायद रॉन जोगानी हत्याकांड की तात्कालिकता के कारण यह बात उनकी प्राथमिकताओं में से एक न रह गई हो। उन्होंने मन ही मन वाहन पंजीकरण डेटाबेस खोलकर उस नंबर को खोजने का निश्चय किया जिसे उन्होंने पहले नोट किया था। वास्तव में, इस तरह की लापरवाही पर जुर्माना लगाने के लिए स्थानीय पुलिस स्टेशनों को पत्र भेजा जाना चाहिए। यह एक खतरे का रूप लेता जा रहा था। यही सोचते हुए वे भी गाड़ी चलाकर निकल गए।

***

रीटा के ब्लैकबेरी फोन पर 11:24 बजे एक नोटिफिकेशन आया।

हाँ, उसके साथियों ने वही सर्किट लगभग उतने ही समय में पूरा किया था जितना समय हैंडलबार ने रिकॉर्ड किया था। हालाँकि, यह सिर्फ़ एक अनुमान था और अनुमानों को न तो प्रमाणित किया जा सकता है, न ही अदालत में चुनौती दी जा सकती है। समस्या यह थी कि आप किसी नकार को कैसे साबित करेंगे? आप यह कैसे साबित कर सकते हैं कि हनी सिंह का दुनिया में कोई हमशक्ल नहीं है, जब तक कि आप पूरी दुनिया की आबादी को खोजकर खत्म न कर दें? आप किसी हमशक्ल को तभी साबित कर सकते हैं जब आप उसे देखें, न कि तब जब आप उसे न देख सकें।

रीता को अपने पिता से हल्की नींद की आदत विरासत में मिली थी। उनके पिता कभी भी चैन से नहीं सोते थे और एक रात में छह घंटे से ज़्यादा नहीं सोते थे। किताबें और

संगीत उनके खाली समय को भर देते थे। उन्होंने रीता को उस "दिन के बारे में बताया था जब संगीत थम गया था", कि कैसे मैकलीन ने 1959 के उस फरवरी के दिन अपने आदर्श बडी हॉली को अमर कर दिया था। वास्तव में, उन्होंने पूरे अमेरिकन पाई का अपना संस्करण प्रस्तुत किया था और कैसे डॉन ने डायलन, एल्विस, द बीटल्स, लेनन, द रोलिंग स्टोन्स, लियोनार्ड कोहेन आदि के गाने गाए थे।

लेकिन ये सब तब की बात है जब शराब ने सब कुछ अपने कब्जे में नहीं लिया था। लत, उसने कभी स्वीकार नहीं की। विरासत की बात करें तो, उसने अपना संगीत संग्रह भी अपनी इकलौती संतान को दे दिया था। सब विनाइल रिकॉर्ड थे। एकदम नए। और रीता ने हमेशा उस संग्रह को अपने माता-पिता की छोड़ी हुई ज़मीन और संपत्ति से कहीं ज़्यादा संजोकर रखा था। इतना कि अगर वह फिर कभी काम न करना चाहे, तो वह सिर्फ़ किराए से गुज़ारा कर सकती थी। हालाँकि, अब उसका जीवन उसके काम के लिए ही था, खासकर जब वह इस तरह की किसी जाँच में उलझी होती थी, न कि उबाऊ कागज़ी कार्यवाही के लिए।

वह जाग रही थी, ऊब रही थी, जिम की चुस्कियां ले रही थी और ऐश को याद कर रही थी। उसने सोचा, वह अभी भी आसमान में ही होगा।

रात को सोने से पहले उसने टीम को ईमेल भेजकर सुबह नौ बजे एक आपातकालीन बैठक बुलाई।

***

'परसों के लिए टिकट बुक हो गए हैं...' हनी सिंह फिर से फोन पर थे। वे अपने बेडरूम में थे, लेकिन उनकी आवाज़ दबी हुई थी, मानो उन्हें डर हो कि कोई उनकी बात सुन लेगा।

दूसरी तरफ से चटकने की आवाज आई।

'जी हां, बुधवार शाम को। मेरे पास आपका पासपोर्ट और सभी संबंधित कागजात हैं... नहीं, बस एक छोटा सा बैग, कृपया।'

एक और चटकने की आवाज। एक और सवाल।

'हम दिल्ली से लंदन, फिर मियामी और फिर अपने स्वर्ग के लिए उड़ान भरेंगे... हाँ, यही सबसे अच्छा रास्ता है, कोई सीधी उड़ान नहीं है। हमारी उड़ान सुबह-सुबह है, इसलिए हवाई अड्डे पर जल्दी पहुँचें जैसा मैंने आपको बताया है। हाँ, मुझे पता है कि बहुत जल्दी है, लेकिन मुझ पर भरोसा करें। हम जितनी जल्दी पहुँचेंगे, उतना ही

अच्छा होगा।'
दूसरी तरफ बैठे व्यक्ति ने कुछ और पूछा।
'जितना हो सके उतना घुमावदार रास्ता अपनाएं। जरूरत पड़ने पर टैक्सी बदल लें। अब हम असफल नहीं हो सकते।'

28 Twenty-Eight

पूरा तमाशा बेहद सुनियोजित था। रीटा का दिमाग सुन्न पड़ गया था: ऐसा पहली बार नहीं था कि कोई अपराधी बच निकला हो।
दुनिया भर की पुलिस फाइलों में अनसुलझे मामलों की भरमार है। अनसुलझे अपराध।
कोई दूसरा हनी सिंह नहीं था। नेने के अगले मुखबिरों ने उस हनी सिंह को ढूंढ लिया था जिसके बारे में उन्हें पहले से ही जानकारी थी। अगर अदालत में जाकर कहा जाए: "एक और हनी सिंह है, लेकिन हम उसे ढूंढ नहीं पा रहे हैं", तो मामला खत्म हो जाएगा। यानी, अगर मुकदमा दायर भी किया जा सके तो।
वीर सिंह की मौत का संबंध हनी सिंह और शायद किट्टी वर्गीज से हो सकता है। हालांकि, इसका भी कोई ठोस सबूत नहीं है।
रीता और उनकी टीम को पूरा यकीन था कि यह हनी सिंह ही था। किट्टी उसकी सहयोगी हो सकती थी, लेकिन वे निश्चित नहीं थे।
'मैं यह समझ ही नहीं पा रही हूँ कि कोई एक व्यक्ति अकेले ही दूसरे देश में जाकर इतनी बड़ी चोरी कैसे कर सकता है... हमें लगा कि दो हनी सिंह हैं, जो अविश्वसनीय होते हुए भी हमारी थ्योरी को कुछ हद तक सही साबित करता था।' रीता कोई भी तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दे पाई।
विक्रम ने कहा, 'यह किट्टी ही होनी चाहिए।'
'मेरा अंतर्ज्ञान भी यही कहता है, लेकिन हम जानते हैं कि वह कोलोन में थी। और हम यह भी जानते हैं कि वह समूह में किसी की भी नजरों से एक घंटे से अधिक समय

तक ओझल नहीं हुई थी। वह ब्रुसेल्स जाकर वापस कैसे आ सकती थी और किसी को पता भी नहीं चला?'

'मैडम, मुझे हनी सिंह को लॉक-अप में डालने दीजिए और मैं उससे बात करवा लूंगा,' नेने ने प्रस्ताव दिया।

जतिन मुस्कुराया। वह जानता था कि मौका मिलने पर नेने हनी सिंह से बात निकलवाने में पूरी तरह सक्षम थी। साथ ही, वह यह भी जानता था कि रीता पुलिस की उन पुरानी चालों को बर्दाश्त नहीं करेगी।

'चलो, उससे एक बार फिर बात करते हैं।' रीटा खड़ी हो गई। उसका सब्र खत्म हो चुका था। 'कौन आ रहा है?'

नेने और विक्रम खड़े हो गए।

'मुझे लगता है कि इस बार नेने को मेरे साथ आना चाहिए। एक नए नजरिए से देखने के लिए।'

***

रीता और नेने पिछली बार की तरह ही हनी सिंह के दफ्तर में घुस गईं। न पहले से कोई सूचना दी, न कोई सूचना। रिसेप्शनिस्ट वहीं बैठा रहा, लेकिन उसने यह पूछने की भी जहमत नहीं उठाई कि वे कौन हैं, क्या चाहती हैं या क्या उसके बॉस के पास उनसे मिलने का समय है।

'सुप्रभात, श्रीमान सिंह।' रीता ने हनी सिंह के दफ्तर का दरवाजा खोला और अंदर चली गई, उसके पीछे नेने भी आ गई।

'तुम फिर?' उसकी आवाज़ में चिड़चिड़ाहट थी।

'क्या हमसे बदबू आ रही है?' नेने ने असभ्यता से पूछा।

मैंने ऐसा नहीं कहा—

'तो फिर हमसे दोबारा मिलने में क्या दिक्कत है?'

'देखिए, मेरा इरादा अपमान करने का नहीं था, बस मुंह से कुछ निकल गया।' हनी सिंह के चेहरे से साफ पता चल रहा था कि उन्हें समझ आ गया था कि यह मुलाकात कोई सामान्य बातचीत वाली नहीं होगी। उनका शरीर और हावभाव आत्मविश्वास से भरे थे; लेकिन उनकी आंखें घबराई हुई थीं। 'माफ़ कीजिए। कृपया बैठ जाइए। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

'अगर आप चाहें तो हम यह बातचीत आपकी पसंद के पुलिस स्टेशन में कर सकते हैं।'

मैंने कहा, 'मुझे खेद है।'
'माफी स्वीकार है।' रीता ने बात आगे बढ़ाई। उसे एहसास हुआ कि नेने ने उसे काफी परेशान कर दिया था। 'हे भगवान, मेरी घड़ी रुक गई है। कितना समय हो गया है?' उसने जानबूझकर हनी सिंह की तरफ देखा। हनी सिंह लैपटॉप पर काम कर रहा था और उसके पीछे एक बड़ी स्क्रीन वाला कंप्यूटर था। रीता को किसी ब्रोशर का आंशिक प्रतिबिंब दिखाई दिया, लेकिन वह पूरी स्क्रीन नहीं देख पाई क्योंकि उसका शरीर दोनों स्क्रीन के बीच में था। यह कोई ऐसी जगह थी जिसका नाम CA से शुरू होता था...
'11:04' हनी ने अपना लैपटॉप बंद कर दिया।
हाँ। वही घड़ी। वह जहाँ बैठी थी, वहाँ से मेज के दूसरी तरफ से उसे घड़ी पर हल्का सा निशान दिख रहा था। चेन पर खरोंचें दिखाई नहीं दे रही थीं; वैसे भी उन्हें देखने की ज़रूरत नहीं थी। अगर उसके पास कोई सबूत होता, तो ही घड़ी ज़ब्त की जाती और तस्वीरों से मिलान किया जाता। तस्वीरों के आधार पर वारंट जारी करके यह साबित किया जाता कि दोनों घड़ियाँ एक ही हैं। इससे कोई हत्या या चोरी का दोषी नहीं बन जाता।
'क्या आपको उस हत्या की जांच से संबंधित कोई सुराग मिला जिस पर आप काम कर रहे थे?' हनी सिंह ने सवाल शुरू किया।
'जी हां, वास्तव में बहुत ठोस बातें हैं। लेकिन हम यहां उस पर चर्चा करने के लिए नहीं हैं।'
'मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ, डीसीपी फरेरा? और...' उसने नेने की ओर देखा, जिसने हनी सिंह को अपना परिचय देने लायक नहीं समझा था।
नेने ने अब भी अपना नाम या पद नहीं बताया।
'तुम्हारा दोस्त वीर सिंह मर गया।' रीता ने शांत भाव से यह खबर सुनाई।
कोई पछतावा नहीं। कोई हैरानी नहीं। हनी सिंह ने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिया।
'मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप मुझे उस व्यक्ति की मृत्यु की सूचना देने क्यों आए हैं, जिसके बारे में मैंने पिछली बार जब आप सीनियर इंस्पेक्टर पाटिल के साथ यहां आए थे तब बताया था,' हनी सिंह ने विक्रम का नाम लेते समय नेने की ओर देखना सुनिश्चित किया, '...जिससे वीर सिंह और मैं बहुत पहले अलग हो गए थे—'
'क्या वह आपके जीवन में कभी आपका करीबी दोस्त नहीं था?'

'वह सचमुच में एक अच्छा इंसान था, लेकिन कई सालों से मेरा उससे कोई संपर्क नहीं है।'
'क्या आपको पता है कि उसके कोई दूर के रिश्तेदार हैं?'
'कोई नहीं।'
'मुझे लगता है कि वह यात्रा व्यर्थ ही रही।'
'भारत के किस हिस्से में उसकी हत्या हुई?'
अपराधबोध, एक बेहद प्रबल भावना होने के साथ-साथ एक अद्भुत घटना भी है। बेशक, अगर आप आदतन अपराधी हैं या हनी सिंह जैसे कुशल अभिनेता हैं, तो आप इसे छिपा सकते हैं। लेकिन – और यही असली बात है – यह अन्य तरीकों से भी प्रकट होता है। अगर कोई आपको किसी ऐसी स्थिति के बारे में अधूरी जानकारी दे, जिसके बारे में आप पूरी तरह से जानते हैं, तो कभी-कभी आप दुविधा में पड़ जाते हैं। क्या मैंने वह सुना था? या क्या मुझे वह पता है? एक नाजुक रेखा होती है। आपको हर बात का रिकॉर्ड रखना पड़ता है क्योंकि आप झूठ की जिंदगी जी रहे होते हैं।
'मैंने यह तो नहीं कहा कि उसकी हत्या कर दी गई, है ना?'
'अच्छा...' हनी रुक गई, लेकिन सिर्फ एक पल के लिए। 'अगर उसकी मौत स्वाभाविक हुई होती तो मुझे यह बात आपसे, डीसीपी फेरेरा से नहीं सुननी पड़ती।'
रीटा के सवाल का शानदार जवाब।
हनी सिंह को कैसे पता चल सकता था कि वीर सिंह की हत्या भारत में हुई है? एक अहम विचार उसके मन में कौंधा और वह अचानक उठ खड़ी हुई।
'हम आपसे जल्द ही मिलेंगे, श्रीमान सिंह।'
'और जब तक मैं न कहूँ, तब तक इस शहर को छोड़ने की कोशिश भी मत करना, वरना तुम्हें पछतावा होगा,' नेने ने बाहर निकलने से पहले गुस्से में कहा।

***

रीता और नेने ने हनी सिंह के साथ अपनी संक्षिप्त मुलाकात के बारे में बाकी लोगों को बताया। दोनों ने पुष्टि की कि घड़ी एक उपहार के तौर पर दी गई थी। रीता ने यह भी बताया कि जब वे अचानक अंदर घुसे, तो उन्होंने हनी सिंह की स्क्रीन पर किसी देश का हॉलिडे ब्रोशर देखा था। बाद में उन्होंने अपना लैपटॉप बंद कर दिया, लेकिन उस जगह के नाम के पहले दो अक्षर C और A थे; रीता को इसके अलावा कुछ और नज़र नहीं आया।

'योजना एकदम सही है: उनके और उनके अपराधों के बीच जितना हो सके उतना भौगोलिक अंतर पैदा करना,' रीटा ने निष्कर्ष निकाला।
'यूरोप?'
'ब्रसेल्स में हुई हत्या के बाद बेल्जियम में यूरोपीय मुख्यालय होने के बावजूद यूरोप को इसका शिकार नहीं होना चाहिए। मुझे उन देशों की सूची चाहिए जिनके नाम C से शुरू होते हैं और दूसरा अक्षर A है।'
'कनाडा।'
मैंने पूरी सूची मांगी थी। कनाडा बहुत जोखिम भरा है। भले ही उसके पास पासपोर्ट और वीजा हो, उसे किसी न किसी समय तो वापस लौटना ही होगा। एक सूची तैयार करो। इतने सारे लोग नहीं हो सकते...
'मैं इस पर काम कर रहा हूँ।' इस बार विक्रम ने काम को नोट नहीं किया। उसने तुरंत अपने कंप्यूटर पर टाइप करना शुरू कर दिया। 'कंबोडिया, कैमरून, कनाडा, केप वर्डे, बस इतना ही।'
'जतिन, हमारे सूत्रों से संपर्क करो—जरूरत पड़ने पर कमिश्नर सक्सेना के सचिव से भी संपर्क करने को कहो—और पिछले छह महीनों में इन देशों के लिए वीजा प्राप्त करने वाले लोगों के नाम पता करो। कनाडा को छोड़कर, मुझे नहीं लगता कि बाकी तीन देशों में छुट्टियां मनाने या व्यापार के लिए बहुत सारे भारतीय जाएंगे।'
'लेकिन निश्चित रूप से उन्हें छद्म नामों से जारी किया गया होगा।'
'सुरक्षा कारणों से हमने दूतावासों के साथ गोपनीयता समझौते किए हुए हैं। हनी और किट्टी का विवरण, तस्वीरें, उनकी पृष्ठभूमि और पते साझा करें। वे हर तरह की जांच से बच नहीं सकते।'
जतिन दौड़कर बाहर निकल गया।
इस बात का कोई संकेत नहीं था कि हनी सिंह और किट्टी वर्गीस कब उड़ान भरेंगे—या वास्तव में ऐसा होगा भी या नहीं—लेकिन इस पूरी खोज के बाद टीम में एक अजीब सी बेचैनी छा गई थी। मानो वे मंज़िल के बहुत करीब पहुँच गए हों। उन्हें हनी सिंह मिल तो गया था, लेकिन अभी भी पूरी तरह से नहीं। और यही कुंठा, यही गुस्सा एड्रेनालाईन को बढ़ा रहा था।

***

कनाडा दूतावास को छोड़कर, जिसने जारी किए गए वीजा से संबंधित कोई भी

व्यक्तिगत जानकारी प्रकट करने से पहले अदालत के आदेश की मांग की, बाकी तीन दूतावासों को ज्यादा मनाने या दबाव डालने की जरूरत नहीं पड़ी। मुंबई पुलिस आयुक्त कार्यालय के एक साधारण अनुरोध को भी तत्काल कार्रवाई के साथ निपटाया गया। केप वर्डे और कंबोडिया के दूतावास नई दिल्ली में थे; सारी जानकारी उन्हें डिजिटल रूप से भेजी गई। भारत में एकमात्र कार्यालय होने के कारण उन्होंने जल्द ही नकारात्मक जवाब दे दिया। हनी सिंह या किट्टी वर्गीस से शारीरिक, आर्थिक या पेशेवर रूप से मिलता-जुलता कोई भी व्यक्ति इन दोनों देशों के वीजा के लिए आवेदन नहीं किया था। शिशिर सिंह नाम का भी कोई व्यक्ति नहीं था। रीता जानती थी कि किसी भी नागरिक के लिए अपने देश से बाहर रहते हुए किसी दूसरे देश के वीजा के लिए आवेदन करना लगभग असंभव है। हनी सिंह दुबई या सिंगापुर जाकर वहां केप वर्डे वीजा के लिए आवेदन नहीं कर सकता था। स्थानीय दूतावास का उपयोग करने के लिए आपको उस देश में निवास का प्रमाण देना होता है।

कैमरून का भारत में कोई दूतावास नहीं था। भारतीय जब भारत में आते हैं तो पर्यटक वीजा के लिए आवेदन कर सकते हैं। यह उन देशों में से नहीं है जहाँ आप भागे थे, हालाँकि भारत के साथ राजनयिक संबंध न होना एक फायदा हो सकता है। आप उनसे एक अपराधी को प्रत्यर्पित करने के लिए कैसे कहेंगे? कैमरून पश्चिम अफ्रीका में भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर स्थित है, और रीता यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि इतना पैसा कमाने के बाद हनी सिंह अपना शेष जीवन कैमरून में बिताना चाहेगा। हालाँकि, दक्षिण अमेरिका के किसी देश, जैसे उरुग्वे, में शरण लेने से पहले यह एक बुरा अस्थायी उपाय नहीं था, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के नाजियों सहित आपराधिक शरणार्थियों को शरण दी थी। यह एक मुश्किल कोशिश थी, लेकिन कोशिश तो थी ही। उसने विक्रम से कैमरून के लिए उड़ान कनेक्शन की जाँच करने को कहा। उसे पूरा यकीन था कि कोई सीधी उड़ान नहीं होगी। टीम को मुंबई से लगभग हर उड़ान पर नज़र रखनी होगी। साथ ही, भारत के अन्य अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के लिए घरेलू उड़ानों पर भी।

अंततः, सेक्सी के परिचित किसी मंत्री के अत्यधिक दबाव के बाद, कनाडाई दूतावास ने अगले दिन अपना जवाब भेजने का वादा किया। दूतावास से पुष्टि प्राप्त करने के लिए भागदौड़ में पूरा दिन लग गया।

जतिन ने पुष्टि की कि गुप्त सुरक्षा के अलावा, अब हैंडलबार राजा और उनके

विस्तारित परिवार के लिए एक प्रत्यक्ष सुरक्षा दल भी तैनात कर दिया गया था। ऐसे में, श्री राजा के लिए अपने मायावी मुवक्किल द्वारा दी गई धमकियों के आगे झुकना और अपनी पिछली रिपोर्ट में बदलाव करना आवश्यक नहीं था।

***

रीटा अपने अपार्टमेंट में लैपटॉप चालू करके बैठी थी। जिम बीम की आधी खाली बोतल ठीक उसी जगह पड़ी थी जहाँ उसने और ऐश ने रविवार रात को छोड़ी थी। उसने कुछ देर इंतज़ार किया और फिर ऐश द्वारा ऑर्डर किए गए पिज़्ज़ा के साथ मुफ्त में मिली डाइट कोक से अपना गिलास भर लिया।

गूगल एक अद्भुत चीज़ है। यह वेब पर आपकी हर मनचाही चीज़ ढूंढ सकता है - और आजकल लगभग सब कुछ वेब पर मौजूद है - यह आपकी खोज के आधार पर सुझाव और अनुशंसाएँ भी दे सकता है। यह प्रासंगिक समझे जाने वाले विज्ञापन भी दिखाना शुरू कर देता है। दूसरी ओर, इसमें इंसानी दिमाग और आंखें नहीं हैं जो आपको और आपके आस-पास देखकर यह पता लगा सकें कि आप किसी खास चीज़ की तलाश क्यों कर रहे हैं। यह कभी-कभी बेहद परेशान करने वाला हो सकता है, लेकिन यह बेहद उपयोगी भी हो सकता है। मान लीजिए आप केप वर्डे के बारे में जानकारी खोजते हैं और गूगल यह अनुमान लगाता है कि आप अपनी अगली छुट्टी की जगह खोज रहे हैं, जबकि रीटा की ऐसी कोई योजना नहीं थी, लेकिन गूगल को यह कैसे पता चल सकता था? भला कैसे? तो अगर रीटा फेरेरा केप वर्डे के बारे में पेज देख रही थीं, तो इस शानदार एल्गोरिदम ने यह समझ लिया कि मिस फेरेरा किसी द्वीप पर छुट्टियां बिताना चाहती थीं। इससे भी अच्छी बात यह है कि उसने यह अनुमान लगाया कि मिस फेरेरा गर्म जलवायु में, धूप और समुद्र के बीच छुट्टियां बिताना चाहती थीं। केप वर्डे एक छोटा द्वीप देश है। और अगर मिस फेरेरा किसी द्वीप पर जाना चाहती थीं, तो कैरेबियन सागर में छुट्टियों का प्रस्ताव दिखाने से बेहतर क्या हो सकता था? केमैन द्वीप समूह का नाम सामने आया और रीटा की नज़र उस पर पड़ी। CA से शुरू होने वाले देशों की सूची में उनका नाम इसलिए नहीं था क्योंकि केमैन द्वीप समूह कैरिबियन सागर में स्थित तीन द्वीपों का एक क्षेत्र है। क्यूबा के दक्षिण में स्थित होने के बावजूद, स्वतंत्रता के समय उन्होंने ब्रिटिश विदेशी क्षेत्र बने रहने और यूनाइटेड किंगडम के अधिकार क्षेत्र और संप्रभुता के अधीन रहने का विकल्प चुना, और ब्रिटिश सम्राट को राष्ट्राध्यक्ष माना। लेकिन इसमें एक पेंच है: वे यूके का हिस्सा नहीं हैं,

इसलिए उनकी अपनी सरकार, अपना नेतृत्व है और वे यूके द्वारा शासित या विनियमित नहीं हैं।
हर कोई जानता है कि ये द्वीप एक प्रमुख वित्तीय केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हैं, जहाँ लगभग 100 वर्ग मील के क्षेत्रफल में 300 बैंक और 60 हजार स्थानीय आबादी रहती है। तो, यह समझना आसान है कि ये बैंक किन लोगों को सेवाएँ प्रदान करते हैं? डॉयचे बैंक, यूबीएस, गोल्डमैन सैक्स और एचएसबीसी जैसे अंतरराष्ट्रीय बैंकों के अलावा, कई स्थानीय और क्षेत्रीय बैंक भी हैं जो बेहद गोपनीय स्विस नागरिकों की संपत्ति और खातों को लूट रहे हैं। बैंकिंग के समान सिद्धांत और समान गोपनीयता की गारंटी दी जाती है।
लेकिन।
यह बात शायद ही किसी को पता हो, लेकिन स्विट्जरलैंड के विपरीत, केमैन द्वीप समूह में बसना और वहां की नागरिकता लेना उतना ही आसान है जितना किसी बच्चे से लॉलीपॉप चुराना। आपको बस पैसा और धैर्य चाहिए।
16 लाख डॉलर (केमैन आइलैंड डॉलर का मूल्य लगभग एक यूरो के बराबर है) के निवेश से आपको द्वीपों पर स्थायी निवास मिल जाता है। दुनिया भर में पर्याप्त सलाहकार मौजूद हैं जो आपको सही निवेश विकल्पों में निवेश करने में मदद कर सकते हैं ताकि आप सही दिशा में आगे बढ़ सकें। एक बार निवेश की प्रक्रिया शुरू हो जाने पर, द्वीपों पर पांच साल रहने के बाद आपको ब्रिटिश ओवरसीज टेरिटरी की नागरिकता मिल जाती है। इसके बाद भारतीय पुलिस केवल आपकी उड़ान के निशान ही देख पाएगी।
रीता लंबे समय से तर्कशास्त्र की प्रबल समर्थक थी: यह प्राचीन यूनानी तार्किक निष्कर्ष विधि है जिसमें दो अलग-अलग जानकारियों को आपस में जोड़ा जाता है। वह भली-भांति जानती थी कि कर कारणों से जिन लोगों के घरों में चोरी हुई थी, उनमें से किसी ने भी अपने नुकसान की पूरी जानकारी नहीं दी थी। घोषित नुकसान का अनुमान लगाते हुए उसने उंगलियों पर कुछ हिसाब लगाया - मुंबई: 525,000 डॉलर, नई दिल्ली: 790,000 डॉलर और ब्रुसेल्स: 10 मिलियन डॉलर - इनके पीछे जो भी था, वह आसानी से तुरंत निवास परमिट प्राप्त कर सकता था और उसके पास बैंक में इतना पैसा भी बचा रहता कि वह आगे की योजना बना सके। अभी तक परमिट न मिलने का मतलब था कि कागजी कार्रवाई लंबित होने के कारण कुछ देरी हुई थी।

वरना, अगर वे अपने लक्ष्य के करीब होते, तो क्या वे कूदकर अपना काम पूरा नहीं कर देते?

रीटा अब भी अपनी इस धारणा पर कायम थी कि तीनों चोरियां किसी एक व्यक्ति ने नहीं की थीं। यह एक टीम थी। छोटी टीम। किसी भी काम को मज़बूत बनाए रखने के लिए उसमें कम से कम कड़ियाँ होनी चाहिए। किसी भी राज़ को छुपाए रखने के लिए कम से कम लोगों की ज़रूरत होती है। हनी सिंह और किट्टी वर्गीस के अलावा इन कारनामों से फ़ायदा उठाने वाला कोई और न पाकर, उसने अनुमान लगाया कि यह दो लोगों की टीम थी। वे बिना किसी को पता चले ही अपना काम कर सकते थे, लेकिन रॉन जोगानी की वजह से यह काम नहीं हो पाया।

एकमात्र सवाल यह था कि जर्मनी में किट्टी के पास मौजूद पुख्ता सबूत के साथ यह सब कैसे संभव हो पाया।

जब उसे जवाब नहीं मिले तो उसके मन में संदेह पैदा हो गया। क्या मैं सही कर रही हूँ? क्या मैं सही रास्ते पर भी हूँ?

वह इतनी थकी हुई थी कि बेहोशी की हालत में थी। उसे समय का पता ही नहीं चल रहा था, और उसे लगा कि जिम से कोई मदद नहीं मिलेगी। आधी रात को उसने अपना लैपटॉप बंद किया और नए संदेश देखने के लिए अपने ब्लैकबेरी फोन पर टैप किया। कुछ संदेश थे। उसने एक-एक करके देखा और अंत में जतिन का संदेश देखा। उसने आखिरकार उस लापरवाह मोटरसाइकिल सवार के मालिक को ढूंढ लिया था, जिससे उनकी कुछ हफ़्ते पहले मुलाकात हुई थी। कोई बड़ी बात नहीं थी।

लाइट बंद करके उसने अपनी जींस उतारी और वही कमीज पहनकर सो गई।

एक अनचाहा ख्याल मन में ऐसे कौंधा जैसे कोई छिपा हुआ डंडेलियन फूल हल्की हवा में लहराने लगता है: एक बेपरवाह मोटरसाइकिल सवार गाड़ियों की कतारों के बीच से निकलता हुआ, ट्रैफिक लाइटें पार करता हुआ, अपनी जान की परवाह किए बिना भाग रहा है। क्या वो सिर्फ मजे के लिए ऐसा कर रहा था या किसी मकसद को पूरा करने की जल्दी में था? भला ऐसी कौन सी बात हो सकती है जिसके लिए जान जोखिम में डाली जाए? शायद आप खजाने के करीब पहुंच जाएं, लेकिन फिर मर जाएंगे।

उसने बिस्तर के पास वाली बत्ती जलाई और पसीने से तरबतर होकर झटके से उठ खड़ी हुई। जींस पहनने की परवाह किए बिना वह लिविंग रूम में गई और बत्ती जला

दी। सुरंग का अंत हो रहा था; धुंधली रोशनी तेज हो रही थी।
क्या उन्होंने हीरों के लिए पहले ही अपनी जान जोखिम में नहीं डाली थी? क्या लापरवाही से मोटरसाइकिल चलाने जैसा छोटा-मोटा समझौता किसी को दस मिलियन यूरो के हीरों से दूर रहने से रोक पाएगा?
उसने अपने लिए एक जिम बीम आइसक्रीम डाली और अपने लैपटॉप को रीस्टार्ट किया और उसके रीबूट होने का इंतजार किया।
और किस बात ने उसे इतना लिंगभेदी बना दिया कि वह यह सोचती है कि मोटरसाइकिल चलाने वाला केवल पुरुष ही हो सकता है?
किसी कोड को सुलझाने के लिए सिर्फ आइंस्टीन जैसे बुद्धिमान व्यक्ति की ज़रूरत होती है। बाकी सब कुछ गणित पर निर्भर करता है। गूगल मैप्स के अनुसार, जर्मनी के कोलोन में स्थित डोम होटल, जहाँ किट्टी वर्गीज अपने फैशन शो के लिए ठहरी थीं, ब्रुसेल्स के क्राउन प्लाजा होटल से लगभग 214 किलोमीटर दूर था, जहाँ रॉन जोगानी की हत्या हुई थी। गूगल मैप्स के मुताबिक, यह दूरी कार से ढाई घंटे से कुछ ज़्यादा समय में तय की जा सकती थी, जबकि एक लापरवाह मोटरसाइकिल सवार को इससे भी कम समय लगता। लगभग एक घंटा तीस मिनट। लेकिन पूरी बात एक ही बात पर टिकी थी: किट्टी वर्गीज मोटरसाइकिल चलाती थीं...
रीता ने हताशा में अपने बालों में हाथ फेरा। महीनों की नाकामी ने उसके धैर्य को तोड़ दिया था। लंबे समय से उन्हें इस मामले में कोई सुराग नहीं मिला था। अब, जब उसकी अंतरात्मा कह रही थी कि वह सही रास्ते पर है, तो उसके पास दफ्तर की फाइलों तक पहुंच नहीं थी। अचानक उसके मुंह में छाई निराशा ने उसे झकझोर दिया। उसने जिम का एक घूंट लिया और अपनी स्क्रीन पर समय देखा: 01:17। इस समय वह फाइलों के लिए किसी को फोन नहीं कर सकती थी। काश उसके पास किटी वर्गीज के अलीबी वाली रिपोर्ट होती - शाम को फैशन शो किस समय खत्म होते थे और समूह रात के लिए कब अलग होता था? किटी को बस सात-आठ घंटे चाहिए थे। ब्रसेल्स तक दो घंटे से भी कम की साइकिल यात्रा, तीन घंटे का ठहराव, जो बंदूक और अन्य उपकरण इकट्ठा करने, क्राउन प्लाजा में पहुंचाने, शायद हीरे लेने, बंदूक लौटाने या ठिकाने लगाने और वापस अपने होटल जाने के लिए पर्याप्त था। अगर वह रात नौ बजे के बाद निकलती, तो अगली सुबह पाँच बजे तक बिस्तर पर वापस आ सकती थी। वाह! लेकिन यह सब सिर्फ़ अनुमान था। इसकी पुष्टि तो उसे सुबह ही

मिल सकती थी। नई दिल्ली में 1:17 बज रहे थे, यानी ब्रुसेल्स में अभी भी 21:47 बज रहे थे। उसने विक्टर को फ़ोन किया, जिसने तीसरी घंटी बजते ही अपना मोबाइल उठा लिया।

'शुभ संध्या विक्टर, आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें।'

'हैलो रीटा।' विक्टर ने उसका नंबर ज़रूर सेव कर लिया होगा, क्योंकि उसे अपना परिचय देने की ज़रूरत नहीं पड़ी। 'भारत में काफ़ी रात हो चुकी होगी।'

'सुबह के एक बजकर बीस मिनट हो रहे हैं।'

'तो फिर यह बहुत जरूरी मामला होगा। मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?'

'मैं सोच रहा हूँ कि क्या आपको पता है, क्या कोई एक रात में मोटरसाइकिल से कोलोन से ब्रुसेल्स तक और वापस आ सकता है?'

'दो बार।'

'मैं क्षमा चाहता हूँ?'

'मेरा मतलब है, कोई भी अच्छा मोटरसाइकिल चालक एक रात में वह यात्रा दो बार कर सकता है। आप जानते हैं कि जर्मनी के कुछ ऑटोबानों पर गति सीमा नहीं है, इसलिए उस हिस्से को 220 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की रफ्तार से तय किया जा सकता है। यह किस बारे में है?'

'विक्टर, मुझे लगता है कि ब्रसेल्स हत्याकांड में शामिल सहयोगी ने ठीक यही किया था।'

'क्या हमारे पास कोई सबूत है?'

'मैंने इस समय इसीलिए फोन किया था। एक महिला थी जो आने-जाने के लिए जर्मनी से मोटरसाइकिल किराए पर ले सकती थी—'

'एक औरत?'

लिंगभेदपूर्ण।

'जी हां। मैं आपको सभी विवरण और तस्वीरें भेज सकता हूं। मैं चाहूंगा कि आप अपने संसाधनों का उपयोग करके यह जांच लें कि क्या यह सच था।'

'मैं कल सुबह तड़के इसकी जांच करवा लूंगा, रीटा। मुझे विवरण भेज देना।'

उन्होंने अपनी झुंझलाहट साझा की और सुबह बात करने पर सहमति जताई।

रीटा ने यह पता लगाने का मन बना लिया कि किट्टी वर्गीस के पास मोटरसाइकिल चलाने का वैध लाइसेंस भी है या नहीं। यह सोचकर उसने अपना कंप्यूटर फिर से बंद

कर दिया, जिम की तस्वीर खत्म की और उम्मीद की कि इससे उसकी चिंता से भरी अंतहीन रात में थोड़ी नींद आ जाएगी।

29 Twenty-Nine

नेने, विक्रम और जतिन ने रीता द्वारा पिछली रात भेजे गए उस अर्जेंट ईमेल को पढ़ लिया था जिसमें बुधवार को सुबह-सुबह ऑपरेशन रूम में मिलने के लिए कहा गया था।

उसने न तो अपना अनुमान बताया था और न ही डाक से कार्यों की कोई सूची भेजी थी, लेकिन चारों लोग 7:30 बजे कार्यालय में मौजूद थे। नेने, हमेशा की तरह, रास्ते में स्टायरोफोम कप में बहुत जरूरी गर्म कॉफी ले आई थी।

रीटा की आँखों में किरकिराहट महसूस हो रही थी, जिससे उसे पिछली रात की नींद हराम होने की याद आ गई। उसने पिछली रात निकाले गए अपने निष्कर्षों के बारे में टीम को बताने में पंद्रह मिनट का समय लिया। केमैन द्वीप समूह के बारे में पता चलने पर उसकी किस्मत अच्छी थी, और उसका अनुमान था कि यह गंतव्य हो सकता है, क्योंकि वहाँ कुछ शुल्क पर निवास की सुविधा उपलब्ध थी।

'हम इसे इसलिए नहीं देख पाए क्योंकि केमैन द्वीप समूह को एक देश के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है, यह तीन अलग-अलग द्वीपीय देशों का समूह है।' रीटा ने लड़कों को इस जटिलता को समझने का इंतज़ार किया। 'मैं भाग्यशाली रही, दोस्तों। और कल रात लापरवाह मोटरसाइकिल चालक के बारे में मुझे ईमेल भेजने के लिए जतिन को धन्यवाद।'

मुझे खेद है कि मैं वह सरल काम पहले नहीं कर सका, लेकिन—'

'नहीं, मुझे लगता है कि देरी उचित थी। अगर ईमेल किसी और समय आया होता तो शायद इसने मुझे उस दिशा में प्रेरित न किया होता, कौन जानता है?'

वे लोग अपनी कॉफी की चुस्की लेते हुए ध्यान से सुन रहे थे।

'हमारी थ्योरी में अब तक बस एक ही खामी थी कि एक ही व्यक्ति ब्रसेल्स में चोरी

करके कैसे बच निकला। और हम हनी सिंह के अलावा किसी और की तलाश करते रहे। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि यह किटी हो सकता है—'

'लेकिन उस समय वह जर्मनी में थी, है ना?'

'वह थी भी और नहीं भी। मैंने गूगल मैप्स पर और फिर विक्टर से पता किया कि कोई भी मोटरसाइकिल सवार - और इसके लिए लापरवाह होना भी ज़रूरी नहीं है - सात घंटे से कुछ ज़्यादा समय में दो बार वापसी की यात्रा कर सकता है। मुझे लगता है कि यह किटी ही थी।'

लोगों के मुंह खुले रह गए और बंद हो गए। आंखें चौड़ी हो गईं, भौंहें उठीं और नीचे गिर गईं।

'जतिन - किट्टी वर्गीस के बारे में हमारे पास मौजूद अलबी रिपोर्ट की जाँच करो। पता लगाओ कि शाम को फैशन शो किस समय समाप्त हुआ, और समूह किस समय तितर-बितर होकर अपने-अपने कमरों में गया, विशेष रूप से 2 अप्रैल की शाम को।'

सिर हिलाकर सहमति देना।

विक्रम, क्या आप लाइसेंसिंग अधिकारियों से पता कर सकते हैं कि किट्टी वर्गीज के पास मोटरसाइकिल लाइसेंस है या नहीं? साथ ही, कृपया यह भी पता कर लें कि क्या उसके पास मोटरसाइकिल है?

विक्रम ने एक मिनट भी बर्बाद नहीं किया। उसने अपनी कॉफी उठाई और तुरंत वहां से निकल गया।

और नेने, श्री हैंडलबार राजा अब इस पद पर नहीं हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम हनी सिंह और किट्टी वर्गीस दोनों पर चौबीसों घंटे निगरानी रखो। आदर्श रूप से, उन्हें इसकी भनक तक नहीं लगनी चाहिए, लेकिन अगर हमारे लोग पकड़े भी जाते हैं तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर आज उनमें से कोई भी अपनी दिनचर्या से हटकर कुछ भी करता है, तो उन्हें तुम्हें फोन करना चाहिए।

सभी लोग अपने-अपने कार्यभार के लिए रवाना हो गए, और रीता ने फैसला किया कि अब केस लॉग भरने और व्यक्तिगत रूप से सेक्सी से मिलने का समय आ गया है: आयुक्त को मौखिक रूप से पूरी जानकारी देने के बाद उनसे अनुरोध करना कि वे नई दिल्ली स्थित सीबीआई मुख्यालय को फोन करके चाणक्यपुरी में केमैन द्वीप समूह के उच्चायोग में एक व्यक्ति को भेजने के लिए कहें।

***

सेक्सी अपने दफ्तर में विशाल डेस्क के पीछे बैठा था। शांत, सहज और संयमित स्वभाव, बाल बिखरे हुए नहीं थे, जो कि असामान्य नहीं था, क्योंकि वह सीधे ड्राइवर द्वारा चलाई जाने वाली वातानुकूलित कार से वातानुकूलित दफ्तर में आया था। उसके बालों में मैट पोमेड लगा हुआ था। एकदम शांत। मानो वह ध्यान से उठा हो। शान की साक्षात मूर्ति। रीटा सोच रही थी कि क्या उसके बाल कभी बिखरे भी होते हैं, जैसे गोल्फ कोर्स पर होते हैं।

'सुप्रभात, मिस फेरेरा,' उन्होंने खुशी से कहा।

प्रसन्न मनोदशा।

'सुप्रभात सर।'

'मेरे सहायक ने कुछ मिनट पहले बताया कि आप मुझसे तत्काल परामर्श करना चाहते हैं। मैं आपकी सुविधा के लिए क्या कर सकता हूँ?'

रीटा ने पूरे मामले को बिना उस बड़े आदमी के दखल के सुनाया, यह सोचकर कि सेक्सी शायद पूरी जांच को गड़बड़ या किसी भ्रम के रूप में बता दे: हत्यारा हनी सिंह था, फिर उसका एक हमशक्ल सामने आया जो अस्तित्व में ही नहीं था और अब फिर से हनी सिंह ही था!

'अद्भुत,' सेक्सी ने अपनी लंबी-चौड़ी बात को संक्षेप में कहा। 'शानदार छल, एक रोमांचक कारनामा, हमें मानना पड़ेगा। तो, कैमरे में कैद होने के बाद उसने एक काल्पनिक कहानी गढ़ी कि एक निजी जासूस एक अज्ञात ग्राहक के कहने पर उसका पीछा कर रहा है और उसे एक काल्पनिक हमशक्ल मिल जाता है। हमें उसकी इस चतुराई को स्वीकार करना होगा कि उसने हमें तीसरे पक्ष के माध्यम से हमशक्ल का पता लगाने दिया ताकि आपको लगे कि आप उससे कहीं ज़्यादा चालाक हैं, जबकि असल में वह खुद चालाक था। असल में, उसने आपको धोखा दिया...'

'जी हाँ। और वह हमें बेवकूफ बनाने में कामयाब रहा...' रीता ने खुद को रोक लिया; सेक्सी की बातों को दोहराना समझदारी भरा काम नहीं था; किसी और के मुँह से ये बातें कभी स्वाभाविक नहीं लगती थीं, '...काफी समय तक उसने हमें अपने पुराने दोस्त वीर सिंह की थ्योरी को चालाकी से फैलाकर बेवकूफ बनाया, जिससे उसका और उसकी प्रेमिका का झगड़ा हो गया था।'

'और आपको ऐसा क्यों लगता है कि वे देश छोड़कर भाग रहे हैं?'

'किसी ऐसे व्यक्ति का विदेशी देश के हॉलिडे ब्रोशर देखना थोड़ा आश्चर्यजनक था

जिसके पास वैध पासपोर्ट नहीं था।'
रीटा सही थी। अधिकतर मामलों में सुलझने का एकमात्र कारण यही होता है कि कुछ न कुछ गड़बड़ होती है। पहेली का एक गलत टुकड़ा किसी राक्षस के अंगूठे की तरह उभर आता है।
'मुझे आपको श्रेय देना होगा, मिस फेरेरा। मुझे खुशी है कि मैंने इस मामले को आपको सौंपने का सही निर्णय लिया।'
'मैं भाग्यशाली रहा, महोदय।'
रीता के साथ अपने रिश्ते में आए बदलावों के बाद पहली बार, सेक्सी खड़ा हुआ और रीता की सराहना करते हुए उससे हाथ मिलाया। उसने कहा, 'मैं अभी दिल्ली फोन करूंगा।'

***

भाग्य नमक की तरह है। यह कोई मसाला नहीं है जिसे अलमारी में कहीं रख कर ज़रूरत पड़ने पर ही निकाला जाए। हर भोजन में नमक की आवश्यकता होती है। ठीक वैसे ही जैसे हर जांच में भाग्य की आवश्यकता होती है, जैसे लगभग हर काम में। शातिर अपराधियों और पुलिस के बीच की इस दौड़ में भाग्य ही अंतिम परिणाम तय करता है। पासे की आखिरी चाल ने रीटा और उसकी टीम को वो छह अंक दिला दिए जिनकी उन्हें सख्त ज़रूरत थी।
सभी खोजों के परिणाम सकारात्मक आए।
किट्टी वर्गीज के पास मुंबई में जारी किया गया मोटरसाइकिल ड्राइविंग लाइसेंस था। उनके पास एक कावासाकी निंजा 650आर भी थी, जिसे उन्होंने केवल दो महीने पहले ही बेच दिया था।
विक्टर ने वापस फोन करके बताया कि शिवानी नाम की एक महिला ने 1 अप्रैल की शाम को एक स्थानीय मोटरसाइकिल किराए पर दी थी और 3 अप्रैल की शाम को उसे लौटा दिया था। ओडोमीटर के रिकॉर्ड से पुष्टि हुई कि किराएदार ने नौ सौ किलोमीटर से कुछ अधिक की दूरी तय की थी। इसका मतलब यह था कि उसने ब्रसेल्स में सब कुछ व्यवस्थित करने के लिए संभवत: लगातार दो रातों में दो बार यह यात्रा की थी। इतना ही नहीं, सीसीटीवी फुटेज (जो हेलमेट के विज़र से ली गई थी और पेशेवर सफाई के बाद भी बेहद धुंधली थी) से पता चला कि शिवानी ही किट्टी वर्गीस थी। यह सिर्फ अनुमान नहीं था; यह सबूत था।

केमैन आइलैंड हाई कमीशन ने हनी सिंह या किट्टी वर्गीस नाम के किसी भी व्यक्ति को किसी भी श्रेणी का वीजा जारी नहीं किया था। हालांकि, उन्हें भेजी गई प्रोफाइल में श्रीमती शिवानी मल्होत्रा और श्री अजय मल्होत्रा से हूबहू मिलान हो गया। वाह! हालांकि एक असामान्य बात सामने आई। हनी सिंह और किट्टी वर्गीज दोनों ही आज अपने-अपने घरों से बाहर नहीं निकले थे।

'बुधवार की दोपहर के तीन बज रहे हैं,' रीटा ने ऑपरेशन रूम में बैठे तीनों आदमियों की तरफ देखा। 'किटी का देर तक सोना समझ में आता है, लेकिन हनी सिंह आज काम पर क्यों नहीं गया? नेने, अपने किसी आदमी को फोन करो और उसे तुरंत उसके ऑफिस जाने को कहो। अगर वह वहां नहीं मिलता, तो किसी को अंधेरी स्थित उसके घर भेजकर पता लगाने को कहो। यह अच्छी खबर नहीं है।'

रीता ने जतिन से गिरफ्तारी के कागजात तैयार करने को कहा।

विक्रम, किसी से कहो कि चार-पांच ट्रैवल एजेंटों से संपर्क करे। मुझे नहीं लगता कि तीनों केमैन द्वीपों में से किसी के लिए भी सीधी उड़ान होगी। हमें विभिन्न स्रोतों से यह पता लगाना होगा कि ये लोग कौन-कौन से संभावित कनेक्शन ले सकते हैं।

विक्रम ने नोट्स बनाए।

'और हमारे पास यात्रियों के नाम हैं, शायद हमारी किस्मत चमक जाए और हमें किसी ट्रैवल एजेंट से बुकिंग मिल जाए। अब तो सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ ही होगा, है ना?'

'मुझे पक्का नहीं पता मैडम, लेकिन अगर हमें संभावित रास्ते और एयरलाइन का पता हो तो मुझे पूरा यकीन है कि हम उन्हें ढूंढ लेंगे।'

CHATRAPATI SHIVAJI INTERNATIONAL AIRPORT 1700 HOURS

'मैं अब थक गई हूँ,' किटी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

'अभी से?' सुरक्षा जांच और प्रक्रिया पूरी होने से पहले हमारे पास अभी कुछ घंटे और हैं,' हनी सिंह ने समझाया।

'मुझे लगता है कि आप हद से ज़्यादा चिंतित हैं, उड़ान से पूरे एक दिन पहले हवाई अड्डे पहुँच गए। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि हमने यह कारनामा कर दिखाया है, इस पर विश्वास करना या इसे साबित करना तो दूर की बात है। साथ ही, उनके पास कोई सबूत भी नहीं है। भला कोई हमारे पीछे क्यों पड़ेगा?'

'कुछ भी हो सकता है। हमने भी कभी नहीं सोचा था कि वे इतने करीब आ जाएँगे, लेकिन डीसीपी और उनकी टीम ने ऐसा ही सोचा था। वीर सिंह को रास्ते से हटाना उल्टा पड़ गया; अब कोई और बलि का बकरा नहीं बचा था, इसलिए वे किसी भी पल हमें घेर सकते थे। और मैं नहीं चाहती थी कि एयरपोर्ट पहुँचते समय वे हमें पकड़ लें। रात के अंधेरे में यहाँ आना ही बेहतर था—कम से कम अब हम दोनों एयरपोर्ट पर हैं...'

'तुमने अपनी माँ को क्या बताया?'

'बिल्कुल कुछ नहीं। उसे बताने से उसे और योजना को खतरा हो सकता था। अगर उसे कुछ पता नहीं है, तो वह सुरक्षित है। मैं अंतिम गंतव्य पर पहुँचने के बाद ही फोन करूँगा। हो सकता है कि एक-दो साल बाद, जब यह सारा मामला शांत हो जाए, मैं उसे बुला लूँ। मैंने उसके खर्चों के लिए पर्याप्त पैसे छोड़ दिए हैं।'

'क्या आपने पैसे चेक कर लिए हैं?'

'ग्रैंड केमैन के निजी बैंकों में सब कुछ सुरक्षित है। मेरे पास सभी संबंधित कागजात हैं। आप चिंता न करें, श्रीमती मल्होत्रा।'

'वहां पहुंचने पर हम सबसे पहले शादी करेंगे।'

मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।

***

पुलिस मुख्यालय, क्रॉफर्ड मार्केट, मुंबई, शाम 7:30 बजे

अब यह स्पष्ट हो गया था कि हनी सिंह और किट्टी वर्गीस पिछली रात से अपने-अपने घरों से गायब थे। रीता का अनुमान था कि वे भाग गए थे। उन्होंने संदिग्धों को इतना परेशान कर दिया था कि वे घबरा गए, हरकत में आए, अपना सामान उठाया और भाग गए। आखिरकार किसी को तो गुस्सा आ ही गया। हनी की माँ ने पुलिस को बताया था कि वह पिछली रात काम से घर नहीं आया था और न ही उसने फोन किया था, जो कोई असामान्य बात नहीं थी। वह ऐसा कई बार करता था।

उसने दावा किया था कि वह किसी दोस्त के साथ या उस लड़की के साथ होगी। हनी सिंह के दफ्तर में गए स्थानीय पुलिसवाले ने उस बदमाश टिटू को कुछ थप्पड़ मारे थे, लेकिन उसका बयान वही रहा जो उसने पहले पुलिस को दिया था। साहब आज दफ्तर नहीं आए। उन्हें हनी सिंह के मोबाइल पर कई बार कॉल करने को कहा गया, लेकिन कॉल सीधे वॉइसमेल पर चली गई। साहब का उन्हें बिना बताए न आना

आम बात नहीं थी, लेकिन ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, ऐसा भी नहीं था। अगर टिटू दफ्तर नहीं आता था, तो हनी सिंह को उसे कोई स्पष्टीकरण देने की ज़रूरत नहीं थी।

रीता तनाव में थी। उसके मन में अपशब्दों की बाढ़ आ गई। आखिरकार उन्होंने पूरा रहस्य सुलझा लिया था, लेकिन पता चला कि अपराधी भागने में कामयाब हो गए थे। वे बस कुछ घंटों से ही देर हो गए थे। वह अपनी हार पर गुस्से से घूर रही थी। अगर वे भारत से निकल जाते, तो लंदन में यात्रा को बीच में ही रोकने का मौका था। वह विक्टर को फोन करके इंटरपोल से हस्तक्षेप करने, मामला अपने हाथ में लेने और शिशिर सिंह उर्फ हनी सिंह उर्फ अजय मल्होत्रा और उसकी प्रेमिका को पकड़ने के लिए कह सकती थी। लेकिन यह खुद गिरफ्तारी करने जैसा नहीं होता। और वीर सिंह के हत्यारों को प्रत्यर्पित करना मुश्किल होता: बेल्जियम पुलिस निश्चित रूप से सबसे पहले उन पर जोगानी की हत्या का मुकदमा चलाएगी। यह फिर भी एक सफलता होती, लेकिन जीत कुछ और होती है। असली जीत तो तब होती है जब ट्रॉफी आपके हाथ में होती है।

विक्रम ने केमैन द्वीप समूह की यात्रा के संभावित मार्गों के साथ तुरंत संपर्क किया। केमैन द्वीप समूह की उड़ानों में लंदन या पेरिस और मियामी में ठहराव होता, जब तक कि नकली मल्होत्रा ने जानबूझकर कोई असामान्य मार्ग न चुना हो।

जेट एयरवेज, ब्रिटिश एयरवेज, एयर फ्रांस और यूनाइटेड ने सबसे अच्छे और सबसे तेज़ कनेक्शन प्रदान किए।

अगर वे पहले ही उड़ान नहीं भर चुके होते, तो सबसे पहली उड़ान आधी रात के बाद ही होती, जो मुश्किल से साढ़े पांच घंटे की दूरी पर होती।

सुरक्षा जांच और चेक-इन में ढाई घंटे का समय लगता था।

'ठीक है... अब हम ये करते हैं। ट्रैवल एजेंट को फोन करके पता कर लें कि क्या श्रीमती शिवानी मल्होत्रा और/या श्री अजय मल्होत्रा की फ्लाइट इन चारों एयरलाइनों में है। हो सकता है कि उनकी बुकिंग एक ही फ्लाइट में न हो, इसलिए ध्यान रखें कि कहीं उनकी फ्लाइट छूट न जाए।'

***

CHATRAPATI SHIVAJI INTERNATIONAL AIRPORT 2130 HOURS

जेट एयरवेज ने लंदन हीथ्रो जाने वाली फ्लाइट 9W118 के लिए चेक-इन काउंटर थोड़ा जल्दी खोल दिया। कतार में सबसे पहले श्रीमान और श्रीमती मल्होत्रा थे। किट्टी उर्फ शिवानी मल्होत्रा अपने पति के पीछे खड़ी होकर इधर-उधर देख रही थीं। चूंकि वह एक जानी-पहचानी शख्सियत थीं और लोग उन्हें पहचान सकते थे, इसलिए उन्होंने एयरलाइन के चेक-इन काउंटर पर खड़े न होने का ही फैसला किया, क्योंकि अगर वह उन्हें देख लेते तो नाम में कोई गड़बड़ी पकड़ लेते।
आगमन की सूचना दिया।
बोर्डिंग पास जारी कर दिए गए हैं।
बिना समय बर्बाद किए, दंपति रात 8:10 बजे सुरक्षा जांच से गुजर गए।

***

पुलिस मुख्यालय, क्रॉफर्ड मार्केट, मुंबई, रात 11:45 बजे
एयर फ्रांस या ब्रिटिश एयरवेज के किसी भी सेक्टर में मल्होत्रा परिवार के किसी भी सदस्य की बुकिंग नहीं हुई थी।
रीटा और उनकी टीम को अभी तक यूनाइटेड और जेट एयरवेज से कोई जवाब नहीं मिला था। ऐसा लग रहा था कि कुछ तकनीकी गड़बड़ी हो गई थी और विभिन्न स्रोतों से पूरी उड़ान के लिए कुल बुकिंग प्राप्त नहीं हो पा रही थी।
आधी रात से पांच मिनट पहले यूनाइटेड खाली हाथ लौटी।
जेट एयरवेज ने पुष्टि की कि श्रीमती शिवानी मल्होत्रा और श्री अजय मल्होत्रा ने लंदन हीथ्रो जाने वाली फ्लाइट 9W118 में अपनी सीटें बुक कराई थीं।
'उड़ान का प्रस्थान समय क्या है?'
'पच्चीस मिनट में, महोदया।'
'जतिन, विक्रम, नेने— हवाई अड्डे के आसपास के सभी पुलिस स्टेशनों को फोन करो। उनसे कहो कि वे हवाई अड्डे के अधिकारियों से संपर्क करके इन दोनों यात्रियों को उतार दें। आपको पता ही है क्या करना है।'

***

CHATRAPATI SHIVAJI INTERNATIONAL AIRPORT 0045 HOURS
गेट कुछ देर पहले ही बंद कर दिए गए थे। फ्लाइट अटेंडेंट ने सुरक्षा संबंधी जानकारी पूरी कर ली थी।

'दस मिनट और,' शिवानी मल्होत्रा ने अपने पति का हाथ थामते हुए कहा, क्योंकि वे इकोनॉमी क्लास में खिड़की और गलियारे वाली सीटों पर अकेले बैठे थे। ऊपरी श्रेणी में आखिरी मिनट का टिकट उपलब्ध नहीं था। लंदन से आगे की उनकी यात्रा फर्स्ट क्लास में बुक थी।

'मुझे हमेशा से जोखिम का अंदाजा था, लेकिन यह मामला काफी गंभीर था।'

विमान डामर की सतह पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था और रनवे की ओर जा रहा था। प्रस्थान में कुछ ही मिनट शेष हैं।

***

बांद्रा-वर्ली सी लिंक 0046 घंटे

रीता आगे की सीट पर बैठी थी, गाड़ी नेने चला रहा था; छत पर लाल बत्ती जल रही थी और सायरन बज रहा था। विक्रम और जतिन उनके पीछे थे, उनके पीछे वर्दीधारी पुलिसकर्मियों से भरी एक और पुलिस कार थी।

'शुभ संध्या, महोदय,' रीता ने आखिरकार सेक्सी के अनलिस्टेड होम फोन पर उससे संपर्क किया। 'क्षमा करें, लेकिन यह एक आपातकालीन स्थिति है, महोदय। हमारे संदिग्ध अगले दस मिनट में मुंबई से उड़ान भरने वाले विमान में हैं। हमें विमान को रोकना होगा।' रीता ने उसे सारी जानकारी दी।

'मुझे अपने कर्ज वसूलने दीजिए। वहां पहुंचते ही मुझे फोन कर दीजिए।'

***

CHATRAPATI SHIVAJI INTERNATIONAL AIRPORT 0050 HOURS

इंजन चालू हो चुके थे। पायलट ने उड़ान कर्मियों को अपनी-अपनी सीटों पर बैठने के लिए कहा था।

तभी एयर-ट्रैफिक कंट्रोल से फोन आया।

मुंबई पुलिस आयुक्त का हवाई यातायात नियंत्रण पर कोई कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं है। लेकिन बात ये है कि सामान्य परिस्थितियों में आप उन्हें मना नहीं कर सकते। और अगर वो पुलिस आयुक्त संजय सक्सेना हों, तो आप किसी भी परिस्थिति में उन्हें मना नहीं कर सकते। वरना अगला फोन राज्य के गृह मंत्री का आएगा। सक्सेना मुंबई पर उसी तरह रोक लगा सकते हैं जैसे आप अपने टाटा स्काई या डीवीडी प्लेयर पर कोई फिल्म रोकते हैं।

एयर-ट्रैफिक कंट्रोल के प्रभारी अधिकारी ने रनवे पर विमान को न रोकने के लिए हर तरह के बहाने बनाए, क्योंकि इससे कई आगामी उड़ानें विलंबित हो जातीं। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा।
क्षमा करें, यह विकल्प उपलब्ध नहीं है: यह उत्तर मिला।
पायलट ने कड़ा विरोध जताया, मानो गले में अटके अपशब्दों को दबा रहा हो। उसने अनुमान लगाया कि अगर वे इस उड़ान के समय चूक गए, तो उन्हें कतार में सबसे पीछे भेज दिया जाएगा। उसने पूछा, "क्या समस्या है?" लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला। उसे "तकनीकी खराबी" घोषित करने, दरवाज़े बंद रखने और आगे के आदेशों का इंतज़ार करने के लिए कहा गया। इसमें कोई समझौता नहीं होगा।
0052 घंटे
विमान के आने से पहले पुलिस सायरन बंद कर दिए गए थे। मौके पर मौजूद स्थानीय सहायक पुलिस अधीक्षक ने अपनी टीम को वाहनों की लाल बत्तियाँ भी बंद करने का निर्देश दिया था। विमान के सामने तीन पुलिस वाहन खड़े थे जिन्हें केवल पायलट ही देख सकते थे। सभी लोग तब तक इंतजार करते रहे जब तक रीटा और नेने, और उनके बाद अन्य वाहन चालक दल रनवे पर नहीं पहुँच गए।
समय 01:17 बजे था। पुलिस के पास गिरफ्तारी के लिए पर्याप्त सबूत थे।

कारण के पीछे का कारण

पुलिस तंत्र ने मोर्चा संभाला। हनी सिंह और किट्टी वर्गीज से बात निकलवाने में छह पुलिस अधिकारियों और दो वकीलों को तीन दिन लगे।
डीसीपी रीता फरेरा का अनुमान बिल्कुल सही निकला। उन्होंने मुंबई और दिल्ली में हुई पिछली चोरियों, ब्रुसेल्स में हुई करोड़ों यूरो की चोरी, रॉन जोगानी की हत्या और उसके बाद वीर सिंह की सुपारी लेकर हत्या करने की बात कबूल की - वीर सिंह भी एक तरह से इस घटना का शिकार हुआ था। दरअसल, मुंबई और दिल्ली से चुराए गए हीरों को बेचते समय ही हनी सिंह को ब्रुसेल्स से हीरे खरीदने की पेचीदगियों का पता चला था। उसने और जानकारी जुटाकर पांच थोक खरीदारों का पता लगाया। उसने जापान में एक फर्जी कंपनी बनाई - वेबसाइट, डाकघर बॉक्स, ईमेल आईडी - और इन पांचों मुख्य खरीदारों को ईमेल भेजकर उन्हें ब्रुसेल्स में उसी गुणवत्ता के हीरों के

लिए चुकाई जाने वाली कीमत से सस्ते हीरों के लिए जापान आने का निमंत्रण दिया। इन पांचों में से एक रॉन जोगानी भी था। जोगानी ने जवाब दिया कि वह अप्रैल के पहले सप्ताह में ब्रुसेल्स जा रहा है, लेकिन वह साल के अंत में जापान आकर हीरे देखना चाहेगा। बस इतना ही काफी था। हनी सिंह को रॉन जोगानी के कंप्यूटर में घुसपैठ करने के लिए बस इतना ही काफी था। तब से जोगानी द्वारा भेजे या प्राप्त किए गए प्रत्येक ईमेल और उनके द्वारा देखी गई प्रत्येक वेबसाइट को हनी एंड कंपनी द्वारा ट्रैक किया जाने लगा।

रॉन जोगानी की हत्या ने बाद की घटनाओं को जन्म दिया, जिससे उस घृणित कृत्य का प्रसार हुआ जब रीता की टीम इसमें शामिल हुई और उनके दरवाजे खटखटाने लगी। मूल योजना मुंबई या भारत से भागने की कभी नहीं थी। हनी के पिता की मृत्यु के बाद हनी सिंह और उनकी मां को तथाकथित परिवार के सदस्यों ने उनकी विरासत से वंचित कर दिया था। हनी सिंह, जो अपने हक की दौलत से वंचित थे, को पैसे की जरूरत थी ताकि वह गुमनाम रूप से अपने पिता का कारोबार वापस खरीदकर और बाकी लोगों को गरीबी और तपस्या के जीवन में धकेलकर उनसे बदला ले सकें: प्रतिशोध लेने की एक घिनौनी योजना। और इसे हासिल करने के लिए वह जिस तरीके का इस्तेमाल करना चाहते थे, उसने उनके इस नेक इरादे को और भी बढ़ा दिया। हनी सिंह द्वारा गुप्त रूप से एक ऐसे सॉफ्टवेयर पर काम करने की पूरी कहानी, जो वित्तीय लेखांकन का चेहरा बदल सकता था और लाखों कमा सकता था, मनगढ़ंत थी। वह अपने काम में माहिर थे - कंप्यूटर रखरखाव और सरल कंप्यूटर प्रोग्राम लिखना - लेकिन वह उतने प्रतिभाशाली नहीं थे जितना वह दावा करते थे; उसके पास कोई असाधारण, युगांतरकारी विचार नहीं थे जो किसी और ने न सोचे हों। यह कहानी सिर्फ एक दिखावा थी, ताकि अगर वह सफल हो जाता तो उसे मिलने वाले धन को वैधता मिल सके — और वह कुछ हद तक सफल भी हो गया था; खैर, लगभग — लाखों की रकम जेब में डालने में। भला वह अपनी इस अचानक मिली विरासत का श्रेय किसे देता? सब कुछ सोच-समझकर किया गया था। भागने का विचार हाल ही का था, समय से पहले का। द्वीप समूह पर अभी पूरी तरह से विचार नहीं किया गया था। जब रीटा और उसके साथियों ने दबाव बढ़ाया, तो उसने उन जगहों को चुना जहाँ वह बिना वापस आए भाग सकता था। शोध से उसे पता चला कि केमैन द्वीप समूह पहुँचना बहुत आसान और पहुँच के भीतर था।

किट्टी वर्गीस सभी अपराधों में सहभागी थी। उसे धार्मिक शिक्षा नहीं दी गई थी, उसे इसकी ज़रूरत भी नहीं थी। वह भी उतनी ही दोषी थी। वह कैथोलिक धर्मोपदेशक से भाग गई थी क्योंकि वह अपना जीवन धार्मिक नन बनकर बर्बाद नहीं करना चाहती थी। वह उस माहौल में किसी दूसरी दुनिया की लगती थी: इतनी आकर्षक कि भगवान या उनके भक्तों की किसी भी तरह से मदद करने की उसे कोई उम्मीद नहीं थी। उसका मानना था कि अगर वह वहाँ रहती तो पुरुषों के लिए सिर्फ़ एक आकर्षण का केंद्र ही बनती। उसने वीर सिंह से इसलिए संबंध नहीं तोड़ा था क्योंकि उसने रीता से जो स्वीकार किया था, वह सही था: वीर सिंह का उसके मॉडलिंग करियर को बकवास मानना। हनी सिंह वह आदमी था जिसके पास एक जोखिम भरी योजना थी। जोखिम इतना रोमांचक था कि उसने सारी चिंताओं, सारे परिणामों को फीका कर दिया। वह सस्ते रोमांच का ज़रूरत से ज़्यादा ही आनंद ले रही थी। धर्मोपदेशक से भागने और एक बार बच निकलने ने उसे जोखिम बढ़ाने का आत्मविश्वास और प्रोत्साहन दिया था। इसने उसके अंदर एक झूठी दृढ़ता पैदा कर दी थी। यह जानते हुए कि उसका मॉडलिंग करियर जवानी के साथ ही खत्म हो जाएगा, हीरे की चोरी और पकड़े जाने का डर उसके अंदर जोश भर देता था। वह इतनी बोल्ड थी कि पुरुष हमेशा उसकी मदद के लिए आगे आते थे। जैसे उस लड़के ने बताया कि ज़ावेरी ज्वैलर्स की इमारत कितनी पुरानी और शानदार थी; यहाँ तक कि उसके ऊपर कांच का गुंबद भी था। जैसे उस लड़के ने जर्मनी में बिना ज्यादा सवाल-जवाब या कागजात मांगे उसे मोटरसाइकिल किराए पर दिलवाई...

वे पहली या दूसरी चोरी के बाद ही खेल छोड़ सकते थे। क्या उन्होंने काफी पैसा नहीं कमा लिया था? हत्या सुनियोजित नहीं थी, और इसे आसानी से टाला जा सकता था। हनी सिंह रॉन जोगानी से माफी मांग सकता था, कोई मनगढ़ंत कहानी सुना सकता था कि वह गलती से गलत कमरे में घुस गया, होटल के क्लर्क या ताले-चाबियों को दोष दे सकता था और बच निकल सकता था। शायद वह जोगानी को चुप कराने के लिए उसे बंदूक दिखा सकता था और हीरों के बिना भाग सकता था। शायद जोगानी इसकी रिपोर्ट नहीं करता। बेशक, कोई नहीं जानता कि क्या हो सकता था। असल बात यह थी कि हनी सिंह खुद पर काबू नहीं रख सका: जब दांव इतना बड़ा होता है तो लोग अप्रत्याशित काम कर बैठते हैं। और यही लालच की समस्या है। कोई हमेशा जीतता नहीं, कोई हमेशा हारता नहीं। कला है हारने से ज्यादा जीतना। या कम से

कम, जब सब कुछ शून्य हो जाए तो खेलना बंद कर देना। फिर खेल छोड़ देना। लेकिन जब आप बुराई के अंधेरे में उतरने लगते हैं तो आपको कोई कारण नहीं दिखता, आप कहीं नहीं रुकते, किसी भी चीज पर नहीं रुकते। अधिक पाने की लालसा में, अधिकांश लोग यह सुनिश्चित कर लेते हैं कि वे अपना सब कुछ खो दें। शैतान का यही तरीका है; वह हमेशा आपको अंधा कर देता है और आपको किसी ऐसी काल्पनिक दुनिया में ले जाता है जहाँ सब कुछ विलाप जैसा लगता है। वहाँ कोई भरपाई नहीं होती।

किसी दूसरे व्यक्ति की झूठी कहानी गढ़ने और वीर सिंह को फंसाने के लिए एक झूठा सुराग छोड़ने की योजना किट्टी का विचार था, ताकि वह अपने हनी को बचा सके। इसके लिए उसने निजी जासूस मिस्टर राजा पर निशाना साधा, जिसे वह बेवकूफ कहती थी। उसे हनी सिंह का पीछा करने के लिए नियुक्त किया गया था, ताकि अगर कोई पूछताछ करने आए तो लोग सोचें: बेचारा हनी सिंह। यह झूठ कुछ समय तक कारगर रहा, लेकिन फिर झूठा साबित हो गया।

***

यह पैसा, जिसका अधिकांश हिस्सा अभी तक खर्च नहीं हुआ था, केमैन द्वीप समूह में स्थित चार अलग-अलग अज्ञात ऑफशोर खातों से बरामद किया गया। कोई हीरा नहीं मिला।

किट्टी वर्गीस को चोरी और सेंधमारी में स्वेच्छा से सहभागिता करने के लिए छह साल की सजा मिली। हनी सिंह ने शपथ लेकर स्वीकार किया कि किट्टी वर्गीस दोनों हत्याओं में कभी भी सहभागिता नहीं थी। फिर भी न्यायाधीश ने उसे "घटना के बाद सहायक" माना: उसे जघन्य अपराधों की सूचना देनी चाहिए थी, लेकिन उसने नहीं दी। लोगों का मानना था कि सेंधमारी के लिए छह साल की सजा बहुत कठोर थी, जबकि हत्या के लिए बहुत कम। मीडिया के पैरोकारों को हफ्तों तक विचार-विमर्श करने के लिए नया मसाला मिल गया।

हनी सिंह ने आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के दो महीने बाद आत्महत्या कर ली।

जैसा कि उम्मीद थी, श्रीमती लकी सिंह बेहद परेशान थीं। उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनके बेटे को उनके ससुराल वालों से गहरी नफरत थी, क्योंकि उन्होंने उन्हें धोखा दिया था, जबकि वह खुद इस बात को बहुत पहले भुला चुकी थीं।

***

कई बार ऐसा होता है जब आपको पता होता है कि जो हुआ है वो सही है, फिर भी वो दुखद होता है। रीटा ने सोचा, कितना दुखद! दो खोई हुई आत्माएँ। ये तो गगनचुंबी इमारत से गिरते हुए दो आलूओं को गुरुत्वाकर्षण के नियम समझाने जैसा होता। बहुत जटिल। और अब शायद बहुत देर हो चुकी है।

रीटा ने अपने लिए एक जिम बीम बनाई, जिमी हेन्ड्रिक्स का गाना लगाया: रेत के महल जीवंत हो उठे, उसे याद दिलाते हुए कि ऐसे सभी महल अंततः समुद्र में समा जाते हैं। एक और घूंट पीने के बाद, मिस्टर ऐश मैटल और उनके सस्ते मज़ाक उसके विचारों में आ गए। उसने एक और घूंट भरी, व्यंग्यात्मक टिप्पणियों की बौछार के लिए खुद को तैयार किया और ऐश को फोन किया।

'मुझे बताओ कि तुमने स्टिलेटो हील्स पहनी हैं और कुछ नहीं...' उसने निराश नहीं किया।

वह मुस्कुराई।

पाठकों के लिए एक नोट

भिंडी बाजार को पूरा करने के तुरंत बाद मुझे दूसरा का विचार आया, लेकिन चूंकि मैं एक अन्य परियोजना में व्यस्त था, इसलिए मैंने इसे कुछ समय के लिए टाल दिया। कुछ समय तक इसे मेरे दिमाग में आकार लेने दें। दूसरा, डीसीपी रीता फरेरा का दूसरा मामला है। हालांकि इसमें भिंडी बाजार के संदर्भ हैं, लेकिन यह ठीक उसी का सीक्वल नहीं है - यह पूरी तरह से एक स्वतंत्र कहानी है।

'दूसरा' लिखने में कई लोगों ने मेरी मदद की, और उन सभी का नाम लेना असंभव है। हमेशा की तरह, मेरी पत्नी और सबसे बड़ी आलोचक निधि ने सबसे पहले इसे पढ़ा। आधी पांडुलिपि पढ़ने के बाद उन्होंने कहा कि कहानी में जोश की कमी है; इसमें और एक्शन की ज़रूरत है। इसलिए मैंने विचार-विमर्श किया, कुछ हिस्सों में बदलाव किए और कहानी को जीवंत बनाने के लिए नए आयाम जोड़े। धन्यवाद निधि।

एक लेखक के तौर पर, मैं अपनी पांडुलिपि के पहले मसौदे में लिखे हर शब्द को लेकर बहुत सतर्क रहता हूँ, लेकिन मेरी संपादक, डेब्ज़ हॉब्स-वायट, इसे निखारने और एक मनोरंजक कहानी बनाने में माहिर हैं। धन्यवाद डेब्ज़।

मेरे मित्र पैट्रिक व्हिटिक ने अंतिम दस्तावेज़ पर नज़र डाली और भाषा संबंधी त्रुटियों को दूर किया, कथानक में विसंगतियों को इंगित किया और कुछ बहुमूल्य सुझाव दिए, जिन्हें मैंने शामिल कर लिया है। धन्यवाद पैट्रिक।

और अंत में, मेरे प्रकाशक, रूमर बुक्स इंडिया टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने मुझे अपना काम आप सभी के सामने लाने का अवसर दिया।

मुझे उम्मीद है कि आपको 'दूसरा' पढ़ने में उतना ही आनंद आएगा जितना मुझे इसे लिखने में आया।

Vish Dhamija
vishdhamija@gmail.com
या फिर फेसबुक पर विश धामिजा या ट्विटर पर @vishdhamija को खोजें।